Impact Factor : 5.634

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Volume 13, Issue 2 (January–June 2026) ISSN : 2349-9575



संरक्षक :
प्रो. (डॉ.) जीत सिंह

प्रधान संपादक :
डॉ. मन्जू चौहान

संपादक :
डॉ. सुलक्षणा अहलावत

प्रबंध संपादक :
डॉ. विकास शर्मा

प्रकाशक :
प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब
रोहतक (हरियाणा)

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Volume 13,	Issue 2	(January–June 2026)	ISSN : 2349-9575

संरक्षक :
प्रो. (डॉ.) जीत सिंह

प्रधान संपादक :
डॉ. मन्जू चौहान

संपादक :
डॉ. सुलक्षणा अहलावत

प्रबंध संपादक :
डॉ. विकास शर्मा

1. 'शोध परिधि' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध परिधि' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र रोहतक (हरियाणा) न्यायालय ही मान्य होगा।

मूल्य : 1350/-

संपादक मण्डल/विषय विशेषज्ञ/परामर्श समिति/ शोधपत्र निरीक्षण समिति/समीक्षक समिति

1. **डॉ. सत्यन्त कुमार**
आचार्य (शारीरिक शिक्षा विभाग)
श्री राममूर्ति गुप्ता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छर्रा, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

2. **प्रो. (डॉ.) स्वर्णलता कदम**
आचार्या (हिंदी विभाग)
श. म. पाण्डेय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

3. **डॉ. बबली अरूण**
सह आचार्य (संगीत विभाग)
कु. मा. रा. म. महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)

4. **डॉ. संजीव कुमार**
विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
कु. मा. रा. म. महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)

5. **प्रो. (डॉ.) नीरज कुमार**
आचार्य हिंदी विभाग,
कु. मा. रा. म. महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)

6. **प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र कुमार**
विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र)
राजकीय महाविद्यालय, बी. बी. नगर, बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश)

7. **प्रो. (डॉ.) गीता शर्मा**
आचार्या (हिंदी विभाग)
एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

8. **प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार यादव**
आचार्य (वाणिज्य विभाग)
मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय, नन्दग्राम, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

9. **प्रो. (डॉ.) संजीता वर्मा**
आचार्या (हिंदी विभाग)
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू (नेपाल)

10. **डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी**
सहायक आचार्या (हिंदी विभाग)
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू (नेपाल)

11. **श्री डिल्लीराम शर्मा संग्रौला**
सहायक आचार्य (हिंदी विभाग)
पद्मकन्या बहुमुखी परिसर, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू (नेपाल)

12. **डॉ. ज्योतिरानी जायसवाल**
सहायक आचार्या (इतिहास विभाग)
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

13. **प्रो. (डॉ.) चंद्रशेखर सिंह**
आचार्य (समाज कार्य विभाग)
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

14. **डॉ. नरेश कुमार सिहाग**
वकील
जिला न्यायालय, भिवानी (हरियाणा)

15. **डॉ. पूनम कुमारी**
सहायक आचार्या (संस्कृत विभाग)
राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन, भरतपुर (राजस्थान)

16. **डॉ. मनजीत**
सह आचार्या (हिंदी विभाग)
वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

17. **डॉ. उन्नति शर्मा**
सहायक आचार्या (समाजशास्त्र विभाग)
दयानंद महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)

18. **डॉ. रामप्रवेश सिंह**
सहायक आचार्य (हिंदी विभाग)
जनता स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीपुर–मऊ (उत्तर प्रदेश)

19. **डॉ. सुनील कुमार सिंह**
अतिथि व्याख्याता (जनसंचार विभाग)
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)

20. **श्री राहुल रमन**
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
वाई बी एन विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)

21. **डॉ. आकांक्षा पाल**
सहायक प्राध्यापिका (संगीत विभाग)
सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

22. **डॉ. गीता पंत**
सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मानिला (उत्तराखंड)

23. **डॉ. सुनीता सारस्वत**
सह प्राध्यापिका (शिक्षा शास्त्र विभाग)
सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान)

24. **डॉ. बी. मल्लिका**
अतिथि व्याख्याता (हिन्दी विभाग)
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), दिंडीगुल (तमिलनाडु)

25. **मो. जिमी**
शोधार्थी (उर्दू विभाग)
मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर (बिहार)

26. **डॉ. प्रवीण दिगंबर देशमुख**
प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
गुलाम नबी आजाद कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, बार्शीटाकली (महाराष्ट्र)

27. **डॉ. अनीता शर्मा**
सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग)
रॉयल इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एण्ड मैनेजमेंट, गुरुग्राम (हरियाणा)

28. **डॉ. सुप्रिया ई**
सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग)
फातिमा कॉलेज (स्वायत्तशासी), मदुरै (तमिलनाडु)

29. **डॉ. आरती सरोज**
सहायक आचार्या (संस्कृत)
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

30. **श्री नितिन सुभाषराव कुंभकर्ण**
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
यशवंत महाविद्यालय, सेलु (महाराष्ट्र)

31. **डॉ. बबीता**
सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा शास्त्र विभाग)
लक्ष्मण सिंह महर कैम्पस, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

32. **डॉ. प्रदीप जगन्नाथ औजेकर**
सहायक प्राध्यापक (मराठी विभाग)
किसान कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, पारोला (महाराष्ट्र)

33. **डॉ. दिलकुश झा**
भारतीय सेना।

34. **डॉ. संजीव कुमार के.**
सह आचार्य (हिन्दी विभाग)
एम.ई.एस. कल्लाडी कॉलेज, मन्नारक्काड (केरल)

35. **डॉ. मंजू**
सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा शास्त्र)
आर एस एम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, लाखु बुआना (हरियाणा)

36. **डॉ. दीप्ति लोदवाल**
ग्रन्थपाल
शासकीय विधि महाविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

37. **हेमलता पारस**
सहायक प्राध्यापिका (समाजशास्त्र)
पी.एम.सी.ओ.ई. शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आगर मालवा (मध्य प्रदेश)

38. **डॉ. अर्चना दुबे**
वरिष्ठ लाइब्रेरियन
संत अलॉयसियस महाविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

जनवरी–जून 2026

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. विकास शर्मा	07–08
2.	**Nepal–India Religious Relations and the Ramayana : A Bridge of Cultural and Spiritual Unity**	**Dr. Archana Dubey**	**09-14**
3.	मेघदूतम् में वर्णित नगर वैशिष्ट्य	डॉ. आरती सरोज	15–18
4.	हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव : एक अध्ययन	प्रोफेसर चन्द्रशेखर सिंह	19–24
5.	साठोत्तर हिंदी कहानियों में चित्रित एकल माताओं की समस्याएं	डॉ. बी. मल्लिका	25–28
6.	नीली अर्थव्यवस्था	डॉ.(श्रीमती) मंजुलता कश्यप	29–33
7.	कृषि ऋण योजनाओं के क्षेत्र में किसान क्रेडिट कार्ड योजना की उपयोगिता	**Dr. Dilip Kumar Parsendiya**	**34-39**
8.	'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन	डिल्लीराम शर्मा संग्रौला	40–49
9.	विकसित भारत 2047 के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण–अनुकूल ग्रंथालयों की भूमिका **Research Paper on "The Role of Environment & Friendly Libraries in the Context of Viksit Bharat 2047"**	डॉ. दीप्ति लोदवाल	50–54
10.	**Role of Forensic Science in Modern Criminal Investigation and Trial**	**Prof.(Dr.) Farhat Khan**	**55-58**
11.	जैव विविधता संरक्षण एवं सूचना प्रौद्योगिकी : एक अध्ययन **(A Research Study on Biodiversity Conservation and Information Technology)**	हेमलता पारस	59–63
12.	तृतीय लिंगी समुदाय में यौन कुंठा एंव प्रेम संबंध : एक अध्ययन	जयश्री कुमावत, डॉ. प्रियंका यादव	64–69
13.	उपन्यास 'वह' : किन्नर समाज की असली जिंदगी	श्री लक्ष्मी. एस. आर	70–72
14.	**A Comprehensive Study of the National Education Policy 2020 in Relation to Development of the Spirit of Nationalism**	**Dr. Naresh Kumar**	**73-79**
15.	हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों का मनोविश्लेषण : पचपन खंभे लाल दीवारें एवं कठगुलाब के विशेष संदर्भ में	निर्मला, प्रो० (डॉ०) स्वर्णलता कदम	80–85

16.	समावेशी उच्च शिक्षा हेतु ई-कंटेंट का नवाचार : एक विश्लेषण	लेफ्टिनेंट डॉ. प्रमिला कबीर कुरेठिया	86–89
17.	भारतीय लोकतंत्र और Gen-Z : मतदाता व्यवहार और चुनावी प्रभाव का मूल्यांकन	Raushan Kumar	90-94
18.	वैश्वीकरण के युग में स्वामी विवेकानन्द की प्रासंगिकता	डॉ. रीजा. आर. एस	95–100
19.	मुण्डारी में शिक्षा : वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ	सिंगराय मुण्डा	101–106
20.	Contribution of Nepali Freedom Fighters in India's Independence Struggle : A Historical Review	Dr. Sk Jahangir Hossain	107-110
21.	स्वदेशी से स्वावलंबी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. सुमन माखीजा	111–114
22.	समकालीन हिंदी साहित्य और अखिलेश की सृजन दृष्टि	उपेन्द्र कुमार, प्रो० (डॉ०) स्वर्णलता कदम	115–119
23.	Precarious Bodies : A Study of Biopolitics and Gendered Health in *The Farming of Bones*	Devu V.	120-122
24.	भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता : बहुआयामी विश्लेषण	डॉ. यादव सिंह	123–128
25.	औपनिवेशिक बंगला नाट्य परंपरा में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक प्रतिरोध का स्वरूप	प्रो. संजय श्रीवास्तव, भगत नारायण महतो	129–134
26.	डिजिटल युग में लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण	डॉ. प्रवीन शर्मा	135–141
27.	तृतीय लिंगी समुदाय में यौन कुंठा एंव प्रेम संबंध : एक अध्ययन	जयश्री कुमावत, डॉ. प्रियंका यादव	142–146
28.	गीतांजलि श्री की कृतियाँ और सम्मान	दीपिका श्रीमाली	147–160

संपादकीय.....

ज्ञान, अनुसंधान और उत्तरदायी समाज की ओर

मानव सभ्यता का सम्पूर्ण विकास ज्ञान, जिज्ञासा और अनुसंधान की सतत प्रक्रिया का परिणाम है। ज्ञान मनुष्य को विचार करने की क्षमता प्रदान करता है, अनुसंधान उन विचारों को सत्य की कसौटी पर परखता है और उत्तरदायित्व उन निष्कर्षों को समाज के हित में उपयोग करने की प्रेरणा देता है। वर्तमान समय में जब विश्व तीव्र गति से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब ज्ञान और अनुसंधान की भूमिका पहले की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हो रहे निरंतर नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विस्तार, डिजिटल क्रांति, पर्यावरणीय चुनौतियाँ, वैश्विक स्वास्थ्य संकट, आर्थिक असमानताएँ तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन ऐसे अनेक प्रश्न हमारे सामने उपस्थित कर रहे हैं जिनका समाधान केवल तथ्यों के संग्रह से नहीं, बल्कि उत्तरदायी एवं समाजोपयोगी अनुसंधान से ही संभव है।

आज शोध का उद्देश्य केवल नई जानकारी प्राप्त करना या शैक्षणिक उपाधि अर्जित करना नहीं रह गया है। शोध का वास्तविक लक्ष्य समाज की समस्याओं को समझना, उनके कारणों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना तथा व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करना है। ऐसा अनुसंधान ही सार्थक माना जा सकता है जो मानव जीवन को बेहतर बनाने, सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करने, पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने तथा राष्ट्र के समग्र विकास में योगदान देने में सक्षम हो। इसलिए वर्तमान समय में अनुसंधान को प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और विश्वविद्यालयों की सीमाओं से बाहर निकालकर समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान–परम्परा सदैव ज्ञान को लोककल्याण का माध्यम मानती रही है। वेद, उपनिषद, बौद्ध और जैन दर्शन, आयुर्वेद, गणित, खगोल, व्याकरण, साहित्य तथा दर्शन के क्षेत्र में भारत ने विश्व को जो अमूल्य धरोहर प्रदान की है, वह केवल बौद्धिक उपलब्धि नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण का संदेश भी है। 'सा विद्या या विमुक्तये' तथा 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः' जैसे वैदिक सूत्र आज भी हमें यह प्रेरणा देते हैं कि ज्ञान का उद्देश्य मनुष्य को व्यापक दृष्टि, विवेक और उत्तरदायित्व से जोड़ना है। आधुनिक अनुसंधान को भी इसी मानवीय दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने अनुसंधान, नवाचार और बहुविषयक शिक्षा को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। यह नीति विद्यार्थियों और शोधार्थियों में जिज्ञासा, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा समस्या–समाधान की क्षमता विकसित करने पर बल देती है। साथ ही यह भारतीय ज्ञान–परम्परा और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय की बात करती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे विश्वविद्यालय, महाविद्यालय तथा शोध संस्थान ऐसी शोध संस्कृति विकसित करें जिसमें मौलिक चिंतन, नवाचार, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

वर्तमान युग में अनुसंधान का स्वरूप अत्यंत व्यापक और बहुआयामी हो गया है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, शिक्षा, साहित्य, प्रबंधन, चिकित्सा, कृषि, पर्यावरण, सूचना प्रौद्योगिकी, विधि तथा संस्कृति जैसे विविध क्षेत्रों में अंतर्विषयक शोध की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, ग्रामीण विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, सामाजिक समावेशन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नैतिक उपयोग तथा सतत विकास जैसे विषय किसी एक विषय की सीमाओं में नहीं समा सकते। इन चुनौतियों के समाधान के लिए विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के बीच संवाद, सहयोग और समन्वित अनुसंधान आवश्यक है।

अनुसंधान की गुणवत्ता केवल उसके निष्कर्षों से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसकी कार्यप्रणाली, विश्वसनीयता और नैतिकता से भी होती है। मौलिकता, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, पारदर्शिता और बौद्धिक ईमानदारी प्रत्येक शोधकर्ता का प्रथम दायित्व है। साहित्यिक चोरी, तथ्य–विकृति, अनैतिक उद्धरण तथा शोध में कृत्रिम

साधनों के दुरुपयोग जैसी प्रवृत्तियाँ अकादमिक जगत की विश्वसनीयता को प्रभावित करती हैं। इसलिए शोध की प्रत्येक प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। ज्ञान का विस्तार तभी सार्थक है जब वह सत्य और प्रमाण पर आधारित हो।

डिजिटल युग ने अनुसंधान के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। ऑनलाइन पुस्तकालय, मुक्त अभिगम, डिजिटल अभिलेखागार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा और मशीन लर्निंग जैसे साधनों ने शोध की प्रक्रिया को अधिक सरल, तीव्र और प्रभावी बनाया है। आज शोधकर्ता विश्व के किसी भी कोने से उपलब्ध ज्ञान–संसाधनों तक आसानी से पहुँच सकते हैं। किंतु इसके साथ ही सूचना की प्रामाणिकता, डेटा सुरक्षा, बौद्धिक संपदा अधिकार तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उत्तरदायी उपयोग जैसे नए प्रश्न भी सामने आए हैं। इसलिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग विवेकपूर्ण, नैतिक और उत्तरदायी ढंग से किया जाना चाहिए।

समाज और अनुसंधान का संबंध परस्पर पूरक है। समाज अनुसंधान को समस्याएँ और अनुभव प्रदान करता है, जबकि अनुसंधान समाज को समाधान, नवाचार और विकास की दिशा देता है। जब शोध समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से जुड़ता है, तभी वह व्यापक परिवर्तन का माध्यम बनता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, जल संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, रोजगार, संस्कृति, भाषा, पर्यावरण तथा ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान देश की प्रगति को नई दिशा दे सकता है। इसी कारण आज 'उत्तरदायी अनुसंधान' की अवधारणा विश्वभर में विशेष महत्त्व प्राप्त कर रही है।

शोध परिधि का उद्देश्य केवल शोध–लेखों का प्रकाशन नहीं, बल्कि एक ऐसी अकादमिक संस्कृति का निर्माण करना है जिसमें विचारों की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भारतीय ज्ञान–परम्परा, सामाजिक संवेदनशीलता और वैश्विक दृष्टि का समन्वय हो। यह शोध पत्रिका विभिन्न विषयों के विद्वानों, शिक्षकों, शोधार्थियों और चिंतकों को एक साझा मंच प्रदान करती है, जहाँ ज्ञान का आदान–प्रदान, नवीन विमर्श तथा रचनात्मक संवाद निरंतर आगे बढ़ सके। हमारा प्रयास है कि प्रत्येक अंक में प्रकाशित शोध–लेख न केवल अकादमिक गुणवत्ता की दृष्टि से उत्कृष्ट हों, बल्कि समाज और राष्ट्र की समकालीन आवश्यकताओं से भी गहराई से जुड़े हों।

वर्तमान अंक में विविध विषयों से संबंधित शोध–लेखों को स्थान दिया गया है। इनमें भारतीय ज्ञान–परम्परा, साहित्य, भाषा, शिक्षा, सामाजिक विज्ञान, संस्कृति, पर्यावरण, समकालीन विमर्श तथा अन्य अनेक विषयों पर गंभीर और मौलिक अध्ययन प्रस्तुत किए गए हैं। हमें विश्वास है कि ये शोध–लेख पाठकों को नए दृष्टिकोण प्रदान करेंगे, शोधार्थियों को नवीन अनुसंधान के लिए प्रेरित करेंगे तथा अकादमिक जगत में सार्थक संवाद को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होंगे।

अंततः यह स्मरणीय है कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह मानवता के हित में प्रयुक्त हो, अनुसंधान तभी सफल है जब वह समाज की समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करे, और शिक्षा तभी पूर्ण है जब वह उत्तरदायी, संवेदनशील तथा नैतिक नागरिकों का निर्माण करे। आइए, हम सब मिलकर ऐसी शोध–संस्कृति का विकास करें जो सत्य, मौलिकता, नवाचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल्यों पर आधारित हो। यही मार्ग भारत को ज्ञान–समृद्ध, आत्मनिर्भर, नवोन्मेषी और उत्तरदायी राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगा।

इसी विश्वास और संकल्प के साथ हम शोध परिधि का यह अंक अपने सम्मानित पाठकों, शोधार्थियों, शिक्षकों और विद्वानों को समर्पित करते हैं। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह अंक ज्ञान–विमर्श को नई दिशा प्रदान करेगा तथा अनुसंधान और उत्तरदायी समाज के निर्माण की यात्रा में एक सार्थक योगदान सिद्ध होगा।

–सम्पादक

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 09-14

Nepal–India Religious Relations and the Ramayana : A Bridge of Cultural and Spiritual Unity

Dr. Archana Dubey
Chief Librarian, St. Aloysius College Jabalpur, MP.

Abstract :

Nepal and India share one of the oldest and most enduring religious and cultural relationships in South Asia. Their connection is deeply rooted in shared traditions, spiritual beliefs, pilgrimage networks, and classical literature. Among the many cultural elements linking the two nations, the *Ramayana* occupies a central place as a symbol of religious unity and civilizational continuity. The sacred association of Ayodhya in India, the birthplace of Lord Rama, and Janakpur in Nepal, the birthplace of Goddess Sita, represents a unique spiritual and cultural bridge between the two countries. This article examines the historical foundation of Nepal–India religious relations, the significance of the *Ramayana* tradition, the role of pilgrimage and cultural exchange, and the contemporary relevance of these ties in strengthening regional harmony and cultural diplomacy. The study highlights how shared religious heritage continues to promote mutual understanding, peace, and cooperation between Nepal and India.

Keywords : Nepal, India, Ramayana, Religious Relations, Janakpur, Ayodhya, Cultural Heritage, Pilgrimage, Hinduism, Buddhism.

Introduction :

Nepal and India are connected not only by geographical proximity but also by centuries of cultural, religious, and spiritual interaction. Their relationship is rooted in a shared civilizational heritage, common traditions, and enduring religious values that have developed over millennia. Extending from the Himalayan region to the Gangetic plains, these historical and cultural linkages have fostered a strong bond between the people of both nations.

Religion has played a pivotal role in shaping the historical, social, and cultural identities of Nepal and India. Hinduism and Buddhism, which are deeply embedded in the heritage of both countries, have profoundly influenced their philosophy, literature, art, architecture, and social traditions. Shared pilgrimage networks, religious festivals, sacred scriptures, and spiritual institutions continue to strengthen people-to-people connections and promote mutual understanding across borders.

Among the numerous cultural and religious ties that unite Nepal and India, the Ramayana stands as one of the most significant symbols of their shared heritage. Beyond its religious importance, the epic embodies universal ideals of morality, righteousness, duty, and family values. The sacred bond between Lord Rama and Goddess Sita, associated respectively with Ayodhya and Janakpur, serves as a powerful representation of the enduring cultural and spiritual relationship between Nepal and India, reinforcing their historical unity and shared civilizational legacy.

Historical Background of Nepal–India Religious Relations :

The religious relationship between Nepal and India dates back to ancient times and is deeply rooted in their shared civilizational heritage. During the Vedic period, sages, scholars, saints, traders, and pilgrims moved freely across the Himalayan region and the Indian subcontinent, facilitating the exchange of religious ideas, philosophical traditions, educational practices, and cultural values. This continuous interaction helped shape a common spiritual landscape that transcended geographical boundaries.Sanskrit language, Vedic literature, and Hindu philosophical traditions exerted a profound influence on Nepalese society. Ancient inscriptions, manuscripts, temples, and archaeological remains found throughout Nepal testify to the strong cultural and religious connections with India. The Licchavi and Malla periods, in particular, witnessed the flourishing of Hindu and Buddhist learning, art, and architecture, many of which were inspired by broader South Asian traditions. At the same time, Nepal played a crucial role in preserving and promoting both Hinduism and Buddhism, serving as a center of religious scholarship and devotion.

One of the most significant links between the two countries is the birth of Lord Buddha at Lumbini in Nepal, a site revered by Buddhists worldwide. Lumbini, along with Buddhist pilgrimage centers in India such as Bodh Gaya, Sarnath, and Kushinagar, forms an interconnected sacred circuit that attracts millions of pilgrims every year. This shared Buddhist heritage represents a unique dimension of Nepal–India religious relations.

Similarly, Hindu religious traditions have created enduring bonds between the two nations. The sacred city of Janakpur in Nepal, believed to be the birthplace of Goddess Sita, and Ayodhya in India, the birthplace of Lord Rama, are connected through the narrative of the Ramayana. The marriage of Rama and Sita symbolizes not only a religious event but also the spiritual and cultural unity between Nepal and India. Festivals such as Vivah Panchami are celebrated jointly by devotees from both countries and continue to strengthen these historical ties.

Historically, Nepal was recognized as the world's only Hindu kingdom until 2008, which further reinforced its religious association with India. Shared customs, rituals, festivals, and social traditions—including Dashain (Dussehra), Tihar (Deepawali), Holi, Janmashtami, Shivaratri, and Chhath Puja—reflect the common cultural ethos of the two societies. The worship of common deities such as Lord

Shiva, Lord Vishnu, Goddess Durga, and Lord Buddha fosters a sense of spiritual kinship among the people of both nations.The open border between Nepal and India has facilitated uninterrupted religious interaction, pilgrimage, and cultural exchange for centuries. Thousands of devotees travel annually between major pilgrimage centers such as Pashupatinath, Muktinath, Janakpur, Lumbini, Kashi, Prayagraj, Ayodhya, and Bodh Gaya. Religious institutions, monasteries, temples, ashrams, and educational centers on both sides of the border have contributed significantly to preserving these ancient ties.

Furthermore, the close association of Nepal and India with the Himalayas, revered in Hindu and Buddhist traditions as the abode of divine powers and spiritual enlightenment, has added a unique sacred dimension to their relationship. These enduring religious connections continue to promote mutual respect, cultural cooperation, and people-to-people engagement, making religion one of the strongest foundations of Nepal–India relations.

Hinduism as a Shared Cultural Heritage :

Hinduism forms the strongest religious and cultural bond between Nepal and India. Both nations worship common deities such as Lord Shiva, Vishnu, Rama, Krishna, Durga, Hanuman, and Ganesha. Religious rituals, festivals, and traditions in both countries demonstrate remarkable similarities.The Pashupatinath Temple in Kathmandu is one of the most sacred Shiva temples in the world and attracts millions of Indian pilgrims annually. Similarly, Nepali devotees regularly visit important Indian pilgrimage sites such as Ayodhya, Kashi Vishwanath, Haridwar, Prayagraj, Mathura, Badrinath, and Kedarnath.

Major festivals such as Dashain/Dussehra, Diwali, Ram Navami, Holi, and Maha Shivaratri are celebrated with equal enthusiasm in Nepal and India. These celebrations reinforce social harmony, religious devotion, and cultural continuity.

Religious practices also influence family values, ethical conduct, and community life in both countries. The shared Hindu heritage has therefore become an essential foundation of Nepal–India friendship and cooperation.

The Ramayana and Nepal–India Relations :

The *Ramayana*, composed by Maharishi Valmiki, is one of the greatest epics of Indian civilization. Beyond being a religious scripture, it serves as a moral and philosophical guide emphasizing truth, duty, sacrifice, loyalty, and righteousness.

The significance of the *Ramayana* in Nepal–India relations is especially important because its central characters are connected to both countries. Lord Rama belongs to Ayodhya in India, while Goddess Sita was born in Janakpur in Nepal. Their sacred marriage symbolizes not only a divine union but also the cultural and spiritual unity between Nepal and India.

The ideals represented in the *Ramayana* continue to inspire millions of people. Lord Rama symbolizes justice, morality, discipline, and ideal leadership, while Goddess Sita represents purity, devotion, sacrifice, and patience. These values remain deeply embedded in the cultural consciousness of both societies.

Traditional performances such as *Ramleela*, recitations of the *Ramcharitmanas*, devotional songs, and public storytelling continue to popularize the teachings of the *Ramayana* across Nepal and India. Rural and urban communities alike preserve these traditions through festivals, educational activities, and religious gatherings.

One of the most famous verses associated with the *Ramayana* tradition states :

"Raghukulreetisadachaliaayi,
Pranjaye par vachannajayi."

This verse reflects the importance of truthfulness and commitment, values that remain respected in both Nepalese and Indian societies.

Janakpur and Ayodhya: Sacred Centers of Unity :

Janakpur, located in Nepal's Madhesh Province, is considered the birthplace of Goddess Sita and is one of the most important pilgrimage centers for Hindus. The famous Janaki Temple attracts thousands of pilgrims from Nepal and India every year.

The festival of *Vivah Panchami*, celebrating the marriage of Lord Rama and Goddess Sita, is observed with great devotion in Janakpur. Pilgrims and religious representatives from Ayodhya participate in the celebrations, symbolizing the enduring spiritual connection between the two countries.

Ayodhya, located in Uttar Pradesh, India, is revered as the birthplace of Lord Rama. The construction of the Ram Temple has further increased the city's religious and cultural significance. Thousands of Nepalese devotees visit Ayodhya annually, strengthening cross-border pilgrimage traditions.

The cultural and spiritual relationship between Janakpur and Ayodhya demonstrates how sacred geography contributes to international friendship, religious diplomacy, and regional cooperation.

Buddhism and Spiritual Connectivity :

Although Hinduism forms the strongest cultural link between Nepal and India, Buddhism also serves as an important spiritual bridge. Lord Buddha was born in Lumbini, Nepal, attained enlightenment in Bodh Gaya, delivered his first sermon in Sarnath, and attained Mahaparinirvana in Kushinagar, India.

These sacred Buddhist sites create an interconnected pilgrimage network between Nepal and India. Every year, Buddhist pilgrims from across the world visit these locations, contributing to cultural

exchange, tourism, and spiritual dialogue.The shared Buddhist heritage also encourages academic cooperation, archaeological research, and international tourism initiatives between the two countries.

Religious Tourism and Contemporary Relevance :

In the modern era, religious tourism has emerged as an important component of Nepal–India relations. Projects such as the *Ramayana Circuit* and the *Buddhist Circuit* aim to connect sacred sites, improve infrastructure, and promote cultural tourism.Religious tourism generates economic opportunities, strengthens local economies, and supports the preservation of cultural heritage. It also enhances mutual understanding and people-to-people contact between Nepal and India.

In addition, cultural diplomacy based on shared religious heritage contributes to regional peace and cooperation. Educational exchanges, spiritual conferences, cultural festivals, and pilgrimage programs continue to reinforce bilateral relations.

In a rapidly globalizing world, the shared spiritual traditions of Nepal and India offer an important model of cultural harmony and peaceful coexistence

Conclusion :

Nepal and India share an enduring religious and cultural relationship that is deeply embedded in their common civilizational heritage, spiritual traditions, and historical interactions. For centuries, Hinduism and Buddhism have served as powerful bridges connecting the people of both nations through shared pilgrimage networks, sacred texts, religious institutions, festivals, and cultural practices. These enduring ties have fostered a unique sense of spiritual kinship that transcends political boundaries.Among the many symbols of this shared heritage, the Ramayana occupies a place of exceptional significance. The sacred connection between Ayodhya, the birthplace of Lord Rama, and Janakpur, the birthplace of Goddess Sita, represents far more than a religious narrative; it embodies the values of righteousness, devotion, family harmony, and ethical living. This timeless bond continues to inspire millions of devotees and serves as a living testament to the deep cultural and spiritual unity between Nepal and India.

In the contemporary era, religious and cultural ties remain a cornerstone of Nepal–India relations, strengthening people-to-people connections, cultural diplomacy, pilgrimage tourism, and regional cooperation. Shared sacred sites, traditions, and values continue to nurture mutual understanding and goodwill between the two countries. As custodians of a rich and interconnected heritage, Nepal and India possess a unique opportunity to promote intercultural dialogue, peace, and sustainable cooperation. Their shared spiritual legacy will continue to serve as a powerful force for harmony, friendship, and brotherhood, not only between the two nations but across the broader South Asian region.

References :

- Valmiki. *Shrimad Valmiki Ramayana*. Gorakhpur : Gita Press.
- Tulsidas, Goswami. *Ramcharitmanas*. Gorakhpur : Gita Press.
- Basham, A. L. *The Wonder That Was India*. New Delhi : Rupa Publications, 2004.
- Thapar, Romila. *Early India: From the Origins to AD 1300*. New Delhi : Penguin Books, 2002.
- Jha, Hari Bansh. *Religious and Cultural Connectivity between Nepal and India*, 2017.
- Nepal Tourism Board. *Janakpur and Religious Tourism Resources*.
- UNESCO. *Lumbini: The Birthplace of Lord Buddha*.
- Ministry of Tourism, Government of India. *Swadesh Darshan – Ramayana Circuit*.
- Singh, N. K. *India–Nepal Cultural Relations*. New Delhi: Academic Foundation, 2018.
- Mishra, R. "Ramayana and Cultural Diplomacy in South Asia." *Journal of South Asian Studies*, 15(2), 2020, pp. 45–58.

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 15-18

मेघदूतम् में वर्णित नगर वैशिष्ट्य

डॉ. आरती सरोज
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उ0प्र0।

शोध–सारांश :

कविकुलगुरू महाकवि कालिदास सरस्वती के अमर पुत्र तथा सुरभारती के सनातन श्रृंगार है। केवल भारतीय साहित्य में ही नहीं, अपितु विश्व साहित्य में उनका अद्वितीय स्थान है। उनका काव्य साक्षात् त्रिवेणी है। 'मेघदूतम्' कालिदासकृंत एक अमर, अद्वितीय खण्डकाव्य है। इसे गीतिकाव्य, दूतकाव्य एवं संदेशकाव्य के नाम से भी जाना जाता है। इसमें कालिदास ने मेघ को संदेशवाहक बनाकर प्रकृति और मानवीय भावनाओं के बीच एक अनूठा तादात्म्य स्थापित किया है। कालिदास के इस काव्य में स्वर्गीय आनन्द है, भौतिक विलास है, दैवी दिव्यता है, मानवीय मनोज्ञता है और सात्विक सम्मोहन है। यह मात्र प्रेम की विरह गाथा ही नहीं, अपितु नगरों के माहात्म्य, प्राकृतिक सौन्दर्य और भारत के सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिदृश्य का जीवंत प्रमाण है।

कालिदास वस्तुतः संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। उनकी कृति में कवित्व की निर्मल और प्रबल धारा लोकपावनी गंगा की धारा है। भावों और कल्पनाओं की तीव्र धारा मनोज्ञ यमुना की धारा है तथा विविध कला ज्ञान और नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा सरस्वती की शुभ्र धारा है। कालिदासकृत मेघदूतम् ने नगरों का वैशिष्ट्य अद्वितीय है। इस काव्य–ग्रंथ में उज्जयिनी और अल्कापुरी का ही मुख्य रूप से वर्णन प्राप्त होता है। पूर्वमेघ में उत्तर की ओर जाने वाले मेघ के लिए उज्जयिनी का मार्ग यद्यपि सीधा नहीं पड़ता है, तथापि उससे वहाँ जाने के लिए यक्ष के द्वारा अनुरोध किया गया है, जिससे की मेघ वहाँ के गगनचुम्बी प्रासादों और पुर–नारियों की चंचल चितवन के अवलोकन से वंचित न रह जाये।

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां,
सौधोत्संगप्रणयविमुखो मा स्म भूरूज्जयिन्याः।
विद्युदामस्फुरितचकितैस्तत्र पौरौं.नानां,
लोलापौं.र्यदि न रमसे लोचनैर्वऽचितोऽसि।।[1]

उपरोक्त श्लोक से ज्ञात होता है कि उज्जयिनी के भवन अत्यन्त उत्कृष्ट एवं विकसित थे। नगरी के प्रासाद गगनचुम्बी थे। इससे यह भी यह भी स्पष्ट होता है। उज्जयिनी नगर विकसित था।

स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानां,
शेषैः पुण्यैर्ह्रतमिव दिवः कान्तिमत् खण्डमेकम्।[2]

उपरोक्त श्लोक में उज्जयिनी का वैभव प्रस्फुटित होता है। इस श्लोक में उज्जयिनी को चमकीले स्वर्ग–खण्ड की शोभा से युक्त बताया गया है।

उज्जयिनी अत्यन्त समृद्ध था। इस नगर की पण्यवीथिकाओं में विक्रयार्थ रखे हुए हीरे और मोती आदि को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि समुद्र जो कि रत्नों की खान है, उसमें मात्र जल ही शेष रह गया है। इस बात की सूचना अधोलिखित श्लोक से प्राप्त होती है।

हारांस्तारांस्तरलगुटिकान् कोटिशः शंखशुक्तीः,
शष्पश्यामान् मरकतमणीनुन्मयूखप्ररोहान्।
दृष्ट्वा यस्यां विपणिरचितान् विद्रुमाणां च भैंणन्,
संलक्ष्यन्ते सलिलनिधयस्तोयमात्रावशेषाः।।[3]

उज्जयिनी जैसे वैभवशाली नगर में प्रत्येक गवाक्ष से सुगन्धित धूप का निकलते रहना, घर–घर में मयूर का नृत्य करना तथा महलों का विभिन्न प्रकार के पुष्पों से सुवासित और ललनाओं के चरणराग से अंकित होना स्वाभाविक ही है। मेघ को अपनी यात्रा की थकान दूर करने का उपदेश देता हुआ यक्ष प्रकारान्तर से नगर के सौन्दर्य का ही वर्णन करता है। प्रस्तुत बात की सूचना इस श्लोक से प्राप्त होती है।

जालोद्गीर्णैरूपचितवपु केशसंस्कारधूपै–
र्बन्धुप्रीत्या भवनशिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः।
हर्म्येष्वस्याः कुसुमसुरभिष्वध्वखेदं नयेथाः,
लक्ष्मीं पश्यंल्ललितवनितापादरागाडि.तेषु।।[4]

उज्जयिनी के नगरों की विशिष्टता न केवल सांसारिक वैभव से परिपूर्ण है, प्रत्युत वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य भी अद्वितीय है। प्रातःकालीन सारसों का कलरव, खिले हुए कमलों से सुगंधित शिप्रा की वायु, मधुर सारस–संगीत से ओत–प्रोत उज्जयिनी नगरी शोभायमान होती है।

दीर्घकुर्वन्पटु मदकलं कूजितं सारसानां,
प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः।
यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिर्मैंणनुकूलः
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः।।[5]

इस प्रकार सांसारिक वैभव, प्राकृतिक सौन्दर्य और मानवीय भावनाओं को लेकर उज्जयिनी नगरी का बड़ा ही रमणीय चित्रण मेघदूतम् में प्राप्त होता है।

कालिदास ने उज्जयिनी के समान ही अलकापुरी का भी उदात्त और भव्य चित्र उपस्थित किया है। अधोलिखित श्लोक से अलकापुरी के उच्च प्रासादों एवं सात मंजिला भवनों से युक्त होने की सूचना प्राप्त होती है।

तस्योत्सैंणेप्रणयिन इव स्रस्तगैंणदुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना,
मुक्ताजालप्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्।।[6]

एक अन्य श्लोक में भी अलका नगरी के उच्च प्रासादों का बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। भित्तियों पर चित्र बने हुए हैं। संगीत के साथ मृदंग बजते रहते हैं और फर्श पारदर्शक मणियों से बना हुआ है। इस प्रकार वर्णन प्राप्त होता है।

विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः,
संगीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुैं.मभ्रं लिहाग्राः,
प्रसादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः।।[7]

अलका नगरी में सदा ही सब ऋतुएं पायी जाती हैं। तभी वहाँ की स्त्रियाँ स्वयं को विभिन्न ऋतुओं में खिलने वाले विविध पुष्पों से अलंकृत करती है। इस भाव की सूचना अधोलिखित श्लोक में द्रष्टव्य है।

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं,
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।
चूड़ापाशे नवकुरबकं चारू कर्णे शिरीषं,
सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।।[8]

अलका नगरी की रमणियों को अलंकारों से भूषित न बताकर पुष्पों से ही उनके भूषित होने का वर्णन कर कालिदास ने उनके अत्यधिक सौकुमार्य एवं विलासवती होने की व्यंजना की है।

महाकवि कालिदास ने अलका नगरी की प्राकृतिक विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला है। प्रस्तुत श्लोक से अलकापुरी के उदात्त एवं समृद्ध होने का चित्रण प्राप्त होता है।

यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा,
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभासवत्कलापा
नित्यज्योस्नाः प्रतिहततमोवृतितरम्याः प्रदोषाः।।[9]

इस प्रकार अलका नगरी और उज्जयिनी नगरी का अत्यन्त चित्ताकर्षक निरूपण 'मेघदूतम्' में प्राप्त होता है। दोनों ही नगरी में अभिसारिकाओं, अप्सराओं और गणिकाओं का भी चित्रण प्राप्त होता है। पशुपति भगवान शिव की पूजा का विधान दोनों ही नगरों में प्राप्त होता है। अलका एवं उज्जयिनी नगरी लगभग एक समान विकसित अवस्था में विद्यमान थी। दोनों में ही गगनचुम्बी भवनों, प्रासादों, प्राकृतिक संसाधनों से समन्वित अत्यन्त उच्च कोटि की समृद्धि पुष्पित एवं पल्लवित होती दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मेघदूतम का नगर वैशिष्ट्य विकास के चरमोत्कर्ष पर था। यह ग्रन्थ अपने विशिष्ट गुणों के कारण ही गौरवान्वित है। अमोघराघव के रचयिता दिवाकर ने कालिदास की जो प्रशंसा की है, वह 'मेघदूतम्' पर अक्षरशः घटित होती है।

रम्या श्लेषवती प्रसादमधुरा श्रृंगारसैंणेज्वला
चाटूक्तैरखिलप्रियैरहरहस्सम्मोहयन्ती मनः।
लीलान्यस्तपदप्रचाररचना सद्वर्णसंशोभिता,
भाति श्रीमति कालिदास कविता कान्तेव तान्ते रता।।[10]

इस प्रकार यह ग्रन्थ अपनी लोकप्रियता के कारण सभी के कण्ठ का हार बन गया है।

सन्दर्भ सूची :

1. मेघदूतम (पूर्वमेघः), श्लोक 28, पृ0 59।
2. मेघ0, श्लोक 31, पृ0 65।

3. मेघ0, श्लोक 33, पृ0 69।
4. मेघ0, श्लोक 36, पृ0 75।
5. मेघ0, श्लोक 32, पृ0 67।
6. मेघ0, श्लोक 67, पृ0 142।
7. मेघ0, (उत्तरभागः), श्लोक 1, पृ0 43।
8. मेघ0, श्लोक 2, पृ0 45।
9. मेघ0, श्लोक 3, पृ0 48।
10. मेघ0, श्लोक 5–15।
11. पूर्वमेघ, श्री तारिणीश झा, रामनारायण लाल एण्ड कं0 प्रकाशक, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण, 2001।
12. मेघदूतम् (उत्तरभागः) डॉ0 राजेश्वर प्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2012।

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 19-24

हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव : एक अध्ययन

प्रोफेसर चन्द्रशेखर सिंह
समाज कार्य विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

सार :

हिमालयी क्षेत्र दक्षिण एशिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक क्षेत्र है, जहाँ हाल के वर्षों में विदेशी शक्तियों का प्रभाव तेजी से बढ़ा है। यह अध्ययन हिमालयी क्षेत्रों में बाहरी शक्तियों की बढ़ती भूमिका का सामरिक, आर्थिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से चीन की सक्रियता, उसकी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) जैसी परियोजनाओं, तथा भारत, नेपाल और भूटान के साथ उसके संबंधों का विश्लेषण इस अध्ययन का मुख्य केंद्र है। यह शोध गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों 'जैसे पुस्तकों, शोध लेखों, सरकारी रिपोर्टों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के दस्तावेजों' का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विदेशी निवेश और बुनियादी ढाँचा विकास हिमालयी देशों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करते हैं, किंतु इसके साथ ही राजनीतिक हस्तक्षेप, आर्थिक निर्भरता और सामरिक असंतुलन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त, शोध यह भी दर्शाता है कि विकास परियोजनाओं और बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा का हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, जिससे जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियर पिघलने और जैव विविधता पर खतरा बढ़ रहा है। सामाजिक–सांस्कृतिक स्तर पर भी स्थानीय समुदायों की पहचान और पारंपरिक जीवनशैली पर बाहरी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अंततः, यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों का बढ़ता प्रभाव एक द्वैध (Dual) प्रकृति का है –जहाँ यह विकास और सहयोग के अवसर प्रदान करता है, वहीं यह क्षेत्रीय अस्थिरता और पर्यावरणीय संकट को भी बढ़ाता है। इसलिए, संतुलित कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग और सतत विकास की नीतियों को अपनाना आवश्यक है, ताकि हिमालयी क्षेत्र में स्थिरता और शांति सुनिश्चित की जा सके।

प्रस्तावना :

हिमालय विश्व की सबसे महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, जो न केवल अपनी भौगोलिक विशालता और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है, बल्कि अपनी रणनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता के कारण भी वैश्विक स्तर पर विशेष स्थान रखता है। यह क्षेत्र भारत, नेपाल, भूटान, चीन (विशेषकर तिब्बत क्षेत्र) तथा पाकिस्तान तक विस्तृत है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हिमालय न केवल प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध

है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक केंद्र भी बन चुका है। हिमालय को अक्सर "एशिया का जल स्त्रोत" (Water Tower of Asia) कहा जाता है, क्योंकि यहाँ से निकलने वाली प्रमुख नदियाँ 'गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु' एशिया की विशाल आबादी के जीवन और आजीविका का आधार हैं। इसके अतिरिक्त, हिमालय एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच के रूप में भी कार्य करता है, विशेषकर भारत के लिए, जो इसे सामरिक दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में हिमालयी क्षेत्र में विदेशी शक्तियों की बढ़ती रुचि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विशेष रूप से चीन ने इस क्षेत्र में अपने प्रभाव को तीव्र गति से बढ़ाया है, जो उसकी विस्तारवादी नीतियों और आर्थिक रणनीतियों का हिस्सा है। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से चीन नेपाल, पाकिस्तान और अन्य पड़ोसी क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचा विकास और निवेश के जरिए अपनी उपस्थिति मजबूत कर रहा है। इसके साथ ही संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देश भी कूटनीतिक, आर्थिक और सामरिक माध्यमों से इस क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

हिमालयी क्षेत्र में विदेशी शक्तियों का प्रभाव बहुआयामी है। एक ओर यह विकास परियोजनाओं, निवेश और बुनियादी ढाँचे के विस्तार के माध्यम से आर्थिक अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर यह राजनीतिक हस्तक्षेप, आर्थिक निर्भरता और क्षेत्रीय असंतुलन जैसी समस्याओं को भी जन्म देता है। उदाहरण के लिए, डोकलाम विवाद और गलवान घाटी संघर्ष जैसे घटनाक्रम इस क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और तनाव को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, हिमालयी क्षेत्रों में बढ़ती विकास गतिविधियाँ और विदेशी निवेश पर्यावरणीय दृष्टि से भी चिंता का विषय हैं। बड़े बांध, सड़क निर्माण और खनन परियोजनाएँ हिमालय के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर रही हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों के पिघलने और जैव विविधता के ह्रास जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी विदेशी प्रभाव के परिणाम देखे जा सकते हैं। वैश्वीकरण, पर्यटन और बाहरी निवेश के कारण स्थानीय समुदायों की पारंपरिक जीवनशैली, संस्कृति और पहचान में परिवर्तन हो रहा है। इससे एक ओर सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ता है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक संरचनाओं पर दबाव भी पड़ता है। इस प्रकार, हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों का बढ़ता प्रभाव एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो अवसरों और चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन इसी प्रभाव का समग्र विश्लेषण करने का प्रयास करता है, ताकि क्षेत्रीय स्थिरता, राष्ट्रीय सुरक्षा और सतत विकास के संदर्भ में उचित नीतिगत सुझाव दिए जा सकें।

हिमालय विश्व की सबसे युवा और विशाल पर्वतमालाओं में से एक है, जो दक्षिण एशिया की भौगोलिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संरचना को गहराई से प्रभावित करता है। यह क्षेत्र भारत, नेपाल, भूटान, चीन (विशेषकर तिब्बत क्षेत्र), और पाकिस्तान तक फैला हुआ है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हिमालय न केवल प्राकृतिक संसाधनों का भंडार है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक (Geopolitical) क्षेत्र भी है।

हिमालय का वैश्विक महत्व :

हिमालय को "एशिया का जल स्त्रोत" (Water Tower of Asia) कहा जाता है, क्योंकि यहाँ से गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु जैसी प्रमुख नदियाँ निकलती हैं। ये नदियाँ करोड़ों लोगों की जीवनरेखा हैं। इसके अतिरिक्त, हिमालय प्राकृतिक सुरक्षा कवच (Natural Barrier) के रूप में कार्य करता है, विशेषकर भारत के लिए।

विदेशी शक्तियों की रूचि के कारण :

हिमालयी क्षेत्र में विदेशी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव के पीछे कई प्रमुख कारण हैं :

(क) सामरिक (Strategic) कारण :

- यह क्षेत्र भारत और चीन जैसे उभरते शक्तिशाली देशों के बीच स्थित है।
- सीमा विवाद और सुरक्षा की दृष्टि से यह अत्यंत संवेदनशील है।
- गलवान घाटी संघर्ष जैसे घटनाक्रम इसकी संवेदनशीलता को दर्शाते हैं।

(ख) आर्थिक (Economic) कारण :

- प्राकृतिक संसाधनों (जल, खनिज, वन) की प्रचुरता।
- जलविद्युत (Hydropower) की अपार संभावनाएँ।
- बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) जैसी परियोजनाएँ।

(ग) भू-राजनीतिक (Geopolitical) प्रतिस्पर्धा :

- चीन, अमेरिका और अन्य शक्तियाँ अपने–अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करना चाहती हैं।
- छोटे हिमालयी देशों (नेपाल, भूटान) को कूटनीतिक रूप से प्रभावित करना।

प्रभाव के स्वरूप :

विदेशी शक्तियों का प्रभाव कई रूपों में देखने को मिलता है :

(i) बुनियादी ढाँचा विकास (Infrastructure Development) :-

चीन द्वारा सड़कों, रेलमार्गों और हवाई अड्डों का निर्माण तेजी से किया जा रहा है, जिससे उसकी सैन्य और आर्थिक पहुँच बढ़ रही है।

(ii) कूटनीतिक और राजनीतिक हस्तक्षेप :-

नेपाल जैसे देशों में विभिन्न शक्तियों का प्रभाव राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करता है।

(iii) आर्थिक निवेश और ऋण नीति :-

विदेशी निवेश के माध्यम से विकास परियोजनाएँ चलाई जाती हैं, लेकिन इससे आर्थिक निर्भरता भी उत्पन्न होती है।

(iv) सांस्कृतिक और वैचारिक प्रभाव :-

वैश्वीकरण, पर्यटन और मीडिया के माध्यम से स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली में परिवर्तन हो रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

हिमालयी क्षेत्र में विदेशी प्रभाव कोई नई घटना नहीं है। औपनिवेशिक काल में ब्रिटेन और रूस के बीच "ग्रेट गेम" (Great Game) के दौरान इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा देखी गई थी। वर्तमान में यह प्रतिस्पर्धा नए रूप में चीन और पश्चिमी देशों के बीच दिखाई देती है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य :

आज के समय में हिमालयी क्षेत्र में विदेशी शक्तियों का प्रभाव और भी जटिल हो गया है :

- चीन का तेजी से बढ़ता बुनियादी ढाँचा और सैन्य विस्तार।
- अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों की रणनीतिक साझेदारियाँ।
- भारत की "Neighbourhood First Policy" के माध्यम से संतुलन बनाने की कोशिश।

अध्ययन की प्रासंगिकता :

हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि :

- यह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है।
- क्षेत्रीय स्थिरता और शांति पर इसका प्रभाव पड़ता है।
- पर्यावरण और सतत विकास के लिए यह चुनौती प्रस्तुत करता है।
- छोटे देशों की संप्रभुता और स्वतंत्र नीति निर्माण प्रभावित होती है।

हिमालयी क्षेत्र आज वैश्विक शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा का केंद्र बन चुका है। विदेशी शक्तियों का बढ़ता प्रभाव इस क्षेत्र में विकास, निवेश और सहयोग के अवसर प्रदान करता है, लेकिन साथ ही यह राजनीतिक हस्तक्षेप, आर्थिक निर्भरता और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है।

साहित्यिक समीक्षा :

हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में :

हिमालयी क्षेत्र दक्षिण एशिया का एक अत्यंत संवेदनशील और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी वैश्विक शक्तियों के आकर्षण का केंद्र रहा है। विभिन्न विद्वानों ने हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों के प्रभाव, उनके रणनीतिक हितों, स्थानीय राजनीति पर प्रभाव तथा क्षेत्रीय सुरक्षा के आयामों का विश्लेषण किया है। प्रस्तुत साहित्यिक समीक्षा में इन्हीं प्रमुख अध्ययनों और विचारों का समालोचनात्मक अवलोकन किया गया है।

हिमालयी क्षेत्र की सामरिक महत्ता पर अध्ययन :

कई विद्वानों ने हिमालय को दक्षिण एशिया की सामरिक सुरक्षा का आधार माना है। अलास्टेयर लैम्ब ने अपने अध्ययन में बताया कि हिमालय केवल प्राकृतिक सीमा नहीं है, बल्कि यह एशियाई शक्ति संतुलन का केंद्र है। उनके अनुसार भारत और चीन के बीच सीमा विवादों ने हिमालयी क्षेत्र को एक संवेदनशील सामरिक क्षेत्र बना दिया है।

इसी प्रकार जॉन गार्वर ने भारत–चीन संबंधों के संदर्भ में हिमालयी क्षेत्रों के महत्त्व को स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा कि चीन की सीमा नीति और बुनियादी ढाँचा विकास की रणनीति ने इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है।

चीन के बढ़ते प्रभाव पर साहित्य :

हाल के वर्षों में चीन के बढ़ते प्रभाव पर अनेक शोध हुए हैं। डेविड शम्बॉ ने अपनी कृति में चीन की विदेश नीति और पड़ोसी क्षेत्रों में उसकी बढ़ती उपस्थिति का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार चीन आर्थिक सहायता, बुनियादी ढाँचा विकास और कूटनीतिक सक्रियता के माध्यम से हिमालयी देशों में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव पर आधारित अध्ययनों में यह पाया गया है कि नेपाल और पाकिस्तान जैसे देशों में चीन का निवेश आर्थिक अवसरों के साथ–साथ रणनीतिक निर्भरता भी बढ़ा रहा है।

ब्रहमा चेलानी ने अपनी रचनाओं में हिमालयी क्षेत्र में चीन की "ऋण कूटनीति" (Debt Diplomacy) की आलोचना की है। उनके अनुसार चीन आर्थिक निवेश के माध्यम से छोटे पड़ोसी देशों की नीतियों को प्रभावित कर रहा है।

नेपाल और भूटान में विदेशी प्रभाव पर अध्ययन :

नेपाल और भूटान जैसे छोटे हिमालयी देशों में विदेशी शक्तियों के प्रभाव पर भी अनेक अध्ययन हुए हैं।

एस.डी. मुनी ने नेपाल की राजनीति में भारत और चीन की भूमिका का विश्लेषण करते हुए बताया कि नेपाल दोनों देशों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

भूटान के संदर्भ में डोकलाम विवाद पर आधारित अध्ययनों में पाया गया कि चीन और भारत की प्रतिस्पर्धा ने भूटान की विदेश नीति को प्रभावित किया है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अध्ययन :

हिमालयी क्षेत्र में विदेशी शक्तियों के प्रभाव को पर्यावरणीय संदर्भ में भी देखा गया है। International Centre for Integrated Mountain Development की रिपोर्टों में कहा गया है कि बुनियादी ढाँचा विकास, बांध परियोजनाएँ और सड़क निर्माण हिमालयी पारिस्थितिकी पर दबाव डाल रहे हैं।

वंदना शिवा ने हिमालयी क्षेत्रों में बड़े विकास परियोजनाओं के पर्यावरणीय प्रभावों पर चिंता व्यक्त की है। उनके अनुसार बाहरी शक्तियों के आर्थिक हित स्थानीय पर्यावरण और समुदायों के लिए संकट उत्पन्न कर रहे हैं।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव पर अध्ययन :

कुछ समाजशास्त्रीय अध्ययनों में यह पाया गया है कि विदेशी निवेश, पर्यटन और वैश्वीकरण के कारण हिमालयी क्षेत्रों की सांस्कृतिक संरचना प्रभावित हो रही है। अरजुन अप्पादुरई के वैश्वीकरण संबंधी सिद्धांतों के आधार पर यह समझा जा सकता है कि बाहरी प्रभाव स्थानीय पहचान, जीवनशैली और परंपराओं में परिवर्तन ला रहे हैं।

शोध अंतराल :

1. अधिकांश अध्ययन केवल सामरिक और राजनीतिक पहलुओं पर केंद्रित हैं।
2. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों पर सीमित शोध हुआ है।
3. स्थानीय समुदायों की भागीदारी और अनुभवों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया है।
4. भारत के दृष्टिकोण से समग्र बहुआयामी अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं।

साहित्यिक समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों का बढ़ता प्रभाव बहुआयामी है। विभिन्न विद्वानों ने सामरिक प्रतिस्पर्धा, आर्थिक निवेश, राजनीतिक प्रभाव और पर्यावरणीय चुनौतियों का विश्लेषण किया है। फिर भी, स्थानीय समुदायों पर इसके सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों और भारत की नीति संबंधी चुनौतियों पर अधिक गहन शोध की आवश्यकता है। यही इस अध्ययन की प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

निष्कर्ष :

हिमालयी क्षेत्र केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं है, बल्कि यह भारत की सुरक्षा, कूटनीति, पर्यावरण और आर्थिक स्थिरता का आधार स्तंभ है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिमालय भारत के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच (Natural Barrier) के रूप में कार्य करता है, जिसने ऐतिहासिक रूप से बाहरी आक्रमणों को सीमित किया है। वर्तमान समय में भी यह क्षेत्र भारत, चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के बीच सामरिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र बना हुआ है। हिमालय की सीमाएँ 'विशेषकर लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सियाचिन क्षेत्र' रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील हैं। इन क्षेत्रों में सैन्य तैनाती, अवसंरचना विकास (सड़क, हवाई पट्टी आदि) और निगरानी तंत्र की मजबूती भारत की सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। सीमा विवाद, विशेषकर भारत–चीन संबंधों में,

हिमालय की सामरिक महत्ता को और अधिक उजागर करते हैं। इसके अतिरिक्त, हिमालय जल संसाधनों का प्रमुख स्रोत है, जिससे निकलने वाली नदियाँ (जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र) करोड़ों लोगों के जीवन और कृषि को प्रभावित करती हैं। इस कारण, जल सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन भी इस क्षेत्र की सामरिक महत्ता को बढ़ाते हैं। जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों का पिघलना और पर्यावरणीय असंतुलन भविष्य में नई सुरक्षा चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि हिमालय केवल सैन्य दृष्टि से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और कूटनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। नेपाल, भूटान और तिब्बत जैसे क्षेत्र भारत की 'बफर जोन' नीति और क्षेत्रीय स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना भारत की सामरिक रणनीति का अभिन्न अंग है। अंततः, यह निष्कर्ष निकलता है कि हिमालयी क्षेत्र की सामरिक महत्ता बहुआयामी हैकृयह सुरक्षा, संसाधन, पर्यावरण और कूटनीति सभी क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका निभाता है। इसलिए, भारत को इस क्षेत्र में संतुलित विकास, पर्यावरण संरक्षण और मजबूत सैन्य तैयारी के साथ–साथ पड़ोसी देशों के साथ सहयोगात्मक नीति अपनानी चाहिए, ताकि दीर्घकालिक शांति और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। हिमालयी क्षेत्र भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र है, जो प्राकृतिक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है। यह क्षेत्र भारत की सीमाओं को सुरक्षित रखने के साथ–साथ चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के साथ रणनीतिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सियाचिन जैसे क्षेत्र सैन्य दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील हैं। हिमालय केवल सुरक्षा ही नहीं, बल्कि जल संसाधनों का प्रमुख स्रोत भी है, जहाँ से गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियाँ निकलती हैं, जो देश की कृषि और जीवन–रेखा हैं। साथ ही, यह क्षेत्र पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण है, लेकिन जलवायु परिवर्तन और ग्लेशियरों के पिघलने से नई चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इसके अतिरिक्त, नेपाल, भूटान जैसे पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध भी हिमालय की सामरिक महत्ता को बढ़ाते हैं। इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि हिमालयी क्षेत्र की महत्ता बहुआयामी है– सुरक्षा, पर्यावरण, जल संसाधन और कूटनीति सभी में इसकी निर्णायक भूमिका है।

संदर्भ :

हिमालयी क्षेत्र की सामरिक महत्ता पर अध्ययन के लिए निम्नलिखित प्रमुख संदर्भ उपयोगी हैं :

Maxwell, Neville. (1970). India's China War. London: Jonathan Cape.

1. Lamb, Alastair. (1966). The McMahon Line: A Study in the Relations Between India, China and Tibet. London: Routledge & Kegan Paul.
2. Dalvi, J. P.. (1969). Himalayan Blunder. New Delhi: Thacker & Company.
3. Jain, B. M.. (2016). Geopolitics of South Asia. New Delhi: Pearson.
4. Ministry of Defence. (2023). Annual Report 2022–23. Government of India.
5. Ministry of External Affairs. (2023). Annual Report 2022–23. Government of India.
6. Institute for Defence Studies and Analyses. (2022). Strategic perspectives on Himalayan security. New Delhi.
7. Economic and Political Weekly. (Various issues). Articles on Himalayan geopolitics.
8. United Nations Environment Programme. (2019). The Hindu Kush Himalaya Assessment. Nairobi: UNEP.
9. World Bank. (2020). Climate risk and adaptation in South Asia. Washington, DC.

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 25-28

साठोत्तर हिंदी कहानियों में चित्रित एकल माताओं की समस्याएं

डॉ. बी. मल्लिका
अतिथि शिक्षिका
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधीग्राम (तमिलनाडु)

प्रस्तावना :–

वर्तमान युग में नारी सुशिक्षित, आर्थिक ढंग से आत्मनिर्भर और पूर्णतः जागरूक हो गई है। वह पारंपरिक सामाजिक मानदंडों का लबादा उतार चुकी है और अब तक पारंपरिक पट्टी पर दौड़ने को तैयार नहीं है। स्त्री वर्तमान समाज और समय के साथ अपने सम और विषय संबंधों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। पुराने मूल्यों और मर्यादाओं को झिटक कर उससे अलग हो जाना चाहती है। क्योंकि इन्हीं मिथकों की प्रतिष्ठा में स्त्री की न जाने कितनी पीढ़ियां होम हुई है। अपनी छवि के इस बने बनाये चौखटे तोड़कर बाहर निकालने की छटपटाहट युगों से उसके अंदर चली आ रही है। (1) फलतः वह बाल–बच्चों होने के बाद अलग घर बसाकर बच्चों के लिए जीने लगती है।

एकल मां बनने का कुछ कारण :–

- विधवा
- पति पत्नी के बीच में तनाव, मनमुड़ाव, विसंगतियों, कामकाज के कारण अलग रहने वाली।
- पारिवारिक समस्याओं से परिवार वालों से बिछूड़ने वाली नारी–पितृसत्तात्मक मर्यादाओं को तोड़कर स्त्री अपने जीवन अलग जीना चाहती है।
- छोटे–मोटे–समस्याओं को समझौता और सामने करने तैयार नहीं तो वह अलग रहने लगती है।

आर्थिक समस्याएं :–

एकल माँ की समस्याओं में आर्थिक रूप में वह बहुत शोषित है। क्योंकि खुद का ख्याल ओंर बच्चों को लालन पालन से लेकर भविष्य की जिंदगी तक उनका कमाना और पैसा जोड़ना सब का जिम्मेदारी वह एक ही है। उनकी परिवार में संपत्ति मिलेगी तो अच्छा है। नहीं तो वह बहुत मेहनत और कठिन जीवन जीना पड़ता है।

परिवार में पिता के अनुपस्थिति में मां पर घर चलाने और बच्चों के शिक्षा–दीक्षा का पूरा वित्तीय भार आ जाता है। बच्चों के पढ़ाई से लेकर शादी तक अकेली ही आर्थिक जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। रोजगार की तलाश में भी मेहनत करनी पड़ती है। आजीविका कमाने के लिए इन महिलाओं को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। इस चित्रण हम हिंदी कहानी में देख सकते हैं।

मेहरुन्निसा परवेज की 'त्यौहार' कहानी की अम्मा एकल माँ है। विधवा मां त्यौहार का दिन बेटी के लिए एक फ्रॉक तक भी खरीद नहीं सकती है। अपनी पुराने साड़ी काटकर उसके लिए कपड़ा सिलवाती है। 'एक

फ्राक के लिए पूरी साड़ी खराब करोगी? '...जैसे उन्होंने गरीब होना कबूल कर लिया था और पहली बार जकात लेने वालों की लाइन में अपने–आपको खड़ा पा रही थी।'(2)

'एक मां के संघर्ष की कहानी' गृह लक्ष्मी रेनू गंभीर की कहानी है। इस कहानी में मालिनी की पति महेश है। वह बुरी आदत से शिकार होकर पत्नी को मारपीट करता है। मंगलसूत्र तक छीनकर दारू पीता है। उनकी मेहनत की पैसा ना देने पर घर से निकाल देता हैं। सुप्रिया नामक वेश्या को घर बिठाता है। मालिनी को घर से निकाल देता है। वह अपनी दोनों बच्चों और सुमित और निशा के साथ भाई और भाभी के घर जाती है। वहां भी अपमानित सामना करती है। एक दिन रात के लिए भाभी रहने देती है। दूसरा दिन वह खुद और बच्चों को रोज रोटी और घर की तलाश करना पड़ती है। 'एक आश्रम वाली की मदद से वहां बच्चों के साथ जीवन चलने लगती है। 20 साल बाद वापस आया पति से अब पूछती है कि क्या कहा एक साथ रहेंगे? क्या तुम मेरे बच्चों को बचपन का लोटा पाओगी? जो गरीब और दुख में इन बच्चों को भूखे प्यासे गुजरा। एक पति और एक पिता होने का तुमने उसी दिन को खो दिया था ... ।'(3)

पारिवारिक समस्याएं :-

अकेली स्त्री बाल बच्चों के लिए बहुत मेहनत करके परिवार को संभालती है। एक तरफ उनके लिए आर्थिक समस्या दूसरी तरफ भविष्य के चिंता हमेशा सताती है। अमीर हो या गरीब हो बच्चों के लिए वह जीना चाहती है। बड़े होने के बाद माँ को भार समझकर धन दौलत को छीनकर आश्रम में छोड़ने वाला बच्चों का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा की 'अपना अपना आकाश' कहानी में देखते हैं। एकल मॉ कैलाश देवी तीनों बेटों को पालन–पोषण के लिए कठिन परिश्रम और संघर्ष करती है। उनके कठिन परिश्रम और संघर्ष के कारण संतान उच्च स्थिति पर पहुंचते हैं। तीनों बच्चे धीरे–धीरे धोखे से मां का सारे संपत्ति छीन लेते हैं और मां को आश्रम में छोड़ देते हैं। बच्चों के लिए जीने वाली एकल माँ अंत में परिवार वालों से ठुकरा देती है।

किसी न किसी कारणवश अपने बच्चों के साथ रहने वाली महिला को उसका मायके में ही अस्वीकार कर दिया जाने की स्थिति हमें 'एक मां की संघर्ष की कहानी' में भाभी–भाई से घर से निकाल दिया मालिनी को देख सकते हैं। वैसा एकल माँ सगे भाई बहन का शादी, रिश्तेदारों का व्यवहार जैसे अनेक कारणों से अपने माईके घर में ही घृणा भाव सहनकर जीती है। और वह असुरक्षित महसूस करती है।

मेहरुन्निसा परवेज की 'ओस में डूबा गुलाब' कहानी में पत्नी को अफसर पति गांव में छोड़कर शहर में किसी स्त्री के साथ अवैध संबंध जोड़ता है। और गांव में रहने वाला परिवार का नजर अंदाज करते छोड़ देता हैं। पत्नी बच्चों को भविष्य के बारे में चिंता होती है और पड़ोसी के देवर के घर में नौकरानी की तरफ काम करके बाल बच्चों का पालन पोषण करती है।

'खुलकर खाने को डर लगता .. मनचाही साग बनने में दुबारा मांगने का साहस नहीं ....किसी दिन ज्यादा साग खा जाती तो बुआ कह देती, 'अपने आपकी तरह ज्यादा साग खाने का आदत है।' .....बड़ी लाट साहब की बेटी है, रोज कपड़े उतारती है।'(4)

इस तरह एकल माँ माइके हो ससुराल वाले हो दोनों तरफ से अस्वीकार करके खुद का रास्ता नदी की तरफ बहना पड़ती है। शिव मूर्ति की कहानी 'सिरि उपमा जोग' में पति दूसरा शादी करता है। दोनों बच्चों कमल और लालू को छोड़कर शहर में रहने लगता है। बच्चों का पढ़ाई से रोज के रोटी तक सब में बहुत परेशानी और मेहनत करके जीना पड़ती है। बच्चों को बहुत परिश्रम और संघर्ष से मां अकेली पालती है। तब बेटी की शादी

दय होती है तब पति के नाम विवाह पत्रिका के मुद्रण करना संबंध को लेकर वह पति से बहुत विनम्र करती है। पिता के नाम नहीं होने से गांव वाला अकेली मां का बच्चा का साथ शादी करने अस्वीकार करते हुए मना कर लेते हैं। "लाल दस महीने का था, तब आप आखरी बार गांव आए थे। उसे बात को दस साल होने जा रहे हैं। इधर दो–तीन साल से आपके चाचा जी ने हम लोगों का सताना शुरू कर दिया हैं। किसी न किसी बहाने को बहाने से हमको, लालू को और कभी–कभी कमला को भी मारते–पीटते रहते हैं। जानते हैं कि आपने हम लोगों को छोड़ दिया है, इसलिए गांव भर में कहते हैं कि 'लालू' आपका बेटा नहीं है।"(5)

सामाजिक समस्याएं :–

एकल माताओं को अक्सर समाज द्वारा संदेह की नजर से देखा जाता है। उसके चरित्र पर सवाल उठाए जाते हैं। और उनके अकेलेपन का फायदा उठाने की कोशिश की जाती है। उन्हें लगातार अपने अस्तित्व और निर्णयों को साबित करने के लिए मजबूर किया जाता है। समाज में 'बिन बाप का' जैसे ताने बच्चों और माँ दोनों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा आघात करते हैं। रहने के किराए घर से नौकरी देने दफ्तर तक उनके लिए नीचे नजर से ही दुनिया देखती है। 'अकेली स्त्री' कहकर मदद नहीं मिलता, ऐसा मदद मिलने से भी मदद करने वाला आदमी के नाम बदनाम हो जाता है। वह इस समाज में अपने बच्चों को एक अलग पहचान बनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। स्कूल में दाखिल से लेकर सरकारी फॉर्म भरने तक हर जगह पिता का नाम ही पूछते हैं।

अनामिका की 'बिना दरवाजे के घर' में एकल मां के पास अपना घर नहीं होता। वह या तो मायके ही दया पर होती है या किराए के मकान में। जहां उसे अकेली महिला होने के कारण हमेशा संदिग्ध नजरों से देखा जाता है। मकान मालिक उसे किराए पर घर देने से इनकार करता है। या नैतिकता के नाम पर उसकी जासूसी की जाती है।

वैसे शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'कबूतरों का अड्डा' में देवला एकल माँ है। बेटे राजीव को शादी के लिए दुल्हन नहीं मिलती है। वह समाज में अपने बेटे को शादी को लेकर बहुत तंग हो जाती है। 'देवला भाभी पिछले दिनों बड़ी उदास रहतीं ...आज से बीस साल पहले एक औरत के हृदय में जो घाव लगा था, जिसे उसने बड़ी मुश्किल से गुजारा करती थी।'(6)

भावनात्मक समस्याएं :–

आर्थिक और सामाजिक दबावों के साथ–साथ इन महिलाओं को गहरे भावनात्मक संघर्षों से जूझना पड़ता है। एकल मां को माता–पिता दोनों की भूमिका निभानी होती है। जो भावनात्मक रूप से अत्यंत थका रहने वाली होती हैं। उनके पास न तो अपने लिए समय होता है और न ही कोई ऐसा साथी जो उनकी चिंताओं को बांट सके। संतान और स्वयं के भविष्य को लेकर हमेशा उदासीन और चिंताओं को गिरी रहती है। एकल माँ अकेलेपन का बोझ के साथ आर्थिक, सामाजिक समस्याओं के साथ ज्यादा मनोवैज्ञानिक संत्रास भी सामना करती है।

एस. आर. हरनोट की कहानी 'कलंक' में श्यामा अपने बच्चों के पिता का नाम बताने से इनकार कर देती है। क्योंकि वह चाहती है कि उसके बच्चे की पहचान सिर्फ उससे हो, किसी पुरुष के नाम से सहारे नहीं। इस में एकल मां का आंतरिक द्वंद्व को दिखाते हैं, जहां वह पितृसत्ता द्वारा थोपी गई 'कलंकित' की परिभाषा को खुद तोड़ना चाहती है। इसे 'पपीता' या 'चरित्रहीन' जैसे विशेषणों से रोजाना जूझना पड़ता है। उसे गांव का ठेकेदार और सरपंच दोनों श्याम को दुर्भावना दृष्टि से देखते हैं। और उसकी 'उपलब्धता' को लेकर बातें करते हैं। श्यामा को अपनी और अपनी बेटी की सुरक्षा का खौफ हर पल सताता है। वैसा समाज की वो सच्चाई है, जहां बिना

पुरुष के संरक्षण वाली स्त्री को सार्वजनिक संपत्ति समझ लिया जाता है।

गीतांजलि श्री की 'मार्च, मां और साकुरा' कहानी में 'मां' कई साल अकेली रहती है। इसलिए सब विष्य को लेकर घबरा आती है। और भावनात्मक से माँ को बेटा बहुत ख्याल करता है। अकेली माँ घर के अंदर ही रहकर बाहर दुनिया के बारे में कुछ भी न जानती है। और मन में भी बहुत कमजोर होती है। 'मैंने कहा – अरे माँ इतना अच्छा दिन है। बाहर निकलो। घर के सामने ही चक्कर मार डालो। मगर हर बार वह कहती – और उसकी आवाज से मैं जाना चाता, वही नन्हीं बच्ची–सा बनाया होगा – नहीं मैं खो जाऊंगी। ... .. दरवाजा तक छोड जाएगा। कहीं ताल न खुले मुझसे पता नहीं कैसा तो हैं।'(7)

इस तरह कम उम्र की अकेली मां को विरह वेदना से पीड़ित कहानी का चित्रण भी हमें देखने मिलती है। ऐसा मन में संवेदनाशीलता और मनोवैज्ञानिक रूप में पीड़ित अकेली माँ का रूप हमें हिंदी कहानियों में देखने मिलते हैं।

निष्कर्ष :–

अम्मा, मालिनी, पत्नी, देवला, स्यामा, माँ आदि पात्रों को हिंदी कहनियों के माध्यम से विश्लेषण किया। इस पात्रों द्वारा एकल मां की आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक और भावनात्मक समस्या हमें स्पष्ट रूप में समझ जाते हैं। एकल मां और उनके संतानों को सहायता करने के लिए सरकार ने कई योजना बनायें। हमें उनकी समस्याओं को समझकर उनकी उन्नति के लिए मदद करना चाहिए। और उनसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए। हमें एकल माताओं की मदद के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें समाज में उनके साथ सम्मान और समझदारी से पेश देना चाहिए, और उनकी मदद करने के लिए जो कुछ भी हम कर सकते हैं वह करना चाहिए, ताकि वे सुरक्षित रहें। यह प्रशंसनीय है कि ये महिलाएं समाज में पुरुष और महिला दोनों की भूमिका निभाती हैं। इसलिए, हमें उनके प्रति दुर्भावना नहीं रखनी चाहिए, बल्कि उनके जीवन को बेहतर बनाने में उनकी मदद करनी चाहिए। मेरी प्रपत्र के माध्यम से उनके समस्याओं का एक बूंद सामने लाने का प्रयत्न किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर – पृ. 112
2. मेरी बस्तर की कहानियाँ – त्यौहार – मेहरुन्निसा परवेज – पृ. 182
3. एक मां के संघर्ष की कहानी –' गृह लक्ष्मी'– पृ. 19
4. मेरी बस्तर की कहानियाँ –ओस में डूबा गुलाब–मेहरुन्निसा परवेज –पृ. 102
5. कहानियों रिश्तों की–सिरि उपमा जोग–शिवमूर्ति – पृ. 81–82
6. अन्धकूप–कबूतरों का अड्डा–शिवप्रसाद सिंह – पृ. 124
7. कहानियाँ रिश्तों की–माँ–मार्च, माँ और साकुरा – गीतांजली श्री – पृ. 163

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 29-33

नीली अर्थव्यवस्था

डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप
प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शासकीय टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर (छ.ग.)

सारांश :

भारत की तटीय सीमा काफी लम्बी है। भारत हिन्द महासागर में स्थित प्रमुख देश है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर स्थित है। वर्तमान में महासागरों के आर्थिक उपयोग के लिए ''ब्लू इकानॉमी'' अथवा ''नीली अर्थव्यवस्था'' शब्द का उपयोग किया जाता है। नीली अर्थव्यवस्था का विकास न केवल जल निमग्न संसाधनों का दोहन करते हुए बल्कि विशेषकर स्थल पर अवसरो की सीमितता के बीच महासागरों में अवसंरचना विस्तार के लिए एक आधार के रूप में इसे विकसित किया जा सकता है। इससे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी, साथ ही यह राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

नीली अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास, बेहतर आजीविका और परिवहन के लिए समुद्री संसाधनों के सतत् उपयोग के साथ ही समुद्री एवं तटीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को संदर्भित करती है।

नीली अर्थव्यवस्था में आर्थिक वृद्धि, रोजगार वृद्धि की क्षमता है। नीली अर्थव्यवस्था का अर्थ आर्थिक विकास, बेहतर आजीविका हेतु समुद्री संसाधनो के उपयोग और सागरीय एवं पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण से है।

नीली अर्थव्यवस्था भारत की आर्थिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। देश की GDP में योगदान देती है। नीली अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास और कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण आयाम है। नीली अर्थव्यवस्था में ऐसे आर्थिक लाभ भी सम्मिलित है जिनका विपणन नहीं किया जा सकता जैसे– कार्बन भंडारण, तटीय संरक्षण, सांस्कृतिक मूल्य और जैव विविधता। यह एक उभरती अवधारणा है जो हमारे समुद्री संसाधनों के बेहतर प्रबंधन को प्रोत्साहित करती है।

नीली अर्थव्यवस्था के स्थायी विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में समुद्री परिवहन और सूचना प्रणालियों में आई क्रांति बंदरगाहों और जहाजरानी के विकास, खनिजों की खोज और उनका खनन, समुद्री पर्यावरण के लिए बढ़ते खतरों और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी नई नई चुनौतियों से देश के भविष्य का मार्ग तय होगा।

मुख्य शब्द : नीली अर्थव्यवस्था, नीली अर्थव्यवस्था के क्षेत्र, नीली अर्थव्यवस्था का महत्व, ब्लू इकानॉमी पालिसी, चुनौतियां, भावी रणनीति।

अध्ययन का उद्देश्य :

* नीली अर्थव्यवस्था का अध्ययन करना।
* नीली अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में महत्व को जानना।
* ब्लू इकानॉमी पालिसी का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि : द्वितीयक समंको पर आधारित।

प्रस्तावना –

नीली अर्थव्यवस्था की अवधारणा को बेल्जियम के अर्थशास्त्री गुंटर पौली द्वारा वर्ष 2010 में प्रकाशित उनकी पुस्तक ''द ब्लू इकानॉमी – 10 इयर्स, 100 इनोवेशन्स, एण्ड 100 मिलियन जॉब्स'' मे प्रस्तुत किया गया था। यह सामाजिक समावेश, पर्यावरणीय स्थिरता के साथ महासागरीय अर्थव्यवस्था के विकास में एकीकरण पर जोर देती है।

नीली अर्थव्यवस्था –

महासागर विश्व के सबसे बड़े पारिस्थितिकी तंत्र है, साथ ही इनका विस्तार पष्थ्वी के तीन चौथाई हिस्से में है। महासागर वैश्विक GDP में 5 प्रतिशत का योगदान देते है। लगभग 350 मिलियन व्यक्तियों को आजीविका प्राप्त होती है। इस संदर्भ में ये क्षेत्र जलवायु परिवर्तन, आजीविका, वाणिज्य तथा सुरक्षा से संबंधित विभिन्न संभावनाएं एवं चुनौतियां उत्पन्न करते हैं।

विश्व बैंक के अनुसार – महासागरों के संसाधनों का उपयोग जब आर्थिक विकास, आजीविका तथा रोजगार एवं महासागरीय पारिस्थितिक तंत्रो को ध्यान में रखकर किया जाता है तो वह नीली अर्थव्यवस्था के अंतर्गत आता है। नीली अर्थव्यवस्था के अन्य नाम है – मरीन अर्थव्यवस्था, तटीय अर्थव्यवस्था, महासागरीय अर्थव्यवस्था।

नीली अर्थव्यवस्था के क्षेत्र –

- **जलीय कृषि** – वर्तमान में विश्व में उपभोग किए जाने वाली कुल मछलियों में से 58 प्रतिशत जलीय कृषि से उत्पादित की जाती है। जलीय कृषि के अंतर्गत मछली के विभिन्न प्रकार के जलीय जीवों एवं वनस्पतियों को नियंत्रित पर्यावरण में विकसित किया जाता है। इससे इनकी उत्पादकता एवं उपयोगिता में वृद्धि होती है।
- **अलवणीकरण के माध्यम से ताजे पानी की प्राप्ति** – भारत के कई तटीय क्षेत्र ऐसे है जहां जल स्त्रोतों की कमी है। ऐसे में समुद्री खारे पानी को अलवणीकरण प्रक्रिया द्वारा ताजे जल में परिवर्तित कर उपयोग करते है। वर्तमान में चेन्नई में जल की कमी ने ऐसे प्रयासों की ओर विचार करने को प्रेरित किया है।
- **मत्स्य कृषि** – भारत की तटीय लम्बाई लगभग 8000 किलोमीटर है। जिसके कारण भारत में मछली उत्पादन, तटीय क्षेत्रों में रोजगार के रूप में विकसित है। भारत के लगभग 1.5 मिलियन व्यक्ति इस क्षेत्र से प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त करते है। कृषि क्षेत्र में मछली उत्पादन का 6 प्रतिशत का योगदान है। भारत की तटीय आबादी के लिए भोजन एवं पोषण के मुख्य साधन के रूप में मछली का ही उपयोग किया जाता है।
- **मरीन जैव प्रौद्योगिकी एवं जैव संभावना** – समुद्रों की जैव विविधता का विभिन्न क्षेत्रो जैसे – दवाओं, भोजन सामग्री, सजावट आदि के रूप में उपयोग किया जाता है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन** – महासागर के तटीय क्षेत्रों का नवीकरणीय ऊर्जा के स्त्रोत के रूप मे उपयोग किया जा सकता है। INDC (Intended Nationally Determined Contributions) में भारत ने वर्ष 2030 तक कार्बन उत्सर्जन की तीव्रता को 33–35 प्रतिशत तक कम करने की बात कहीं है।
- **बंदरगाह सेवाएं** – 80 प्रतिशत वैश्विक व्यापार समुद्री मार्गो से होता है। भारत में मात्रा के संदर्भ में 95 प्रतिशत तथा मूल्य के रूप में 70 प्रतिशत व्यापार समुद्री मार्गो से होता है। इस तथ्य के अनुसार भारत अपने बंदरगाह की क्षमता में वृद्धि कर रहा है।

- **कार्बन पृथक्करण में उपयोगी (ब्लू कार्बन)** – समुद्री एवं तटीय पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा अवशोषित किए जाने वाले कार्बन को नीले कार्बन अथवा ब्लू कार्बन की संज्ञा दी जाती है। यह अवशोषण जीवभार और अवसाद के रूप में मैंग्रोव, दलदलीय क्षेत्रों, समुद्री घास तथा शैवालों द्वारा किया जाता है। महासागरों की कार्बन अवशोषण क्षमता भूमि पर स्थित परितंत्र के मुकाबले पांच गुना अधिक होती है। यदि सागरों का उपयोग जलवायु शमन में किया जाता है। तो यह जलवायु परिवर्तन से निपटने में मददगार हो सकते है।
- **पर्यटन** – भारत में कई तट एवं द्वीप (अंडमान निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, केरल, गोवा, गुजरात आदि) ऐसे है जिसका विकास समुद्री पर्यटन के दषष्टिकोण से किया जा सकता है।

ब्लू इकानॉमी पॉलिसी –

इस नीति में सात विषयगत क्षेत्र निम्नलिखित है –

- ब्लू इकानामी और ओसियन गवर्नेस के लिए राष्ट्रीय लेखा ढांचा।
- तटीय समुद्री स्थानिक योजना और पयर्टन।
- तटीय और गहरे समुद्र में खनन एवं अपतटीय ऊर्जा।
- सुरक्षा, रणनीतिक आयाम और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।
- समुद्री मत्स्य पालन, जलीय कृषि और मछली प्रसंस्करण।
- विनिर्माण उद्योग, व्यापार, प्रौद्योगिकी सेवाएं और कौशल विकास।
- आधार भूत संरचना का विकास।

नीली अर्थव्यवस्था का महत्व –

भारत की नीली अर्थव्यवस्था परिवहन के माध्यम से 95 प्रतिशत व्यवसाय का समर्थन करती है। सकल घरेलू उत्पाद में अनुमानित 4 प्रतिशत का योगदान करती है शिपिंग उद्योग का विस्तार संभावित है।

यह तटीय क्षेत्रों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है। घरेलू और क्षेत्रीय व्यापार को प्रोत्साहन देता है प्रचुर मात्रा में समुद्री संसाधनों का दोहन करता है। परिवहन के अधिक कुशल, सस्ते और विश्वसनीय साधन पर ध्यान केन्द्रित करता है। जैव विविधता को प्रोत्साहन देता है। पारिस्थितिकी रूप से सुरक्षित पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देता है।

नीली अर्थव्यवस्था के प्रोत्साहन के लिए प्रयास –

सरकार द्वारा नीली अर्थव्यवस्था के प्रोत्साहन के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए है –

- **डीप ओशन मिशन** – गहरे महासागरों से जीवित एवं निर्जीव संसाधनों का दोहन करने के लिए प्रौद्योगिकी को विकसित करना।
- **सतत् विकास के लिए नीली अर्थव्यवस्था पर भारत नार्वे कार्यबल** – वर्ष 2020 में विकसित।
- **सागर माला परियोजना** – बंदरगाहों के आधुनिकीकरण हेतु आईटी सक्षम सेवाओं के व्यापक उपयोग के माध्यम से बंदरगाह विकास के लिए पहल।
- **ओ स्मार्ट** – अम्ब्रेला योजना है जिसका उद्देश्य सतत् विकास के लिए महासागरों और समुद्री संसाधनों का विनियमित उपयोग करना है।
- **एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन** – तटीय और समुद्री संसाधनों के संरक्षण तथा तटीय समुदायों के लिए आजीविका के अवसरों में सुधार पर केन्द्रित।

- **राष्ट्रीय मत्स्य नीति** – ब्लू ग्रोथ इनिशिएटिव को प्रोत्साहन देने हेतु राष्ट्रीय मत्स्य नीति बनाई गई।
- **नाविक** – नाविकों के जीवनस्तर में सुधार पर केन्द्रित।

चुनौतियाँ –

इस क्षेत्र से संबंधित कानून विनियम वर्षो पुराने है। नीली अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने के लिए एकीकृत कानूनी ढांचे की आवश्यकता है। संसाधनों का उचित मात्रा एवं तकनीक से दोहन न करने से महासागरों की जैव विविधता को संकट का सामना करना पड़ रहा है। वैश्विक तापमान में वृद्धि से महासागरो के तापमान में भी वृद्धि हो रही है। जिससे महासागरों के जलस्तर में वृद्धि हो रही है। जल स्तर में वृद्धि से सबसे बड़ा संकट SIDS देशों के समक्ष उत्पन्न होगी। भारत के कुछ तटीय क्षेत्र इससे प्रभावित हो सकते है। तापमान वृद्धि से मानसून में परिवर्तन आने से प्रवाल भित्तियों (कोरल रीफ) के लिए संकट उत्पन्न होगा। क्योंकि इन्हे एक निश्चित तापमान की आवश्यकता होती है। मछलियों का मुख्य भोजन प्रवाल होता है, इनकी उपलब्धता में कमी आने से मछलियों पर संकट आयेगा जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव समुद्री खाद्य श्रृंखला पर पड़ेगा, जिसका प्रतिकूल प्रभाव पोषण एवं रोजगार पर पड़ेगा।

भावी रणनीति –

नीली अर्थव्यवस्था के प्रोत्साहन के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाये जा सकते है– **सतत् संसाधन प्रबंधन** – समुद्री संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना करना, ओवर फिशिंग एवं अन्य प्रकार के संसाधनों के अतिदोहन को रोकने के लिए विनियमन प्रवर्तित करना, समुद्री संसाधनों और उन पर निर्भर उद्योगों की दीर्घकालिक व्यवहार्यता को सुनिश्चित करना। **अवसंरचना में निवेश** – बंदरगाहों, हवाई अड्डों, अन्य सुविधाओं में निवेश से आर्थिक गतिविधियों के विकास एवं विस्तार में सहयोग मिलेगा। **अनुसंधान एवं विकास** – जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को कम करने में सहायता मिलेगी। **भागीदारी एवं सहयोग** – ज्ञान एवं विशेषता के आदान प्रदान और विभिन्न परियोजनाओं एवं पहलों पर सहयोग करने के लिए अन्य देशों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य हितधारकों के साथ कार्य करना नीली अर्थव्यवस्था के विकास में सहयोग करेगा।

भारत को अपने महासागरों को केवल जल निकायों के रूप में नहीं देखकर निरन्तर आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद के एक वैश्विक मंच के रूप में देखना चाहिए।

निष्कर्ष –

नीली अर्थव्यवस्था की भारत की अवधारणा बहुआयामी है। देश के समुद्री व्यापार से जुड़े व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुए आर्थिक प्रगति में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत की नीली अर्थव्यवस्था का सकल घरेलू उत्पाद में 4 प्रतिशत के लगभग योगदान है। आशा है कि व्यवस्था तंत्र में सुधार के बाद यह और बढ़ेगा।

महासागर एवं तटीय पर्यटन रोजगार और आर्थिक संवृद्धि का सृजन कर सकते है। भारत की आर्थिक संवृद्धि हेतु हिन्द महासागर क्षेत्र रणनीतिक महत्व रखता है। अधिकांश कच्चा तेल और गैस समुद्र के माध्यम से आयात किया जाता है। खनिजों की उपलब्धता में वृद्धि होगी। व्यापार की अपार संभावनाएं है। नीली अर्थव्यवस्था स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करने और नवीकरणीय स्त्रोतों के नियोजन पर आधारित होती है।

संदर्भ :

From Internet –

- नीली अर्थव्यवस्था क्या है?

- सतत् नीली अर्थव्यवस्था।
- नीली अर्थव्यवस्था – सामाजिक लाभ का संसाधन।
- नीली अर्थव्यवस्था पर राष्ट्रीय नीति।
- नीली अर्थव्यवस्था – आर्थिक विकास और पारिस्थितिकीय संधारणीयता।
- नीली अर्थव्यवस्था और भारत के लिए इसका महत्व।
- नीली अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर भारत का महत्वपूर्ण स्त्रोत होने जा रही है।
- नीली अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन।
- ब्लू इकानामी नीति का मसौदा।
- नीली अर्थव्यवस्था – इतिहास।

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 34-39

कृषि ऋण योजनाओं के क्षेत्र में किसान क्रेडिट कार्ड योजना की उपयोगिता

Dr. Dilip Kumar Parsendiya
Assistant Professor Commerce,
Govt. Adarsh P.G. College, Jhabua (M.P.)

शोध सारांश :

भारतीय रिजर्व बैंक तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा संयुक्त रूप से मिलकर किसान क्रेडिट कार्ड योजना प्रारंभ की गयी थी। किसान क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत निर्गमित वित्त द्वारा किसान अपने खेती से संबंधित कार्यों के लिए उर्वरक, बीज, खाद और कीटनाशक आदि क्रय कर सकते है। वर्तमान समय में योजना के अंतर्गत किसान हितग्राहियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। किसानों की अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से इस योजना को तैयार किया गया था। यह साख निर्गमन की एक विशिष्ट योजना है, इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में प्रयोग होने वाले बीज, उर्वरक, दवाईयां, फसल उत्पादन संबंधित मशीनरी एवं अन्य व्ययों की पूर्ति हेतु वित्त उपलब्ध करवाना है। किसान क्रेडिट कार्ड सबसे नवीन, व्यापक रूप से स्वीकृत और गैर–भेदभाव पूर्ण बैंकिंग उत्पादों में से एक है, जिसका उद्देश्य कृषि क्षेत्र को वित्त पोषित करना है। शोधपत्र से यह ज्ञात होता है, कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना ने बहुत कम समय में ही कृषक समुदाय के बीच एक काफी लोकप्रिय ऋण सुविधा के रूप में अपना स्थान बना लिया है। साथ ही केसीसी कार्ड को बैंकों और किसानों दोनों द्वारा सराहा और स्वीकार किया गया है। भारत सरकार द्वारा केसीसी के कार्यान्वयन की समीक्षा कर भारत में कृषि क्षेत्र के विकास में मदद करने के लिए सभी संभव कदम उठाए है।

प्रस्तावना :

भारतीय रिजर्व बैंक तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा संयुक्त रूप से मिलकर किसान क्रेडिट कार्ड योजना प्रारंभ की गयी थी। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड योजना के क्रियान्वयन हेतु मुख्य सिद्धांत भी तैयार किये गए है। ये मार्गदर्शक सिद्धांत किसानों को क्रेडिट कार्ड जारी करने वाली बैंकों एवं विभिन्न वित्तीय संस्थाओं के अनुपालन हेतु जारी किये गए है। वर्ष 1998–1999 के बजट में वित्त मंत्री द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड योजना लागू करने की घोषणा की गई थी। किसान क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत निर्गमित वित्त द्वारा किसान अपने खेती से संबंधित कार्यों के लिए उर्वरक, बीज, खाद और कीटनाशक आदि क्रय कर सकते है। देश के बैंकों तथा विभिन्न वित्तीय संस्थाओं द्वारा अगस्त 1998 में योजना का क्रियान्वयन प्रारंभ कर दिया गया था। वर्तमान में योजना के अंतर्गत किसान हितग्राहियों की संख्या में तेजी से

वृद्धि हो रही है। किसानों की अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से इस योजना को तैयार किया गया था। यह साख निर्गमन की एक विशिष्ट योजना है, इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में प्रयोग होने वाले बीज, उर्वरक, दवाईयां, फसल उत्पादन संबंधित मशीनरी एवं अन्य व्ययों की पूर्ति हेतु वित्त उपलब्ध करवाना है।

के.सी.सी. योजना के उद्देश्य :

1. कृषि भूमि में उगाई जाने वाली फसलों के लिए अल्पावधि ऋण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण प्रदान करना।
2. फसलों की कटाई के बाद होने वाले खर्चों की पूर्ति करने के लिए ऋण प्रदान करना।
3. कृषि उपजों को विक्रय एवं विपणन करने हेतु ऋण प्रदान करना।
4. कृषि सम्पत्तियों में निवेश और कृषि से संबद्ध गतिविधियों, जैसे पानी पंप सेट, स्प्रेयर, विभीन्न कृषि उपकरण, डेयरी पशु, मत्स्य पालन आदि के लिए रखरखाव के लिए कार्यशील पूंजी के लिए ऋण प्रदान करना।
5. कृषकों के परिवार की विभिन्न उपभोग आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए ऋण प्रदान करना।
6. कृषि से संबंधित अन्य व्ययों की पूर्ति के लिए ऋण प्रदान करना।
7. प्राकृतिक आपदाओं, कीटों और बीमारियों के कारण फसलों की विफलता की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करना।
8. किसानों को प्रगतिशील कृषि पद्धतियों, उच्च मूल्य इनपुट और कृषि में उच्च तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
9. विशेष रूप से आपदा के वर्षों के दौरान कृषि आय के स्थिरीकरण में मदद करना।
10. मुख्य रूप से खाद्य फसलों और तिलहन के उत्पादन को समर्थन और प्रोत्साहन देना।

किसान क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत ए.टी.एम. कार्ड का निर्गमन :

किसान क्रेडिट कार्ड योजना के तहत लाभार्थियों को एक स्मार्ट कार्ड या डेबिट कार्ड जारी किया जाता है, जो स्वाइप मशीन में उपयोग के लिए संगत बायोमेट्रिक स्मार्ट कार्ड और किसानों की पहचान, सम्पत्ति, भूमि जोत और क्रेडिट प्रोफाइल आदि की पर्याप्त जानकारी संग्रहीत करने में सक्षम होता है। किसान क्रेडिट कार्ड को सभी बैंकों के एटीएम और माइक्रो एटीएम तक पहुंच को सक्षम करने के लिए आई.एस.ओ., आई.आई.एन. (अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन अंतर्राष्ट्रीय पहचान संख्या) व्यक्तिगत पहचान संख्या (पिन) के साथ जारी किया जाता है। ऐसे मामलों में जहां बैंक यूआईडीएआई (आधार प्रमाणीकरण) के केंद्रीकृत बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण बुनियादी ढांचे का उपयोग करना चाहते हैं, चुंबकीय पट्टी वाले डेबिट कार्ड और यूआईडीएआई के बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के साथ आईएसओ आईआईएन के साथ पिन प्रदान किया जाता है। बैंक के ग्राहक चुंबकीय पट्टी वाले डेबिट कार्ड और केवल बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण भी प्रदान किए जा सकते हैं। जहां कहीं भी बैंक में सीबीएस नहीं है, एक पास बुक या एक क्रेडिट कार्ड सह–पास बुक जिसमें नाम, पता, भूमि जोत का विवरण, उधार सीमा, वैधता अवधि आदि शामिल हो, जारी की जाती है। जो एक पहचान पत्र के रूप में और साथ ही निरंतर आधार पर लेनदेन की रिकॉर्डिंग की सुविधा प्रदान करने में बहुत उपयोगी होती है। बैंक ईएमवी (यूरोपे, मास्टरकार्ड और वीजा, एकीकृत सर्किट कार्डों के अंतर–संचालन के लिए एक वैश्विक मानक) चुंबकीय पट्टी और आईएसओ

आईआईएन के साथ पिन के साथ संगत चिप कार्ड जारी करने का विकल्प चुन सकते हैं। इसके अलावा, बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण द्वारा निर्धारित सामान्य खुले मानकों का पालन कर सकते हैं। यह उन्हें इनपुट डीलरों के साथ निर्बाध रूप से लेन–देन करने में सक्षम करेगा और साथ ही जब वे कृषि मण्डियों, खरीद केंद्रों आदि में अपना उत्पादन बेचते हैं तो बिक्री आय को उनके खातों में जमा करने में भी सक्षम बनाता है। भारत में विभिन्न बैंकों द्वारा केसीसी योजना के लिए अलग–अलग नंबरों के क्रेडिट कार्ड जारी करते हैं। इन कार्डों की अधिकांश विशेषताओं में अधिक अंतर नहीं है। किसान क्रेडिट कार्ड का नाम संबंधित बैंक के सामने तालिका–1 में दर्शाया गया है।

Table 01

The Name of the Kisan Cardissued by Bank in India

S.No.	Name of the Banks	Name of the card
1	Allahabad Bank	Kisan Credit Card (KCC)
2	Andhra Bank	AB Kisan Green Card
3	Bank of Baroda	BKCC
4	Bank of India	Kisan Samadhan Card
5	CanaraBank	KCC
6	Corporation Bank	KCC
7	Dena Bank	Kisan Gold Credit Card
8	Oriental Bank of Commerce	Oriental Green Card (OGC)
9	Punjab National Bank	PNB Krishi Card
10	State Bank of Hyderabad	KCC
11	State Bank of India	KCC
12	Syndicate Bank	SKCC
13	Vijaya Bank	Vijaya Kisan Card

Source : NABARD

के.सी.सी. योजना प्राप्त करने की प्रक्रिया :

केसीसी योजना से ऋण प्राप्त करने के लिए किसान अपने निकटतम सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में संपर्क कर सकते हैं और केसीसी के बारे में विवरण प्राप्त कर सकते हैं। पात्र किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड और पास बुक मिलेगी। कार्ड पर नाम, पता, भूमि जोत का विवरण, उधार सीमा, वैधता अवधि, धारक का पासपोर्ट आकार का फोटो होता है जो पहचान पत्र के रूप में काम आ सकता है और निरंतर आधार पर लेनदेन की रिकॉर्डिंग की सुविधा प्रदान कर सकता है। उधारकर्ता को जब भी खाता संचालित करना हो तो कार्ड सह–पास बुक प्रस्तुत करना आवश्यक है। सभी बैंकों द्वारा केसीसी सह–पास बुक के रूप में केवल एक प्रकार का कार्ड

जारी किया जाता है। कुछ वाणिज्यिक बैंकों के मामले में, इस तरह का कोई कार्ड जारी नहीं किया जाता है।

हालाँकि, रिपोर्टिंग उद्देश्य के लिए योजना के तहत फसल ऋण का वितरण किया गया था। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) ने या तो कार्ड सह–पास बुक या कार्ड और पासबुक को केसीसी के रूप में जारी किया है। सहकारी बैंकों ने एक पास बुक तैयार की थी, जो कार्ड सह–पासबुक के उद्देश्य को पूरा करती थी, जिसमें किसान और उसके उधार के बारे में सभी विवरण होते थे। कार्डधारक को बैंक की बीमित चालू जमा योजना द्वारा शासित 1,00,000 रुपये के लाभ के साथ दुर्घटना बीमा द्वारा भी कवर किया जाता है। बीमा उधारकर्ता के लिए वैकल्पिक है। हालाँकि, किसानों को व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना (PAIS) के तहत अनिवार्य रूप से कवर किया जाता है।

नाबार्ड द्वारा उठाए गए प्रमुख कदम :

1) सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को सलाह दी गई कि वे केसीसी योजना का दायरा बढ़ाएं ताकि मौजूदा फसल ऋण सीमा के अलावा उपभोग की जरूरतों को पूरा करने के लिए उचित घटक सहित कृषि और संबद्ध गतिविधियों के लिए अवधि ऋण को कवर किया जा सके। केसीसी का दायरा भूमिहीन मजदूरों, मौखिक पट्टेदारों, किरायेदार किसानों और डिफॉल्टरों तक बढ़ाया गया।

2) केसीसी योजना पर एक ब्रोशर, जिसमें योजना के बारे में मुख्य विशेषताएं, लाभ और अन्य प्रासंगिक जानकारी पर प्रकाश डाला गया हो, प्रधान कार्यालय द्वारा जारी किया जावे, जिसे राज्य सरकारों, उनके विभागों, वाणिज्यिक बैंकों, सहकारी बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और अन्य संबंधित एजेंसियों/अधिकारियों को प्रसारित करने के लिए कहा गया ताकि योजना के बारे में व्यापक जागरूकता पैदा की जा सके।

3) नाबार्ड जमीनी स्तर के मुद्दों/समस्याओं पर प्रतिक्रिया की सुविधा के लिए समय–समय पर केसीसी योजना पर प्रस्ताव एवं सुझाव आमंत्रित करता है, ताकि जहां आवश्यक हो, परिवर्तनों पर विचार किया जा सके।

4) वाणिज्यिक बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुरूप सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को सलाह दी गई है, कि वे अपने विवेकानुसार प्रत्येक कैलेंडर माह की 10 तारीख से अंतिम दिन तक की अवधि के दौरान किसानों के किसान क्रेडिट कार्ड के अंतर्गत नकद ऋण खातों में न्यूनतम जमा शेष पर अपनी धारणा और अन्य प्रासंगिक कारकों के आधार पर ब्याज दर का भुगतान करें।

5) केसीसी के अंतर्गत सभी पात्र किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को संचालन के प्रत्येक क्षेत्र में अभिनव प्रचार अभियान प्रारंभ करने की सलाह दी गई है।

भारत में योजना का कार्यान्वयन एवं प्रगति :

उल्लेखनीय है कि अगस्त 1998 में इस योजना की शुरूआत के बाद से 31 मार्च 2020 तक सहकारी बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा कुल मिलाकर लगभग 10.09 करोड़ किसान क्रेडिट कार्ड जारी किए गए हैं। केसीसी को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में समस्त सहकारी बैंकों, आरआरबी और योजना में भाग लेने वाले वाणिज्यिक बैंकों के माध्यम से लागू किया गया।

Table - 2

Gross Capital Formation (GCF) in Agriculture (Rs. in Crore)

Year	Ratio of GCF in Agriculture to (%)			
	GCF in Agriculture & Allied Activities	Total GCF	GDP in Agriculture & Allied Activities	Total GDP
2015-16	86,611	7.3	14.57	2.66
2016-17	90,710	6.6	14.65	2.54
2017-18	1,05,034	6.5	16.03	2.69
2018-19	1,28,659	8.3	19.67	3.09
2019-20	1,33,377	7.7	20.30	2.97

Sources : Economic Survey 2020-21

तालिका क्र. 2 में 2015–16 से 2019–20 की अवधि के लिए कृषि में सकल पूंजी निर्माण (जीसीएफ) दिखाया गया है। यह स्पष्ट है कि कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में जीसीएफ की राशि 2015–16 में 86,611 करोड़ रुपये से बढ़कर 2019–20 में 1,33,377 करोड़ रुपये हो गई। कुल मिलाकर, इसी अवधि के दौरान जीसीएफ 7.3 से 8.3 प्रतिशत के बीच रहा। कृषि क्षेत्र के तहत सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में कृषि और संबद्ध गतिविधियों में जीसीएफ 2015–16 में 14.57 प्रतिशत से बढ़कर 2019–20 में 20.30 प्रतिशत हो गया। लेकिन इसी अवधि के दौरान कुल सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में कृषि और संबद्ध गतिविधियों में जीडीपी 2.66 से 3.09 प्रतिशत के बीच रहा। तालिका का समग्र विश्लेषण इस तथ्य को इंगित करता है कि कृषि और इसकी संबद्ध गतिविधियों के माध्यम से सकल पूंजी निर्माण में सुधार हुआ है।

निष्कर्ष :

किसान क्रेडिट कार्ड सबसे नवीन, व्यापक रूप से स्वीकृत और गैर–भेदभाव पूर्ण बैंकिंग उत्पादों में से एक है, जिसका उद्देश्य कृषि क्षेत्र को वित्त पोषित करना है। शोधपत्र से यह ज्ञात होता है, कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना ने बहुत कम समय में ही कृषक समुदाय के बीच एक काफी लोकप्रिय ऋण सुविधा के रूप में अपना स्थान बना लिया है। यह उम्मीद की जाती है कि इससे किसानों को बहुत वांछित संस्थागत ऋण तक आसान और समय पर पहुँच प्राप्त करने में मदद मिलेगी। साथ ही केसीसी कार्ड को बैंकों और किसानों दोनों द्वारा सराहा और स्वीकार किया गया है। भारत सरकार द्वारा केसीसी के कार्यान्वयन की समीक्षा कर भारत में कृषि क्षेत्र के विकास में मदद करने के लिए सभी संभव कदम उठाए है।

केसीसी योजना फसल उगाने के अतिरिक्त अन्य कृषि उद्देश्यों के लिए किसानों की अल्पावधि ऋण की आवश्यकता को पूरा करती है। किसानों से लिए गए फीडबैक से पता चला है, कि अधिकांश सहकारी बैंक किसान कार्ड के तहत किसानों को ऋण सीमा स्वीकृत करते समय अल्पावधि ऋण प्रदान नहीं कर रहे थे। ऐसा इस तथ्य के कारण हो सकता है, कि नाबार्ड पुनर्वित्त केवल मौसमी कृषि कार्यों को करने के लिए ऋण है और

अन्य भाग सहकारी बैंकों को अपने स्वयं के संसाधनों से पूरा करना पड़ता है। यह देखा गया है कि ऋण वितरण तंत्र को सुव्यवस्थित करना आवश्यक है। वितरण तंत्र पर्याप्त नहीं है क्योंकि कृषि को उद्योग बनाने के लिए कई सुधार किए जाने की आवश्यकता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि केवल कृषि का एक कुशल और उत्तम उत्पादन स्तर ही दीर्घकालिक व्यवहार्यता को बनाए रख सकता है, इसलिए केसीसी के रूप में अल्पावधि ऋण तक किसानों की पहुंच को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न पहलों की दीर्घकालिक व्यवहार्यता पर उचित नीतिगत उपाय करने की आवश्यकता है। बैंकों को कृषि क्षेत्र को दी जाने वाली अपनी ऋण दर को घटाना चाहिए, जिसके लिए सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक से सहायता प्राप्त करनी चाहिए। विभिन्न ग्रामीण वित्तीय संस्थानों द्वारा संसाधन जुटाने की उच्च लागत और कम मार्जिन को ध्यान में रखते हुए ब्याज सहायता वांछनीय है।

संदर्भ :

1. Amir Samantara, "Kisan Credit Card", (2010), NABARD, Occasional Paper-S2, pp: 1-64.
2. NABARD (2010), "Study on KCC', Annual Report, Government of India (2009-10),Economic Survey', Minisrry of Finance, pp: 36-37.
3. Dr. Balaji Kamble. "Real of Kisan Credit Cards in the Benefit of Small Farmers", (August 2009) International Research Journal, Vol II, Issue-", pp: 20]-204.
4 B.B.Barik:,"Kisan Credit Card Scheme-A Dynamic Intervention for Reduction in Rural Poverty",(2008).
5. Kallur, M.S. (2005), 'Impact of Kisan Credit Card on Flow of Credit and Repayment Rate in a Backward Region: A case of Agricultural Development Bank of Sborapur Taluka, Gulbarga. District, Karnataka State,' Indian Joumal of Agricultural Economics, Vol. 60, No.3, July-September.
6. Singb, Harpreet and Sekhon, M.K. (2005), 'Casb-in Benefits of the Kisan Credit Card Scheme: Onus is Upon the Farmer', Indian Joumal of Agricultural Economic', Vol. 60, No.3, July-September.

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 40-49

'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता तथा हिन्दी,
त्रि.वि. पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू।

सार :

साहित्य का समाजशास्त्र की औपचारिक शुरूआत फ्रांसीसी दार्शनिक तथा समालोचक हिप्पोलाइट एडल्ट टेन (सन 1828–1893) से प्रतिपादित समाजशास्त्रीय मान्यता जाति, क्षण और पर्यावरण संबंधी विचार से सामाजिक समालोचना का क्षेत्र सशक्त और विस्तृत बना हुआ है । तेन ने अपनी कृति "हिस्ट्री ऑफ इंग्लिस लिटरेचर" (सन 1864) में साहित्य की समालोचना जाति, क्षेत्र और पर्यावरण के आधार में करने की अवधारणा प्रस्तुत की है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि समाज को साहित्य रचना करने की शक्ति के रूप में और साहित्य को समाज के दर्पण के रूप में साहित्यकार व्याख्या करते हैं और अपनी कृति में अपने युग का चित्र उतारते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में "मैं दासी मैं सराय" उपन्यास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। हिप्पोलाइट एडल्ट तेन के त्रितत्व (जाति, क्षण और परिवेश) के आधार पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। प्रस्तुत अनुसन्धानत्मक लेख नेपाली उपन्यासकार धूस्वाँ सायमी द्वारा लिखित "मैं दासी मैं सराय" उपन्यास पर केन्द्रित है। इस लेख में पुस्तकालयीय विधि से द्वितीयक स्रोत के सामग्री संकलन किया गया है। संकलित सामग्री का विश्लेषण गुणात्मक अनुसंधान के आधार में किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास को तेन द्वारा निर्धारित (प्रजाति, क्षण और पर्यावरण) के अनुसार समाजशास्त्रीय सिद्धान्त का उपयोग करके देखा गया है। उपन्यास में वर्णित जातीय विशेषता, तत्कालीन युगचेतना का स्वरूप और उसके जीवन के उतार चढाव की अवस्था को प्रस्तुत किया गया है।

शब्दकुंजी : नेवार जाति, युग चेतना, अवला, हिमाच्छित, एकाकीपन, स्थानीयपन।

1. विषय परिचय :

उपन्यास आधुनिक गद्य विधाओं में एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है जिसमें व्यापक जीवन सन्दर्भ अर्थात् युगबोध का चित्रण होता है। अपने समय, समाज और इतिहास को दर्शाना लेखक का उद्देश्य होता है इसलिए साहित्य की सामाजिक भूमि और सामाजिक भूमिका का विवेचन उपन्यास में मिलता है। मिसेल जोराफा ने लिखा है "उपन्यास ऐसी कला है जिसमें मनुष्य सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से निरूपित होकर सामने आता है।" इसीतरह डॉ. बि.डी. गुप्ता कहते हैं– "उपन्यास का समाजशास्त्रीय महत्व है, वह समाज सापेक्ष होकर सामाजिक विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समग्रता के साथ प्रस्तुत करता है। इस समग्रता में केवल निष्प्राण वस्तुएँ ही नहीं बल्की विभिन्न रीति–रिवाज, संस्थाएँ, आदतें, चलन आदि भी शामिल हैं क्योंकि मानव समाज के एक निश्चित विकास स्तर की विशेषताएँ हैं, जिसके आधार पर समाज को भली प्रकार से समझा जा सकता है। प्रस्तुत

उपन्यास में धुस्वाँ सायमी ने कुछ इसीप्रकार की बातों का चित्रण किया है।

कोई भी साहित्यिक कृति समाज निरपेक्ष नहीं होती। साहित्य में समाज के क्रियाकलापों को ही किसी न किसी रूप में व्यक्त किया जाता है। साहित्य के माध्यम से ही तत्कालीन समाज का अध्ययन और विश्लेषण होता है। समाजशास्त्र के अंतर्गत भूगोल, संस्कृति, इतिहास, धर्म, अर्थ, राजनीति, शिक्षा, मनोविज्ञान आदि का अध्ययन और विश्लेषण होता है। समाज, साहित्य सिर्जना का कारण है तो साहित्य कार्य का। साहित्य का विवेचन करते समय सामाजिक संदर्भों में जोड़ दिया जाता है, सर्जक के व्यक्तित्व को महत्व दिया जाता है तथा सृजना में सामाजिक सत्य की खोज करने की ओर इंगित किया जाता है। इसीलिए विद्वान तेन ने जाति, क्षण और पर्यावरण संबंधी मान्यता को महत्व दिया है। विद्वान तेन के सिद्धांत के आधार पर "मैं दासी मैं सराय" उपन्यास का समाजशास्त्रीय दृष्टीकोण से मूल्यांकन एवं विश्लेषण करना ही इस शोध पत्र का मूल अभीष्ट रहा है।

2. पूर्वकार्य एवं सीमांकन :

उपर्युक्त नेपाली एवं हिंदी के समाजशास्त्र संबंधित विभिन्न लेखों एवं पुस्तकों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि नेपाल के नेपाली समालोचकों ने नेपाली उपन्यास में विद्यमान सामाजिक दृष्टिकोण का अध्ययन अवश्य किया है और उसी तरह भारत के समालोचकों ने भी भारत के हिंदी उपन्यासों के समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है। परंतु किसी ने पुस्तक विशेष का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है तो किसी ने लेखक विशेष का। और किसी ने मार्क्सवाद के सिद्धांत को अपनाया है तो किसी ने रेमंड विलियम्स के सिद्धांत को अपनाते हुए समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है। किसी ने लियो लावेन्थल को अपनाया है तो किसी ने गोल्डमैन को और फिर किसी ने तेन को। नेपाली शोधकर्ता खेमलाल दाहाल ने आधुनिक नेपाली उपन्यास का समाजशास्त्र (वि.सं. 2008) में कुछ चर्चित नेपाली उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है, परंतु यह नेपाली उपन्यास का समाजशास्त्र है।

इस शोध ग्रंथ में तेन के प्रजाति, क्षण और वातावरण के अतिरिक्त एलन शिमूल की सामाजिक संरचना, क्रिस्टोफर कडवेल की सामाजिक–आर्थिक अवस्था और भाषा, लियो लावेन्थल का सामाजिक मनोविज्ञान, रेमंड विलियम्स की अनुभूति की संरचना और लुसीयू गोल्डन की विश्व दृष्टि को भी समावेश किया है। परंतु प्रस्तुत शोधपत्र में केवल तेन के समाजशास्त्रीय सिद्धांत (प्रजाति, क्षण और वातावरण) को अपनाकर "मैं दासी मैं सराय" उपन्यास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। धूस्वाँ सायमी द्वारा लिखित "मैं दासी मैं सराय" हिंदी उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है और यह सर्वथा नूतन विषय भी है। नेपाल के हिंदी उपन्यास के परिवेशगत विशेषता, गहनता, आयाम का स्वरूप और प्राज्ञिक विश्लेषण और मूल्यांकन न होने के कारण "मैं दासी मैं सराय" हिंदी उपन्यास में समाजशास्त्रीय अध्ययन एक समस्या दिखने के कारण इस निर्दिष्ट विषय में आज तक शोध पत्र न होने के कारण प्रस्तुत उपन्यास में शोधपत्र का औचित्य रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में मैं दासी मैं सराय उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

3. सैद्धान्तिक पक्ष :

साहित्य का समाजशास्त्र पश्चिमी समालोचना प्रणाली से विकसित सैद्धान्तिक अवधारणा है। इस अवधारणा के अन्तर्गत साहित्यिक कृति में विद्यमान समाज की खोज और विश्लेषण किया जाता है। तेन द्वारा निर्धारित जाति, क्षण और पर्यावरण को त्रितत्त्व भी कहा जाता है। उनके अनुसार किसी भी साहित्य को जाति,

क्षण और पर्यावरण की दृष्टि से अध्ययन करना ही समाजशास्त्रीय समालोचना पद्धति है। इन तीनों का आपसी सम्बन्ध होता है (तेन, सन 1871, पृ.11)। प्रजाति मनुष्य के वंशज विशेषता के शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक परिवेश का बोध कराता है। क्षण तथा युगचेतना मनुष्य के समय एवं किसी युग के मनुष्य के चेतना स्वरूप का बोध कराता है और पर्यावरण उसकी जलवायु, हावापानी के साथ साथ सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का बोध कराता है। तेन के समाजशास्त्रीय समालोचनात्मक मान्यता की समीक्षा करते हुए मैनेजर पाण्डे कहते हैं – "प्रजाति, परिवेश और युग बीच की क्रिया प्रतिक्रिया से एक व्यावहारिक एवं चिन्तनशील मानसिक संरचना उत्पन्न होता है (सन् 1989, पृ. 124)। लेखक उसी मानसिक संरचना को सार्थक विचार निर्माण की भूमिका को प्रतिबिम्बित करता है। साहित्य में प्रयुक्त पात्र की प्रजातिगत विशेषता, उस के जीवन काल का पर्यावरणीय प्रभाव और उसी युग के प्रभाव से उत्पन्न चेतना तथा विचार को तेन के त्रिपक्षीय सम्बन्ध माना जाता है। बच्चन सिंह के अनुसार तेन द्वारा स्थापित प्रजाति अर्थात् वंशानुक्रम, शारीरिक संरचना, क्षण तथा युगचेतना और पर्यावरण अर्थात् जलवायु और सामाजिक परिवेश को परस्पर संबंधयुक्त पक्ष मानना चाहिए (सन् 2007, पृ .2)। ये तीनों तत्त्व एक दूसरे के पूरक तत्व है अर्थात् इन तीनों तत्व में आपसी सम्बन्ध होता है। सिलवाल कहते हैं कि मनुष्य अनुकूल प्रतिकूल वातावरण में जीवन को भोगता है। साहित्यकार की सिर्जना में भी तत्कालीन वातावरण का प्रभाव पडता है (सिलवाल वि.स. 2074 पृ. 73)। साहित्यकार की कृति एवं साहित्यकार में त्रितत्व का प्रभाव दृष्टिगत होता है और उन्हीं त्रितत्त्वों के आधार पर कृति का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। प्रस्तुत लेख में मैं दासी मैं सराय उपन्यास का विश्लेषण इसी सिद्धान्त के आधार पर किया जा रहा है।

3.1. प्रजाति के आधार पर 'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास का समाजशास्त्र :

''मैं दासी मैं सराय" उपन्यास धूस्वाँ सायमी द्वारा लिखा गया एक सामाजिक उपन्यास है।

3.1.1 प्रजाति :

एक वंशगत रीतिरिवाज, खानपान, रहन सहन आदि को कहा जाता है। इसे वंशगत परिचय भी कहा जाता है। गुप्तजी का कहना है कि मनुष्य के वंशगत आधार से शारीरिक बनावट, भाषा, रीति–रिवाज, खानपान, सांस्कृतिक परिचय, विचार, रहन–सहन, संस्कारगत विशिष्टता दृष्टिकोण की मौलिकता के साथ स्थूल और सूक्ष्म भिन्नता प्रजाति के अभिलक्षण हैं (सन् 1981, पृ. 41)। किसी भी साहित्य में जहाँ चरित्र का वर्णन होता है उसके माध्यम से जाति का बोध होता है। उस पात्र के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का पता चलता है, यही प्रजाति है।

चन्द्रलक्ष्मी शराब बनाने वाले की बेटी थी और उसका परिवार उसी शराब को बेचकर चलता था। वह याद करती है अपने जीवन को कि उसके परिवार को शराब बिक्री करने के कारण पकड़ा गया था। एक दिन उसकी माल्कीन उसकी शराब नहीं पीने की बात सुनकर बिगड़ी थी – "दादी और बुआ को तो शराब बनाने से फुर्सद नहीं और यह मेमसाहिबा रोब जमाती है कि मैं शराब नहीं पीती.....(सायमी, 1974, पृ. 20)।"

चन्द्रलक्ष्मी के मन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की सोच उसके मन में हमेशा चलती रहती हैं। उसकी एक नकारात्मक सोच देखिए – "मैं दासी हूँ। मैं पत्नी नहीं, दासी हूँ। नौकरी करने वाले पुरुष की पत्नी दासी होती है..... (सायमी, 1975 पृ. 84)।" उन्हें अपने बच्चों का पालना मुश्किल हो रहा था और समाज की निगाह भी उनके लिए अच्छा नहीं था फिर उनके पिता ने उनसे शादी कर ली। "उनके पिता उनकी माँ के दूसरे पति थे। पर इससे क्या हुआ? लेकिन समाज को तो यही खटकता है। उनकी माँ जब जवान थी तो

विधवा हो गई थी। उनके लिए अपने बच्चों का पालन करना भी कठिन हो गया था। उन्हें एक सहारे की आवश्यकता महसूस हुई। जब समाजवालों ने जीना दूभर कर दिया तो उनके पिता ने उनसे शादी कर ली। इसमें उनका क्या दोष? (सायमी, 1974, पृ. 89)।" हमारा समाज भी विचित्र है। विधवा विवाह के लिए अनुमति देता है पर फिर विवाह करने पर अफवाँयें भी फैलाता है।

प्रजाति एक वंशगत रीति–रिवाज, खानपान, रहन सहन आदि को कहा जाता है। इसे वंशगत परिचय भी कहा जाता है। गुप्तजी का कहना है कि मनुष्य के वंशगत आधार से शारीरिक बनावट, भाषा, रीतिरिवाज, खानपान, सांस्कृतिक परिचय, विचार, रहनसहन, संस्कारगत विशिष्टता दृष्टिकोण की मौलिकता के साथ स्थूल और सूक्ष्म भिन्नता प्रजाति के अभिलक्षण हैं (सन् 1981, पृ.41)। किसी भी साहित्य में जहाँ चरित्र का वर्णन होता है उसके माध्यम से जाति का बोध होता है। उस पात्र के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का पता चलता है, यही प्रजाति है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु चन्द्रलक्ष्मी के इर्द गिर्द घुमती है। वह उपन्यास की प्रमुख पात्र है और सारा उपन्यास उसी पर केन्द्रित है। वह गरीब माँ–बाप की बेटी है। पैसों के अभाव के कारण उसे मातृभूमि को छोड़कर सात समन्दर पार अमेरिका में नौकरानी के रूप में जाना पड़ा। वह कीर्तिपुर की नेवार जाति की लड़की है। कहा जाता है कि नेवारी लड़की कभी भी विधवा नहीं होती क्योंकि इस जाति की कन्याओं को बचपन में ही बेल के वृक्ष से विवाह कर दिया जाता है – "मेरी शादी तो भगवान विष्णु के बीच बचाब से न जाने कब कि हो चुकी है भगवान शंकर से! उस समय मैं बहुत बच्ची थी। कितनी आशा और विश्वास के साथ मुझे सजाया गया था। मैने साड़ी भी पहनी थी। शायद..... (सायमी, 1975, पृ. 26/27)।" चन्द्रलक्ष्मी शराब बनाने वाला की बेटी थी और उसका परिवार उसी शराब को बेचकर चलता था। वह याद करती है अपने जीवन को कि उसके परिवार को शराब बिक्री करने के कारण पकड़ा गया था। एक दिन उसकी माल्कीन उसकी शराब नहीं पीने की बात सुनकर बिगड़ी थी – "दादी और बुआ को तो शराब बनाने से फुर्सद नहीं, और यह मेमसाहिबा रोब जमाती है कि मैं शराब नहीं पीती.....(सायमी, 1974, पृ. 20)।" एक नौकरानी जो अकेली दिनभर घर के चार दिवारों के अन्तर रहने के कारण वह अपने जीवन को पिंजड़े मे कैद पक्षी की तरह मानती है। वह अपने जीवन को कभी स्वस्थानी की गोमा से तुलना करती है तो कभी सिन्ड्रेला से। वह अपने को भाग्य द्वारा सताई गई एक अबला नारी मानती है। सिर्फ काम करने के लिए बनी एक नारी।

वह स्वयं से कहती है – "हाँ जी, मैं गोमा हूँ। मैं सिन्ड्रेला हूँ। मैं चन्द्र लक्ष्मी। भाग्य द्वारा सतायी गयी एक अवला। काम करने के लिए जीनेवाली एक नारी। अपने पिता की चिन्ता का कारण, एक कन्या। इससे बढ़ कर सबकी चाकरी करने वाली एक दासी, एक सराय, गोमा! सिन्ड्रेला!! चन्द्रलक्ष्मी!!! एक दासी : एक सराय (सायमी, 1974, पृ. 35)।" चन्द्रलक्ष्मी अमेरिका में एक घर में नौकरानी बनकर गई, परन्तु वही उसने सुन्दरमान से विवाह रच लिया। विवाह के बाद भी वह शान्ति से जी नहीं पा रही थी। उसका पति नेक इन्सान था जो नेपाल का ही था, नेपाली था। वह विवाह के बाद अपनी मातृभूमि नेपाल जाना चाहती है। मातृभूमि का प्यार उसे सता रहा होता है। उसे कभी कभी अपने माँ–बाप से भी गुस्सा आता था क्योंकि उन्होंने उसे नौकरानी बनाकर इतने दूर अमेरिका में भेजा। नरक सा जीवन बिताने के लिए मजबुर किया। परन्तु वह फिर सोचती है – "मुझे जाना तो होगा क्योंकि मैं तो एक सराय हूँ। जिसको जरूरत पड़ेगी उसी को सेवा करना मेरा कर्तव्य है। अब नौकरानी से मैं सराय बनती जा रही हूँ। अपने पति के लिए भी मैं सराय हूँ। चन्द्रलक्ष्मी दासी थी तो सुन्दरमान

की पत्नी सराय है। अब मेरा जीवन हर एक को आराम देने के लिए, सेवा करने के लिए है (सायमी, 1974, पृ 82)।"

मनुष्य का दिमाग भी अजीव है। ये क्या क्या सोचता रहता है। कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक। नकारात्मक बातों को भी सकारात्मक ढंग से सोचा जा सकता है और सकारात्मक बातों को भी नकारात्मक ढंग से। सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की सोच उसके मन में हमेशा चलती रहती हैं। उसकी एक नकारात्मक सोच देखिए – "मैं दासी हूँ। मैं पत्नी नहीं, दासी हूँ। नौकरी करने वाले पुरुष की पत्नी दासी होती है..... (सायमी, 1975, पृ. 84)।" सुन्दरमान जी सो रहे होते हैं और उनके बगल में एक चेक बुक होता है जिसे देख कर वो सोचती है– "मैं चेक बुक के अन्तर समा जाऊँगी, गुम हो जाउँगी। मुझे कभी हँसने की इच्छा होती तो कभी रोने की। हाँ जी मैं भी तो उनके नाम पर बैंक में जमा किया गया अकाउन्ट हूँ। फिक्स डिपोजिट जिसको इधर उधर नहीं किया जा सकता। (सायमी, 1974, पृ. 84)"। चन्द्रलक्ष्मी पति के साथ स्वदेश (नेपाल) लौटी। उसे भय था कि सुन्दरमान की माँ उसे स्वीकारेगी या नहीं। परन्तु वह तो बहुत अच्छी निकली। उसकी सास का एक वृद्ध व्यक्ति के साथ विवाह हुआ था। उनके पिता उनकी माँ के दूसरे पति थे। वह जवान में ही विधवा हो गई। उन्हें अपने बच्चों का पालना मुश्किल हो रहा था और समाज की निगाह भी उनके लिए अच्छा नहीं था फिर उनके पिता ने उनसे शादी कर ली। "उनके पिता उनकी माँ के दूसरे पति थे। पर इससे क्या हुआ? लेकिन समाज को तो यही खटकता है। उनकी माँ जब जवान थी तो विधवा हो गई थी। उनके लिए अपने बच्चों का पालन करना भी कठिन हो गया था। उन्हें एक सहारे की आवश्यकता महसुस हुई। जब समाजवालों ने जीना दूभर कर दिया तो उनके पिता ने उनसे शादी कर ली। इसमें उनका क्या दोष ? (सायमी, 1974, पृ. 89)।"

हमारा समाज भी विचित्र है। विधवा विवाह के लिए अनुमति देता है पर फिर विवाह करने पर अफवाँयें भी फैलाता है। बेकार की बातें होने लगती हैं। बातचीत के क्रम में उनकी सास ने उसे बताया कि उनकी सास बहुत सुन्दर थी। उसके पिताजी उसे किसी बड़े घराने में केटी अर्थात् रखैल बना देना चाहते थे। उन्हें एक जगह ले जाया भी गया वहाँ उन्होंने कुछ नाचना गाना भी सिखा। पर उसका मन वहाँ नहीं लगा और वह भाग कर घर लौट आई। इसके प्रतिकार स्वरूप उनकी इच्छा न होते हुए भी उनकी शादी अपने बाप की उम्र वाले व्यक्ति से कर दी गई। वे उस बूढे के बच्चों की माँ बनती गई पर उनका टुटा दिल कभी न खिल सका।

उपन्यास हिन्दी भाषा में है परन्तु नेपाली रहन–सहन, संस्कृति, नेवारी भाषा का भी पता चलता है। चन्द्रलक्ष्मी समय समय पर नेवारी भाषा का गीत गाती है, जैसे –

गन वने गन चने,
बने थान मदु दैव।
थथे जोगु रस दक्को,
तोल ताब जि गन बने.....
(कहाँ जाऊँ कहाँ बैठूँ
जाने का ठौर नहीं देव !
इसके जैसा रस तारा
छोड़ कर मैं जाऊँ कहाँ?) (सायमी, 1974, पृ. 48)।"

3.2. पर्यावरण के आधार पर 'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास का समाजशास्त्र :

5.3.2. पर्यावरण :

पर्यावरण का मतलब है परिवेश। साहित्य में पर्यावरण लेखक को साहित्य सिर्जना के लिए प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। पर्यावरण की अभिव्यक्ति पात्र के द्वारा या फिर सर्जक की अभिव्यक्ति से भी प्रस्तुत होता है।

मैं दासी मैं सराय उपन्यास में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैयक्तिक, मनोवैज्ञानिक, लैंगिक, स्थानीयपन, परदेश का रहन सहन जैसे पर्यावरण का चित्रण किया है। उपन्यास में आठ का अंक चन्द्रलक्ष्मी को बहुत खटकता है। जब वह 8 साल की थी तब भी अनहोनी हुई थी। उसका भाई मर गया था और अब वह 18 की हो गई है इसलिए उसके पिताजी उसे सचेत करते हुए पत्र लिखते हैं कि अब तुम 18 की हो गई हो। "पिताजी लिखते हैं कि अब मेरी उम्र में आठ की संख्या आनेवाली है। इसलिए मुझे सावधानी से सब कुछ करना होगा। मुझे याद नहीं कि मेरी आठ वर्ष की आयु में क्या हुआ था? क्या विपत्ति आई थी? अब देखु कि 18 वर्ष अवस्था में कौन सा संकट मेरे सिर पर मण्डराता है.....। (सायमी, 1974, पृ. 15)।"

लैंगिक भेदभाव समाज में होना आम बात है। उसमें भी महिलाओं के ऊपर समाज के दृष्टिकोण भेदभावयुक्त होता है। जिसका वर्णन उपन्यास में जगह जगह पर लेखक ने चन्दलक्ष्मी के माध्यम से किया है। उपन्यास की पात्र चन्द्रलक्ष्मी लैंगिक मतभेद की बात उठाती है। उसके मालिक माल्कीन उसे मारते हैं, उसे सताते हैं यहाँ तक की उसका मालिक घर से आया पत्र भी बिना अनुमति लिए खोलकर पढ़ता है।

चन्द्रलक्ष्मी का अमेरिका में जेनी के साथ दोस्ती होती है। जेनी की दो बेटी हैं और दोनों बेटी अपने बोयफ्रेन्ड के साथ घुमने जाती है। इसमें जेनी बडे गर्व के साथ कहती है कि मेरी बेटी अपने बोइफ्रेन्ड के साथ घुमने गई है। "उसकी एक बेटी अपने बोस की चहेती थी। जब कभी किसी काम से वह शहर से बहार जाते तो उसी को साथ ले जाते। उपहार भी काफी देते हैं। टेलिविजन भी उन्हीं ने उपहार में दिया है। दुसरी लड़की जरा चंचल और नटखट है, पर है बड़ी चालक। वह कमाती भी अधिक है। सुन्दर होने के कारण बहुत से पुरुष उससे शादी करने को तैयार हैं।..... जिस मर्द के साथ वह कोशी टापु मे गई है। वह तो एक डॉक्टर है। कितना स्वतन्त्र समाज है।" अमेरिका में लड़के और लड़की का साथ–साथ रहना तथा एक–दूसरे के साथ चिपक कर रहना आम बात है। जिसके बारे मे चन्द्रलक्ष्मी कई बार बताती है। जेनी जो चन्द्रलक्ष्मी की शुभचिन्तक है। यह अमेरिका का रहन–सहन है जिसका वर्णन चन्द्रलक्ष्मी ने किया है। चन्द्रलक्ष्मी अमेरिका में रहते हुए भी ग्रामीण परिवेश और अपने बाल्यकाल को बारबार याद करती है। वह अपने मामा के यहाँ अक्सर जाया करती थी। वह याद करती है उस समय को "मैंने अपने बचपन का एक बडा हिस्सा वही व्यतीत किया था। वहाँ मैं कितनी स्वतन्त्र थी! दिनभर बकरी चराने जाती थी। दूर पहाड़ियों में बसी बस्ती और वहाँ के लहराते खेत बहुत ही मनोरम लगते थे। पर इन सबके ऊपर चमकती हिमाच्छित पर्वत श्रृंखलाओं का दृश्य देखते ही बनता था।"

पर्यावरण का मतलब है परिवेश। साहित्य में पर्यावरण लेखक को साहित्य सिर्जना के लिए प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। पर्यावरण की अभिव्यक्ति पात्र के द्वारा या फिर सर्जक की अभिव्यक्ति से भी प्रस्तुत होता है।

मैं दासी मैं सराय उपन्यास में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैयक्तिक, मनोवैज्ञानिक, लैंगिक, स्थानीयपन, परदेश का रहन सहन जैसे पर्यावरण का चित्रण किया है। उपन्यास में आठ का अंक चन्द्रलक्ष्मी को बहुत खटकता है। जब वह 8 साल की थी तब भी अनहोनी हुई थी। उसका भाई मर गया था और अब वह 18 की हो गई है। इसलिए उसके पिताजी उसे सचेत करते हुए पत्र लिखते हैं कि अब तुम 18 की हो गई हो। "पिताजी

लिखते हैं कि अब मेरी उम्र में आठ की संख्या आने वाली है। इसलिए मुझे सावधानी से सब कुछ करना होगा। मुझे याद नहीं कि मेरी आठ वर्ष की आयु में क्या हुआ था? क्या विपत्ति आई थी ? अब देखु कि 18 वर्ष अवस्था में कौन सा संकट मेरे सिर पर मण्डराता है.....। (सायमी, 1974, पृ. 15)।"

चन्द्रलक्ष्मी एक दासी है। वह दिनभर कमरे में अकेली रहती है। उसके मन में अनेक प्रकार के भाव उठते हैं। कभी सकारात्मक और कभी नकारात्मक। वह सोचती है कि वह दासी है इसलिए दासी की तरह ही रहना है। उपन्यास के आरम्भ से लेकर अन्त तक चन्द्रलक्ष्मी के मन में उठे अनेक भावों को दिखाया गया है। उसके मन में कभी सकारात्मक भाव उठते हैं तो कभी नकारात्मक। जिसे पढ़कर लेखक की मनोवैज्ञानिक शक्ति का आभास होता है।

लैंगिक भेदभाव समाज में होना आम बात है। उसमें भी महिलाओं के ऊपर समाज के दृष्टिकोण भेदभावयुक्त होता है। जिसका वर्णन उपन्यास में जगह जगह पर लेखक ने चन्दलक्ष्मी के माध्यम से किया है। उपन्यास की पात्र चन्द्रलक्ष्मी लैंगिक मतभेद की बात उठाती है। उसके मालिक माल्कीन उसे मारते हैं, उसे सताते हैं यहाँ तक की उसका मालिक घर से आया पत्र भी बिना अनुमति लिए खोलकर पढ़ता है।

चन्द्रलक्ष्मी का अमेरिका में जेनी के साथ दोस्ती होती है। जेनी की दो बेटी हैं और दोनों बेटी अपने बोयफ्रेन्ड के साथ घुमने जाती है। इसमें जेनी बडे गर्व के साथ कहती है कि मेरी बेटी अपने बोइफ्रेन्ड के साथ घुमने गई है। "उसकी एक बेटी अपने बोस की चहेती थी। जब कभी किसी काम से वह शहर से बहार जाते तो उसी को साथ ले जाते। उपहार भी काफी देते हैं। टेलिविजन भी उन्हीं ने उपहार में दिया है। दुसरी लड़की जरा चंचल और नटखट है, पर है बड़ी चालक। वह कमाती भी अधिक है। सुन्दर होने के कारण बहुत से पुरुष उससे शादी करने को तैयार हैं।..... जिस मर्द के साथ वह कोशी टापु मे गई है। वह तो एक डॉक्टर है। कितना स्वतन्त्र समाज है।" अमेरिका में लड़के और लड़की का साथ साथ रहना तथा एक दूसरे के साथ चिपक कर रहना आम बात है । जिसके बारे मे चन्द्रलक्ष्मी कईं बार बताती है। जेनी जो चन्द्रलक्ष्मी की शुभचिन्तक है। दो बेटी की माँ है। पति से अलग रहती है, कुमारी कहने पर बहुत खुश होती है। हमेशा पैसे कमाने के पीछे पड़ी रहती है। "उसके जीवन मे एक ही धुन, एक ही चिन्ता है – वह है कमाने की। जीवन के लिए नहीं, मृत्यु के बाद के लिए, कब्र के लिए। कैसी विचित्र दुनिया है.....! (सायमी, 1974, पृ. 36)।" यह अमेरिका का रहन–सहन है जिसका वर्णन चन्द्रलक्ष्मी ने किया है । चन्द्रलक्ष्मी अमेरिका में रहते हुए भी ग्रामीण परिवेश और अपने बाल्यकाल को बारबार याद करती है। वह अपने मामा के यहाँ अक्सर जाया करती थी। वह याद करती है उस समय को "मैंने अपने बचपन का एक बडा हिस्सा वही व्यतीत किया था। वहाँ मैं कितनी स्वतन्त्र थी! दिनभर बकरी चराने जाती थी। दूर पहाड़ियों में बसी बस्ती और वहाँ के लहराते खेत बहुत ही मनोरम लगते थे। पर इन सबके ऊपर चमकती हिमाच्छित पर्वत श्रृंखलाओं का दृश्य देखते ही बनता था।"

3.3. क्षण के आधार पर 'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास का समाजशास्त्र

5.3.3. क्षण :

क्षण अर्थात् समय बोधक परिस्थिति। इसे युग चेतना से भी सम्बोधन किया जाता है। साहित्यिक कृति में भिन्न भिन्न युग के प्रभाव और विशेषताओं का अभिव्यक्त होता है। युगचेतना का प्रभाव लेखक में होता ही है। इसलिए उसकी कृति के पात्र लेखक के अनुसार ही अभिव्यक्त करते हैं। पाठक वर्ग में भी युग चेतना का प्रभाव पड़ता है।

मैं दासी मैं सराय उपन्यास में सामाजिक अवस्था तथा सांस्कृतिक चेतना के विकास का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत कृति में प्रयुक्त समाज मनोविज्ञान, सांस्कृतिक भूगोल के विशिष्ट चरित्र और मानवीय सभ्यता द्वारा जातिगत विषमता को चित्रण किया है। समाज में विकसित सम और विषम क्षणगत स्वरूप को संस्कृति, धर्म और संस्कार के द्वारा युगचेतना संरचना को प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास में तात्कालीन प्रभावकारी समय के बारे में भी वर्णन है। भारत और पाकिस्तान का विभाजन सन 1947 को हुआ था और इस विभाजन में लाखों हिन्दू–मुस्लिम निर्दोष आम नागरिकों की हत्या हुई थीं। यह विभाजन और हत्या अत्यन्त त्रासदीय था जिसको नागरिक भूल नहीं पाते। जिन्होंने इस भयावह घटना को स्वयं भोगा हो या अपनी आँखो से देखा हो वे भूल भी कैसे सकते? संक्षेप में ही सही चन्द्रलक्ष्मी की बातों से पता चलता है। "जब भी मैं किसी नारी की मांग में सिन्दुर देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि नारी के व्यक्तित्व को जुल्म और जबरजस्ती का सहारा लेकर भारत और पाक की तरह दो टुकडों में बाँट दिया गया है (सायमी, 1947, पृ. 27)।"

रोबर्ट केनेडी अमेरिका के राष्ट्रपति थे जिन्हें एक समझदार राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है। उन्होंने रुस और अमेरिका के बीच के युद्ध को समझदारी के साथ सुलझाया था। सन् 1963 में इनकी हत्या कर दी गई। इन्हें अमेरिका के महान नेता माने जाते हैं। इसी तरह किङ मार्टर लुथर भी अमेरिका के महान नेता थे, जिन्होंने रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाई थी। अमेरिका में उस समय काले गोरे के बीच में विभेद था जिसको उन्होंने खुद झेला था, इसे शान्तिपूर्वक ढंग से उन्होंने समस्या का समाधान किया। इसीलिए उन्हें अमेरिका के गान्धी कहा जाता है। उनकी हत्या सन 1968 में हुई थी। इस इतिहास को चन्द्रलक्ष्मी इसप्रकार से कहती है – "मेरे देखते देखते मार्टिन लुथर किङ और रॉबर्ट केनेडी की हत्या हो गयी (सायमी, 1974, पृ. 23)।"

इसी तरह उपन्यास मे वियतनाम युद्ध के बारे में भी वर्णन है। इतिहास में वियतनाम युद्ध बहुत समय तक चलने वाले युद्ध के रूप में जाना जाता है। कहा जाता है कि इस युद्ध में ढाई लाख के आसपास वियतनामी मारे गए और लगभग 68 हजार अमेरिकी सैनिक मारे गए। "टेलिविजन चल रहा था। उसमें से वियतनाम के युद्ध के विषय में बताया जा रहा था.....(सायमी, 1974, पृ. 25)।"

क्षण अर्थात् समय बोधक परिस्थिति। इसे युगचेतना से भी सम्बोधन किया जाता है। साहित्यिक कृति में भिन्न भिन्न युग के प्रभाव और विशेषताओं का अभिव्यक्त होता है। युगचेतना का प्रभाव लेखक में होता ही है। इसलिए उसकी कृति के पात्र लेखक के अनुसार ही अभिव्यक्त करते हैं। पाठक वर्ग में भी युग चेतना का प्रभाव पड़ता है।

मैं दासी मैं सराय उपन्यास में सामाजिक अवस्था तथा सांस्कृतिक चेतना के विकास का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत कृति में प्रयुक्त समाज मनोविज्ञान, सांस्कृतिक भूगोल के विशिष्ट चरित्र और मानवीय सभ्यता द्वारा जातिगत विषमता को चित्रण किया है। समाज में विकसित सम और विषम क्षणगत स्वरूप को संस्कृति, धर्म और संस्कार के द्वारा युगचेतना संरचना को प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास में तात्कालीन प्रभावकारी समय के बारे में भी वर्णन है। भारत और पाकिस्तान का विभाजन सन 1947 को हुआ था और इस विभाजन में लाखों हिन्दू–मुस्लिम निर्दोष आम नागरिकों की हत्या हुई थीं। यह विभाजन और हत्या अत्यन्त त्रासदीय था जिसको नागरिक भूल नहीं पाते। जिन्होंने इस भयावह घटना को स्वयं भोगा हो या अपनी आँखो से देखा हो वे भूल भी कैसे सकते? संक्षेप में ही सही चन्द्रलक्ष्मी की बातों से पता चलता है। "जब भी मैं किसी नारी की मांग में सिन्दुर देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि नारी के व्यक्तित्व को जुल्म और

जबरजस्ती का सहारा लेकर भारत और पाक की तरह दो टुकडों में बाँट दिया गया है। (सायमी, 1947, पृ. 27)।"

रोबर्ट केनेडी अमेरिका के राष्ट्रपति थे जिन्हें एक समझदार राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है। उन्होंने रुस और अमेरिका के बीच के युद्ध को समझदारी के साथ सुलझाया था। सन् 1963 में इनकी हत्या कर दी गई। इन्हें अमेरिका के महान नेता माने जाते हैं। इसीतरह किङ मार्टर लुथर भी अमेरिका के महान नेता थे, जिन्होंने रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाई थी। अमेरिका में उस समय काले गोरे के बीच में विभेद था जिसको उन्होंने खुद झेला था, इसे शान्तिपूर्वक ढंग से उन्होंने समस्या का समाधान किया। इसीलिए उन्हें अमेरिका के गान्धी कहा जाता है। उनकी हत्या सन 1968 में हुई थी। इस इतिहास को चन्द्रलक्ष्मी इसप्रकार से कहती है – "मेरे देखते देखते मार्टिन लुथर किङ और रॉबर्ट केनेडी की हत्या हो गयी। (सायमी, 1974, पृ. 23)।"

इसी तरह उपन्यास मे वियतनाम युद्ध के बारे में भी वर्णन है। इतिहास में वियतनाम युद्ध बहुत समय तक चलने वाले युद्ध के रूप में जाना जाता है। कहा जाता है कि इस युद्ध में ढाई लाख के आसपास वियतनामी मारे गए और लगभग 68 हजार अमेरिकी सैनिक मारे गए। "टेलिविजन चल रहा था। उसमें से वियतनाम के युद्ध के विषय में बताया जा रहा था.....।(सायमी, 1974, पृ. 25)।"

4. उपसंहार :

'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास के अध्ययन से यह पता चलता है कि उस समय की जातिगत अवस्था कैसी थी? उपन्यास से तत्कालीन खानपान, रीति–रिवाज, भाषा, रहन–सहन आदि के बारे में बोध होता है। चन्द्रलक्ष्मी का परिवार, उसकी जाति, उसकी भाषा आदि पर लेखक ने पाठक वर्ग को अवगत कराया है। लेखक स्वयं भी नेवार जाति के हैं। अतः नेवारी संस्कृति, रहन–सहन, परम्परा आदि का प्रभाव स्वभाविक है।

क्षण अर्थात् युगचेतना का प्रभाव उपन्यास में झलकता है। उस समय की परिस्थिति, राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की जानकारी उपन्यास से पर्याप्त मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में समाज मनोविज्ञान, सांस्कृतिक, भूगोल, जातिगत विषमता का चित्रण मिलता है।

पर्यावरण अर्थात परिवेश का प्रभाव पाठक वर्ग में पडता है । सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैयक्तिक, मनोवैज्ञानिक, लैङ्गिक, स्वदेश परदेश का रहन–सहन उपन्यास में वर्णित है। चन्द्रलक्ष्मी का एकाकीपन, मन के भावों के आरोह अवरोह, परदेश का रहन–सहन आदि पर्यावरणीय परिस्थिति को लेखक ने अपनी पुस्तक में चित्रित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. गुप्ता, विशम्भरदयाल (सन् 1989). साहित्य का समाजशास्त्र (दूसरा संस्करण) भारत : सीता प्रकाशन।
2. गौतम, कृष्ण (वि.स. 2058), एक चिहान उपन्यास : समाजशास्त्रीय दृष्टि, समष्टि, (काठमांडू : जेठ–असार), 88–93।
3. घिमिरे, मुकुंद (वि,स. 2058), "नासो कथा संग्रह को समाजशास्त्रीय अध्ययन" (अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोध पत्र, कीर्तिपुर : नेपाली शिक्षण विभाग।)
4. जैन, निर्मला (सं.) (ई.सं. 2009), साहित्य का समाजशस्त्रीय चिंतन, हिंदी माध्यम कार्यांवयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
5. जोशी, चंडी प्रसाद (प्र. संस्क. वि.सं. 1972), हिंदी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन, कानपुर,

अनुसंधान प्रकाशन।

6. दाहाल, खे मनाथ (वि.सं. 2058), आधुनिक नेपाली उपन्यास को समाजशास्त्र, (अप्रकाशित विद्यावारिधि शोध प्रबंध, काठमांडू, त्रि.वि. मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र।)
7. तेन, हिप्पोलाइट एडल्ट (सन् १६७१). हिस्ट्री अफ इङ्लिस लिटरेचर (अनु. भी हाङ लाउन). वोलम न्युयोर्क : विलियम्स एच.एल. टिडी.।
8. पाण्डे, मेनेजर (सन 1989). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. भारत रूचण्डिगढ : हरियाणा साहित्य अकादमी।
9. प्रधान, कृष्णचंद्र सिंह (वि, सं. 2054), साहित्य को समाजशास्त्र, समकालीन बोध र नेपाली उपन्यास (अप्रकाशित गोष्ठी पत्र, काठमांडू–नेपालगंज : नेपाल राजकीय प्रतिष्ठान)
10. राम, डॉ. राम प्रकाश (ई. स. 2006), फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य का समाजशासत्रीय अध्ययन, डी. पी.एस. पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।
11. सायमी, धूस्वाँ (सन 1974). मैं दासी मैं सराय. राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।
12. सिलवाल, हरिप्रसाद (वि. स. 2074). मदनमणि दीक्षित का उपन्यासको समाजशास्त्र, अप्रकाशित विद्यावारिधि शोध प्रबन्ध. त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर।
13. सिंह, बच्चन (सन् 2007). साहित्य का समाजशास्त्र. इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन।
14. शीना, एन.बी. (ई.सं. 1989), 'समकालीन कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन 2009' (अप्रकाशित विद्यावारिधि शोध ग्रंथ, हिंदी विभाग कोचिन विश्वविद्यालय विज्ञान एवं प्रविधि, कोची, केरला।
15. क्षेत्री, उदय (वि.सं. 2064), समाजशास्त्रीय दृष्टि में इन्द्रबहादुर राई का आख्यान को अध्ययन, (अप्रकाशित विद्यावारिधि शोध ग्रंथ, काठमांडू, त्रि.वि. मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र।)

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 50-54

विकसित भारत 2047 के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण–अनुकूल ग्रंथालयों की भूमिका

Research Paper on "The Role of Environment & Friendly Libraries in the Context of Viksit Bharat 2047"

डॉ. दीप्ति लोदवाल
ग्रंथपाल, शासकीय विधि महाविद्यालय, उज्जैन।

सारांश :

भारत वर्ष 2047 में स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, और इस महत्वपूर्ण मील के पत्थर तक देश को "विकसित राष्ट्र" के रूप में स्थापित करना राष्ट्रीय संकल्प है। विकसित भारत की अवधारणा में आर्थिक और तकनीकी प्रगति के साथ–साथ पर्यावरणीय स्थिरता, ज्ञान का लोकतंत्रीकरण और सतत् शिक्षा प्रणाली प्रमुख आधार हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में ग्रंथालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेषकर तब जब उन्हें पर्यावरण–संवेदनशील और ऊर्जा–दक्ष संस्थानों के रूप में विकसित किया जाए। हरित ग्रंथालय पर्यावरण–अनुकूल अवसंरचना, ऊर्जा–कुशल तकनीक, डिजिटल संसाधनों और पुनर्चक्रण प्रक्रियाओं के माध्यम से न केवल ज्ञान–संरक्षण में योगदान देते हैं, बल्कि सतत विकास और पर्यावरण जागरूकता को भी प्रोत्साहित करते हैं। यह शोध–पत्र विकसित भारत 2047 के संदर्भ में हरित ग्रंथालयों की आवश्यकता, उनकी प्रमुख विशेषताओं, चुनौतियों और भारत में उनके विकास की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शब्द कुंजी : विकसित भारत, पर्यावरण अनुकूल ग्रंथालय, हरित ग्रंथालय, सतत विकास, डिजिटल परिवर्तन, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, ज्ञान समाज।

परिचय :

भारत के विकास की दिशा अब एक नई परिकल्पना की ओर अग्रसर है – "विकसित भारत 2047", यह केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं बल्कि एक सामाजिक–सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अवधारणा है जिसमें ज्ञान, नवाचार, पर्यावरण और समान अवसरों पर आधारित एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण निहित है। विकसित भारत की यह परिकल्पना तभी साकार हो सकती है जब ज्ञान और सूचना के सभी केंद्र– विद्यालय, विश्वविद्यालय और ग्रंथालय इस मिशन में सक्रिय भागीदार बनें। ग्रंथालय समाज के बौद्धिक



और सांस्कृतिक विकास के केंद्र हैं। अब उनकी भूमिका केवल पुस्तकों के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि वे पर्यावरण जागरूकता, सतत विकास और डिजिटल सशक्तिकरण के वाहक बन चुके हैं।

भारत अपने सार्वजनिक, शैक्षणिक और डिजिटल पुस्तकालयों को हरित स्वरूप में परिवर्तित करता है, तो वे ज्ञान समाज के साथ–साथ सतत् समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

"Green Library Model"

(ज्ञान, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा-संरक्षण और पर्यावरणीय चेतना का एकीकृत मॉडल)



अध्ययन के उद्देश्य :

1. विकसित भारत 2047 की अवधारणा और उसके विकासात्मक उद्देश्यों को समझना।
2. हरित ग्रंथालयों की भूमिका और आवश्यकता का विश्लेषण करना।
3. भारतीय ग्रंथालय प्रणाली में पर्यावरण–अनुकूल प्रथाओं के प्रयोग का मूल्यांकन करना।
4. ग्रंथालयाध्यक्ष की भूमिका को हरित प्रबंधन और डिजिटल नवाचार के संदर्भ में परिभाषित करना।
5. हरित ग्रंथालयों के माध्यम से सतत विकास और पर्यावरणीय शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु सुझाव देना।

शोध पद्धति :

यह शोध–पत्र डॉक्ट्रिनल (Doctrinal) पद्धति पर आधारित है। इसमें माध्यमिक स्रोतों जैसे – पुस्तकों, शोध आलेखों, सरकारी नीतियों, SDG रिपोर्टों तथा पर्यावरणीय दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है। विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाकर हरित ग्रंथालयों की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं का मूल्यांकन किया गया है।

हरित ग्रंथालय :

"ग्रीन लाइब्रेरी अर्थात हरित ग्रंथालय वह ग्रंथालय है जिसे पर्यावरण–अनुकूल डिजाइन, नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, रीसाइक्लिंग और ग्रीन टेक्नोलॉजी की सहायता से इस प्रकार विकसित किया जाता है कि उसका संचालन कम कार्बन उत्सर्जन (Low Carbon Footprint) वाला और लंबी अवधि तक टिकाऊ हो।"

हरित ग्रंथालय वे हैं जो अपने संचालन, भवन–निर्माण और सेवा प्रणाली में पर्यावरण–संवेदनशील तकनीकों का उपयोग करते हैं। इसमें ऊर्जा दक्ष प्रकाश व्यवस्था, वर्षा जल संचयन, सौर ऊर्जा, डिजिटल संग्रहण, और अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हैं।

विकसित भारत 2047 में हरित ग्रंथालयों की भूमिका :

विकसित भारत 2047 के निर्माण में हरित ग्रंथालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये ज्ञान–संस्थाएँ न केवल सूचना सेवाओं का केंद्र होती हैं बल्कि पर्यावरण–सुरक्षा और सतत विकास को बढ़ावा देने का

प्रभावी माध्यम भी बनती हैं। हरित ग्रंथालय ऊर्जा–कुशल भवन, सौर ऊर्जा, वर्षा जल–संरक्षण, प्राकृतिक प्रकाश और पर्यावरण–अनुकूल सामग्रियों के उपयोग से अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करते हुए स्वच्छ एवं टिकाऊ संरचना का मॉडल प्रस्तुत करते हैं। ये डिजिटल संसाधनों, ई–बुक्स, ई–जर्नल्स और ऑनलाइन सूचना सेवाओं को बढ़ावा देकर पेपरलेस कार्य संस्कृति को प्रोत्साहित करते हैं, जो डिजिटल इंडिया और ग्रीन इंडिया की अवधारणाओं को मजबूत बनाता है। साथ ही, ऐसे ग्रंथालय पर्यावरण शिक्षा, जागरूकता, प्लास्टिक मुक्त अभियान, वृक्षारोपण एवं सतत विकास से जुड़े कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय में ग्रीन कल्चर का निर्माण करते हैं, जिससे नागरिकों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार विकसित होता है। हरित ग्रंथालय सतत विकास लक्ष्य (SDGs), विशेषकर स्वच्छ ऊर्जा, सतत समुदाय, जलवायु कार्रवाई और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राप्त करने में राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करते हुए 2047 तक एक ज्ञान–आधारित, पर्यावरण–सुरक्षित और विकसित भारत के निर्माण में निर्णायक योगदान देते हैं।

ग्रंथालयाध्यक्ष की भूमिका :

ग्रंथालयाध्यक्ष अब केवल सूचना प्रबंधक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय प्रबंधक (Environmental Managers) बन चुके हैं। वे हरित नीतियों के प्रवर्तक, जागरूकता अभियान के संचालक और संस्थागत स्थिरता के संरक्षक हैं। विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण को साकार करने में पर्यावरण–अनुकूल (Green) पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, और इस परिवर्तन के केंद्र में ग्रंथालयाध्यक्ष एक प्रमुख परिवर्तनकर्ता (Change Agent) के रूप में उभरते हैं। ग्रंथालयाध्यक्ष न केवल ज्ञान–संसाधनों के प्रबंधक होते हैं, बल्कि वे सतत विकास और पर्यावरण–सुरक्षा की दिशा में शैक्षिक संस्थानों, समुदाय और विद्यार्थियों को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी भी हैं।

ग्रीन लाइब्रेरी के निर्माण में ग्रंथालयाध्यक्ष सबसे पहले पर्यावरण–अनुकूल नीतियाँ तैयार करते हैं, जिनमें ऊर्जा–बचत, पेपरलेस सेवाएँ, डिजिटल संसाधनों का बढ़ा उपयोग, संसाधनों के पुनर्चक्रण और कचरा प्रबंधन के दिशानिर्देश शामिल होते हैं। वे छात्रों और समुदाय के लिए पर्यावरण–जागरूकता अभियान, कार्यशाला, ग्रीन रीडिंग क्लब और SDGs आधारित कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं ताकि समाज में पर्यावरण–सेंसिटिव दृष्टिकोण विकसित हो सके।

इसके साथ ही ग्रंथालयाध्यक्ष ग्रंथालय भवन और सेवाओं में आधुनिक, ऊर्जा–कुशल तकनीकों को अपनाने में नेतृत्व करते हैं, जैसे—LED लाइटिंग, सौर ऊर्जा, प्राकृतिक रोशनी का अधिकतम उपयोग, वर्षा जल संचयन, हरित छत (Green Roof) और पर्यावरण–अनुकूल निर्माण सामग्री। वे ग्रंथालय को पेपरलेस बनाने हेतु डिजिटल कैटलॉग, ई–बुक्स, ई–जर्नल्स और क्लाउड–आधारित सेवाओं का उपयोग बढ़ाते हैं, जिससे संसाधनों की बर्बादी कम होती है। इसके अतिरिक्त ग्रंथालयाध्यक्ष ग्रीन प्रोक्योरमेंट का पालन करते हुए ऐसे उत्पाद चुनते हैं जो टिकाऊ, पुनर्चक्रण योग्य और कम कार्बन उत्सर्जन वाले हों। वे ग्रंथालय को सामुदायिक हरित गतिविधियों जैसे पौधारोपण, ई–वेस्ट कलेक्शन ड्राइव, और स्वच्छता अभियानों का केंद्र भी बनाते हैं।

अंततः, ग्रंथालयाध्यक्ष केवल ग्रंथालय के प्रबंधक नहीं बल्कि "Green Knowledge Leaders" बनकर उभरते हैं, जो ज्ञान, तकनीक और पर्यावरणीय मूल्यों का सम्मिश्रण कर भारत को 2047 तक एक सतत, स्वच्छ, सशक्त और विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

हरित ग्रंथालय और सतत विकास लक्ष्य (SDGs)

हरित ग्रंथालय संयुक्त राष्ट्र के निम्नलिखित SDG लक्ष्यों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं :

- Goal 4 : Quality Education
- Goal 7 : Affordable and Clean Energy
- Goal 11 : Sustainable Cities and Communities
- Goal 13 : Climate Action

चुनौतियाँ :

हरित ग्रंथालयों के विकास में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ सामने आती हैं। सबसे प्रमुख समस्या वित्तीय संसाधनों की कमी है, जिसके कारण ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर और तकनीकी सुविधाएँ स्थापित करना कठिन हो जाता है। कई ग्रंथालयों में उन्नत तकनीकी ढांचे का अभाव है, जिससे ऊर्जा–दक्ष उपकरणों व डिजिटल सेवाओं का प्रभावी उपयोग नहीं हो पाता। इसके साथ ही, स्टाफ को हरित तकनीकों और सतत प्रबंधन के लिए आवश्यक प्रशिक्षण का अभाव भी एक बड़ी बाधा है। नीति स्तर पर मानकीकृत ग्रीन गाइडलाइन्स का अभाव और उपयोगकर्ताओं में पर्यावरणीय चेतना की कमी इस दिशा में प्रगति को धीमा कर देती है। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना हरित ग्रंथालयों का व्यापक विकास संभव नहीं है।

सुझाव :

भारत में सतत और पर्यावरण–अनुकूल ग्रंथालय प्रणाली के विकास के लिए एक समग्र राष्ट्रीय स्तर का Green Library Policy Framework तैयार किया जाना आवश्यक है, जिससे सभी ग्रंथालयों में हरित मानकों का एक समान क्रियान्वयन हो सके। देश भर के सरकारी और शैक्षणिक ग्रंथालयों में सौर ऊर्जा प्रणाली की स्थापना ऊर्जा संरक्षण एवं कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इसके साथ ही, सूचना सेवाओं को आधुनिक और पर्यावरण–अनुकूल बनाने के लिए ई–संसाधनों व डिजिटल सूचना प्रणालियों को बढ़ावा देकर Paperless Information Access सुनिश्चित किया जाना चाहिए। पुस्तकालयाध्यक्षों और स्टाफ के लिए Green Skill Development Programme शुरू किया जाना चाहिए, जिससे वे ऊर्जा प्रबंधन, ग्रीन टेक्नोलॉजी, अपशिष्ट प्रबंधन और सतत प्रथाओं को प्रभावी ढंग से अपनाने में सक्षम हो सकें। अंत में, प्रत्येक ग्रंथालय में एक "Eco Awareness Corner" या "Green Board" स्थापित किया जाना चाहिए, जहाँ पर्यावरण संरक्षण, जलवायु जागरूकता एवं हरित व्यवहार से संबंधित उपयोगी जानकारी प्रदर्शित हो, जिससे समुदाय और उपयोगकर्ताओं में पर्यावरण–सचेतन संस्कृति का विकास हो सके।

निष्कर्ष :

भारत का भविष्य तभी वास्तव में विकसित और सशक्त हो सकता है जब उसका ज्ञान–तंत्र केवल सूचना 'केंद्रित न होकर पर्यावरण' संवेदनशील भी हो। "विकसित भारत 2047" का सपना तभी साकार होगा जब देश की ग्रंथालय प्रणाली तकनीक और प्रकृति, आधुनिकता और पारंपरिक संवेदनाओं – दोनों को संतुलित रूप से आगे बढ़ाए। हरित ग्रंथालय (Green Libraries) इसी संतुलन का जीवंत उदाहरण हैं, जो ऊर्जा–संचयन, संसाधनों के संरक्षण, ग्रीन डिजाइन, डिजिटल सेवाओं और पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से न केवल ज्ञान का विस्तार करते हैं, बल्कि पर्यावरण–सुरक्षा को भी सामाजिक संस्कृति का हिस्सा बनाते हैं। ग्रीन लाइब्रेरी के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को यह समझाया जा सकता है कि ज्ञान केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और सतत जीवनशैली अपनाने का मार्ग भी दिखाता है।

इस परिवर्तन यात्रा में पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे सिर्फ पुस्तकालयों के संरक्षक

या सूचना प्रदाता नहीं, बल्कि पर्यावरण–समर्थक विचारों को आगे बढ़ाने वाले "हरित भारत के निर्माता" हैं। ग्रंथालयाध्यक्ष हरी–ऊर्जा प्रणाली लागू कर, ई–संसाधनों को प्रोत्साहित कर, समुदाय में ग्रीन कल्चर विकसित कर, पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों का संचालन कर और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को ग्रंथालय सेवाओं में एकीकृत कर भविष्य की पीढ़ियों में पर्यावरण–संवेदनशील मानसिकता का निर्माण करते हैं। उनकी दूरदृष्टि और नेतृत्व क्षमता से प्रत्येक ग्रंथालय एक ऐसे ज्ञान–केन्द्र के रूप में विकसित हो सकता है जो न केवल जानकारी प्रदान करता है, बल्कि एक स्वच्छ, स्वस्थ और टिकाऊ भारत की दिशा में समाज का मार्गदर्शन भी करता है। इस प्रकार, ग्रंथालयाध्यक्ष वास्तव में 2047 के विकसित, हरित और ज्ञान–समृद्ध भारत के निर्माण के सशक्त आधार–स्तंभ बनकर उभरते हैं।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, आर. सी. (2018). पर्यावरण शिक्षा और सतत विकास. नई दिल्ली : राज प्रकाशन.
2. तिवारी, डी. डी. (2020). हरित प्रौद्योगिकी और पर्यावरण संरक्षण. लखनऊ : भारतीय पब्लिशिंग हाउस.
3. मिश्र, वी. पी. (2017). ग्रंथालय विज्ञान : सिद्धांत एवं व्यवहार. नई दिल्ली : विनोद पुस्तक मंदिर.
4. गुप्ता, एस. (2019). डिजिटल ग्रंथालय और सूचना प्रबंधन. जयपुर : साहित्य भवन.
5. चौहान, एम. (2021). सतत विकास लक्ष्य (SDGs) और भारत. भोपाल : एकलव्य प्रकाशन.
6. कुलकर्णी, एस. एल. (2016). पर्यावरण अध्ययन : सिद्धांत और अनुप्रयोग. मुंबई : भारतीय विद्या भवन.
7. सिंह, ए. (2022). भारत में हरित भवन और ऊर्जा संरक्षण. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
8. राजपूत, जे. (2018). सतत शिक्षा और पर्यावरण चेतना. प्रयागराज : प्रकाशन संस्थान.
9. भारतीय ग्रंथालय संघ (ILA). (2014). भारत में ग्रंथालय विकास रिपोर्ट. नई दिल्ली : भारतीय ग्रंथालय संघ प्रकाशन.

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 55-58

Role of Forensic Science in Modern Criminal Investigation and Trial

Prof.(Dr.) Farhat Khan
Prof. & Dean G H Raisoni University, Saikheda, M.P.

Abstract :

Forensic science has emerged as an indispensable pillar of the modern criminal justice system, bridging the gap between physical evidence and legal proof. This paper examines the evolving role of forensic science in criminal investigation and trial in India, tracing its journey from rudimentary identification methods to sophisticated technologies such as DNA profiling, digital forensics, ballistics, and forensic toxicology. The study analyses how forensic evidence strengthens the investigative process by ensuring objectivity, scientific accuracy, and corroboration of witness testimony, while also examining its evidentiary value under the Bharatiya Sakshya Adhiniyam, 2023, and earlier the Indian Evidence Act, 1872. The paper further explores the institutional framework of forensic science laboratories in India, landmark judicial pronouncements that have shaped the admissibility of scientific evidence, and the persistent challenges of manpower shortage, laboratory backlog, standardisation, and training. The paper concludes that strengthening the forensic ecosystem through adequate funding, quality accreditation, and inter-agency coordination is essential for ensuring speedy, fair, and evidence-based criminal trials.

Keywords : *Forensic Science, Criminal Investigation, DNA Profiling, Digital Forensics, Evidence, Criminal Trial, Bharatiya Sakshya Adhiniyam*

1. Introduction :

Crime detection and prosecution in the contemporary era rest heavily on scientific methods of investigation. Traditional investigative tools, dependent largely on oral testimony, confession, and circumstantial deduction, are increasingly viewed as insufficient to meet the evidentiary standards required for a fair and reliable trial. Forensic science, defined broadly as the application of scientific principles and techniques to matters of law, supplies the objective and verifiable link between an offence and its perpetrator. It encompasses a wide spectrum of disciplines including fingerprint and biometric analysis, DNA profiling, ballistics, toxicology, forensic pathology, questioned document examination, and digital or cyber forensics. In the Indian context, the increasing complexity of crime

— ranging from cybercrime and financial fraud to organised crime and terrorism — has made forensic support to investigation not merely useful but essential. This paper undertakes an analysis of the role forensic science plays at both the investigative and trial stages of the criminal justice process, situates this role within the statutory and judicial framework, and identifies the structural challenges that continue to limit its full potential in India.

2. Role of Forensic Science in Criminal Investigation :

At the investigation stage, forensic science performs several critical functions. First, it aids in crime scene reconstruction, allowing investigators to establish the sequence of events through the scientific examination of blood spatter patterns, trace evidence, and physical marks. Second, forensic identification techniques — fingerprinting, footprint analysis, and increasingly facial and iris recognition — assist in establishing the identity of suspects or victims with a degree of certainty that eyewitness identification alone cannot offer. Third, DNA profiling has revolutionised the investigation of violent and sexual offences by enabling investigators to link biological evidence recovered from a crime scene to a specific individual with extremely high statistical confidence, while simultaneously exonerating the wrongly accused.

Fourth, digital forensics has assumed growing significance given the pervasive use of electronic devices in the commission and documentation of crime. Recovery of deleted data, call detail record analysis, geolocation tracking, and examination of social media activity now routinely supplement conventional investigative techniques. Fifth, forensic toxicology and pathology assist in determining cause and manner of death, presence of poisons or narcotics, and time since death, all of which are frequently decisive in homicide and poisoning cases. Collectively, these tools transform investigation from a process reliant on inference and testimony into one anchored in verifiable, replicable scientific analysis.

3. Role of Forensic Science in Criminal Trial :

The value of forensic evidence is not confined to investigation; its evidentiary weight at trial is equally significant. Under the Bharatiya Sakshya Adhiniyam, 2023 (which has replaced the Indian Evidence Act, 1872), expert opinion on matters of science, including forensic findings, is admissible as relevant evidence, and forensic reports often serve as corroborative or even primary evidence where direct evidence is weak or absent. Courts increasingly rely on DNA reports, ballistic matching, and forensic audio-video analysis to test the veracity of witness accounts and to resolve conflicting versions of events.

The judiciary has, over time, underscored the importance of scientific evidence in ensuring accuracy in adjudication. Reliance on forensic findings reduces the risk of wrongful conviction based solely on subjective testimony and strengthens the prosecution's burden of proving guilt beyond

reasonable doubt. At the same time, courts have cautioned that forensic evidence must be collected, preserved, and analysed in strict compliance with procedural safeguards, since any lapse in the chain of custody can substantially diminish its evidentiary value and, in some instances, render it liable to be discarded altogether.

4. Institutional Framework and Illustrative Application :

India's forensic infrastructure is organised through a network of Central Forensic Science Laboratories (CFSLs) under the Ministry of Home Affairs, State Forensic Science Laboratories, mobile forensic units, and the National Forensic Sciences University, which together handle casework, training, and research. The enactment of new criminal laws — the Bharatiya Nyaya Sanhita, Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, and Bharatiya Sakshya Adhiniyam, 2023 — has placed renewed statutory emphasis on forensic investigation, mandating forensic examination of crime scenes in offences punishable with seven years' imprisonment or more, thereby institutionalising the role of forensic science at the very threshold of investigation.

In practice, forensic contributions have proved decisive across categories of offences: DNA evidence in sexual assault and paternity disputes; ballistic and gunshot residue analysis in firearm-related homicides; forensic document examination in forgery and cheating cases; and cyber-forensic analysis in offences involving digital financial fraud and online harassment. Such applications illustrate that forensic science today operates not as an auxiliary tool but as a central mechanism through which the criminal justice system establishes factual truth.

5. Challenges in the Use of Forensic Science :

Despite its advantages, several challenges hinder the effective use of forensic science :

- Inadequate forensic laboratories and infrastructure.
- Delay in forensic examination and report submission.
- Shortage of trained forensic experts.
- Improper preservation and contamination of evidence.
- High cost of advanced forensic technologies.
- Need for continuous judicial and police training.
- Privacy and ethical concerns relating to DNA databases and digital investigations.

6. Emerging Trends :

Recent technological developments have transformed forensic science. Artificial Intelligence, machine learning, facial recognition, automated fingerprint identification systems, blockchain-based evidence management, and advanced digital forensic tools are improving the efficiency and accuracy of investigations. These innovations are expected to play a greater role in future criminal justice systems.

7. Conclusion and Suggestions :

Forensic science has fundamentally transformed the landscape of criminal investigation and trial by grounding the pursuit of justice in verifiable scientific method rather than inference alone. Its contribution spans identification, reconstruction, and corroboration at the investigative stage, and admissibility, reliability, and probative strength at the trial stage. However, realising its full potential requires sustained institutional investment: expansion of laboratory capacity, mandatory accreditation under recognised quality standards, regular training of investigating officers in forensic protocols, strict adherence to chain-of-custody requirements, and greater inter-agency coordination between police, forensic laboratories, and the judiciary. As criminal laws in India continue to evolve toward mandatory forensic examination of serious offences, a correspondingly robust forensic infrastructure is indispensable to ensure that the promise of scientific evidence translates into fair, accurate, and timely criminal adjudication.

References :

- Bharatiya Sakshya Adhiniyam, 2023 (Act No. 47 of 2023).
- Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, 2023 (Act No. 46 of 2023).
- Indian Evidence Act, 1872 (Act No. 1 of 1872).
- Ministry of Home Affairs, Government of India. (2023). Annual report of the Directorate of Forensic Science Services.
- Saferstein, R. (2020). Criminalistics: An introduction to forensic science (13th ed.). Pearson Education.
- National Forensic Sciences University. (2022). Handbook on forensic science and criminal justice administration in India.
- Bureau of Police Research and Development. (2021). Status report on forensic science laboratories in India.
- Houck, M. M., & Siegel, J. A. (2022). Fundamentals of Forensic Science (4th ed.). Academic Press.
- James, S. H., Nordby, J. J., & Bell, S. (2020). Forensic Science: An Introduction to Scientific and Investigative Techniques (5th ed.). CRC Press.
- Chisum, W. J., & Turvey, B. (2011). Crime reconstruction (2nd ed.). Academic Press.

Email: farhatkhanfarid@gmail.com

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 59-63

जैव विविधता संरक्षण एवं सूचना प्रौद्योगिकी : एक अध्ययन

(A Research Study on Biodiversity Conservation and Information Technology)

हेमलता पारस

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र,

प्रधानमन्त्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय नेहरू स्नात. महाविद्यालय, आगर मालवा।

शोध सार :

जैव विविधता पृथ्वी पर जीवन के सम्पूर्ण ताने–बाने का प्रितिनिधत्व करती है, जिसमें सूक्ष्म जीवाणुओं से लेकर विशाल वनस्पितयों और जन्तुओं तक समस्त जीव रूप शामिल हैं। यह पारिस्थितिक संतुलन, जलवायु की स्थिरता, खाद्य सुरक्षा, औषधीय खोजों, प्राकृतिक संसाधनों की निरंतरता तथा मानव जीवन की स्थायी प्रगित के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। परंतु वतर्मान समय में तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, अवैध वन्यजीव व्यापार, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण, प्रदूषण और असंतुलित संसाधन दोहन के कारण जैव विविधता का ह्रास वैश्विक स्तर पर गंभीर संकट का रूप ले चुका है। इस स्थित ने संरक्षण के नए, वैज्ञानिक और प्रभावी उपायों को अपनाने की आवश्यकता को और अधिक प्रबल किया है। इस संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) एक आधुनिक, सशक्त और विश्वसनीय उपकरण के रूप में उभरकर सामने आई है, जिसने संरक्षण की पूरी कायर्प्रणाली को गित, सटीकता और पारदर्शिता प्रदान की है।

वतर्मान शोध पत्र में जैव विविधता संरक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमि का का विश्लेषण किया गया है। इसमें रिमोट सेंसिंग, जीआईएस मैपिंग, उपग्रह डेटा, ड्रोन तकनीक, कैमरा ट्रैप, बिग डेटा विश्लेषण, आर्टफिशियल इंटेलिजेंस, मोबाइल एप्लीकेशन, ऑनलाइन डेटाबेस और डिजटल डॉक्यूमेंटेशन जैसे प्रमुख तकनीकी उपकरणों की उपयोगिता को विस्तार से समझाया गया है। साथ ही, संरक्षण नीति निमार्ण में डेटा–आधारित निणर्य प्रणाली, समुदाय–आधारित डिजिटल जागरूकता कायर्क्रम, ई–लर्निंग के माध्यम से क्षमता निमार्ण तथा मानवदृवन्यजीव संघर्ष प्रबंधन जैसी प्रक्रियाओं को भी विश्लेषित किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सूचना प्रौद्योगिकी और जैव विविधता संरक्षण का सिम्मिलत उपयोग संरक्षण प्रयासों को अधिक प्रभावी, वैज्ञानिक और दीर्घकालिक बनाता है। यदि तकनीकी हस्तक्षेपों को स्थानीय समुदायों, वैज्ञानिक संस्थानों और सरकारी एजेंसियों के सहयोग के साथ लागू किया जाए, तो वैश्विक जैव विविधता संरक्षण के लक्ष्य अिधक सफलतापूवर्क प्राप्त किए जा सकते हैं।

कुंजी–शब्द :

जैव विविधता, सूचना प्रौद्योगिकी, संरक्षण, जीआईएस, रिमोट सेन्सिंग, ड्रोन, आर्टफिशल इंटेलिजेंस,

डिजिटल मॉनिटिरंग, वन्यजीव संरक्षण, डेटा विश्लेषण।

प्रस्तावना :

कहा जाता है –

"जब आखरी पेड़ कट जाएगा, आखरी नदी सूख जाएगी और आखरी पक्षी उड़ जाएगा,
तब इंसान को एहसास होगा कि पैसे खाकर जिंदा नहीं रहा जा सकता।"

यह वाक्य हमें याद दिलाता है कि प्रकृति केवल देखने की चीज नहीं, जीने का आधार है।

पृथ्वी पर विद्यमान समस्त जीवों की विविधता, उनके पारस्पिरक संबंध, अनुवांशिक विशेषताएँ तथा विभिन्न पारिस्थितक तंत्रों की संरचना मिलकर जैव विविधता की संकल्पना को पूर्ण करती है। जैव विविधता जीवन का वह आधार है, जिसके बिना पारिस्थितक तंत्र असंतुलित हो जाए और मानव सभ्यता का अस्तित्व भी संकट में पड़ जाए। जैव विविधता न केवल भोजन, औषिध, वस्त्र और औजार जैसे संसाधन उपलब्ध कराती है, बिल्क यह जलवायु को नियंत्रित करने, मिट्टी की उवर्रता बनाए रखने, जल चक्र को संतुलित करने तथा प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हालाँकि, 21वीं सदी के आरंभ से जैव विविधता तेजी से घट रही है। वैज्ञानिक रिपोर्टर के अनुसार पृथ्वी पर कई हजार प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुकी हैं। भारत जैसे जैव विविधता सम्पन्न देश भी इस खतरे से अछूते नहीं हैं। इस गंभीर परिस्थिति में वैज्ञानिक और तकनीकी हस्तक्षेप की आवश्यकता पहले से अधिक महसूस की जा रही है। सूचना प्रौद्योगिकी ने जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्र में नई क्रांति ला दी है। आज संरक्षण प्रक्रियाओं में जो सटीकता, गति और व्यापकता दिखाई देती है, उसका मुख्य कारण आधुनिक डेटा–आधारित तकनीकियाँ हैं।

इस शोध पत्र के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी जैव विविधता संरक्षण में किस प्रकार सहायक है, किन तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, इन तकनीकों से संरक्षण की प्रक्रिया में किस प्रकार बदलाव आया है तथा भविष्य में इनके माध्यम से और कौन–सी संभावनाएँ विकिसत हो सकती हैं।

उद्देश्य :

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य जैव विविधता संरक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमि का का गहन विश्लेषण करना है। इसके अंतगर्त निम्न उप–उद्देश्य सम्मिलित हैं –

1. जैव विविधता की वतर्मान स्थित और उसके ह्रास के प्रमुख कारणों की व्याख्या करना।
2. सूचना प्रौद्योगिकी के प्रमुख उपकरणों और तकनीकों को समझना एवं उनका संरक्षण कार्यों में उपयोग ज्ञात करना।
3. संरक्षण नीतियों, कायर्क्रमों और प्रबंधन प्रक्रियाओं में तकनीकी हस्तक्षेपों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. समुदाय–आधारित संरक्षण कायर्क्रमों में आईटी की सहायक भूमि का को समझना।
5. भविष्य के संरक्षण प्रयासों में तकनीक की संभावनाओं और चुनौतियों को स्पष्ट करना।

अनुसंधान पद्धति :

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धित पर आधारित है। शोध सामग्री मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों से संकिलत की गई है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की रिपोर्ट, वैज्ञानिक जर्नल, सरकारी दस्तावेज,

संयुक्त राष्ट्र की जैव विविधता रिपोर्ट, भारत सरकार की पयार्वरण एवं वन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण से संबंधित प्रकाशन, संरक्षण संस्थाओं की ऑनलाइन डेटाबेस और विभिन्न शोध लेख शामिल हैं। डेटा का विश्लेषण विषयगत पद्धति द्वारा किया गया है, जिसमें तकनीकों, संरक्षण प्रक्रियाओं और नीतियों के प्रभावों का समग्र अध्ययन किया गया है।

- **जैव विविधता का महत्व :**

जैव विविधता केवल जीवों की संख्या भर नहीं है, बिल्क यह सम्पूर्ण पारिस्थितकी व्यवस्था का जीवन–संचार तंत्र है। प्रत्येक जीव, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, प्रकृति के चक्र को संतुलित रखने में अपनी विशेष भूमिका निभाता है। वनस्पतियाँ वायु को शुद्ध करती हैं, काबर्न डाइऑक्साइड को अवशोषित करती हैं और ऑक्सीजन प्रदान करती हैं। जीवाणु मिट्टी में पोषक तत्वों का विघटन करते हैं। परागण करने वाले कीट फसलों के उत्पादन में सहायक होते हैं। औषधीय पौधे मानव स्वास्थ्य के लिए मूल्यवान दवाओं का स्रोत हैं। अतः जैव विविधता का संरक्षण केवल पयार्वरणीय आवश्यकता नहीं, बिल्क मानव अस्तित्व का मूलाधार है।

- **जैव विविधता पर बढ़ते खतरे :**

जैव विविधता का ह्रास किसी एक कारक का परिणाम नहीं बल्कि मानव–जनित अनेक गतिविधियों का संयुक्त प्रभाव है। वनों की कटाई से अनेक प्रजातियाँ अपना प्राकृतिक आवास खो रही हैं। औद्योगिक प्रदूषण, जल स्रोतों के प्रदूषित होने तथा रासायनिक उवर्रकों के अत्यधिक उपयोग ने अनेक प्रजातियों के अस्तित्व को प्रभावित किया है। जलवायु परिवर्तन ने तापमान और वर्षा चक्र को असंतुलित कर दिया है, जिससे संवेदनशील प्रजातियाँ अत्यधिक प्रभावित हो रही हैं। अवैध शिकार और वन्यजीव व्यापार भी संरक्षण के लिए गंभीर खतरा बने हुए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी छठे सामूहिक विलुप्त संकट का सामना कर रही है, जिसका मुख्य कारण मानव गतिविधियां हैं।

- **जैव विविधता संरक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमि का**
- **रिमोट सेन्सिंग और उपग्रह तकनीक :**

रिमोट सेन्सिंग तकनीक पृथ्वी की सतह पर हो रहे परिवर्तनों को उपग्रहों के माध्यम से रिकॉर्ड करती है। यह तकनीक वन आवरण में बदलाव, ब्रह्मांडीय विकरण, पारिस्थितक तनाव, जल निकायों की स्थित, जन्तु आवासों के आकार और विस्तार आदि की सटीक जानकारी प्रदान करती है। इससे वैज्ञानिकों को यह समझने में सहायता मिलती है कि कौन–से क्षेत्रों में संरक्षण प्रयासों की अधिक आवश्यकता है।

- **GIS (Geographical Information System)**

जीआईएस मैपिंग के माध्यम से संरक्षण योग्य क्षेत्रों की पहचान, संवेदनशील प्रजातियों के वितरण पेटर्न का विश्लेषण, वन्यजीव गलियारों की डिजाइनिंग और संरक्षण नीतियों के लिए डेटा–आधारित निणर्य लिए जाते हैं। भारत में कई राज्यों ने जीआईएस आधारित वन्यजीव प्रबंधन योजनाएँ तैयार की हैं।

- **ड्रोन तकनीक :**

ड्रोन कैमरों की सहायता से जंगलों की निगरानी, वनाग्नि का पता लगाना, अवैध कटाई और शिकार की पहचान, दुलर्भ प्रजातियों की वास्तिवक समय में लोकेशन प्राप्त करना अत्यंत आसान हो गया है। ड्रोन ऐसे स्थानों तक पहुँच सकते हैं जहाँ मनुष्य के लिए पहुँचना किठन होता है।

- **कैमरा ट्रैप और AI आधारित पहचान :**

कैमरा ट्रैप वन्यजीवों की गतिविधियों की रात्रि–दिन तस्वीरें लेते हैं। आर्टीफिशयल इंटेलिजेंस इन तस्वीरों का विश्लेषण कर प्रजाति की पहचान, जनसंख्या का अनुमान और उनकी गतिविधियों का विवरण प्रदान करता है। यह तकनीक हाथियों, बाघों, चीतों आदि के संरक्षण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है।

- **बिग डेटा और डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन :**

डिजिटल प्लेटफार्म जैव विविधता से संबंधित बड़े डेटा को संग्रिहत, वर्गीकृत और उपलब्ध कराते हैं। 'India Biodiversity Portal', 'eBird', 'GBIF' जैसे प्लेटफॉर्म वैज्ञानिक शोध को समृद्ध बनाते हैं। बिग डेटा विश्लेषण से यह समझना आसान होता है कि कौन–सी प्रजाति कितनी तेजी से घट रही है और किन क्षेत्रों में संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता है।

- **मोबाइल एप्लिकेशन और जनसहभागिता :**

मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से आम जनता भी जैव विविधता संरक्षण का सक्रिय हिस्सा बन रही है। लोग किसी भी दुलर्भ पक्षी या जानवर को देखकर उसका फोटो अपलोड करते हैं, जिससे वैज्ञानिकों को वास्तिवक समय डेटा प्राप्त होता है। इससे नागरिक विज्ञान को बढ़ावा मिलता है।

- **मानव–वन्यजीव संघर्ष प्रबंधन में तकनीक :**

भारत के कई राज्यों में सूचना प्रौद्योगिकी आधारित चेतावनी प्रणाली लागू की गई है, जो ग्रामीण क्षेत्रों को यह जानकारी देती है कि किसी वन्यजीव की गतिविधि आस–पास देखी गई है या नहीं। इससे संघर्ष कम होता है और मानव व पशु दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

- **संरक्षण नीतियों में आईटी का प्रभाव :**

सरकारी नीतियों के निमार्ण में डेटा अत्यंत महत्वपूर्ण भूमि का निभाता है। सूचना प्रौद्योगिकी ने नीतियों को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया है। वन विभाग ळैप् आधारित कार्य योजनाएं अपनाते हैं, कैमरा ट्रैप जनगणना के परिणाम बाघों और अन्य वन्यजीवों की संख्या के विश्वसनीय प्रमाण बनते हैं। उपग्रह डेटा के आधार पर जलवायु पिरवतर्न अनुकूल संरक्षण योजनाएँ बनाई जाती हैं।

- **समुदाय–आधारित संरक्षण में IT की भूमि का :**

ग्रामीण और जनजातीय समुदाय संरक्षण के अभिन्न भाग होते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से उन्हें संरक्षण संबंधी प्रशिक्षण, ई–लर्निंग मॉड्यूल, ऑनलाइन कायर्शालाएँ, डिजिटल जागरूकता अभियानों से जोड़ा जाता है। इससे उनकी क्षमता बढ़ती है और संरक्षण कायर्क्रम अधिक प्रभावी बनते हैं।

चुनौतियाँ :

यद्यपि सूचना प्रौद्योगिकी अत्यंत उपयोगी है, परन्तु संरक्षण क्षेत्र में इसके उपयोग से कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों की कमी इसके प्रभाव को सीमित कर सकती है। डेटा की गोपनीयता, प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव और तकनीक की उच्च लागत भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का समाधान कर तकनीक के उपयोग को और व्यापक बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष :

जैव विविधता संरक्षण केवल किसी एक संस्था या समुदाय का कार्य नहीं बल्कि पूर्ण मानव समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। तकनीकी प्रगति ने इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए नई संभावनाएँ प्रदान की हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी ने संरक्षण कार्य को अधिक सटीक, पारदर्शी, वैज्ञानिक और तेज बनाया है। उपग्रह से लेकर मोबाइल एप्लिकेशन तक, प्रत्येक तकनीकी उपकरण ने जैव विविधता संरक्षण की प्रिक्रया को एक नई दिशा दी है।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि तकनीकी हस्तक्षेपों को स्थानीय समुदायों, शोध संस्थानों, सरकारों और निजी क्षेत्रों के सहयोग से लागू किया जाए, तो जैव विविधता संरक्षण के लक्ष्य अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किए जा सकते हैं। भविष्य में भी सूचना प्रौद्योगिकी संरक्षण प्रयासों के केंद्र में होगी और पृथ्वी के जैविक भविष्य को सुरिक्षत रखने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची :

1. सिंह, आर. पी. (2018). पर्यावरण एवं जैव विविधता संरक्षण. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स.
2. शर्मा, एस. के. (2020). पर्यावरण अध्ययन एवं संरक्षण. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस.
3. वर्मा, पी. एस., एवं अग्रवाल, वी. के. (2019). पर्यावरण जीवविज्ञान. नई दिल्ली : एस. चन्द एंड कंपनी.
4. कुमार, ए. (2021). जैव विविधता एवं पर्यावरण संरक्षण. नई दिल्ली : ज्ञान पब्लिशिंग हाउस.
5. मिश्र, आर. एन. (2019). सूचना प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण संरक्षण. भोपाल : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
6. Gaston, K. J., & Spicer, J. I. (2004). Biodiversity: An introduction (2nd ed.). Blackwell Publishing.
7. Groom, M. J., Meffe, G. K., & Carroll, C. R. (2006). Principles of conservation biology (3rd ed.). Sinauer Associates.
8. Primack, R. B. (2014). Essentials of conservation biology (6th ed.). Sinauer Associates.
9. Pullin, A. S. (Ed.). (2002). Conservation biology. Cambridge University Press.
10. Wulder, M. A., & Franklin, S. E. (Eds.). (2006). Understanding forest disturbance and spatial pattern : Remote sensing and GIS approaches. CRC Press.

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 64-69

तृतीय लिंगी समुदाय में यौन कुंठा एंव प्रेम संबंध : एक अध्ययन

जयश्री कुमावत, शोधार्थी,
डॉ. प्रियंका यादव, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक
मणिपाल युनिवर्सिटी जयपुर।

सारांश :

किन्नर समुदाय भारतीय समाज का एक ऐसा वर्ग है, जिसे लंबे समय से सामाजिक उपेक्षा, तिरस्कार और बहिष्कार का सामना करना पड़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन में शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक सम्मान तथा प्रेम–संबंधों एवं दैनंदिन जीवन की गहरी संकटपूर्ण परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। यौन केवल जैविक इच्छाओं के दमन का परिणाम नहीं होता, बल्कि पारिवारिक तिरस्कार, विषम सामाजिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक स्वीकृति के अभाव तथा मनोवैज्ञानिक स्थितियों के सम्मिलित प्रभाव से निर्मित एक बहुआयामी मानसिक अवस्था है। किन्नर समुदाय का अधिकांश वर्ग प्रेम, विश्वास और पारिवारिक जीवन की सामान्य संरचना से वंचित रह जाता है। परिणामस्वरूप उनके भीतर असुरक्षा, उपेक्षा, आत्म–संकट एवं अस्तित्वगत संघर्ष जैसी मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ विकसित होती हैं। हिन्दी साहित्य के किन्नर केंद्रित उपन्यास – यमदीप, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, मैं पायल, जिन्दगी 50–50 और अस्तित्व की तलाश में सिमरन में यह पीड़ा केवल बहिष्कार के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम की असफलता और यौन दमन की त्रासदी के रूप में भी व्यक्त हुई है। इस शोध पत्र में इन दोनों आयामों का समन्वित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – किन्नर समुदाय, यौन कुंठा, प्रेम संबंध, लैंगिक अस्मिता, सामाजिक बहिष्कार, मनोवैज्ञानिक संघर्ष।

प्रस्तावना –

मनुष्य जीवन का मूलाधार केवल जैविक अस्तित्व नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक एवं यौनिक संतुलन भी है। प्रत्येक मनुष्य प्रेम करने, प्रेम प्राप्त करने तथा आत्मीय संबंध स्थापित करने की स्वाभाविक आकांक्षा रखता है। किंतु जब समाज किसी वर्ग को उसकी लैंगिक पहचान के कारण प्रेम, विवाह और सामाजिक स्वीकृति से वंचित कर देता है, तब उसके भीतर उत्पन्न मानसिक तनाव क्रमशः यौन कुंठा का रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार प्रेम भी मनुष्य की अंतश्चेतना का सबसे सुखद अनुभव होता है, किंतु किन्नर समुदाय के लिए यही अनुभव प्रायः संघर्ष और पीड़ा का पर्याय बन जाता है। जब किन्नर किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम अनुभव करता है, तब उसके सामने सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक विरोध और भविष्य की अनिश्चितता जैसी अनेक बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं।

उनके जीवन की इसी उपेक्षा और अस्वीकार के कारण उनमें अनेक मानसिक तथा सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यौन भावना किसी भी इंसान की स्वाभाविक आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति प्रेम, अपनापन एवं भावनात्मक संबंध चाहता है। किंतु तृतीय लिंगी समुदाय के लोगों को समाज में न तो सहज स्वीकार्यता ही मिलती है और न ही सामान्य पारिवारिक और वैवाहिक जीवन जीने का अवसर। सभ्य समाज के लोग उन्हें तिरस्कार या मजाक की दृष्टि से देखते हैं। जिसके कारण वे अपने मन की भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते हैं। यह स्थिति यौन कुंठा की ओर ले जाती है। किन्नरों की यौन कुंठा का मुख्य कारण सामाजिक रूप से अस्वीकरण है। अधिकांश परिवार ऐसे होते हैं जो अपने किन्नर बच्चे को स्वीकार नहीं करते हैं। अस्वीकरण की स्थिति में वे बचपन में ही घर छोड़ने को मजबूर होते हैं।

वे यौन विषयों पर खुलकर चर्चा नहीं कर पाते और समाज व परिवार के लोग उनकी समस्याओं को समझने के बजाय उन्हें नजरअंदाज करते हैं। जिससे उनके अन्दर यौन कुंठा जन्म लेती है। समाज किन्नरों को न तो पूर्ण पुरुष मानता है और न स्त्री। यही अस्वीकार्यता की स्थिति उनमें मानसिक और यौन कुंठा उत्पन्न करती है। हिन्दी के कई उपन्यासों में यह बताया गया है कि तृतीय लिंगी समुदाय के लोग भी प्रेम, अपनापन और शारीरिक संबंधों की इच्छा रखते हैं, लेकिन समाज उन्हें इस अधिकार से परे रखता है। ऐसा ही विवरण हिन्दी उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में भी दिखाई देता है बिन्नी उर्फ विनोद ज्योत्सना नामक लड़की से प्रेम करता है और उससे शादी भी करना चाहता है।

"तब मुझे समझ नहीं थी न बा। ज्योत्सना के काबिल नहीं हूं न मैं। मुझे लगता है बा, मैं कुछ बन जाता तो इससे ब्याह जरूर करता। सब कुछ बता देता उसे कह देता, तू मुझसे फेरे भर ले ले। अपनी इच्छाएं जीने के लिए तू स्वतंत्र है। बच्चा हम गोद ले लेंगे। गोद नहीं लेना चाहेगी तो जिससे मर्जी हो, बच्चा पैदा कर ले। खुशी–खुशी मैं उसे अपना नाम दूंगा। वे सारे सुख दूंगा जो बाप से औलाद उम्मीद करती है।"[1]

किन्नरों के जीवन में केवल सामाजिक उपेक्षा ही नहीं होती बल्कि उनके जीवन की एक बड़ी त्रासदी उनकी अधूरी इच्छाएँ और अपूर्ण दाम्पत्य जीवन है। तथाकथित सभ्य समाज इनको मनुष्य मानने से पहले उनके शरीर को तौलता है, इसलिए वे विवाह, प्रेम और परिवार जैसे सामान्य अधिकारों से भी परे हो जाते हैं। इस उपन्यास में किन्नर पात्र विनोद के भीतर छुपी यौन–कुंठा मार्मिक रूप में उभरकर दिखाई पड़ती है। किन्नर भी पत्नी और संतान का सुख पाना चाहते हैं। परन्तु उनकी लैंगिक अस्मिता उनके रास्ते में दीवार बनकर रहती है। वह ज्योत्सना से कहना चाहता है कि यदि वह संतान उत्पन्न नहीं कर सकता तो गोद लेकर भी पिता बनने का सुख प्राप्त कर सकता है। यह बात इस ओर संकेत करता है उसके भीतर दबे हुए पुरुषत्व–बोध है जो समाज में स्वीकृति नहीं मिलने के कारण लगातार टूटता रहता है। प्रेम संबंध पाने की स्वाभाविक आकांक्षा उनके भीतर घुटती रहती है। किन्नर भी सामान्य मनुष्यों की तरह स्नेह, अपनापन और भावनात्मक सहारा चाहते हैं। लेकिन यह समाज उनके प्रेम को स्वीकार नहीं करता। विनोद का प्रेम भी ज्योत्सना के प्रति निष्कलुष और समर्पित दिखाई देता है। वह उसे हर सुख देने की बात करता है तथा उनके जीवन को अधूरा नहीं रहने देना चाहता है। विनोद का प्रेम वासना से अधिक आत्मीयता और त्याग पर आधारित है। सभ्य समाज की संकीर्ण मानसिकता उनके प्रेम संबंधों और रिश्तों को मान्यता नहीं देती, इसलिए उनका प्रेम अक्सर अधूरा रह जाता है।

वे अपने प्रियजन को खोने के डर में जीते हैं और इस कारण उनका प्रेम भीतर ही भीतर पीड़ा और कुंठा में बदलने लगता है।

इसी प्रकार 'यमदीप' उपन्यास में भी यही बताया है कि किन्नर जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी केवल सामाजिक उपेक्षा ही नहीं है बल्कि दबी हुई यौन–कुंठा भी है। समाज द्वारा तिरस्कृत किये किन्नर अपनी शारीरिक आकांक्षाओं और प्रेम–इच्छाओं को खुलकर जी नहीं पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनके अन्दर ऐसी पीड़ा जन्म लेती है, जो मानसिक घुटन का रूप धारण कर लेती है।

"नाज की आँखों में एक चमक जाग उठी। होमगार्ड रामसरन का सांवला कुटिल चेहरा उसकी आंखों के सामने नाच उठा था, जिसकी पत्नी को मरे तीन वर्ष हो चुके थे और जिसने कई बार नाज से अपनी कोती बन जाने का लोलुप आग्रह किया था।"[2]

इस अंश में गुरु द्वारा जब नाज को गिरिया रखने की परंपरा को स्वीकृति देना इसी दबी हुई कामना का संकेत है। यह केवल शारीरिक संबंध का प्रश्न नहीं, बल्कि अपनत्व और प्रेम पाने की आकांक्षा भी दिखाई देती है। नाज की आँखों में चमक आना यह दिखाता है कि नाज के मन में होमगार्ड रामसरन के प्रति आकर्षण है। तृतीय लिंगी लोग भी सामान्य मनुष्यों की तरह प्रेम और सहारे की चाह रखते हैं। रामसरन का सांवला और कुटिल चेहरा नाज की स्मृतियों में इसलिए जीवित है क्योंकि उसके अकेलेपन को भरने की संभावना उसमें दिखाई देती है। इनके प्रेम एवं यौन इच्छाओं का दुखद पक्ष यह है कि यह समाज उनके प्रेम को वैध नहीं मानता, वे न तो पारंपरिक तरीके से विवाह कर पाते हैं और न ही सामाजिक स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए इनके प्रेम संबंध अक्सर छिपे हुए और उपेक्षित रह जाते हैं। उपन्यास में यौन–कुंठा को केवल दैहिक भूख के रूप में नहीं बल्कि प्रेम, अपनत्व की अधूरी चाह के रूप में दिखाया है। यह स्थिति समाज की संवेदनहीनता पर एक गहरा प्रश्नचिन्ह लगाती है।

किन्नरों के जीवन में सामाजिक बहिष्कार के साथ–साथ भावनात्मक और यौनिक संघर्ष भी निरंतर चलता रहता है। "मैं पायल" उपन्यास में पायल को सजने व संवरने का शौक होता है पर उसे लड़के के कपड़े पहनने को मजबूर किया जाता है। पायल भी लड़कियों की भाँति सजना–सँवरना, श्रृंगार करना एवं रोमांटिक कल्पनाओं में खोना चाहती है। पुरुष के स्पर्श और प्रेम को अनुभव करना चाहती है।

"लड़की के कपड़े पहनने का शौक मुझे बचपन से था पर इधर वर्षों से लड़कियों के कपड़े पहनना तो दूर, सजने सँवरने की किसी भी चीज से लाख मन करने के बावजूद दूरी बना कर रखी थी। मेरा शरीर पूरी तरह से न तो लड़कियों जैसा था और न ही लड़कों जैसा पर उस दिन प्रमोद की छुअन, उसकी ज्यादती बाद के दिनों में रोमांच व ढेर सारी उत्तेजना करती रहती थी।"[3]

पायल की यह इच्छा केवल बाहरी प्रदर्शन नहीं बल्कि उसके आन्तरिक यौनिक इच्छा और भावनात्मक आवश्यकताओं की झलक थी। उसके मन में प्रेम पाने, किसी के निकट जाने की तीव्र लालसा विद्यमान थी। किन्नरों में केवल दैहिक संबंधों की इच्छा ही नहीं रहती बल्कि वे अपने अस्तित्व की स्वीकृति एवं प्रेमपूर्ण संबंधों की आकांक्षा भी करते हैं। पायल जब प्रमोद के छूने से रोमांच का अनुभव करती है, तब यह केवल शारीरिक उत्तेजना नहीं, बल्कि प्रेम और अपनत्व की अनुभूति भी है, जो पायल के यौनिक व्यक्तित्व को पूर्णता

प्रदान करती है। पायल के मन में फिल्मों के रोमांटिक दृश्य, स्पर्श की स्मृतियाँ गहन भावोत्तेजना उत्पन्न करती हैं। वह स्वयं को उन परिस्थितियों में अनुभव करती है। जहाँ पर उसे प्रेम और आत्मीयता मिल सके। किन्नरों में भी सौंदर्यबोध, और प्रेम संवेदनाएं जीवित रहती हैं। वे अपने प्रिय साथी के साथ सामान्य जीवन जीने, प्रेम पाने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार एक अंश है –

"ये मर्द ऐसे होते ही हैं, जो औरत के मादा चिन्हों को देखते ही उत्तेजित हो उसे दबोच लेने की फिराक में उतर आते हैं। यह सेक्स का भाव है, जो उन्हें ऐसा करने देता है या पुरुषवादी दम्भ भरी मानसिकता ईश्वर जाने, पर स्वयं पर, स्वयं के शरीर पर आधिपत्य का यह रूप मैंने पहली बार जाना, जिस पर मेरा स्वतः समर्पण सहमति व अंदरूनी खुशी समाहित थी। प्यार का यह मीठा सुख हम दोनों ने कई–कई बार लिया।"[4]

प्रस्तुत अंश में पायल के अनुभवों में आत्मसमर्पण और प्रेम की अनुभूति भी दिखाई देती है। पायल संबंधों में केवल शारीरिक संतुष्टि ही नहीं, बल्कि भावनात्मक अपनापन खोजती है। किन्तु समाज द्वारा उनके संबंधों को गम्भीरता से नहीं लिया जाता इसलिए किन्नर प्रेम और यौनिकता के बीच अंतर्द्वंद्व से गुजरते हैं। उनके मन में हमेशा एक तरफ प्रेम की कोमल आकांक्षा होती है तो दूसरी तरफ सामाजिक अपमान और अस्वीकृति का डर। इस अंश में पुरुषवादी मानसिकता का चित्रण हुआ है। पायल बताती है कि पुरुष प्रायः स्त्री–शरीर को भोग की वस्तु मानते हैं। यह स्थिति किन्नरों के लिए पीड़ादायक बन जाती है क्योंकि किन्नर प्रेम और आत्मीय संबंधों की अपेक्षा रखते हैं लेकिन समाज उन्हें मनोरंजन का और शारीरिक आकर्षण का माध्यम मानता है। उनके साथ वासना और उपहास का व्यवहार किया जाता है, इसलिए किन्नरों की इच्छाएँ कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाती हैं जिससे उनमें कुंठा जन्म लेती है।

जिन्दगी 50–50 उपन्यास में यौनिक इच्छा को किसी अश्लील या भोगवादी दृष्टि से नहीं बल्कि मनुष्य की स्वाभाविकता के रूप में प्रस्तुत किया है। किन्नर पात्र जब अपने सहपाठी अमन के शरीर, उसकी चाल, मांसल टाँगों और नितंबों की ओर आकर्षित होता है तो वह अपनी दबी हुई इच्छाओं को पहचानने लगता है।

"इतने करीब से मैंने उसे पहली बार देखा। उसका गोरा, चिकना चेहरा। उसका चौड़ा सीना और लम्बी कद–काठी ने पहली बार में ही मुझे आकर्षित किया था। ... एक दिन वह हाफ पैंट और टी–शर्ट पहनकर दौड़ता हुआ मेरे घर के सामने से भी तो निकला था। उसकी खुली चिकनी मांसल टाँगों ने मुझे आहें भरने पर मजबूर कर दिया था। जब वह दौड़ता हुआ जा रहा था तो पीछे से उसके हिलते हुए सुडौल नितम्ब दिनोंदिन मेरे दिमाग में घूमते रहे।"[5]

इस अंश में पात्र स्वयं को जैविक रूप से लड़का मानने के बाद भी मानसिक स्तर पर स्त्रीत्व के अधिक निकट अनुभव करता है। वह अपने सहपाठी के प्रति आकर्षित होता है, उसमें पहली बार यौनिक इच्छा का अंकुरण होता है। किन्नरों के यौनिक इच्छाओं को समाज स्वीकार नहीं करता है। समाज उनकी इच्छाओं को उपहास का विषय बना देता है। क्योंकि समाज ने उनके लिए निश्चित लैंगिक भूमिका तय कर दी है। जिससे उनकी स्वाभाविक इच्छाएँ दमन का शिकार होती हैं। यही दमन की स्थिति कुंठा को जन्म देती है। लेखक ने किन्नर समुदाय की उस पीड़ा को स्वर दिया है जिसको समाज ने लंबे काल से अनदेखा किया हुआ है। इस अंश से यह समझ में आता है कि किन्नरों की यौनिकता कोई विकृति नहीं, बल्कि उनकी इच्छाएँ, भावनाएँ, प्रेम

संबंध, आकर्षण उतने ही वास्तविक हैं जितने किसी अन्य मनुष्य के।

'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में किन्नर पात्र सिमरन फैक्ट्री में काम करती है वहाँ उसका मित्र बॉबी उससे बातें करता है उसे तंग करता है। लेकिन सिमरन उससे दूरी बनाने का प्रयास करती है, यह दूरी बनाना केवल व्यक्तिगत असहजता नहीं बल्कि सामाजिक दबाव का परिणाम है। सिमरन यह जानती है कि यदि बॉबी के निकट रहेगी, तो समाज उसके चरित्र और पहचान दोनों पर प्रश्न उठाएगा। इसलिए वह दूर होने की कोशिश करती है। लेकिन वह धीरे–धीरे उससे भावनात्मक लगाव महसूस करने लगती है। इस प्रकार – "मैंने बॉबी को अपने से दूर करना चाहा और तंग आकर बात करना बंद कर दिया। वह दूर जाता ही नहीं था बल्कि और पास आकर तंग करता। मैं ना भी बात करूँ तो वह स्वयं ही बात करता रहता। धीरे–धीरे मुझे भी उसकी आदत होने लगी। कभी–कभी मैं उसको दोपहर के खाने के लिए घर लेकर आ जाती। हम दोनों साथ–साथ रहने लगे, वह अलग–अलग लोगों का मजाक करके मुझे दिखाता। मैं खिलखिलाकर हँसती।"[6]

इस उपन्यास में बताया है कि समाज किन्नरों के संबंधों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता। बॉबी के बारे में लोगों की धारणा नकारात्मक है। उसके मर्दों के साथ सोने और गंदी हरकतें करने की चर्चा समाज में फैली हुई है। यह दृष्टिकोण समाज की उस मानसिकता को प्रकट करता है जो किन्नरों की यौनिकता को केवल वासना या अनैतिकता से जोड़कर देखती है। जिसके कारण सिमरन भी लोगों के तानों का शिकार बनने लगती है। यहाँ यह बात समझ आती है कि किन्नरों के प्रेम संबंध सामाजिक स्वीकृति के अभाव में कुंठा और भय से घिर जाते हैं। किन्नरों के प्रेम संबंध केवल शारीरिक नहीं होते बल्कि उनमें गहरी भावनात्मक संवेदनाएँ निहित रहती हैं। बॉबी का सिमरन के प्रति लगाव और सिमरन की अकेलेपन और अपनत्व की खोज बॉबी में करती है। बॉबी लगातार उसके पास आने, बात करने और उसे हँसाने का प्रयास करता है। यह व्यवहार केवल आकर्षण नहीं बल्कि प्रेम और आत्मीयता की अभिव्यक्ति है। किन्नर समुदाय को संवेदनहीन माना जाता है। वास्तव में भावनात्मक स्तर पर कोमल और प्रेमशील होता है। किन्नर भी प्रेम और सम्मान चाहते हैं। वे भी किसी के निकट रहकर सुरक्षा और आत्मीयता का अनुभव करना चाहते हैं। लेकिन समाज उनकी भावनाओं को अस्वाभाविक कहकर नकार देता है। इसी अस्वीकृति के कारण उनके अन्दर अकेलापन और हीनता बोध गहराने लगता है।

उपसंहार :

किन्नर समुदाय का संकट केवल सामाजिक या आर्थिक बहिष्कार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक अत्यंत संवेदनशील मनोवैज्ञानिक और आंतरिक पहलू भी है। हिन्दी उपन्यासों –'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा', 'यमदीप', 'मैं पायल' और 'जिन्दगी 50–50' के माध्यम से किन्नर समाज की उस दबी हुई चित्कार को स्वर मिला है, जिसे मुख्यधारा का समाज अक्सर अनदेखा कर देता है। प्रेम, आत्मीयता, अपनत्व और शारीरिक यौनिक इच्छाएँ किसी भी मनुष्य की तरह किन्नर समुदाय की भी उतनी ही स्वाभाविक आवश्यकताएँ हैं। किंतु, समाज ने उनके लिए एक संकीर्ण और लिंगिक भूमिका तय कर दी है, जहाँ उनकी इन मानवीय भावनाओं को अस्वाभाविक कहकर खारिज कर दिया जाता है।

यह स्थिति समाज की संवेदनहीनता पर एक गहरा प्रश्नचिह्न लगाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि किन्नर समुदाय को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए केवल कानूनी अधिकार या आर्थिक सहायता पर्याप्त नहीं

है। जब तक समाज उन्हें एक जैविक इकाई से ऊपर उठकर एक भावनात्मक और संवेदनशील मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं करेगा, तब तक उनके भीतर का यह मानसिक तनाव और भावनात्मक अकेलापन समाप्त नहीं हो सकता। उनके प्रेम संबंधों को सम्मान और उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं को सहज स्वीकृति देना ही इस त्रासदी का वास्तविक समाधान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ सं० 30
2. यमदीप, नीरजा माधव, पृष्ठ सं – 29
3. मैं पायल, महेन्द्र भीष्म, पृष्ठ सं – 89
4. मैं पायल, महेन्द्र भीष्म, पृष्ठ सं 116
5. जिन्दगी 50–50, भगवंत अनमोल, पृष्ठ सं 119
6. अस्तित्व की तलाश में सिमरन, डॉ० मोनिका देवी, पृष्ठ सं० 34

Email- pspriyankayadav298@gmail.com

Contact- 9571272818

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 70-72

उपन्यास 'वह' : किन्नर समाज की असली जिंदगी

श्री लक्ष्मी. एस. आर
शोध छात्रा, महात्मा गांधी कालेज, तिरुवनंतपुरम, केरल।

मुख्य शब्द – वह, अरावन, रीति–रिवाज।

श्री गोपाल सिंह सिसोदिया 'निसार' का उपन्यास 'वह' केवल एक साहित्यिक कृति नहीं है, बल्कि यह हमारे सोए हुए समाज की अंतरात्मा को जगाने वाली एक जोरदार पुकार है। उपन्यास में किन्नर समुदाय के वर्तमान समय की दयनीय स्थिति नहीं देखता, बल्कि पाठकों को उनके समृद्ध और सम्मानजनक इतिहास से भी रूबरू कराता है। लेखक ने पौराणिक और ऐतिहासिक संदर्भों का अत्यंत सुंदर और तार्किक उपयोग किया है। उपन्यास में तमिलनाडु के कुवागम गांव में होने वाले उस अनूठे और विशाल उत्सव का जिक्र है, जो महाभारत काल के पात्र अरावन से जुड़ा है। युद्ध में विजय के लिए अपनी बलि देने से पूर्व अरावन ने एक रात के विवाह की इच्छा जताई थी। तब भगवान कृष्ण ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर उनसे विवाह किया था।

इस पौराणिक परंपरा को जीवंत करते हुए आज भी देश भर से किन्नर इस उत्सव में शामिल होते हैं और अरावन को अपना आराध्य देव मानते हैं। 'किन्नर की शादी गुरु से होती है। उस गुरु की मृत्यु हो जाती है तो यह आम विधवा की तरह अपनी मांग का सिंदूर चूड़ियां मंगलसूत्र भाव के बीच में इत्यादि सारे श्रृंगार उतार सफेद वस्त्र धार कर जोर जोर से विलाप करते हैं।'[1] अंजू का शारीरिक विकास उसकी आयु के मुताबिक न होने पर, स्त्री रोग विशेषज्ञ की जांच के बाद माता–पिता को पता चलता है कि अंजू 'किन्नर' है। माता–पिता इस सच को छिपाने का फैसला करते हैं और उसे बहुत प्यार देते हैं। लेकिन जब यह असलियत घर से निकलकर स्कूल तक पहुँची, तब से उसे स्कूल में लगातार अपमान का सामना करना पड़ा। वह बच्चा बिना किसी कसूर के, खुद को एक अपराधी की तरह महसूस करने पर मजबूर हो जाता है। अंजू के किन्नर होना जानकर दीदी की सगाई का टूटने से यह साबित करता है कि हमारा समाज किसी व्यक्ति की योग्यता या इंसानियत को नहीं, बल्कि उसकी लैंगिक पहचान को इज्जत का पैमाना मानता है। जब किन्नर समाज के लोग उस बच्चे को लेने घर पहुँचते हैं, तब माँ को छोड़कर परिवार के बाकी सदस्य उस बच्चे को सहारा देने के बजाय, उसे तुरंत घर से बाहर धकेलने में ही अपनी भलाई समझते हैं। समाज के लिए वह बच्चा एक इंसान नहीं, बल्कि एक समस्या या दाग बन जाता है, जिसे जितनी जल्दी हो सके अपनी नजरों से दूर कर देना ही उन्हें सही लगता है।

किन्नर समाज और उसके रीति–रिवाज बिल्कुल अलग होते हैं। किन्नर समुदाय में जब भी कोई नया सदस्य आता है, तो वह रात उनके लिए उत्सव की रात होती है। इस अवसर पर तरह–तरह के पकवान बनवाए जाते हैं और उसके पश्चात् किन्नरों की आराध्य देवी मुर्गा वाली मैया की पूजा–अर्चना भी की जाती हैय इस प्रकार वे उसे अपने दल का सदस्य बनाती हैं। अगले दिन से उसे गाना–बजाना, नाचना तथा ताली बजाना आदि सभी तरह का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने के तुरंत बाद अंजू की चुनरी रस्म होती है। इस

रस्म के लिए गुरु मां किन्नर समुदाय के गद्दीदारों तथा अन्य प्रभावशाली किन्नरों को निमंत्रण भेजती हैं। उत्सव जैसे इस माहौल में कई तरह के पकवान बनते हैं और नाचने–गाने के साथ इस रस्म को पूरा किया जाता है।

उपन्यास में स्वास्थ्य व्यवस्था में फैली संवेदनहीनता और भेदभाव को दिखाया गया है। अस्पताल पहूंचने पर आम जनता द्वारा उन्हें धक्के दिए जाते हैं। इससे भी बदतर स्थिति तब दिखती है, जब एक सरकारी डॉक्टर गहरे पूर्वाग्रह के कारण गंभीर रूप से बीमार रानी को छूने से भी कतराता है और उन्हें ऐसे घूरता है जैसे वे इंसान न होकर जानवर हों। वह बिना जांच किए केवल दवाई की पर्ची थमा देता है, जिसके कारण अंततः रानी की इलाज के अभाव में मौत हो जाती है। यह घटना हमारे आधुनिक लोकतंत्र और उसकी संस्थाओं के खोखलेपन को पूरी तरह नंगा कर देती है। कानून ने कागजों पर तो किन्नर समुदाय को श्थर्ड जेंडरश के रूप में अधिकार दे दिए हैं, लेकिन जमीनी हकीकत आज भी उतनी ही दर्दनाक और अमानवीय है। लेखक ने इस कड़वे सच को उजागर करने के लिए चिकित्सा जगत और पुलिस प्रशासन के दोहरे चरित्र पर गहरा प्रहार किया है।

परन्तु समाज के दूसरे लोगों को उसकी मृत्यु से जैसे कोई फर्क ही नहीं पड़ा। उनके लिए वह बस एक आम बात थी, जैसे कह रहे हों – 'मर गई है तो क्या हुआ, सभी मरते हैं, इसमें कौन–सी बड़ी बात हो गई? दुआ कर कि वह अगले जन्म में फिर किन्नर न बने।'[2]

उपन्यास में रविंद्र नामक एक अन्य किन्नर की कहानी भी है। जब रविंद्र के किन्नर होने की बात गांव–मोहल्ले के जन–जन तक पहूंच गई, तब पंचायत के सामने एक आदमी ने अपनी संकीर्ण मानसिकता दिखाते हुए कहा– 'मुझे तो ऐसी भी आशंका है जी, कि इसके यहाँ रहने से गर्भवती महिलाओं पर इसकी छाया पड़ेगी और वैसी ही संतानें पैदा होंगी। इसलिए मेरी फरियाद यह है कि इसे गाँव से बाहर निकाल दिया जाए।'[3] इस अमानवीय माहौल के बीच, समाज को बदलने के लिए 'हम भी मानव हैं' नाम से एक एन.जी.ओ पंजीकृत किया गया। अंजू की अगुवाई में एक टीम बनाई गई, जिसने भीख माँगने वाले किन्नरों के पास जाकर उनकी काउंसलिंग करना प्रारंभ कर दिया। इस केंद्र पर उन्हें मोमबत्ती और अगरबत्ती बनाने जैसे कार्यों का प्रशिक्षण देकर स्वावलंबी बनाने का प्रयास किया गया। किन्नरों को उनकी योग्यता व रुचि के अनुसार आत्मनिर्भर बनाया जाने लगा। लेकिन यह बदलाव रूढ़िवादी समाज और किन्नर अड्डों के ठेकेदारों व गुरुओं को रास नहीं आयाय वे अक्सर आकर इस केंद्र को बंद करने की धमकी दे जाते थे।

अंत में, इस सामाजिक कुप्रथा के खिलाफ पुलिस और किन्नरों के बीच एक हिंसक लड़ाई शुरू हो जाती है, जहाँ एक विदाई समारोह के बाद अंजू की दुखद मृत्यु हो जाती है। इस दिल दहला देने वाली घटना की खबर न्यूज चौनलों पर छा गई। भले ही अंजू ने अपनी जान गँवा दी, लेकिन उसके द्वारा सरकार और इस व्यवस्था के विरुद्ध छेड़ी गई जंग अंततः जीत ली गई।

निष्कर्ष :

जब तक हम किसी इंसान को उसके जेंडर के चश्मे से देखना बंद नहीं करेंगे, तब तक हमारा समाज कभी भी वास्तव में शिक्षित या प्रगतिशील नहीं हो सकता। यह उपन्यास हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या अदालतों से थर्ड जेंडर को कानूनी अधिकार मिल जाना ही काफी है? जब तक अंजू जैसे किरदारों के प्रयासों को समाज की ईर्ष्या और पुलिस की लाठियों से कुचला जाता रहेगा, तब तक हर कानून अधूरा है। जब तक उन्हें हमारे घरों में, हमारे स्कूलों में, हमारे दफ्तरों में और सबसे बढ़कर हमारे दिलों में जगह नहीं मिलेगी, तब तक उनका यह संघर्ष अंतहीन बना रहेगा। यह समय की मांग है कि हम 'वह' को भी 'मैं' और 'तुम' की

तरह पूरा सम्मान दें और उन्हें एक गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार दें, क्योंकि वे भी इसी प्रकृति और इसी समाज का एक अभिन्न हिस्सा हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. डॉ. ठाकोर सुहानी, २०२५, 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन का यथार्थ, पृ सं –३४, विकास प्रकाशन, कानपुर।

२. निसार सिसोदिया एस जी एस, २०२३, वह, पृ. सं–५६, विकास प्रकाशन, कानपुर।

३. निसार सिसोदिया एस जी एस, २०२३, वह, पृ. सं –६५, विकास प्रकाशन, कानपुर।

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 73-79

A Comprehensive Study of the National Education Policy 2020 in Relation to Development of the Spirit of Nationalism

Dr. Naresh Kumar, Assistant Professor
State Council of Educational Research and Training,
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024

Abstract :

The National Education Policy (NEP) 2020, introduced by the Government of India, is a transformative framework aimed at revamping the education system to meet the needs of the 21st century. A significant aspect of National Education Policy 2020 is its focus on fostering a spirit of nationalism among students, instilling a sense of pride, respect, and commitment towards the nation. This study analyses the key provisions of National Education Policy 2020 that contribute to the development of nationalism and examines their potential impacts on students and society. National Education Policy 2020 emphasizes holistic and multidisciplinary education, integrating arts, sciences, and humanities to provide a comprehensive understanding of India's cultural heritage. The inclusion of local and indigenous knowledge systems ensures the preservation and promotion of traditional practices, while the promotion of multilingualism connects students to their linguistic roots, enhancing appreciation for India's diversity. Value-based education, encompassing ethics, empathy, and civic responsibilities, aims to nurture responsible citizens dedicated to national welfare. The policy encourages the celebration of national heroes and events, fostering unity and shared identity among students from diverse backgrounds. Community engagement and experiential learning are promoted to help students understand local issues and contribute to societal development, reinforcing their.

The integration of Indian Knowledge Systems (IKS) into the curriculum instills pride in India's contributions to global knowledge. National Education Policy 2020 also emphasizes research and innovation, encouraging students to engage in cutting-edge research highlighting India's historical and scientific achievements. Inclusive education ensures equal access to quality education for all students, promoting national integration and equality. The potential impacts of these provisions include enhanced cultural awareness and pride, development of responsible citizenship, and increased social

cohesion and unity. The holistic approach prepares students to contribute positively to national development, while inclusive education fosters social harmony and national unity. In conclusion, National Education Policy 2020 has the potential to significantly foster a spirit of nationalism among Indian students, creating well-rounded, responsible citizens committed to the nation's progress. By addressing implementation challenges, National Education Policy 2020 can contribute to the holistic development and unity of India, ensuring a brighter future for the nation.

Keywords : *National Education Policy, Nationalism, Multilingualism, Indian Knowledge Systems, Value-Based Education, Holistic and Multidisciplinary Education, Inclusive Education.*

Introduction :

The National Education Policy (NEP) 2020, introduced by the Government of India, is a comprehensive framework aimed at transforming the Indian education system to meet the needs of the 21st century. One of the critical aspects of this policy is its focus on fostering a spirit of nationalism among students. Nationalism, in this context, is seen as a sense of pride, respect, and commitment to the nation, its culture, and its values.

Historical Context and Need for NEP 2020 :

India's education policies have historically aimed to balance traditional values with modern educational needs. The last significant policy, the National Policy on Education 1986 (revised in 1992), laid the groundwork for broad-based education reforms. However, the rapid socio-economic changes over the past few decades necessitated a fresh perspective. National Education Policy 2020 was thus formulated to address contemporary challenges while reinforcing national identity.

Understanding Nationalism in the Context of NEP 2020 :

Nationalism, as envisaged in the National Education Policy 2020, goes beyond mere patriotic fervor. It encompasses an understanding and appreciation of India's rich cultural heritage, a sense of responsibility towards nation-building, and the development of a global perspective while maintaining a strong national identity. The policy emphasizes holistic education, which includes cognitive, social, and emotional aspects, thereby aiming to create well-rounded individuals who can contribute positively to society and the nation.

Key Provisions of National Education Policy 2020 Related to Promoting Nationalism :

The National Education Policy (NEP) 2020, launched by the Government of India, is a transformative framework aimed at overhauling the Indian education system. Among its various objectives, one prominent goal is to foster a sense of nationalism and pride in India's rich cultural heritage. Here are the key provisions of National Education Policy 2020 that promote nationalism, highlighting their significance and potential impact on students and society.

- **Holistic and Multidisciplinary Education -** The National Education Policy 2020 advocates

for a holistic and multidisciplinary approach to education, encouraging the integration of arts, sciences, and humanities. This broad-based education system ensures that students develop a well-rounded understanding of their country's diverse cultural and intellectual heritage. By exposing students to various disciplines, the policy aims to instill a sense of pride and respect for India's rich history and contributions to global knowledge.

- **Inclusion of Local and Indigenous Knowledge -** A significant provision of the National Education Policy 2020 is the inclusion of local and indigenous knowledge systems in the curriculum. This initiative aims to preserve and promote traditional knowledge and practices unique to different regions of India. By learning about their local heritage, students develop a deeper connection to their roots, fostering a sense of pride in their cultural identity and contributing to the overall spirit of nationalism.
- **Promotion of Multilingualism -** The policy emphasizes the importance of multilingualism, advocating for the use of regional languages in the early stages of education. This approach helps students connect better with their cultural roots and appreciate the linguistic diversity of the country. Learning in their mother tongue or regional language enhances cognitive abilities and fosters an inclusive spirit of nationalism by recognizing and valuing India's linguistic heritage.
- **Value-Based Education -** National Education Policy 2020 underscores the significance of value-based education, which includes teaching ethics, empathy, respect for others, and civic responsibilities. By instilling these values, the policy aims to create responsible citizens who are committed to the well-being of their nation. Education in values and ethics ensures that students grow up with a sense of duty towards their country and society, thereby fostering a spirit of nationalism.
- **Focus on Indian Knowledge Systems -** The National Education Policy 2020 highlights the importance of integrating Indian Knowledge Systems (IKS) into the curriculum. This includes traditional sciences, philosophy, literature, and other intellectual traditions unique to India. By incorporating IKS, the policy not only preserves these valuable resources but also instills a sense of pride and identity among students. Understanding and appreciating India's contributions to global knowledge fosters a sense of national pride and encourages students to contribute to furthering this legacy.
- **Experiential and Community-Based Learning -** The policy encourages experiential learning, including field visits, community service, and projects related to local issues. This hands-on approach helps students connect their learning to real-life scenarios, understand the challenges faced by their communities, and contribute to societal development. Engaging with local communities and addressing local issues fosters a sense of belonging and responsibility towards the nation.
- **Promotion of National Integration -** National Education Policy 2020 promotes national

integration by encouraging the celebration of national festivals, participation in national-level competitions, and learning about the lives and contributions of national heroes. These activities instill a sense of unity and shared identity among students from diverse backgrounds. Celebrating the country's achievements and recognizing the efforts of its heroes help in building a collective national consciousness.

- **Emphasis on Critical Thinking and Problem Solving -** The policy emphasizes the development of critical thinking and problem-solving skills. By encouraging students to analyse, evaluate, and create solutions for various challenges, the National Education Policy 2020 aims to nurture innovative and thoughtful citizens who can contribute effectively to national development. This focus on critical thinking also helps students appreciate the complexities of India's socio-cultural landscape and work towards its betterment.
- **Integration of Technology in Education -** National Education Policy 2020 advocates for the integration of technology in education, ensuring that students are equipped with digital literacy and skills required in the modern world. By leveraging technology, students can access a wealth of information about India's history, culture, and achievements, thereby fostering a sense of pride and nationalism. Additionally, technology-enabled learning can connect students from different regions, promoting national unity and understanding.
- **Flexible Curriculum and Choice-Based Learning -** The policy introduces a flexible curriculum with multiple entry and exit points, allowing students to pursue their interests and talents. This flexibility helps students develop a deeper understanding and appreciation of their chosen fields, including subjects related to India's culture and heritage. By providing opportunities for personalized learning, the National Education Policy 2020 ensures that students are engaged and motivated, fostering a sense of pride in their national identity.
- **Encouragement of Research and Innovation -** National Education Policy 2020 places a strong emphasis on research and innovation, encouraging students and educators to engage in cutting-edge research across various fields. By promoting research related to India's cultural, historical, and scientific contributions, the policy aims to instill a sense of pride and ownership among students. Innovative solutions to local and national challenges can also contribute to national development and reinforce a sense of nationalism.
- **Teacher Training and Professional Development -** Effective implementation of the National Education Policy 2020 requires well-trained teachers who can impart the values and knowledge envisioned in the policy. Continuous professional development programs for teachers ensure that they are equipped with the necessary skills and knowledge to foster a sense of nationalism among students. By empowering teachers, the policy aims to create an environment conducive to holistic

and value-based education.

- **Inclusive Education -** The policy emphasizes inclusive education, ensuring that all students, regardless of their socio-economic background, have access to quality education. This inclusive approach fosters a sense of equality and unity among students from diverse backgrounds, promoting national integration. By providing equal opportunities for all, National Education Policy 2020 aims to create a more just and equitable society, reinforcing the spirit of nationalism.
- **Vocational Education and Skill Development -** National Education Policy 2020 promotes vocational education and skill development from an early age, ensuring that students are equipped with practical skills relevant to the job market. By aligning education with local and national needs, the policy aims to create a workforce capable of contributing to national development. This focus on skill development also fosters a sense of pride and responsibility among students towards their nation's economic progress.
- **Global Citizenship Education -** While fostering nationalism, the National Education Policy 2020 also emphasizes the importance of developing a global perspective. Students are encouraged to appreciate their national identity while understanding and respecting global cultures and values. This balanced approach prepares students to thrive in a globalized world while maintaining a strong sense of national pride and identity. By promoting global citizenship, the policy ensures that students are well-equipped to contribute positively to both national and global communities.

The National Education Policy 2020 has laid a strong foundation for fostering a spirit of nationalism among students. Through its emphasis on holistic and multidisciplinary education, inclusion of local and indigenous knowledge, promotion of multilingualism, value-based education, and other key provisions, the policy aims to create well-rounded individuals who are proud of their heritage and committed to the nation's progress. While challenges remain, the effective implementation of the National Education Policy 2020 can significantly contribute to developing a strong sense of nationalism and responsible citizenship among the youth, thereby ensuring the holistic development and unity of the nation. By addressing these challenges and leveraging the opportunities presented by the policy, India can build a robust education system that nurtures a deep sense of national pride and prepares its citizens for the future.

Potential Impacts on Students and Society :

The National Education Policy 2020's focus on developing a spirit of nationalism has several potential impacts on students and society-

- **Enhanced Cultural Awareness and Pride -** By incorporating local and indigenous knowledge, promoting multilingualism, and integrating Indian Knowledge Systems, National Education Policy 2020 ensures that students are well-versed in their cultural heritage. This awareness fosters a

sense of pride and belonging, encouraging students to contribute positively to society and the nation.

- **Responsible Citizenship -** The emphasis on value-based education and experiential learning cultivates responsible citizens who are empathetic, ethical, and committed to the well-being of their communities and country. Such individuals are more likely to engage in nation-building activities and contribute to societal progress.
- **Social Cohesion and Unity -** By promoting national integration through the celebration of festivals, participation in national events, and learning about national heroes, the policy fosters social cohesion and unity among students from diverse backgrounds. This unity is essential for the harmonious development of the nation.
- **Balanced Global Perspective -** While fostering nationalism, National Education Policy 2020 also emphasizes the importance of developing a global perspective. Students are encouraged to appreciate their national identity while understanding and respecting global cultures and values. This balanced approach prepares students to thrive in a globalized world while maintaining a strong sense of national pride and identity.
- **Economic Progress and Innovation -** The policy's focus on research, innovation, and skill development ensures that students are equipped with the knowledge and skills required to contribute to the country's economic progress. By fostering a spirit of innovation and entrepreneurship, National Education Policy 2020 aims to create a workforce capable of driving national development.
- **Preservation of Cultural Heritage -** The inclusion of local and indigenous knowledge in the curriculum helps preserve India's diverse cultural heritage. By learning about their cultural roots, students develop a deeper appreciation for their heritage and are more likely to engage in efforts to preserve and promote it.
- **Inclusive Development -** National Education Policy 2020's emphasis on inclusive education ensures that all students, regardless of their socio-economic background, have access to quality education. This inclusive approach fosters a sense of equality and unity among students from diverse backgrounds, promoting national integration and development.

Challenges and Recommendations :

While National Education Policy 2020 has laid a strong foundation for fostering nationalism, several challenges need to be addressed to ensure its effective implementation :-

- **Teacher Training** - Effective implementation of the policy requires well-trained teachers who can impart the values and knowledge envisioned in National Education Policy 2020. Continuous professional development programs should be conducted to equip teachers with the necessary skills and knowledge.
- **Curriculum Development** - Developing a curriculum that integrates local knowledge,

multilingualism, and Indian Knowledge Systems while maintaining academic rigor is crucial. Collaboration with local communities, historians, and educational experts is essential for creating a balanced and comprehensive curriculum.

- **Infrastructure and Resources** - Adequate infrastructure and resources are required to implement experiential and community-based learning effectively. This includes well-equipped classrooms, libraries, and access to digital resources.
- **Monitoring and Evaluation** - Regular monitoring and evaluation of the policy's implementation are necessary to assess its impact and make necessary adjustments. Feedback from students, teachers, and parents should be considered to ensure continuous improvement.

Conclusion -

The National Education Policy 2020 has made significant strides in fostering a spirit of nationalism among students. Through its emphasis on holistic and multidisciplinary education, inclusion of local and indigenous knowledge, promotion of multilingualism, value-based education, and other key provisions, the policy aims to create well-rounded individuals who are proud of their heritage and committed to the nation's progress. While challenges remain, the effective implementation of National Education Policy 2020 can significantly contribute to developing a strong sense of nationalism and responsible citizenship among the youth, thereby ensuring the holistic development and unity of the nation.

References/Suggested Readings :

- National Education Policy 2020 : Ministry of Human Resource Development, Govt. of India
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep_update/NEP_final_HI_0.pdf
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- https://niepid.nic.in/nep_2020.pdf

E-mail: nky2013@gmail.com

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 80-85

हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों का मनोविश्लेषण : पचपन खंभे लाल दीवारें एवं कठगुलाब के विशेष संदर्भ में

निर्मला, शोधार्थी,
प्रो० (डॉ०) स्वर्णलता कदम, प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ।

शोध सार :

हिन्दी साहित्य में उपन्यास ऐसी विधा है जिसने समाज के विविध वर्गों के जीवन अनुभवों, सामाजिक संबंधों तथा मानवीय मनोभावों का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है। विशेषतः आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में स्त्री पात्र केवल पारिवारिक एवं सामाजिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपने अंतर्मन, इच्छाओं, आकांक्षाओं, कुंठाओं, अकेलेपन तथा आत्मसंघर्ष के साथ एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित होती हैं। समकालीन महिला उपन्यासकारों ने स्त्री के बाह्य जीवन के साथ–साथ उसकी मानसिक संरचना और भावनात्मक जटिलताओं को भी कथा के केंद्र में स्थापित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में स्त्री–मनोविज्ञान का अध्ययन मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से किया गया है। विशेष रूप से उषा प्रियंवदा के पचपन खम्भे लाल दीवारें तथा मृदुला गर्ग के कठगुलाब के आधार पर यह विश्लेषित किया गया है कि सामाजिक दबाव, पारिवारिक दायित्व, आर्थिक निर्भरता अथवा आत्मनिर्भरता, लैंगिक असमानता, भावनात्मक उपेक्षा तथा सांस्कृतिक मान्यताएँ स्त्री के मानसिक संसार को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

यह शोध–पत्र स्पष्ट करता है कि स्त्री का संघर्ष केवल सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आत्मसम्मान, आत्मनिर्णय और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज का भी संघर्ष है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि समकालीन हिन्दी उपन्यासों की स्त्री अपने मानसिक द्वंद्वों से संघर्ष करते हुए आत्मचेतना और आत्मविश्वास की ओर अग्रसर होती है तथा यही आधुनिक स्त्री–विमर्श का प्रमुख पक्ष है।

बीज शब्द : स्त्री–मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, हिन्दी उपन्यास, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, स्त्री–विमर्श, आत्मसंघर्ष, आत्मसम्मान।

शोध विस्तार :

उषा प्रियंवदा और मृदुला गर्ग हिन्दी की प्रमुख महिला उपन्यासकारों में सम्मिलित हैं। दोनों रचनाकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री के अंतर्मन में चलने वाली पीड़ा, मानसिक द्वंद्व, भावनात्मक संघर्ष और आत्मपहचान की खोज को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाएँ केवल स्त्री की सामाजिक स्थिति और पीड़ा को अभिव्यक्त नहीं करतीं, बल्कि उसे अपनी पहचान स्थापित करने, मानसिक संघर्षों से बाहर निकलने और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा भी प्रदान करती हैं। इस प्रकार उनके उपन्यास स्त्री जीवन

के प्रति समाज में संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध अत्यंत गहरा है। साहित्य जहाँ मनुष्य के बाहरी जीवन का चित्रण करता है, वहीं उसके माध्यम से मनुष्य के अंतर्मन में चल रही भावनाओं, इच्छाओं, विचारों और मानसिक द्वंद्वों को भी अभिव्यक्ति मिलती है। साहित्यिक पात्रों के व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण उनके अनुभवों तथा मानसिक स्थितियों के आधार पर होता है। इसी संदर्भ में हेनरी जेम्स ने दृष्टिकोण के अंतर्गत मस्तिष्क के चित्रण की इस विधि पर प्रकाश डाला है ''हेनरी जेम्स ने दृष्टिकोण के अंतर्गत मस्तिष्क के चित्रण की इस विधि पर प्रकाश डाला है जिसके द्वारा घटनाओं और पात्रों का प्रतिबिंब एक या अधिक मस्तिष्क द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। चरित्र का निर्माण इस तथ्य पर आधारित होता है कि वह सोचता है क्या अनुभव करता है। उसका व्यवहार भी इन्ही से निश्चित है।''[1]

पचपन खम्भे लाल दीवारें में स्त्री पात्रों का मनोविश्लेषण :

उषा प्रियंवदा का पचपन खम्भे लाल दीवारें आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में स्त्री–मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास केवल एक अविवाहित नौकरीपेशा स्त्री की कथा नहीं है, बल्कि उस मानसिक पीड़ा और अंतर्द्वंद्व का दस्तावेज है, जिसे भारतीय मध्यवर्गीय स्त्री परिवार, समाज और परंपरागत संस्कारों के बीच निरंतर अनुभव करती है। उपन्यास की नायिका सुषमा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के बावजूद मानसिक और भावनात्मक स्तर पर गहरे अकेलेपन, दमन और आत्मसंघर्ष से गुजरती है। इसी कारण उसका चरित्र मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। सुषमा शिक्षित, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार युवती है। वह अपने परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए माता–पिता और भाई–बहनों के भविष्य को सुरक्षित करने का प्रयास करती है। परिवार उसकी आय को स्वीकार करता है, लेकिन उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं, भावनाओं और जीवन–संबंधी आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील नहीं हो पाता। धीरे–धीरे सुषमा स्वयं को एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले साधन के रूप में अनुभव करने लगती है। यही स्थिति उसके भीतर गहरी मानसिक पीड़ा और भावनात्मक रिक्तता को जन्म देती है।

सुषमा का सबसे बड़ा मानसिक संघर्ष उसके अकेलेपन से जुड़ा हुआ है। वह भी अन्य युवतियों की तरह प्रेम, विवाह और आत्मीय संबंधों की स्वाभाविक आकांक्षा रखती है, लेकिन सामाजिक मर्यादाएँ और पारिवारिक दायित्व उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता नहीं देते। वह अपनी इच्छाओं का निरंतर दमन करती रहती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह स्थिति दबी हुई इच्छाओं (Repressed Desires) का उदाहरण है, जो व्यक्ति के मानसिक संतुलन और व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। उपन्यास में नील के प्रति सुषमा का आकर्षण केवल प्रेम प्रसंग नहीं है, बल्कि यह उसके भीतर वर्षों से दबे अपनत्व, सुरक्षा और भावनात्मक सहारे की स्वाभाविक मानवीय इच्छा का प्रतीक है। पहली बार उसे अनुभव होता है कि कोई उसे केवल परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाने वाली स्त्री के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में भी देखता है। लेकिन पारिवारिक उत्तरदायित्व और सामाजिक मान्यताएँ उसके इस संबंध को स्वीकार नहीं कर पातीं। परिणामस्वरूप सुषमा अपने प्रेम का भी त्याग कर देती है। ''नील के बगैर में कुछ भी नहीं हूँ, केवल एक छाया, एक खोए हुए स्वर की प्रति ध्वनि और अब ऐसी ही रहूंगी, मन की वीरानियों में भटकती।''[2] यह त्याग उसके व्यक्तित्व की महानता के साथ–साथ उस सामाजिक व्यवस्था की त्रासदी को भी व्यक्त करता है, जहाँ स्त्री की इच्छाओं को परिवार के हितों के सामने गौण मान लिया जाता है। जिसके कारण वह मानसिक रूप से भीतर ही भीतर टूटने लगती है।

जैसा कि स्त्री उपेक्षिता में प्रभा खेतान ने उल्लेख किया है ''सामान्य औरत की शारीरिक व्यवस्था में असंतुलन अधिक होने के कारण उसका भावात्मक जीवन असंतुलित होता है वह अपने पर नियंत्रण नहीं रख पाती और पुरुष की अपेक्षा ज्यादा चिड़चिड़ा और स्नायविक दुर्बलता से अधिक ग्रस्त हैं।''[3] सुषमा की माँ का व्यवहार भी उसके मानसिक संघर्ष को और अधिक गहरा कर देता है। माँ यह जानती है कि सुषमा विवाह योग्य आयु में है, फिर भी वह उसके विवाह को टालती रहती है क्योंकि उसे भय है कि यदि सुषमा विवाह कर लेगी तो परिवार की आर्थिक व्यवस्था प्रभावित हो जाएगी। इस प्रकार सुषमा का व्यक्तित्व परिवार के लिए एक आर्थिक साधन बनकर रह जाता है। उपन्यास में माँ का यह कथन इसी मानसिकता को स्पष्ट करता है ''तुम समझदार हो, कभी ऐसा कुछ न करना जिससे किसी को कुछ कहने का अवसर मिले। तुम्हारी वजह से अभी हम चार जन सिर ऊँचा करके रह रहे हैं।''[4] यह कथन केवल एक माँ की सलाह नहीं है, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ स्त्री के त्याग को उसका कर्तव्य मान लिया जाता है। परिवार की प्रतिष्ठा और सम्मान बनाए रखने की पूरी जिम्मेदारी सुषमा के कंधों पर डाल दी जाती है। परिणामस्वरूप वह अपने जीवन के प्रत्येक निर्णय में स्वयं को दोषी अनुभव करने लगती है।

निरु की शादी के प्रसंग में भी सुषमा की स्थिति अत्यंत मार्मिक हो जाती है। परिवार उसकी भावनाओं और अकेलेपन को समझने के स्थान पर उसे केवल अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले व्यक्ति के रूप में देखता है। उसे यह अनुभव होता है कि उसके जीवन, उसकी इच्छाओं और उसके सुख–दुःख का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। इसी पीड़ा को व्यक्त करते हुए सुषमा अपनी माँ से कहती है ''जरा अपने दिल के अंदर झाँककर देखो की तुमने मेरे लिए क्या किया है। मेरा आराम से रहना ही तुम्हें खटकता है तुम शादी तय करो निरु की मे अपने सारे गहने कपड़े उठाकर दे डालूंगी यही तो तुम चाहती हों।''[5] सुषमा का मनोविश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता हमेशा मानसिक स्वतंत्रता प्रदान नहीं करती। वह नौकरी करती है, सम्मानित पद पर है और परिवार का सहारा बनी हुई है, फिर भी अपने जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय 'विवाह और प्रेम' स्वतंत्र रूप से नहीं ले पाती। वह अपने कर्तव्यों और इच्छाओं के बीच लगातार संघर्ष करती रहती है। नील के प्रति अपने प्रेम को भी वह सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों के कारण त्याग देती है– ''तुम्हारी आयु ही क्या है। मैं तुमसे इतनी बड़ी भी तो हुँ नील हमरा विवाह कभी सफल न होगा मुझे सदा यह विचार डसता रहेगा कि कोई बहुत छोटी, बहुत सुंदर लड़की की तुम्हें छिन ले. . .।''[6] इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री परिवार के लिए अनेक त्याग करने को तैयार रहती है, लेकिन उसकी अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं, मानसिक पीड़ा और इच्छाओं को समझने का प्रयास प्रायः नहीं किया जाता।

इसके बावजूद सुषमा अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटती और परिवार की जिम्मेदारियों को निभाती रहती है ''इन सब को भी तो मदद की जरूरत है मौसी पिता जी को पेंशन मिलती ही कितनी है? उसमें दो वक्त दाल रोटी भी न चले। मैं भी अगर न करू तो किसके आगे हाथ फेंलायेंगे? लड़के को पढ़ाना हैं, सड़क पर तो आवारा घूमने नहीं दिया जाएगा।''[7] सामाजिक संरचना केवल आर्थिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि मानसिक स्तर पर भी स्त्री के जीवन को नियंत्रित करती है। उपन्यास का सबसे मार्मिक पक्ष यह है कि सुषमा किसी प्रत्यक्ष विद्रोह का मार्ग नहीं अपनाती, बल्कि अपने भीतर चलने वाले संघर्षों को मौन रहकर सहन करती है। उसका मौन उसकी कमजोरी नहीं है, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की त्रासदी का प्रतीक है जहाँ स्त्री अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने से पहले परिवार और समाज की प्रतिक्रिया के बारे में सोचने को विवश होती है। यही मौन उसके मानसिक

तनाव, अवसाद और आत्मपीड़ा का कारण बनता है।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि पचपन खम्भे लाल दीवारें की सुषमा भारतीय मध्यवर्गीय स्त्री के मनोविज्ञान का अत्यंत प्रामाणिक प्रतिनिधित्व करती है। उसका चरित्र यह सिद्ध करता है कि स्त्री की पीड़ा केवल सामाजिक या आर्थिक नहीं होती, बल्कि वह भावनात्मक उपेक्षा, आत्मदमन और अधूरे जीवन–बोध से भी निर्मित होती है। उषा प्रियंवदा ने सुषमा के माध्यम से उस मौन मानसिक संघर्ष को स्वर दिया है, जिसे समाज की अनेक स्त्रियाँ अनुभव करती हैं।

कठगुलाब में स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :

मृदुला गर्ग का कठगुलाब समकालीन हिन्दी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें स्त्री जीवन के बाहरी संघर्षों के साथ–साथ उसके अंतर्मन की जटिलताओं को भी अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास स्त्री को केवल सामाजिक व्यवस्था की पीड़ित इकाई के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे अपनी इच्छाओं, विचारों, निर्णयों और आत्मसम्मान से युक्त स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है। उपन्यास की स्त्रियाँ प्रेम, परिवार, समाज और अपनी पहचान के प्रश्नों से संघर्ष करते हुए विभिन्न मानसिक अवस्थाओं से गुजरती है।

कठगुलाब में स्त्री की मानसिक पीड़ा केवल व्यक्तिगत परिस्थितियों का परिणाम नहीं है, बल्कि वह सामाजिक संरचना से निर्मित होती है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री से त्याग, सहनशीलता और समर्पण की अपेक्षा करती है, जबकि उसके अपने अस्तित्व, इच्छाओं और भावनाओं को पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया जाता। इस कारण स्त्री के भीतर निरंतर मानसिक द्वंद्व उत्पन्न होता है। एक ओर समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं को निभाने का दबाव होता है, तो दूसरी ओर अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने की आकांक्षा। उपन्यास की स्त्री पात्र अपने संबंधों में प्रेम, विश्वास और सम्मान की तलाश करती हैं, लेकिन अनेक बार उन्हें भावनात्मक उपेक्षा और असमान व्यवहार का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति उनके भीतर अकेलेपन और असुरक्षा की भावना को जन्म देती है। वे बाहरी रूप से सामान्य जीवन जीती हुई दिखाई देती हैं, लेकिन उनके भीतर लगातार यह प्रश्न चलता रहता है कि उनका अपना अस्तित्व क्या है और समाज उन्हें किस दृष्टि से देखता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कठगुलाब की स्त्री पात्रों के भीतर आत्मसम्मान की चेतना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे केवल परिस्थितियों को स्वीकार करने वाली स्त्रियाँ नहीं हैं, बल्कि वे अपने जीवन और संबंधों का मूल्यांकन करती हैं। वे यह समझने का प्रयास करती हैं कि प्रेम और विवाह जैसे संबंधों में उनकी स्थिति केवल निर्भर व्यक्ति की नहीं होनी चाहिए, बल्कि समान अधिकार रखने वाले मनुष्य की होनी चाहिए। उपन्यास में स्त्री की भावनात्मक आवश्यकताओं को भी विशेष स्थान दिया गया है। समाज अक्सर स्त्री की इच्छाओं को नियंत्रित करता है और उसकी भावनात्मक तथा शारीरिक आवश्यकताओं को अनदेखा करता है। परिणामस्वरूप स्त्री अपने भीतर अनेक प्रकार की कुंठाओं और मानसिक तनावों को संचित करती रहती है। मृदुला गर्ग ने इस दबे हुए स्त्री अनुभव को साहस और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है।

नर्मदा के चरित्र के माध्यम से स्त्री के भीतर लंबे समय से संचित पीड़ा और अपमान के विस्फोट को देखा जा सकता है ''फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो दोनों टाँगें तोड़ के सड़क पर फेंक दूँगी। भड़वे, जा अपनी बीवी के पल्लू में जाकर सो। मैं तेरी रखैल न थी, तू मेरी रखैल था। कमा–कमा के तुझे खिलाया, मुट्ठेटे, इसलिए कि तू और तेरी बीवी मिलके मेरा हक मारो। जा, नामर्द, समझ के अपना हिस्सा माफ किया, पर

याद रख, एक दिन आके वसूल कर लूँगी।''[8] यह कथन केवल व्यक्तिगत क्रोध को व्यक्त नहीं करता, बल्कि स्त्री–मनोविज्ञान के उस पक्ष को सामने लाता है जहाँ वर्षों तक सहन की गई पीड़ा अंततः प्रतिरोध और विद्रोह का रूप धारण कर लेती है। नर्मदा का आक्रोश उसके आत्मसम्मान और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का प्रतीक है।

कठगुलाब की स्त्रियाँ अपने जीवन में आए आघातों से टूटती अवश्य हैं, लेकिन वे पूरी तरह पराजित नहीं होतीं। उनमें परिस्थितियों को समझने और उनसे संघर्ष करने की क्षमता दिखाई देती है। यही संघर्ष उनके व्यक्तित्व को विकसित करता है। वे धीरे–धीरे यह अनुभव करती हैं कि उनका अस्तित्व केवल किसी संबंध या सामाजिक भूमिका से निर्धारित नहीं होता, बल्कि उनकी अपनी चेतना, इच्छाओं और निर्णयों का भी समान महत्त्व है। ''तिरस्कार से बढ़कर औरत को कोई मौत नहीं है। पहले पीछे–पीछे भागकर अवहेलना, अत्याचार, अन्याय की कमाई करेगी फिर मर्दों को शोषक–शोषक कहकर सारी उम्र रोएँगी, गरियाएँगी, प्रतिशोध की आग में जलेंगी। ऐसा क्रोध किस काम का, जो शहादत के मोह के नीचे दब जाएगा।''[9] यह कथन स्त्री के भीतर उत्पन्न होने वाली मानसिक पीड़ा और उसके आत्मसम्मान की चेतना को व्यक्त करता है। मृदुला गर्ग स्त्री को केवल पीड़ा सहने वाली पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर मौजूद आत्मचेतना, संघर्षशीलता और परिवर्तन की इच्छा को भी सामने लाती हैं। उनके अनुसार स्त्री की मुक्ति केवल बाहरी बंधनों से मुक्त होने में नहीं, बल्कि मानसिक स्तर पर स्वयं को स्वीकार करने और अपनी पहचान को समझने में निहित है।

स्मिता का चरित्र भी इसी आत्मसंघर्ष और प्रतिरोध की भावना को व्यक्त करता है ''बहुत जल्द में ही ऐसे ही उस नर पिशाच को, उसके किए कि सजा दूंगी। बचपन में माँ को दुर्गापाठ करते सुना था। शब्द पद भूल चुकेथे, पर लयताल मनमें बैठी रह गई थी उसी धुन में हर रोज प्रति हिंसा की माला जपती थी। उसके लिए ताकत और बल इकट्ठा करने की भावना ने ही मुझे अमेरिका जाकर संबद्ध होने की प्रेरणा दी थी लेकिन यह भी पलायन ही एक रूप था। कौन जाने?''[10] स्मिता के इस कथन में उसके भीतर की मानसिक उथल–पुथल, आक्रोश और न्याय पाने की इच्छा दिखाई देती है। उसके अनुभव बताते हैं कि स्त्री जब लगातार अन्याय और शोषण का सामना करती है तो उसके भीतर प्रतिरोध की भावना जन्म लेती है। यह प्रतिरोध केवल बाहरी संघर्ष नहीं होता, बल्कि उसके आत्मसम्मान और अस्तित्व की रक्षा का माध्यम भी बनता है। इस प्रकार कठगुलाब स्त्री–मनोविज्ञान की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास स्त्री के अंतर्मन में चलने वाले संघर्ष, उसकी भावनात्मक आवश्यकताओं, सामाजिक दबावों और आत्मसम्मान की खोज को गहराई से प्रस्तुत करता है। मृदुला गर्ग ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्थापित किया है कि स्त्री केवल संबंधों के आधार पर परिभाषित होने वाली सत्ता नहीं है, बल्कि वह अपनी स्वतंत्र चेतना, इच्छाओं और व्यक्तित्व वाली पूर्ण मनुष्य है।

निष्कर्षतः उषा प्रियंवदा के पचपन खम्भे लाल दीवारें और मृदुला गर्ग के कठगुलाब दोनों उपन्यासों में स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्षों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है। दोनों रचनाकारों ने स्त्री के बाहरी संघर्षों के साथ–साथ उसके अंतर्मन में चलने वाले द्वंद्व, पीड़ा, अकेलेपन, इच्छाओं और आत्मसम्मान की भावना को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। सुषमा का चरित्र उस मध्यवर्गीय स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है जो परिवार की जिम्मेदारियों के कारण अपने व्यक्तिगत सुखों और इच्छाओं का त्याग कर देती है। वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी सामाजिक और पारिवारिक दबावों के कारण अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णय स्वयं नहीं ले पाती। उसका मौन संघर्ष भारतीय समाज में स्त्री की भावनात्मक उपेक्षा और आत्मदमन की स्थिति को उजागर करता

है। वहीं कठगुलाब की स्त्रियाँ अपने अनुभवों और संघर्षों के माध्यम से आत्मचेतना की ओर बढ़ती हैं। वे केवल परिस्थितियों को सहन करने वाली स्त्रियाँ नहीं हैं, बल्कि अपने अधिकारों, सम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाली चेतनशील व्यक्तित्व हैं। मृदुला गर्ग ने स्त्री के भीतर मौजूद प्रतिरोध और आत्मनिर्णय की शक्ति को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में उषा प्रियंवदा और मृदुला गर्ग एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार है। इन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री पात्रों के माध्यम से समाज को दर्पण दिखाया कि किस प्रकार स्त्रियों का समाज में उनके अधिकारों का दमन किया जाता है। स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण केवल उनकी पीड़ा को व्यक्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके आत्मबोध, आत्मसम्मान और स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना का माध्यम भी है। उषा प्रियंवदा और मृदुला गर्ग की रचनाएँ स्त्री के मानसिक संसार को समझने तथा स्त्री–विमर्श को नई दिशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी स्त्रियाँ संघर्षों से गुजरते हुए अंततः अपनी पहचान और अस्तित्व की खोज करती हैं, यही आधुनिक स्त्री चेतना का प्रमुख आधार है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ० मफतलाल पटेल, साहित्य और मनोविज्ञान, शांति प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृ०सं० 29
2. उषा प्रियंवदा, पचपन खम्भे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1962, पृ०सं० 111
3. डॉ० प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता सिमोन द वॉरियर, हिंदी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण 2002, पृ०सं० 34
4. उषा प्रियंवदा, पचपन खम्भे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1962, पृ०सं० 109
5. वहीं, पृ०सं० 79
6. वहीं, पृ०सं० 104
7. वहीं, पृ०सं० 11
8. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2019, पृ०सं० 165
9. वहीं, पृ०सं० 185
10. वहीं, पृ०सं० 153

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 86-89

समावेशी उच्च शिक्षा हेतु ई–कंटेंट का नवाचार : एक विश्लेषण

लेफ्टिनेंट डॉ. प्रमिला कबीर कुरेठिया
सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान एवं एनसीसी अधिकारी,
माता जीजाबाई शासकीय स्वशासी स्नाकोत्तर कन्या महाविद्यालय, मोतीतबेला, इंदौर, म. प्र.

सारांश :

वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन देखा जा रहा है, विशेषकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में। इस शोध–पत्र का उद्देश्य ई–कंटेंट के माध्यम से समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। समावेशी शिक्षा का तात्पर्य है ऐसी व्यवस्था जिसमें सभी वर्गों जैसे –विकलांग, आर्थिक रूप से कमजोर, दूरस्थ क्षेत्रों के छात्र, भाषाई विविधता वाले विद्यार्थी को समान अवसर और संसाधन उपलब्ध कराया जाएं साथ ही ई–कंटेंट जैसे वीडियो लेक्चर, पीडीएफ नोट्स, इंटरेक्टिव क्विज, MOOC प्लेटफॉर्म, और मोबाइल–आधारित शिक्षण ऐप्स ने शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बनाया है। विशेष रूप से कोविड–19 महामारी के दौरान इन संसाधनों ने शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ई–कंटेंट ने उन छात्रों को भी शिक्षा से जोड़ा है जो पारंपरिक कक्षा में भाग लेने में असमर्थ थे। शोध के लिए मिश्रित पद्धति अपनाई गई। विकलांग छात्रों के लिए ई–कंटेंट यदि समावेशी डिजाइन सिद्धांतों के अनुसार विकसित किया जाए, तो यह उनकी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। इसके अतिरिक्त, मातृभाषा में ई–कंटेंट की उपलब्धता ने भाषाई विविधता वाले छात्रों को भी लाभ पहुँचाया। अंततः, यह शोध–पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ई–कंटेंट उच्च शिक्षा में समावेशी शिक्षा की दिशा में एक प्रभावी उपकरण सिद्ध हो सकता है, बशर्ते इसे योजनाबद्ध, सुलभ और समावेशी रूप में विकसित किया जाए।

परिचय :

समावेशी शिक्षा केवल एक शैक्षिक नीति नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की आत्मा है। इसका उद्देश्य है कि प्रत्येक विद्यार्थी, चाहे उसकी सामाजिक, आर्थिक, भाषाई, शारीरिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, शिक्षा के अवसरों से वंचित न रहे। उच्च शिक्षा में यह प्रश्न और भी गहन हो जाता है क्योंकि यह स्तर विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान करता है बल्कि उन्हें समाज में नेतृत्व, शोध और नवाचार की दिशा में तैयार करता है। ई–कंटेंट इस प्रक्रिया का सबसे प्रभावी साधन बनकर उभर रहा है। यदि ई–कंटेंट को समावेशी दृष्टिकोण से तैयार किया जाए तो यह विद्यार्थियों को समान अवसर, विविधता का सम्मान और सहभागिता का अनुभव प्रदान कर सकता है।

शब्द कुंजी – उच्च शिक्षा, ई–कंटेंट, समावेशी शिक्षा, डिजिटल विभाजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

शोध उद्देश्य –

- उच्च शिक्षा में ई–कंटेंट द्वारा समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना।

- बहुभाषी, सुगम्य और सांस्कृतिक विविधता आधारित सामग्री से समान अवसर सुनिश्चित करना।
- डिजिटल विभाजन कम कर सामाजिक न्याय को सुदृढ करना।

अनुसंधान पद्धति –

इस शोध की कार्यप्रणाली में गुणात्मक विश्लेषण अपनाया गया है, जिसमें नीतिगत दस्तावेजों, केस स्टडी, और ई–कंटेंट प्लेटफॉर्म का अध्ययन कर समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया।

समावेशी शिक्षा की अवधारणा –

समावेशी शिक्षा का अर्थ है कि शिक्षा प्रणाली सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखे और किसी भी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करे। भारतीय संविधान में अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार प्रदान करता है, अनुच्छेद 21A शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करता है और अनुच्छेद 46 कमजोर वर्गों की शिक्षा व उन्नति पर बल देता है। इन संवैधानिक प्रावधानों के आलोक में उच्च शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे अपने पाठ्यक्रम और सामग्री को इस प्रकार तैयार करें कि कोई भी विद्यार्थी पीछे न रह जाए। वैश्विक स्तर पर भी यूनेस्को के सतत विकास लक्ष्य (SDG-4) में गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा पर बल दिया गया है।

उच्च शिक्षा में चुनौतियां –

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में उच्च शिक्षा के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। भाषाई विविधता के कारण विद्यार्थियों को अक्सर कठिनाई होती है, क्योंकि अधिकांश ई–कंटेंट अंग्रेजी या कुछ चुनिंदा भाषाओं में ही उपलब्ध होता है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थी हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में अधिक सहज होते हैं, लेकिन जब सामग्री केवल अंग्रेजी में उपलब्ध होती है तो वे पीछे रह जाते हैं। सामाजिक–आर्थिक असमानता भी एक बड़ी चुनौती है, जहाँ ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच संसाधनों का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त सामग्री का अभाव है, जैसे दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ऑडियो–बुक्स या श्रवणबाधित विद्यार्थियों के लिए सबटाइटल युक्त वीडियो। इसके अतिरिक्त डिजिटल विभाजन भी एक गंभीर समस्या है, सांस्कृतिक विविधता को भी अक्सर पाठ्य सामग्री में पर्याप्त स्थान नहीं दिया जाता हैं।

ई कंटेंट की भूमिका –

ई–कंटेंट इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी विश्वविद्यालय का ऑनलाइन पाठ्यक्रम हिंदी, अंग्रेजी और मराठी तीनों भाषाओं में उपलब्ध कराया जाए तो विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी समान रूप से लाभान्वित होंगे। इसी प्रकार, यदि किसी विषय पर वीडियो लेक्चर में सबटाइटल और सांकेतिक भाषा (Sign Language) का विकल्प दिया जाए तो श्रवणबाधित विद्यार्थी भी सहजता से सीख सकेंगे। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ई–कंटेंट को ऑडियो–बुक्स और स्क्रीन–रीडर अनुकूल बनाया जा सकता है। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए ओपन–सोर्स और कम लागत वाले संसाधन उपलब्ध कराए जा सकते हैं।

समावेशी ई कंटेंट निर्माण की रणनीतियां –

समावेशी ई–कंटेंट निर्माण के लिए कुछ रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) का सिद्धांत बताता है कि कंटेंट ऐसा होना चाहिए जो सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो। उदाहरण के लिए, एक ही विषय को टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो तीनों रूपों में उपलब्ध कराना। स्थानीय

संदर्भों का समावेश भी आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी अपने परिवेश से जुड़ाव महसूस करें। जैसे मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना को केस स्टडी के रूप में शामिल करना। प्रौद्योगिकी का उपयोग भी महत्वपूर्ण है, जैसे– ई–लाइब्रेरी, वर्चुअल लैब और AI आधारित अनुवाद उपकरण। इससे ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच की दूरी कम होती है। विद्यार्थियों को कंटेंट निर्माण में शामिल करना भी एक प्रभावी तरीका है, जैसे प्रोजेक्ट आधारित असाइनमेंट जहाँ विद्यार्थी अपने समुदाय की समस्याओं को शोध में लाएँ।

नीतिगत परिप्रेक्ष्य –

नीतिगत परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषी शिक्षा, डिजिटल संसाधनों का विस्तार और समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। उदाहरण के लिए, नीति में यह प्रावधान है कि उच्च शिक्षा संस्थान स्थानीय भाषाओं में भी सामग्री उपलब्ध कराएँ। यूनेस्को की रिपोर्ट्स वैश्विक स्तर पर समावेशी शिक्षा को सतत विकास लक्ष्य (SDG–4) से जोड़ती हैं। राज्य सरकारें भी छात्रवृत्ति, ई–लर्निंग पोर्टल और विशेष सहायता योजनाएँ चला रही हैं। कुछ केस स्टडी इस दिशा में प्रेरणादायक हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय ने दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ई–कंटेंट और ऑडियो लेक्चर उपलब्ध कराए हैं। इंदौर के निजी विश्वविद्यालय बहुभाषी ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म विकसित कर रहे हैं। आईआईटी और एनआईटी वर्चुअल लैब्स और ओपन–सोर्स कंटेंट से ग्रामीण विद्यार्थियों को लाभ पहुँचा रहे हैं। उदाहरण के लिए, आईआईटी बॉम्बे का Spoken Tutorial Project विभिन्न भाषाओं में तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराता है, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं।

संभावित लाभ –

ई–कंटेंट के माध्यम से समावेशी शिक्षा के अनेक लाभ हैं। इससे सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलता है। सांस्कृतिक विविधता का सम्मान होता है और विभिन्न समुदायों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है। विविध दृष्टिकोणों से नए विचार उत्पन्न होते हैं, जिससे नवाचार और शोध को बढ़ावा मिलता है। कमजोर वर्गों को शिक्षा में बराबरी मिलती है, जिससे सामाजिक न्याय की भावना सुदृढ़ होती है।

निष्कर्षत –

कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में ई–कंटेंट के माध्यम से समावेशी शिक्षा केवल नीति का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की आत्मा है। यदि ई–कंटेंट को बहुभाषी, सुगम्य, सांस्कृतिक रूप से प्रतिनिधिक और तकनीकी रूप से सुलभ बनाया जाए तो उच्च शिक्षा वास्तव में समावेशी बन सकती है। समावेशी ई–कंटेंट निर्माण से न केवल विद्यार्थियों को समान अवसर मिलेगा बल्कि समाज में विविधता, समानता और न्याय की भावना भी सुदृढ़ होगी। इस प्रकार उच्च शिक्षा संस्थान एक ऐसे भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं जहाँ शिक्षा सभी के लिए है, बिना किसी भेदभाव के।

संदर्भ सूची –

1. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली : शिक्षा मंत्रालय।
2. भारतीय संविधान. (1950). संविधान के अनुच्छेद 14, 21A और 46. भारत सरकार प्रकाशन।

3. दिल्ली विश्वविद्यालय. (2022). ई–कंटेंट और ऑडियो लेक्चर पहल. नई दिल्ली : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. आईआईटी बॉम्बे. (2021). Spoken Tutorial Project : बहुभाषी तकनीकी शिक्षा. मुंबई : आईआईटी बॉम्बे।
5. मध्यप्रदेश शासन. (2019). मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना. भोपाल : उच्च शिक्षा विभाग।
6. एनआईटी. (2023). वर्चुअल लैब्स और ओपन–सोर्स कंटेंट. भारत सरकार, तकनीकी शिक्षा परिषद।
7. शर्मा, आर. (2021). समावेशी शिक्षा और डिजिटल विभाजन. नई दिल्ली : भारतीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद।
8. यूनेस्को. (2015). सतत विकास लक्ष्य 4 : गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा. पेरिस : यूनेस्को प्रकाशन।

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 90-94

भारतीय लोकतंत्र और Gen-Z : मतदाता व्यवहार और चुनावी प्रभाव का मूल्यांकन

Raushan Kumar
Research Scholar, Department of Political Science,
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi- 221002

सारांश :

भारत का लोकतंत्र, विश्व की सबसे बड़ी चुनावी प्रक्रिया, वर्तमान में एक अभूतपूर्व जनसांख्यिकीय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। लगभग 29% मतदाता आयु वर्ग की आबादी और 21 करोड़ युवा मतदाताओं (18–29 वर्ष) के साथ, Generation-Z (1990 के दशक के मध्य के बाद जन्मी पीढ़ी) भारतीय चुनावी राजनीति में एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरी है। यह शोध पत्र Gen-Z के मतदाता व्यवहार, उनकी राजनीतिक जुड़ाव की प्रकृति, और चुनावी परिणामों पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करता है। पारंपरिक राजनीति से मोहभंग और डिजिटल प्लेटफार्मों पर पली–बढ़ी इस पीढ़ी की राजनीतिक चेतना रोजगार, जलवायु परिवर्तन, मानसिक स्वास्थ्य और पारदर्शिता जैसे मुद्दों पर केंद्रित है। यह पीढ़ी पारंपरिक दलगत राजनीति के प्रति संदेहपूर्ण है और 'वोट बैंक' के बजाय 'भागीदार' के रूप में व्यवहार किए जाने की मांग करती है। हालाँकि, 2014 से 18–25 आयु वर्ग की मतदान दर में वृद्धि और "Cockroach Janata Party" (CJP) जैसे हालिया आंदोलन इस पीढ़ी की बदलती राजनीतिक भागीदारी को दर्शाते हैं।

यह अध्ययन तर्क देता है कि Gen-Z केवल एक 'युवा लहर' नहीं है, बल्कि एक संरचनात्मक बदलाव है—एक 'प्रदर्शन–आधारित' मतदाता वर्ग जो निष्पादन और जवाबदेही के आधार पर सत्ता को पुरस्कृत या दंडित करता है। यह पीढ़ी भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी, पारदर्शी और मुद्दा–केंद्रित बनाने की क्षमता रखती है, बशर्ते राजनीतिक व्यवस्था उनकी आकांक्षाओं को समझे और उन्हें सार्थक भागीदारी के अवसर प्रदान करे।

मुख्य शब्द :– Gen-Z, लोकतंत्र, सोशल मीडिया, पॉडकास्ट, मीम्स, ब्रांड बॉयकॉट, सामुदायिक स्वयंसेवा, क्राउडफंडिंग, मतदाता, चुनाव।

1. परिचय :

भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, एक अद्वितीय जनसांख्यिकीय लाभांश से संपन्न है। वर्ष 2026 में, 18–29 वर्ष की आयु के युवा मतदाताओं की हिस्सेदारी कुल मतदाताओं में लगभग 29% थी। 2024 के लोकसभा चुनावों में 18.4 मिलियन प्रथम–बार मतदाता थे, और कुल 21 करोड़ युवा मतदाता (18–29 वर्ष) इस चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा थे। यह आंकड़ा Gen-Z—जो मोटे तौर पर 1996 के बाद जन्मी पीढ़ी है—की राजनीतिक क्षमता को रेखांकित करता है।

Gen-Z की राजनीतिक पहचान उनके 'डिजिटल नेटिव' होने से गहराई से प्रभावित है। उनकी राजनीति में प्रवेश पार्टी कार्यालयों या रैलियों के माध्यम से नहीं, बल्कि स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, पॉडकास्ट, मीम्स और पीयर नेटवर्क्स के माध्यम से होता है। यह पीढ़ी पारंपरिक मीडिया (समाचार पत्र, टेलीविजन) की तुलना में डिजिटल प्लेटफार्मों से राजनीतिक जानकारी प्राप्त करती है। इसलिए, उनकी राजनीतिक जुड़ाव को समझने के लिए पारंपरिक मानदंड (जैसे रैली में भागीदारी) अपर्याप्त हैं, उनकी भागीदारी ऑनलाइन याचिकाओं, ब्रांड बॉयकॉट, सामुदायिक स्वयंसेवा और क्राउडफंडिंग के रूप में प्रकट होती है।

यह शोध पत्र निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है :

- Gen-Z के मतदाता व्यवहार की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?
- डिजिटल मीडिया और सामाजिक आंदोलनों ने उनकी राजनीतिक जुड़ाव को कैसे प्रभावित किया है?
- चुनावी परिणामों और नीति–निर्माण पर Gen-Z का क्या प्रभाव पड़ा है और पड़ेगा?
- क्या Gen-Z भारतीय लोकतंत्र के लिए एक चुनौती है या अवसर?

2. Gen-Z मतदाता व्यवहार : विशेषताएं और प्रवृत्तियाँ

2.1. पारंपरिक राजनीति से मोहभंग, लेकिन राजनीतिक जागरूकता :

Gen-Z को अक्सर राजनीतिक रूप से उदासीन बताया जाता है, लेकिन यह धारणा भ्रामक है। CSDS-लोकनीति के अध्ययनों से पता चलता है कि 80–90% युवा राजनीतिक रूप से जागरूक हैं, लेकिन केवल 50–60% ही मतदान या प्रचार जैसी सक्रिय भागीदारी करते हैं। यह अंतर 'अव्यवस्था' (Disenchantment) को दर्शाता है, न कि 'उदासीनता' (Parhy) को। Gen-Z का मानना है कि राजनीतिक व्यवस्था उनकी चिंताओं का समाधान नहीं करती है। नंदना के. एस. का कहना है, ''लोग परिणामों की परवाह करते हैं, वे बस यह नहीं मानते कि प्रक्रिया काम करती है''।

2.2. मुद्दा–केंद्रित राजनीति :

Gen-Z की राजनीति वैचारिक या दलीय वफादारी के बजाय मुद्दों पर केंद्रित है। उनके प्रमुख मुद्दे हैं :

- **रोजगार :** बेरोजगारी की तुलना में अल्प–रोजगार (Underemployment) की चिंता अधिक है।
- **जलवायु परिवर्तन :** UNICEF सर्वेक्षण के अनुसार, 80% से अधिक भारतीय युवा मानते हैं कि जलवायु परिवर्तन उनके भविष्य को प्रभावित करेगा।
- **शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाएं :** NEET पेपर लीक जैसे मुद्दों ने "Cockroach Janata Party" (CJP) आंदोलन को जन्म दिया।
- **मानसिक स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, पारदर्शिता और भ्रष्टाचार :** ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर Gen-Z खुलकर बात करता है और सरकार से ठोस नीतियों की अपेक्षा करता है।

2.3. 'प्रदर्शन–आधारित' मतदान :

Gen-Z पारंपरिक जाति–आधारित या राजवंशीय राजनीति से तंग आ चुका है। वे 'प्रदर्शन–आधारित मतदाता' (Performance Voters) हैं, जो मूर्त परिणाम, जवाबदेही और पारदर्शिता के आधार पर अपना वोट देते हैं। उनमें किसी विशेष दल के प्रति वफादारी कम होती है, और वे वैकल्पिक उम्मीदवारों या नई पार्टियों को समर्थन देने में संकोच नहीं करते। यह प्रवृत्ति तमिलनाडु में 2026 के विधानसभा चुनावों में स्पष्ट देखी गई, जहाँ Gen-Z ने अभिनेता विजय की पार्टी TVK को सत्ता में पहुँचाया।

3. चुनावी भागीदारी : डिजिटल सक्रियता से मतदान तक :

3.1. बढ़ती मतदान दर :

ऐतिहासिक रूप से, युवाओं की मतदान दर कम रही है। 2009 में 18–25 आयु वर्ग की मतदान दर केवल 54% थी। हालाँकि, 2014 में यह बढ़कर 68% हो गई, जो राष्ट्रीय औसत 66% से अधिक थी। 2019 में यह 67% रही। यह वृद्धि दर्शाती है कि जब युवाओं को लगता है कि चुनाव महत्वपूर्ण हैं और उनका वोट मायने रखता है, तो वे मतदान करते हैं।

3.2. चुनावी परिणामों पर प्रभाव :

2019 के लोकसभा चुनावों में, युवा मतदाताओं (18–29 वर्ष) ने भाजपा की जीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भाजपा को कुल 63 मिलियन युवा वोट मिले, जो कांग्रेस पर उसकी कुल बढ़त (110 मिलियन वोट) का 57% था। 2024 के चुनावों में, 97 ऐसी सीटें थीं जहाँ 2019 में जीत का अंतर 5% से कम था, और युवा वोट इन सीटों पर 'स्विंग फैक्टर' बन सकता था।

3.3. डिजिटल प्लेटफॉर्म : राजनीतिक चेतना का नया माध्यम :

Gen-Z के लिए सोशल मीडिया केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि राजनीतिक चेतना और संगठन का प्राथमिक माध्यम है। वे मीम्स, रील्स, लाइवस्ट्रीम और विकेंद्रीकृत ऑनलाइन समुदायों के माध्यम से राजनीतिक बहस करते हैं और आंदोलनों का आयोजन करते हैं। "Cockroach Janata Party" (CJP) इसका सबसे ताजा उदाहरण है। जब मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने नकली डिग्री वालों को 'तिलचट्टे' (Cockroach) कहा, तो मर्द ने इस अपमान को अपनी पहचान में बदल लिया। CJP के इंस्टाग्राम पर 20 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हो गए, जो भाजपा और कांग्रेस से अधिक थे। इसने ऑनलाइन विरोध को जंतर–मंतर पर सड़क प्रदर्शनों में बदल दिया, जिससे केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा।

4. Gen-Z आंदोलन : केस स्टडी – Cockroach Janata Party (CJP)

CJP आंदोलन Gen-Z की राजनीतिक परिपक्वता और प्रभाव का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

उत्पत्ति : NEET-UG पेपर लीक और उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश की 'तिलचट्टे' वाली टिप्पणी ने इस आंदोलन को जन्म दिया।

सामाजिक विविधता :– यह आंदोलन जाति, वर्ग और धर्म की सीमाओं को पार करने वाला था। जंतर–मंतर पर एकत्रित प्रदर्शनकारियों में OBC, SC/ST और मुस्लिम समुदाय के लोग बड़ी संख्या में शामिल थे। 'हम छात्र हैं, हम जाति–धर्म से परे हैं'—यह Gen-Z की नई पहचान थी।

रणनीति :– CJP ने डिजिटल सक्रियता (मीम्स, रील्स) को सड़क प्रदर्षनों के साथ जोड़ा, जिससे एक 'हाइब्रिड विरोध' (Hybrid Protest) का मॉडल तैयार हुआ। इस आंदोलन ने साबित किया कि Gen-Z पारंपरिक विपक्षी दलों की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से सरकार पर दबाव बना सकता है।

प्रभाव :– इस आंदोलन ने शिक्षा मंत्री का इस्तीफा और सरकार को जवाबदेह बनाने के लिए एक नया 'ब्लूप्रिंट' तैयार किया। यह Gen-Z की 'प्रदर्शन–आधारित' राजनीति का प्रमाण है।

5. सैद्धांतिक विश्लेषण : Gen-Z और लोकतांत्रिक विकास :

5.1. नागरिक स्थान (Civic Space) और विश्वास :

वैश्विक संदर्भ में, Gen-Z दक्षिण एशिया में सरकार विरोधी आंदोलनों (श्रीलंका 2022, बांग्लादेश 2024)

में सक्रिय रहा है। हालाँकि, भारत में Gen-Z ने सड़कों के बजाय मतदान और डिजिटल प्लेटफार्मों को प्राथमिकता दी है। प्यू रिसर्च सेंटर (2025) के अनुसार, 74% भारतीय लोकतंत्र के कामकाज से संतुष्ट हैं, जो 23 देशों में दूसरा सबसे उच्च स्तर है। यह विश्वास इसलिए बना हुआ है क्योंकि भारत में नागरिक समाज और मीडिया अपेक्षाकृत स्वायत्त हैं, जिससे Gen-Z को शिकायतों को व्यक्त करने के अवसर मिलते हैं।

5.2. 'परफॉर्म या पेरिश' ½Perform or Perish½ राजनीति :

Gen-Z के उदय ने भारतीय राजनीति में एक नया समीकरण बनाया है—'परफॉर्म या पेरिश'। यह पीढ़ी सरकारों को कम समय देती है और त्वरित परिणामों की मांग करती है। पारंपरिक वोट बैंक (जाति, धर्म) अब Gen-Z के सामने कमजोर पड़ते दिख रहे हैं। भाजपा की पश्चिम बंगाल में 2026 की जीत और तमिलनाडु में TVK का उदय दोनों ही Gen-Z के 'प्रदर्शन–आधारित' मतदान के परिणाम थे।

5.3. भारतीय लोकतंत्र के लिए चुनौतियाँ और अवसर :

अवसर :

- **जवाबदेही :–** Gen-Z सरकारों को जवाबदेह बना सकता है और पारदर्शिता बढ़ा सकता है।
- **समावेशिता :–** CJP आंदोलन ने दिखाया कि Gen-Z जाति–धर्म से परे एक संविधान–आधारित पहचान बना सकता है।
- **नवाचार :–** डिजिटल टूल्स का उपयोग राजनीतिक भागीदारी को अधिक प्रभावी बना सकता है।

चुनौतियाँ :

- **अस्थिरता :–** 'प्रदर्शन–आधारित' मतदान चुनावी परिणामों को अप्रत्याशित बना सकता है और राजनीतिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।
- **अविश्वास :–** यदि व्यवस्था Gen-Z की मांगों को पूरा नहीं करती है, तो वे मतदान से दूर हो सकते हैं या सड़कों पर आ सकते हैं।
- **प्रतिनिधित्व :–** 18वीं लोकसभा में 40 वर्ष से कम आयु के केवल 11% सांसद हैं, जो युवाओं के अल्प–प्रतिनिधित्व को दर्शाता है।

6. निष्कर्ष और सिफारिशें :

Gen-Z भारतीय लोकतंत्र को एक नई दिशा दे रही है। वे न केवल 'भविष्य के मतदाता' हैं, बल्कि 'वर्तमान के निर्णायक' भी हैं। उनकी मांगें—पारदर्शिता, जवाबदेही, मुद्दा–केंद्रित राजनीति और सार्थक भागीदारी भारतीय लोकतंत्र को और अधिक मजबूत बना सकती हैं। हालाँकि, यदि राजनीतिक व्यवस्था इन मांगों को अनसुना करती है, तो Gen-Z असंतोष का कारण बन सकता है, जैसा कि CJP आंदोलन ने संकेत दिया।

सिफारिशें :

- **भागीदारी के नए मंच :** राजनीतिक दलों को Gen-Z के साथ संवाद के लिए टाउन हॉल, ऑनलाइन परामर्श और सहभागी बजटिंग (Participatory Budgeting) जैसे मंच बनाने चाहिए।
- **युवा–केंद्रित नीतियां :** सरकारों को रोजगार, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन पर Gen-Z –केंद्रित नीतियाँ बनानी चाहिए।
- **डिजिटल साक्षरता :** Gen-Z को डिजिटल प्लेटफार्मों पर फैलने वाली अफवाहों और ध्रुवीकरण से बचने के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम चलाने चाहिए।

- **राजनीतिक दलों में सुधार :** दलों को अपनी युवा इकाइयों को सशक्त बनाना चाहिए और आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा देना चाहिए।
- **शैक्षिक पाठ्यक्रम :** नागरिक शिक्षा (Civic Education) को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए ताकि युवा चुनावों के बीच नीति–निर्माण को प्रभावित करना सीख सकें।

निष्कर्षतः, Gen-Z भारतीय लोकतंत्र के लिए एक 'वरदान' है, बशर्ते व्यवस्था उन्हें 'भागीदार' के रूप में स्वीकार करे, न कि केवल 'वोट बैंक' के रूप में।

संदर्भ –

- Jude, A. V., & Padmakumari, P. (2025). Social media activism: Delving into Generation Z's experiences. Communication Research and Practice, 12(1), 20-37. https://doi.org
- Sharma, V. (2024, October 30). Maharashtra elections: Why Gen Z seems disinterested. The Indian Express. https://indianexpress.com
- Weber Shandwick. (2024). Elections Matter: India Report. https://www.deccanchronicle.com
- Goswami, A. S. (2025, November 27). Protests next door, patience at home: India's youth and the vote. Australian Institute of International Affairs. https://www.internationalaffairs.org.au
- Shastri, S. (2025, October 22). Bihar leaders face youth test. The New Indian Express. https://www.newindianexpress.com
- The Gen Z effect: Can old politics survive a young Bihar? (2025, October 22). Outlook India. https://www.outlookindia.com
- Why supporters of India's 'Cockroach' movement marched on parliament. (2026, July 21). ABC News. https://newsapp.abc.net.au
- India police clash with 'Cockroach' activists. (2026, July 21). China Daily. https://global.chinadaily.com.cn
- From 'Cockroach' to a people's movement: How a student protest grew beyond its founders. (2026, July 26). Kashmir Reader. https://kashmirreader.com
- Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies. (2025). Impact of Digital Media on Political Marketing Strategies and Voter Behaviour in 2024 Indian General Elections, 13(87), 973-977. https://zenodo.org

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 95-100

वैश्वीकरण के युग में स्वामी विवेकानन्द की प्रासंगिकता

डॉ. रीजा. आर. एस

सहायक प्राध्यापक, क्रिस्त्यन कॉलेज काट्टाकडा, तिरुवनन्तपुरम, केरल, केरल विश्वविद्यालय।

सार :

इक्कीसवीं सदी का वर्तमान वैश्वीकृत दौर जहाँ एक ओर अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति, भौतिक संवर्धन और वैश्विक संपर्क या वैश्विक गाँव का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर इसने उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक पहचान के संकट, धार्मिक कटुता, मानसिक तनाव और सामाजिक असमानता जैसी गंभीर चुनौतियों को जन्म दिया है। प्रस्तुत शोध–पत्र वैश्वीकरण के इस जटिल परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के विचार–दर्शन की व्यावहारिक प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण करता है। स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित 'व्यावहारिक वेदांत', 'सर्वधर्म सम्भाव', पूर्व के अध्यात्म एवं पश्चिम के विज्ञान का समन्वय, तथा युवा–सशक्तीकरण के विचार आज की वैश्विक समस्याओं के समाधान में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन स्वामी जी के अस्पृश्यता–विरोध, सर्व–समानता, नारी शिक्षा व स्वावलंबन, तथा संस्कृत भाषा के सांस्कृतिक महत्त्व संबंधी विचारों को रेखांकित करते हुए चरित्र–निर्माण आधारित शिक्षा पर बल देता है। निष्कर्षतः यह शोध–पत्र यह प्रतिपादित करता है कि केवल भौतिक या आर्थिक संबंधों से नहीं, बल्कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से ही एक संतुलित, समावेशी और शांतिपूर्ण विश्व समाज की स्थापना संभव है।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, स्वामी विवेकानन्द, व्यावहारिक वेदांत, सर्वधर्म सम्भाव, युवा–सशक्तीकरण।

इक्कीसवीं सदी का वर्तमान दौर तीव्र वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और भौतिक संवर्धन का काल है। एक ओर जहाँ वैश्वीकरण ने भौगोलिक दूरियों को मिटाकर विश्व को एक 'वैश्विक गाँव' में परिवर्तित कर दिया है, वहीं दूसरी ओर इसने सांस्कृतिक पहचान के संकट, उपभोक्तावाद, धार्मिक कटुता, मानसिक तनाव और सामाजिक असमानता जैसी गंभीर चुनौतियों को जन्म दिया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में यह विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है कि स्वामी विवेकानन्द का विचार–दर्शन इन आधुनिक वैश्विक समस्याओं का किस प्रकार व्यावहारिक और स्थायी समाधान प्रस्तुत करता है। स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित 'व्यावहारिक वेदांत' विश्व–बंधुत्व की धारणा, पूर्व के अध्यात्म एवं पश्चिम के विज्ञान का समन्वय तथा युवा–सशक्तीकरण के विचार आज के वैश्वीकृत परिवेश में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उनका दर्शन केवल व्यक्तिगत चरित्र–निर्माण तक सीमित न रहकर, सार्वभौमिक सहिष्णुता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मूल्य पर आधारित एक समतामूलक विश्व समाज की स्थापना पर बल देता है। यह अध्ययन निष्कर्ष रूप में यह रेखांकित करता है कि वैश्वीकरण के इस युग में स्थायी वैश्विक शांति, मानवीय संवेदनाओं की रक्षा और समावेशी विकास के लिए विवेकानन्द के जीवन–मूल्यों को अंगीकार करना अनिवार्य है।

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ पूरी दुनिया एक वैश्विक गाँव बन चुकी है, वहीं दूसरी ओर व्यक्तिवाद,

बाजारवाद, मानसिक तनाव और सांस्कृतिक पहचान का संकट भी गहराया है। ऐसे समय में जब समाज भौतिक समृद्धि और आंतरिक शांति के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है, तब स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन एक सुदृढ़ मार्गदर्शक के रूप में सामने आता है। वैश्वीकरण ने आर्थिक और तकनीकी रूप से तो दुनिया को जोड़ दिया है, लेकिन दिलों में दूरियाँ बढ़ाई हैं। स्वामी विवेकानन्द ने 1893 के शिकागो धर्मसंसद में 'अमेरिकी भाइयों और बहनों' संबोधन से जिस विश्व–बंधुत्व का संदेश दिया था, वह आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक है। उन्होंने सिखाया कि विविधता में एकता ही प्रकृति का नियम है।

स्वामी जी का वेदांत केवल ग्रंथों या गुफाओं तक सीमित रहने वाला विचार नहीं था। वह कर्मक्षेत्र में उतरने का आह्वान था। आधुनिक बाजारवादी व्यवस्था में जब मनुष्य केवल उपभोग की वस्तु बनता जा रहा है, तब स्वामी जी का 'व्यावहारिक वेदांत' याद दिलाता है कि हर जीव में ईश्वर का वास है। दरिद्र और पीड़ित की सेवा ही वास्तविक ईश्वर पूजा है। वैश्वीकरण के दौर में सबसे बड़ी चुनौती है– अपनी जड़ों या संस्कृति को बचाते हुए आधुनिक विज्ञान को अपनाना। स्वामी विवेकानंद ने हमेशा कहा कि पश्चिम से सीखें : विज्ञान, तकनीक, संगठन क्षमता और भौतिक प्रगति और पूर्व से दें अध्यात्म, आत्म–संयम, और जीवन के उच्च मूल्य। यह संतुलन ही आज के वैश्विक समाज को विनाश से बचा सकता है।

आज का युवा सूचनाओं के विस्फोट और प्रतिस्पर्धा के दौर में अत्यधिक तनाव और दिग्भ्रमित अवस्था में है। स्वामी जी का संदेश है कि उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। वे ऐसे शिक्षा दर्शन के समर्थक थे जो केवल जानकारी न दे बल्कि चरित्र का निर्माण करे और आत्म–विश्वास जगाए। उनका यह विचार आज के युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य और नैतिक उत्थान के लिए अचूक औषधि है। आज के वैश्वीकृत युग में भी धार्मिक कट्टरता और कट्टरपंथी विचार शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा बने हुए हैं। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि सभी नदियां जैसे एक ही समुद्र में मिलती हैं, वैसे ही सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर ले जाते हैं। उनका 'सर्वधर्म सम्भाव' का विचार आज विश्व शांति के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वैश्वीकरण केवल वस्तुओं या तकनीक का आदान–प्रदान नहीं है। यह विचारों और मानवीय मूल्यों के आदान–प्रदान का नाम भी है। स्वामी विवेकानन्द का दर्शन हमें भौतिक उन्नति के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक चेतना का पाठ पढ़ाता है। यदि आज विश्व को भौतिकतावाद से उत्पन्न तनाव और वैमनस्य से मुक्त होना है, तो विवेकानन्द के विचारों को अंगीकार करना ही होगा।

स्वामी जी भारत की एकता, भारत की अस्मिता, भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता, भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतिरूप बन गए थे। उनके दर्शन करने के लिए लोग आतुर हो उठे थे। स्वामी विवेकानन्द यह मानते थे कि देश का नव–निर्माण युवा शक्ति के द्वारा ही सम्भव है। युवकों के उत्साह, स्फूर्ति और बल होता है। यदि उन्हें ठीक तरह से उत्प्रेरित किया जाये तो उनमें आदर्शों के लिए मर मिटने की भावना भी उत्पन्न की जा सकती है। युवकों में नए विचारों को ग्रहण करने की शक्ति होती है। वे पुरानी सड़ी–गली परिपाटियों एवं कुरीतियों से बँधे भी नहीं होते। इसीलिए स्वामीजी जहाँ भी जाते वे मुख्य रूप से युवा शक्ति का आह्वान करते।

स्वामी जी यह भी मानते थे कि संसार के सभी समाजों की तरह भारतीय समाज में भी अनेक बुराइयाँ हैं। यह समाज तरह–तरह की कुप्रथाओं की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। इन बेड़ियों को काटना अत्यंत आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने जीवन में यह अनुभव किया कि हर काल की युवा पीढ़ी में अनेक दोषों के होने हुए भी उनमें संभावनाएँ छुपी रहती है। उनकी अनेक क्षमताएँ दबी रहती है और जीवन में नये विचारों को ग्रहण

करने को तथा उनके अनुसार अपने जीवन को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने की अद्‌भुत शक्ति विद्यमान रहती है। स्वामी जी युवा पीढ़ी की भारत के निर्माण में उनकी भूमिका की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं। स्वामी विवेकानन्द यह अच्छी तरह से अनुभव करते थे कि महिमामंडित भारत का निर्माण भारत की युवा पीढ़ी ही करेगी और इसलिए उन्होंने भारत की युवा शक्ति का आह्‌वान किया। उन्होंने उन्हें मोह–निद्रा से जगाने का प्रयास किया और यहाँ तक कहा कि अगर भारत की युवा पीढ़ी इस कार्य को करेगी तो मेरे शरीर त्यागने के उपरान्त मेरी आत्मा उन लोगों के साथ कार्य करेगी। स्वामी विवेकानन्द की वाणी के एक–एक शब्द युवा पीढ़ी के लिए समर्पित हैं जो उनके भीतर नई शक्ति व नई चेतना का संचार करते हैं।

स्वामी विवेकानन्द एक संन्यासी के रूप में अन्तिम दस वर्ष ही रहे। अतः स्वामी विवेकानन्द का सर्वाधिक महत्व वस्तुतः एक आदर्श भारतीय युवा के प्रतिमान के रूप में ही है। एक स्वस्थ, प्रतिभाशाली, अध्ययनशील, तेजस्वी भारतीय युवा कैसा होना चाहिए – इसका सबसे प्रबल दृष्टान्त है। नरेन्द्रनाथ दत्त, जो पहले स्वामी विदिषानन्द बने और फिर स्वामी विवेकानन्द बने। इसके पूर्व नरेन्द्रनाथ दत्त एक मध्यवर्गीय भारतीय गृहस्थ के होनहार पुत्र के रूप में विकसित हुए। समकालीन भारत की सबसे बड़ी समस्या है धर्मान्तरण। भारत में धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार राज्य द्वारा अमान्य हो गये, तो भारत के एकदेववादी समूहों के बहुत से लोग धार्मिक स्वतंत्रता का वरण करना चाहेंगे और बहुदेवतावादी सनातन धर्म की शरण में आना चाहेंगे। इसी सनातन धर्म की सेवा स्वामी विवेकानन्द ने की थी। भारत के युवाओं को नरेन्द्रनाथ दत्त और स्वामी विवेकानन्द दोनों से अध्ययनशीलता, सत्यनिष्ठा और धर्मनिष्ठा की ही प्रेरणा लेनी है। यही वह अनुकरणीय आदर्श है, जो आज के युवाओं के द्वारा अपनाने योग्य है।

स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। विवेकानन्द बड़े स्वप्नद्रष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद न रहे। उन्होंने वेदान्त के सिद्धान्तों को इसी रूप में देखा। विवेकानन्द को युवाओं से बड़ी आशाएँ थीं। आज के युवाओं के लिए इस ओजस्वी संन्यासी का जीवन एक आदर्श है। स्वामी विवेकानन्द समान स्वतंत्रता की अवधारणा में विश्वास करते हैं। वे चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी भी जाति या सम्प्रदाय का हो, प्रत्येक क्षेत्र में – सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक व राजनीतिक – वे समस्त स्वाधीनताएँ प्राप्त होनी चाहिए जो दूसरों से मिली हुई है। इसी में व्यक्ति और समाज का कल्याण अन्तर्निहित है। स्वतंत्रता की संकल्पना के साथ समानता की अवधारणा स्वाभाविक रूप से संबद्ध है। विवेकानन्द मानते थे कि धर्म ही व्यक्ति और राष्ट्र को शक्ति प्रदान करता है।

नरेन्द्र से विवेकानन्द हो जाना एक विचार दर्शन है। उनके द्वारा विश्व मानवता को दिया गया सन्देश आज भी प्रासंगिक बना हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है कि इस विश्व में जो कुछ विद्यमान है, वह सब प्राण के स्पन्दन से ही उत्पन्न हुआ है। प्राण के सर्वोच्च स्पन्दनों का कार्य है विचार। उनके विचार दर्शन के तत्व हैं – स्वधर्म के प्रति गौरव का भाव, विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता की स्वीकृति, देशाभिमान, पृथ्वी के समस्त धर्मों के प्रति आदर का भाव। स्वामी जी के विचार आज के युवा पीढ़ी के आचरण बन जाएँ तो देश और राष्ट्र, व्यक्ति और समाज तथा मानवता और धर्म–संस्कृति की रक्षा हो सकती है। स्वामी जी का विचार मानवता की महौषधि है।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के सुप्रसिद्ध दत्त परिवार में हुआ था। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र

देव था। पिता विश्वनाथ दत्त बंगाल के सुप्रसिद्ध वकील थे तथा माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी धर्मपरायण साध्वी, बुद्धिमती एवं साहसी महिला थीं। स्वामी जी के बाबा श्री दुर्गाचरण दत्त बहुत ही सज्जन पुरुष थे। स्वामी विवेकानन्द भारत की महान विभूति थे। वे अपने कर्मठ जीवन तथा गहन सामाजिक, आध्यात्मिक एवं राजनीतिक विचारों की छाप तेजोमय पूरे विश्व में छोड़ी थी। विश्व विवेकानन्द को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जानता है कि जिसकी बुद्धि प्रचण्ड थी और जिसने अपनी प्रचण्ड इच्छा शक्ति को भारत के पुनरुद्धार के कार्य में लगा दिया था। वे ईश्वरीय नगरी के तीर्थ यात्री दलितों के लिए संघर्ष करने वाले महान योद्धा थे। स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे।

स्वामी विवेकानन्द के गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस थे। वे जाति से ब्राह्मण थे। अपने यज्ञोपवीत के समय अपने परिवार के सदस्यों की इच्छा के विरुद्ध रामकृष्ण ने एक अस्पृश्य परिवार से भिक्षा ली। यह अपने समय की एक क्रांतिकारी पहल थी। स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे गुरु के शिष्य थे। स्वामी जी के जीवन में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं था। दलितों के बीच वह अपने को अधिक सहज अनुभव करते थे। वह कथनी और करनी में समरूप थे। स्वामी जी दलितों और अछूतों की पीड़ा को अच्छी तरह समझते थे। अस्पृश्यता और जातिभेद को लेकर स्वामी जी के कथनों से उनका साहित्य भरा पड़ा है। स्वामीजी आधुनिक युग के पहले ऐसे धर्माचार्य हैं, जिन्होंने हिन्दू धर्म में व्याप्त अस्पृश्यता और असमानता की इतनी कटु, प्रखर और स्पष्ट आलोचना की। अस्पृश्यता के विषय में स्वामी जी की आलोचनाओं की मुख्य विशेषता यह है कि वह एक 'इनसाइडर' की आलोचना है। हिन्दू समाज की कुरीतियों को हिन्दू की आँखों से देखा, किसी विजातीय की आँख से नहीं। अस्पृश्यता भी भगवान का स्वरूप है, उसकी सेवा करो।

भारत की प्रमुख भाषा संस्कृत है, जो सभी भाषाओं की जननी है। यह भाषा हम लोगों के लिए गौरव की वस्तु है। इस भाषा की कठिनता ने इसे जन–सामान्य से दूर अवश्य कर दिया है, किन्तु जब तक पुनः संस्कृत का उत्थान नहीं होगा तब तक हम हमारी संस्कृति के गूढ़ रहस्यों को नहीं जान सकेंगे। संस्कृत भाषा प्रेम के विषय में डॉ. प्रेम भारती के शब्द इस प्रकार है– "उल्लेखनीय बात यह है कि 1994 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि संस्कृत कई भाषाओं की जननी है। भारतीय संस्कृति और विरासत को समझने के लिए संस्कृत पढ़ना और समझना बेहद जरूरी है अन्यथा हमारी संस्कृति का स्रोत सूख जाएगा।"[1] स्वामी विवेकानन्द के अनुसार संस्कृत केवल एक भाषा नहीं,बल्कि भारत की सांस्कृतिक और अध्यात्मिक शक्ति की नींव है। उनका मानना था कि समाज के सभी वर्गों के उत्थान और आत्म–गौरव के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी का स्पष्ट विचार था कि सामान्य जनमानस तक उच्च विचारों और ज्ञान को पहुँचाने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। उन्होंने कहा था कि जब तक हमारी पूरी जाति संस्कृत की अच्छी विद्वान नहीं बन जाति, तब तक भारत की सांस्कृतिक और भाषाई समस्याओं का स्थायी समाधान संभव नहीं है। वेद और वेदान्त की संस्कृत के बारे में उनका कहना था कि यह भाषा इतनी परिष्कृत और सूक्ष्म है कि इसके एक–एक शब्द के अर्थ पर युगों तक विचार किया जा सकता है। स्वामी जी का मानना था कि भारत की क्षेत्रीय भाषाओं की जड़ों को जीवित और समृद्ध बनाए रखने के लिए संस्कृत ही जननी की तरह कार्य करती है।

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्री शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया है। शिक्षा के महत्व के बारे में डॉ. अमित शुक्ल के शब्द इस प्रकार है – 'शिक्षा समाज की आधारशिला है। शिक्षा ही ऐसे नागरिकों का निर्माण करती है, जो समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकें।'[2] स्वामी विवेकानन्द नारी शिक्षा एवं नारी स्वातंत्र्य के प्रबल

समर्थक थे। व्यावहारिक कर्म क्षेत्र में नारी की दक्षता को यदि स्वीकारा जायेगा तो निश्चय ही राष्ट्र की उन्नति तथा राष्ट्र का कल्याण होगा। स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम के लिए विवेकानन्द ने इतिहास और पुराण, धर्म, शिल्प, विज्ञान, गृह–विज्ञान और कला की शिक्षा पर जोर दिया है। गृह–विज्ञान में सीना–पिरोना, भोजन पकाना तथा गृहस्थ जीवन के विभिन्न कार्य सम्मिलित हैं। इस सबके साथ–साथ पुरुषों के समान स्त्रियों को भी शारीरिक शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे स्वयं अपनी रक्षा कर सकें और निर्भय होकर सब कहीं घूम–फिर सकें। युवकों के समान युवतियों में भी साहस और शौर्य उत्पन्न करने की आवश्यकता है। ऐसी माताएँ ही साहसी बालकों को जन्म दे सकती हैं। स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में मेजर (डॉ.) परशुराम गुप्ता कहते हैं – 'भारतीय नारी तेजस्वी हिन्दू राष्ट्र की श्रेष्ठ जननी बनकर पुत्री, बहन, पत्नी और माता के रूप में पिता, भाई, पति और पुत्र को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाली बने, यह ध्येय विकसित करना।'[3] स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, स्त्रियों को सर्वांगीण शिक्षा और आत्मरक्षा में सक्षम बनाकर ही एक सशक्त, साहसी और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है। उनका दृढ़ मत था कि नारी की शिक्षा केवल गृहस्थी तक सीमित न रहकर उसके आत्म–सम्मान, शौर्य और राष्ट्रीय प्रगति का आधार बननी चाहिए। विवेकानन्द का स्त्री–शिक्षा दर्शन नारी को आत्मनिर्भर, चरित्रवान और राष्ट्र–निर्माण की मुख्यधारा में बराबरी का भागीदार बनाने पर बल देता है।

विवेकानन्द जी की इच्छा थी कि नारी अपना सुधार एवं उद्धार स्वयं करे। यदि आवश्यक हो तो पुरुषों की सहायता या सहयोग से नारी को प्रगति करना चाहिए। नारी के आगे बढ़ने में उसका सर्जनात्मक प्रयास, परिश्रम, कष्ट, संतोष, साहस, स्वाभिमान, समर्पण, लगन और आनन्द का भाव निहित है। स्वयं निर्मित अपनी पृथक राह में गौरव का अनुभव भी होता है। 'मेरा अपना' एहसास सफलता पर दुगुनी खुशी प्रदान करता है। वे नारी में अनंत संभावनाएँ देखते थे। उनका मत था कि वह पवित्र गृहिणी का दायित्व निभाते हुए भी शिक्षा प्राप्त कर परिवार, समाज, देश एवं विश्व की प्रगति में भी अपना योगदान दे सकती है। स्वामी विवेकानन्द की मानसपुत्री भगिनी निवेदिता ने शिक्षिका के गुरुतर भार का दायित्व ग्रहण करने हेतु भारत भूमि पर पदार्पण किया था।

डॉ. कैलाश लाल राय 'प्रीतम' के शब्दों में – 'भगिनी में स्वामी विवेकानन्द ने ठीक वैसी महिला को पाया कि जैसी महिला की उन्हें भारत में अपने कार्य के लिए आवश्यकता थी। शिक्षा के मुद्दे पर दोनों ने मानस मंथन किया। एक को बालकों की शिक्षा के लिए नये उपायों की खोज थी और दूसरा महिलाओं एवं जनसाधारण की शिक्षा व अपने देश में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा के लिए उपाय ढूँढ रहा था। जब कोई निवेदिता से यह पूछता कि वे कौन थीं और भारत में क्या कर रही थीं तो उनका उत्तर होता था, श्वह एक शिक्षिका थीं।' यह उत्तर भारत में उनकी भूमिका को स्थापित करता है।'[4] स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, नारी–सशक्तीकरण का वास्तविक आधार उसका अपना स्वावलंबन और आत्म–प्रयास है, जिसमें पुरुष केवल सहयोगी की भूमिका निभा सकते हैं।भगिनी निवेदिता का भारत आगमन और शिक्षा के प्रति समर्पण यह सिद्ध करता है कि एक शिक्षित और आत्मनिर्भर नारी समाज और राष्ट्र–निर्माण में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।यह विचार–दर्शन नारी को केवल पारिवारिक उत्तरदायित्वों तक सीमित न रखकर, उसे अपनी प्रतिभा व शिक्षा के बल पर वैश्विक प्रगति में भागीदार बनने की प्रेरणा देता है।

विवेकानन्द शक्ति को धर्म का सार मानते थे। वह धर्म को व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों को ही शक्ति प्रदान करने वाला प्रेरक तत्व मानते थे। उनके धर्म का सार शक्ति है। स्वामी विवेकानन्द का मत यह है कि स्वतंत्रता ही

विकास की एकमात्र शर्त है। इसको समाप्त करने का परिणाम होगा अधःपतन। स्वतंत्रता व्यक्ति की आत्मानुभूति के लिए आवश्यक है। अपने 'स्व' का साक्षात्कार करना ही पूर्णता है। स्वामी विवेकानन्द समान स्वतंत्रता की अवधारणा में विश्वास करते विवेकानन्द साहित्य में स्वामी जी का शब्द इस प्रकार है– "स्वतंत्रता की कल्पना ही मुक्ति की सच्ची कल्पना है। हर वस्तु से स्वतंत्रता, संवेदनाओं की स्वतंत्रता चाहे वे सुख की हों या दुःख की, शुभ से और अशुभ से भी।'[5] स्वामी जी ने यह बात अनुभव की कि शरीर से स्वास्थ्य, बुद्धि से विकसित और अर्थ से संपन्न होने के साथ–साथ मनुष्य को चरित्रवान भी होना चाहिए। चरित्र ही मनुष्य को सत्यनिष्ठ बनाता है। इसलिए उन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर भी बल दिया। विवेकानन्द धर्म को राष्ट्रीय जीवन रूपी संगीत का स्थायी स्वर मानते थे। राष्ट्रीयता के आध्यात्मिक पक्ष में उनका अडिग विश्वास था।

स्वामी विवेकानन्द का विचार–दर्शन किसी काल, देश या धर्म की सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है, बल्कि वह संपूर्ण मानवता के लिए एक सार्वभौमिक मार्गदर्शिका है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर ने जहाँ एक ओर भौतिक और तकनीकी समृद्धि के नए द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर इसने मनुष्य को आत्म–विस्मृति, उपभोक्तावाद और मानसिक एकाकीपन की ओर भी धकेला है। ऐसे समय में स्वामी जी का 'व्यावहारिक वेदांत' भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक चेतना के बीच एक सुदृढ़ सेतु का कार्य करता है। उनका यह स्पष्ट मानना था कि वास्तविक विश्व–बंधुत्व केवल आर्थिक या बाजारू संबंधों से स्थापित नहीं हो सकता। इसके लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और मानवीय संवेदनाओं का होना अनिवार्य है। पूर्व के अध्यात्म और पश्चिम के आधुनिक विज्ञान व तकनीक का जो समन्वय उन्होंने प्रस्तुत किया था, वही आज के वैश्वीकृत विश्व को विनाश से बचाकर एक संतुलित दिशा दे सकता है। वैश्वीकरण के इस युग में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता केवल सैद्धांतिक चर्चाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समय की माँग है। यदि वर्तमान विश्व को शांति, सहअस्तित्व, सर्वधर्म सम्भाव और सतत मानवीय विकास की दिशा में आगे बढ़ना है, तो विवेकानन्द के विचारों को अपने जीवन और नीतियों में अंगीकार करना ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ. प्रेम भारती – युगप्रेरक स्वामी विवेकानन्द, पृ. 71.
2. डॉ. अमित शुक्ल, डॉ. वीरेन्द्र यादव (संपादक) – तेजस्वी विचारों के शिखर पुरुष, पृ. 263.
3. मेजर डॉ. परशुराम गुप्त – विवेकानन्द और राष्ट्रवाद, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 106.
4. डॉ. कैलाश लाल राय 'प्रीतम' – स्वामी विवेकानन्द की मानसपुत्री भगिनी निवेदिता का भारतीय चिन्तन, पृ. 142, 143.
5. स्वामी मुमुक्षानन्द (अद्वैत आश्रम) – विवेकानन्द साहित्य (दशम खंड), पृ. 25.

सहायक ग्रन्थ सूची :

1. युग प्रेरक स्वामी विवेकानन्द – डॉ. प्रेम भारती, मधूलिका प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2016.
2. तेजस्वी विचारों के शिखर पुरुष – डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव (संपादक), ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, सं. 2013.
3. विवेकानन्द और राष्ट्रवाद – मेजर डॉ. परशुराम गुप्त, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2015.
4. स्वामी विवेकानन्द की मानस पुत्री भगिनी निवेदिता का भारतीय चिन्तन – डॉ. कैलाश लाल राय 'प्रीतम', राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशक, राजस्थान, सं. 2013.
5. विवेकानन्द साहित्य (दशम खंड) – स्वामी मुमुक्षानन्द, अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कोलकाता, सं. 2004

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 101-106

मुण्डारी में शिक्षा : वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

सिंगराय मुण्डा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

सारांश –

मुण्डारी एक जनजातीय भाषा है जो विशेष रूप से झारखण्ड के मुण्डा जनजातियों द्वारा बोली जाती है। जनजातीय भाषा मुण्डारी, जिसे होड़ो जगर भी कहा जाता है। मुण्डा जनजातियों की मुण्डारी शिक्षा की वर्तमान स्थिति, इसके समक्ष मौजूद चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं को लेकर अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके अध्ययन की मुख्य उद्देश्य मातृभाषा आधारित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है तथा मुण्डारी भाषा के माध्यम से लोगों में अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रचार प्रसार कर विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। इस भाषा के शोध में वर्णनात्मक एवं गुणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। साथ ही पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित सामग्री का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से पता चलता है कि मुण्डारी भाषा जनजातीय समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है, परंतु विद्यालयी शिक्षा में इसके सीमित उपयोग, पाठ्य–पुस्तकों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव तथा प्रशासनिक चुनौतियां के वजह से मातृभाषा आधारित शिक्षा का अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। वहीं दूसरी ओर सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा पर जोर देने की बात पर मुण्डारी भाषा के विकास को नये अवसर दिया है।

मुख्य शब्द – मुण्डारी, मातृभाषा, जनजातीय शिक्षा, बहुभाषी शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

प्रस्तावना –

मुण्डारी भाषा विश्व भाषा समुदाय की आग्नेय या ऑस्ट्रिक भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। यह विश्व भाषा खण्ड के यूरेशिया खण्ड के अन्तर्गत आता है। भाषा वैज्ञानिकों ने ऑस्ट्रिक भाषा परिवार को दो भागों में विभाजित किया है– ऑस्ट्रोएशियाटिक और आस्ट्रोनेशियन। ऑस्ट्रोएशियाटिक को पुनः दो शाखाओं में विभाजित किया है– मुण्डा और मोन्ख्मेर। इनमें से मुण्डा शाखा के अन्तर्गत ही मुण्डारी भाषा आती है। मुण्डारी भारत की मुण्डा समुदाय के द्वारा बोली जाने वाली जनजातीय भाषा है जो विशेष रूप से झारखण्ड में पायी जाती है। झारखण्ड के अलावा बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, असम और अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह के मुण्डाओं द्वारा बोली जाती है। मुण्डारी भाषा केवल संचार का माध्यम तक सीमित नहीं है बल्कि मुण्डा समुदाय के इतिहास, संस्कृति, लोकज्ञान, परांपराओं, रीति रिवाजों और सामाजिक जीवन की संवाहक है। लोकगीत, लोककथाएं, कहावतें, और धार्मिक परंपराएं मुण्डारी भाषा की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती है। शिक्षा में मातृभाषा का महत्व की बात करें तो यह किसी भी व्यक्ति के ज्ञानार्जन का प्रथम और सबसे प्रभावी माध्यम होती है। जिस प्रकार बच्चा अपनी प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा में अधिक सहजता से ग्रहण करता है और

आत्मविश्वास का विकास होता है। मातृभाषा आधारित शिक्षा सीखने की प्रक्रिया को सरल, प्रभावी और समावेशी बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक स्तर से मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने पर विशेष बल देती है।

मुण्डा जनजाति समुदायों के लिए यह शिक्षा का माध्यम होने के साथ साथ उनकी भाषा, संस्कृति और पहचान का महत्वपूर्ण साधन है। मुण्डारी भाषा की प्रासंगिकता की दृष्टि से देखा जाए तो यह वैश्वीकरण, शहरीकरण तथा प्रमुख भाषाओं के बढ़ते प्रभाव के कारण मुण्डारी जैसी जनजातीय भाषाओं के सामने संरक्षण और संवर्धन की समास्या उत्पन्न होती है। विद्यालयी शिक्षा में मुण्डारी भाषा के सीमित उपयोग, शिक्षण सामग्री की कमी तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण मातृभाषा शिक्षा अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं हो सकी है। ऐसे समय में 'मुण्डारी भाषा में शिक्षा' विषय का अध्ययन प्रासंगिक है। चूंकि यह केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार का मार्ग प्रशस्त करती है बल्कि जनजातीय समाज की भाषाई एवं सांस्कृतिक विरासत में संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी संदर्भ में मुण्डारी भाषा में शिक्षा की स्थिति, चुनौतियां और संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य मुण्डारी भाषा में शिक्षा की वर्तमान स्थिति का समग्र अध्ययन करना तथा मातृभाषा आधारित शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करना है। इस शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं –

- मुण्डारी भाषा में शिक्षा की वर्तमान स्थिति की अध्ययन करना ताकि विद्यालय एवं उच्च शिक्षा स्तर पर इसकी उपलब्धता, उपयोगिता तथा विकास की स्थिति का मूल्यांकन किया जा सके।
- मुण्डारी भाषा में शिक्षा के समक्ष आने वाली चुनौतियां का विश्लेषण करना, जैसे शिक्षण सामग्री की कमी, शिक्षकों का अभाव, प्रशासनिक एवं नीतिगत बाधाएं, सामाजिक आर्थिक कारकों का प्रभाव।
- भाषा संरक्षण एवं संवर्धन में शिक्षा की भागीदारी का मूल्यांकन करना ताकि मातृभाषा आधारित शिक्षा किस प्रकार भाषाओं, संस्कृति, परांपराओं और जनजातीय पहचान के रूप में योगदान देती है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में मुण्डारी भाषा में शिक्षा की संभावनाओं का अध्ययन करना जिससे मातृभाषा आधारित शिक्षा का विस्तार के अवसरों का विश्लेषण किया जा सके।
- मुण्डारी भाषा को अधिक प्रभावी बनाने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना ताकि नीति निर्माताओं, शिक्षकों व शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी अनुशंसाएं उपलब्ध कराई जा सके।

शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध आलेख में गुणात्मक पद्धति का उपयोग कर मुण्डारी भाषा में शिक्षा की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ तथा संभावनाओं का विश्लेषण विभिन्न तथ्यों का वर्णन, विश्लेषण एवं व्याख्या करना ताकि विषय की व्यापक समझ विकसित की जा सके। अध्ययन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। इनमें मुण्डारी भाषा एवं जनजातीय भाषाओं के शिक्षा से संबंधित पुस्तकें, शोध पत्र, शोध प्रबंध, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जनजातीय कार्य मंत्रालय तथा शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट विश्वविघ्द्यालय द्वारा प्रकाशित शोध सामग्री, सरकारी दस्तावेजों, पत्र–पत्रिकाओं का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। शोध में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टि भी अपनाया गया है। उपलब्ध साहित्य के आधार पर मुण्डारी भाषा में शिक्षा की वर्तमान स्थिति, प्रमुख समस्याओं, भाषा संरक्षण में शिक्षा की भूमिका तथा भविष्य की संभावनाओं का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मातृभाषा आधारित शिक्षा की

उपयोगिता को स्पष्ट करना एवं मुण्डारी भाषा के शैक्षिक विकास के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करना है।

मुण्डारी भाषा में शिक्षा की वर्तमान स्थिति :-

विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययन – मुण्डारी भाषा झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय भाषाओं में से एक है। यह राज्य के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों व उच्च शिक्षण संस्थानों में इसका अध्ययन एवं अध्यापन किया जाता है। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन करने का उद्देश्य से कुछ सरकारी विद्यालयों में मुण्डारी भाषा को पढ़ाई का माध्यम व विषय के रूप में शामिल किया गया है। उच्च स्तरीय शिक्षा पर देखा जाए तो पूरे विश्व का एकमात्र झारखण्ड के राँची विश्वविद्यालय, राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में मुण्डारी विषय की पढ़ाई स्नातक, स्नातकोत्तर, एम. फिल, पीएच.डी. व डी. लिट स्तर पर पढ़ाई व शोध कार्य हो रही है। झारखण्ड के अन्य विश्वविद्यालयों में डॉ. श्यामा प्रसाद विश्वविद्यालय राँची, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग व कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा में भी अब मुण्डारी भाषा से स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाई हो रही है जिससे मुण्डारी भाषा के अकादमिक विकास को बल मिला है।

झारखण्ड में मुण्डारी भाषा की स्थिति –

झारखण्ड में मुण्डारी भाषा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व अत्यंत व्यापक है। यह भाषा विशेष रूप से राँची, खूँटी, चाईबासा, सरायकेला–खरसावां, जमशेदपुर, सिमडेगा, हजारीबाग, रामगढ़ के आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। राज्य सरकार द्वारा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के विभिन्न पहल की गई है। फिर भी विद्यालयी शिक्षा में मुण्डारी भाषा का उपयोग अभी सीमित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा मिलने से इस भाषा के शैक्षिक विकास की संभावनाएं और अधिक मजबूत हुई है।

पाठ्य-पुस्तकों एवं शिक्षकों की उपलब्धता –

मुण्डारी भाषा में शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में सबसे बड़ी चुनौती में से एक गुणवत्तापूर्ण पाठ्य–पुस्तकों तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की सीमित उपलब्धता है। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के लिए कुछ पाठ्य सामग्री विकसित की गई है किन्तु उनकी संख्या और गुणवत्ता अभी भी पर्याप्त नहीं है। अनेकों विद्यालयों में मुण्डारी पढ़ने के लिए शिक्षकों का अभाव पाया जाता है जिससे मातृभाषा आधारित शिक्षण प्रभावित होती है। उच्च शिक्षा संस्थानों में भी अनुभवी शिक्षकों तथा आधुनिक संदर्भ पाठ्य सामग्री की आवश्यकता बनी हुई है। इसलिए मुण्डारी भाषा में नवीन पाठ्य–पुस्तकों का निर्माण, प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा सके।

प्रमुख चुनौतियां –

मुण्डारी भाषा में शिक्षा के विकास की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियां विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना मातृभाषा आधारित शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करना कठिन है। इनमें प्रमुख चुनौतियां हैं–

1. **मातृभाषा भाषा में शिक्षण सामग्री का अभाव** – मुण्डारी भाषा में गुणवत्तापूर्ण एवं मानकीकृत पाठ्य–पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, शब्दकोशों तथा डिजीटल शिक्षण सामग्री अभी भी सीमित है। प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों के लिए पर्याप्त अध्ययन सामग्री विकसित नहीं हो पायी है। जे०एस०एस०सी०, जे०पी०एस०सी० एवं यू०जी०सी० नेट के पेपर–2 जैसी प्रतियोगिता परीक्षाओं तैयारी हेतु आवश्यक पाठ्य–पुस्तकों का अभाव है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों और शिक्षकों को शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

2. **प्रशिक्षित शिक्षकों व नियमित प्रोफेसरों की कमी** – मुण्डारी भाषा का ज्ञान रखने वाले तथा मातृभाषा आधारित शिक्षण में प्रशिक्षित शिक्षकों व प्रोफेसरों की संख्या काफी कम है। अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में मुण्डारी भाषा पढ़ाने के लिए विशेषज्ञों की कमी है। इससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है तथा विद्यार्थियों व शोधार्थियों को अपनी मातृभाषा मुण्डारी में प्रभावी शिक्षा प्राप्त करने में अवसर एवं दिशा निर्देश नहीं मिल पाता। शोधार्थियों को पीएच.डी. एवं डी. लिट के दौरान अपने विषय के शोध निर्देशक नहीं मिल पाता, अन्य विषयों के शोध निर्देशक में रहकर शोधकार्य करना पड़ता है जिससे अपने मातृभाषा मुण्डारी भाषा की अच्छी गुणवतापूर्ण शोध पर असर पड़ता है।

3. **भाषा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण** – आधुनिक शिक्षा और रोजगार की दृष्टि से हिन्दी एवं अंग्रेजी जैसी भाषाओं को अधिक महत्व देने के कारण अनेक अभिभावक और विद्यार्थियों में मुण्डारी भाषा में शिक्षा को कम उपयोगी मानते हैं। इस सामाजिक धारणा के कारण मातृभाषा आधारित शिक्षा के प्रति लोगों का रूचि अपेक्षित स्तर पर विकसित नहीं हो पाती है जबकि अनेक शोध यह संकेत करती है कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से बच्चों की सीखने की क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

4. **प्रशासनिक एवं नीतिगत चुनौतियां** – यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है फिर भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई प्रशासनिक एवं नीतिगत बाधाएं हैं। पर्याप्त बजट प्रशिक्षित मानव संसाधन, नियमित शिक्षक नियुक्ति, पाठ्यक्रम विकास तथा शिक्षण सामग्री के निर्माण में अपेक्षित गति नहीं दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों एवं संस्थानों के बीच समन्वय की कमी भी मुण्डारी भाषा में शिक्षा के व्यापक विस्तार में बाधक बनती है।

5. **सरकार की क्लस्टर प्रणाली से जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं पर प्रभाव** – वर्तमान समय में सरकार की इस क्लस्टर प्रणाली व्यवस्था के लागू हो जाने से झारखण्ड के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के अन्तर्गत आने वाले जनजातीय भाषा मुण्डारी का अध्ययन व अध्यापन विश्वविद्यालय स्तर पर सीमित करने की पहल की जा रही है परंतु अब तक कलैस्टर प्रणाली लागू नहीं की गयी है। इस क्लस्टर प्रणाली व्यवस्था के विरोध में छात्र–छात्राओं द्वारा इसका घोर विरोध किया जा रहा है। क्योंकि इस क्लस्टर प्रणाली के लागू होने से कई सुदूरवर्ती इलाकों के विद्यार्थियों को अपने सुविधानुसार रहने व पढ़ाई करने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और यदि एक महाविद्यालय या संस्था में निर्धारित सीटों पर ही मुण्डारी भाषा की पढ़ाई होगी तो बाकी विद्यार्थियों को पढ़ने से वंचित रहना पड़ेगा। साथ ही नियमित प्रोफेसरों व शिक्षकों की बहाली निर्धारित आँकड़ों के हिसाब से की जाएगी।

संभावनाएं –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा को बढ़ावा मिलने से प्रारंभिक कक्षाओं में मातृभाषा स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने पर मुण्डारी भाषा की शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। साथ ही शिक्षण अधिगम की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा लोगों में मुण्डारी सीखने की क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होगी। डिजीटल शिक्षण सामग्री का विकास ने मुण्डारी भाषा में शिक्षा के नये आयाम हैं। ई–पुस्तकें, ऑडियो–वीडियो सामग्री, डिजीटल शब्दकोश तथा ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से मुण्डारी भाषा का अध्ययन अधिक सरल और प्रभावी बनाया जा सकता है। डिजिटल संसाधनों के विकास से दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है तथा भाषा के प्रचार–प्रसार को गति

मिलेगी। जनजातीय भाषाओं के संरक्षण में शिक्षा की भुमिका सबसे प्रभावी माध्यम है। जब विद्यालयों व कई विश्वविद्यालयों में मुण्डारी भाषा की अध्ययन एवं अध्यापन नियमित रूप से किया जाए तो नई पीढ़ी अपनी भाषा, साहित्य, लोककथाओं, लोकगीतों, इतिहास, तथा सांस्कृतिक परांपराओं से जुड़ी रहेगी। मातृभाषा आधारित शिक्षा न केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक क्षमता की विकास में सहायक होगी, बल्कि उनकी सांस्कृतिक–पहचान को भी सुदृढ़ करती है। इस प्रकार से मुण्डारी भाषा को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँचाने तथा उसके सतत् विकास का सशक्त माध्यम बना सकती है। साथ ही आने वाले दिनों में कभी न कभी संविधान की आठवीं अनुसूची में मुण्डारी भाषा शामिल हो जाएगी। उपरोक्त संभावनाओं को साकार करने के लिए सरकार शैक्षणिक संस्थानों, शोधकर्ताओं, सामाजिक संगठनों तथा स्थानीय समुदाय के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है। इनके सहयोग से मुण्डारी भाषा में शिक्षा को और अधिक मजबूत प्रभावी और व्यापक बनाया जा सकता है।

मुण्डारी भाषा में शिक्षा को प्रभावी, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए कई सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं – मुण्डारी भाषा के अधिक पाठ्य–पुस्तकों का निर्माण प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक मुण्डारी भाषा में मानकीकृत एवं गुणवत्तापूर्ण पाठ्य–पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, शब्दकोश, मुण्डारी भाषा साहित्य से संबंधित पुस्तकें तथा डिजिटल कॉन्टेंट का विकास किया जाना चाहिए। स्थानीय इतिहास, लोकसाहित्य, संस्कृति तथा परांपरिक ज्ञान को पाठ्य–पुस्तकों में स्थान दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को भी भाषा के साथ–साथ सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का अवसर मिले। शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण मुण्डारी भाषा के शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। उन्हें मातृभाषा आधारित शिक्षण पद्धति बहुभाषी शिक्षा, आधुनिक शिक्षण, तकनीकी डिजिटल संसाधनों के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। साथ ही विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पर्याप्त संख्या में योग्य मुण्डारी भाषा शिक्षकों की नियुक्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए। मुण्डारी भाषा को अन्य कला, वाणिज्य एवं विज्ञान के विद्यार्थियों को भी ऐच्छिक विषय के रूप लेना चाहिए, इससे मुण्डारी भाषा का ज्ञान का विस्तार होगा। शोध एवं प्रकाशन को प्रोत्साहन हेतु शोध कार्यों, शोध पत्रों, पुस्तकों तथा पात्रिकाओं के प्रकाशन को प्रोत्साहन किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों एवं सरकारी एजेंसियों को इस क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाओं, सेमिनारों, कार्यशालाओं तथा अकादमिक प्रकाशनों के लिए वित्तीय एवं संस्थागत सहयोग प्रदान करना चाहिए। इससे मुण्डारी भाषा के शैक्षिक एवं साहित्यिक विकास को नई दिशा मिलेगी।

उपरोक्त सुझावों के अतिरिक्त सरकार विश्वविद्यालयों, स्थानीय समुदायों, गैर–सरकारी संगठनों तथा शिक्षाविदों के बीच समन्वित सहयोग स्थापित करना आवश्यक है। सामूहिक प्रयासों के माध्यम से मुण्डारी भाषा में शिक्षा को सुदृढ़ बनाया जा सकता है जिससे जनजातीय समाज की भाषा, संस्कृति एवं पहचान का संरक्षण होने के साथ साथ समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति भी संभव होगी।

निष्कर्ष –

इससे स्पष्ट होता है कि सच में मुण्डारी भाषा का मातृभाषा के रूप केवल सीखने का माध्यम ही नहीं है अपितु यह समूचे मुण्डा समुदाय की भाषा, सांस्कृतिक विरासत, परांपरिक ज्ञान, लोकसाहित्य, रीति–रिवाजों को लेकर समेटे हुए हैं जो कि संपूर्ण मुण्डा समाज को आपस में एक सूत्र में बंधे हुए हैं। मुण्डारी भाषा में शिक्षा स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षा स्तर पर भी मुण्डारी का पढ़ाई होना भविष्य में मुण्डा समुदाय की उन्नति को दर्शाती है साथ ही इससे रोजगार के अवसर भी मिलेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने से बच्चों को मातृभाषा

आधारित शिक्षा ग्रहण करने में मदद होगी। मुण्डारी भाषा के अध्ययन से प्रतियोगिता परीक्षाओं के द्वारा जे०पी०एस०सी०, जे०एस०एस०सी० एवं यू०जी०सी० नेट जैसी परीक्षाओं में महत्वपूर्ण साबित होगी। मुण्डारी भाषा के अध्ययन से विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षकों और प्रोफेसर बनने का अवसर मिलेगा। मुण्डारी भाषा से पीएच०डी०, डी०लिट जैसी डिग्री की उपाधि मिलती है। साथ ही विभिन्न संस्थाओं व विश्वविद्यालय स्तर पर मातृभाषा मुण्डारी में अनुसंधान कार्य, सेमिनारों, कार्यशालाओं तथा अकादमिक प्रकाशनों के विकास में नई दिशा मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथों की सूची –

1. मुण्डा, डॉ० रामदयाल. (2013). मुण्डारी व्याकरण. कोकर, राँची : आई०डी० पब्लिशिंग।
2. मुण्डा, प्रो० दुलायचन्द्र. (2023). बम्बारू. राँची : झारखण्ड झारोखा।
3. मुण्डा, सोमा सिंह. (2020). मुण्डा. राँची : जनजातीय कल्याण शोध संस्थान।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, HTTPS://NITC.AC.IN
5. सोय, डॉ० बीरेंद्र कुमार. (2018). मुण्डा भाषा की भाषिक संरचना. नई दिल्ली : सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस।
6. तिर्की, सिकरादास. (2019). मुण्डारी लोक साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य. नई दिल्ली : पृथ्वी प्रकाशन।

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 107-110

Contribution of Nepali Freedom Fighters in India's Independence Struggle : A Historical Review

Dr. Sk Jahangir Hossain

Assistant Professor, Department of history,

Sitananda College Nandigram, Purba Medinipur, Under Vidyasagar University, West Bengal, India,

Abstract :

India's struggle for independence was not merely a national movement but a broad anti-colonial struggle that attracted support from diverse communities across South Asia. Among the lesser-known contributors to this movement were Nepali freedom fighters and members of the Nepali-speaking community residing in British India. Their participation ranged from involvement in mass nationalist movements to active engagement in revolutionary organizations such as the Indian National Army (INA). Notable figures such as Durga Malla and Helen Lepcha made significant sacrifices in support of India's liberation from British colonial rule. This paper examines the historical role of Nepali freedom fighters in India's independence movement, highlighting their contributions to nationalist mobilization, revolutionary activities, and military resistance. It argues that the participation of Nepali individuals and communities not only strengthened the Indian freedom struggle but also fostered enduring bonds between India and Nepal. By bringing attention to these often-overlooked contributions, the study seeks to enrich the historiography of India's independence movement and underscore its transnational dimensions.

Keywords : Nepali Freedom Fighters, Indian Independence Movement, Durga Malla, Indian National Army, Gorkhas.

Introduction :

The Indian independence movement was one of the most significant anti-colonial struggles of the twentieth century. While the contributions of major Indian leaders and organizations have been extensively studied, the participation of several minority and transnational communities has received comparatively less scholarly attention. Among these groups were Nepali freedom fighters and Nepali-speaking communities residing in various parts of British India. This paper explores the contributions of Nepali freedom fighters in India's independence movement, focusing on their role in mass political movements, revolutionary activities, and the Indian National Army. It also highlights the significance

of their contributions in shaping India-Nepal relations and enriching the broader narrative of anti-colonial resistance in South Asia.

Objectives of the Study :

The study aims to: Examine the historical participation of Nepali freedom fighters in India's independence movement. Analyze the role of Nepali communities in nationalist and revolutionary activities. Assess the contribution of Nepali members of the Indian National Army. Highlight the sacrifices of prominent Nepali freedom fighters. Evaluate the significance of these contributions in the context of India-Nepal relations.

Literature Review :

Scholarly literature on India's independence movement has traditionally focused on major political leaders, revolutionary organizations, and mass nationalist campaigns. However, recent studies have increasingly emphasized the role of marginalized and transnational communities. Caplan (1970) explored the socio-political history of Nepali communities in India and highlighted their growing political consciousness during the colonial period. Ramachandra Guha (2007) emphasized the multi-ethnic nature of India's freedom struggle and noted the participation of diverse communities, including Gorkhas and Nepalis. Although individual biographies and regional studies have discussed the contributions of Nepali freedom fighters, comprehensive studies on their collective role in India's independence movement remain limited. This paper seeks to address this historiographical gap.

Nepali Participation in Nationalist Movements

- **Non-Cooperation Movement :**

The Non-Cooperation Movement (1920–1922) initiated by Mahatma Gandhi inspired many Nepali-speaking Indians to participate in anti-colonial activities. Public meetings, boycott campaigns, and nationalist mobilization spread into areas with substantial Nepali populations. Students, teachers, and local activists from Darjeeling and surrounding regions contributed to the dissemination of nationalist ideas. They participated in public demonstrations, political awareness campaigns, and efforts to resist colonial authority.

- **Civil Disobedience Movement :**

The Civil Disobedience Movement further expanded nationalist participation. Nepali activists supported campaigns against colonial laws and joined local organizations associated with the Indian National Congress. The movement helped integrate Nepali communities into the broader framework of Indian nationalism and strengthened their political engagement.

- **Quit India Movement :**

The Quit India Movement of 1942 represented a decisive phase in India's struggle for independence. Nepali youth, workers, and political activists participated in protests and underground

activities across several regions. Their involvement reflected growing support for complete independence and opposition to colonial rule.

Nepali Freedom Fighters in the Indian National Army :

The most significant contribution of Nepali freedom fighters emerged through their participation in the Indian National Army (INA) under the leadership of Subhas Chandra Bose.The INA attracted soldiers from diverse ethnic and regional backgrounds, including numerous Nepalis and Gorkhas. Many of these individuals had previously served in military units under British command but later joined the INA after being inspired by Bose's call for national liberation. These soldiers participated in military campaigns in Burma and the North-Eastern frontier. Their dedication demonstrated that the struggle for Indian independence transcended linguistic, ethnic, and regional boundaries. The participation of Nepali soldiers in the INA remains one of the most remarkable examples of cross-border solidarity in South Asian anti-colonial history. Durga Malla: The First Gorkha Martyr of the INA.

Helen Lepcha : A Pioneer Woman Freedom Fighter :

The contribution of women to India's independence movement has often been underrepresented in historical narratives. Among Nepali women freedom fighters, Helen Lepcha occupies a prominent place. Born in the Darjeeling region, Helen Lepcha became actively involved in nationalist activities and maintained connections with revolutionary networks associated with Subhas Chandra Bose. She assisted in communication, intelligence gathering, and organizational work that supported anti-colonial efforts. Her dedication and courage earned recognition from independent India. Helen Lepcha's contribution demonstrates the important role played by women in supporting revolutionary and nationalist movements.

Contribution of Gorkha Communities :

The Gorkha community made substantial contributions to India's freedom struggle. Although many Gorkhas served in British military units, a significant number embraced nationalist ideals and participated in anti-colonial activities. Their involvement in the INA, nationalist organizations, and local political movements illustrates the diversity of responses to colonial rule within the Gorkha population. The sacrifices made by Gorkha freedom fighters challenged stereotypes that portrayed them solely as soldiers serving colonial interests. Instead, they emerged as active participants in the struggle for national liberation.

Significance of Nepali Contributions :

The contributions of Nepali freedom fighters are significant for several reasons. First, they demonstrate the inclusive and multi-ethnic character of India's independence movement. Second, they reveal the transnational dimensions of anti-colonial resistance in South Asia. Third, they

contributed to strengthening historical ties between India and Nepal. Finally, recognizing their role helps create a more comprehensive understanding of India's freedom struggle by acknowledging the participation of communities often overlooked in mainstream historiography.

Conclusion :

The participation of Nepali freedom fighters in India's independence struggle represents an important yet underexplored chapter in South Asian history. Through their involvement in nationalist movements, revolutionary activities, and the Indian National Army, Nepali individuals and communities contributed significantly to the fight against British colonial rule. The sacrifices of figures such as Durga Malla and Helen Lepcha, along with the collective efforts of Nepali-speaking communities and Gorkha soldiers, underscore the transnational character of India's freedom movement. Their contributions not only strengthened the struggle for independence but also reinforced the historical bonds between India and Nepal. A fuller appreciation of India's independence movement requires greater recognition of these contributions. Future research should continue to explore the role of Nepali freedom fighters and integrate their experiences into broader narratives of anti-colonial resistance and South Asian history.

References :

- Caplan, L. (1970). Land and social change in East Nepal. University of California Press.
- Fay, P. W. (1993). The forgotten army: India's armed struggle for independence, 1942–1945. University of Michigan Press.
- Gordon, L. (1990). Brothers against the Raj: A biography of Indian nationalism. Columbia University Press.
- Guha, R. (2007). India after Gandhi: The history of the world's largest democracy. HarperCollins.

Cont: 9609560997

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 111-114

स्वदेशी से स्वावलंबी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सुमन माखीजा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इंडेक्स इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट आर्टस एंड साइंसेज, इंदौर।

सारांश (Abstract)

यह शोध–पत्र भारत में स्वदेशी आंदोलन की ऐतिहासिक उत्पत्ति, वैचारिक स्वरूप, गांधीवादी दृष्टिकोण, स्वतंत्रता के बाद आत्मनिर्भरता की प्रक्रिया, और समकालीन भारत की स्वावलंबी नीतियों का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन स्वदेशी से स्वावलंबन तक की यात्रा को सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करता है। शोध–पत्र में ऐतिहासिक उदाहरणों, नीति–आधारित कार्यक्रमों, आधुनिक चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का व्यापक विवेचन किया गया है।

शोध के उद्देश्य :

- स्वदेशी आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
- स्वावलंबन की अवधारणा का विकास और इसके आधुनिक स्वरूप की व्याख्या।
- गांधीवादी स्वदेशी दर्शन का समकालीन प्रासंगिकता के साथ विश्लेषण।
- आत्मनिर्भर भारत अभियान की उपलब्धियों और चुनौतियों का मूल्यांकन।
- स्वदेशी से स्वावलंबन तक की प्रक्रिया में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का अध्ययन।

प्रस्तावना :

भारत की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था सदैव से आत्मनिर्भरता पर आधारित रही है। प्राचीन काल में स्थानीय उत्पादन, ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प तथा प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग भारतीय जीवन–शैली की मूल पहचान थे।

औद्योगिक क्रांति के बाद उपनिवेशवादी शासकों के कारण भारत की स्वावलंबी अर्थव्यवस्था टूटने लगी, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश वस्तुओं की बाढ़ और स्वदेशी उद्योगों का पतन हुआ। इसी के प्रतिरोध में स्वदेशी आंदोलन ने जन्म लिया।

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में स्वदेशी आंदोलन केवल आर्थिक प्रतिरोध नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का आधार बन गया। गांधीजी ने स्वदेशी को आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और समुदाय–आधारित आर्थिक विकास का मूल तत्व माना।

समकालीन संदर्भ में 'स्वदेशी' का विचार 'स्वावलंबन' के रूप में विकसित होकर आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला बन चुका है। यह शोध–पत्र इस वैचारिक यात्रा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

विशिष्ट शब्द :

1. **स्वदेशी** – स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं और सेवाओं का प्रोत्साहन।
2. **स्वावलंबन** – आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक स्तर पर स्वयं–संपूर्ण होने की क्षमता।
3. **बहिष्कार** – विदेशी वस्तुओं का त्याग कर स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को बढ़ाना।
4. **अर्थ–राष्ट्रवाद** – आर्थिक नीतियों में राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देना।
5. **आत्मनिर्भरता** – घरेलू उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा सक्षम बनाना।

विषय वस्तु :

1. स्वदेशी आंदोलन का ऐतिहासिक विकास :

स्वदेशी आंदोलन का प्रारंभ 1905 में बंग–भंग के विरोध के रूप में हुआ, किंतु शीघ्र ही यह केवल आर्थिक प्रतिरोध तक सीमित न रहकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक सशक्त आधार बन गया। इस आंदोलन का मूल उद्देश्य विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी उद्योगों, कुटीर उद्योगों एवं भारतीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना था। इसके अंतर्गत घरेलू उद्योगों के पुनर्जीवन, राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार तथा खादी एवं ग्रामोद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया गया। इस आंदोलन ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत किया। वर्ष 1905 में कोलकाता में छात्रों द्वारा विदेशी वस्त्रों की होली जलाना तथा स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग का संकल्प लेना इस आंदोलन की व्यापक जनस्वीकृति का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

2. गांधीवादी स्वदेशी का स्वरूप :

महात्मा गांधी ने स्वदेशी की अवधारणा को केवल आर्थिक नीति के रूप में नहीं, बल्कि एक नैतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व के रूप में प्रस्तुत किया। उनके विचार में स्वदेशी का अर्थ अपने आसपास उपलब्ध संसाधनों, श्रम और उत्पादों का सम्मानपूर्वक उपयोग करना तथा स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देना था। गांधीजी ने चरखा और खादी को आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और श्रम की गरिमा का प्रतीक माना। उनका विश्वास था कि ग्रामोद्योगों का विकास ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करेगा, बेरोजगारी को कम करेगा तथा सामाजिक समानता को बढ़ावा देगा। उन्होंने साबरमती आश्रम सहित अपने सभी आश्रमों में स्वदेशी वस्त्र धारण करने और चरखा चलाने की परंपरा विकसित कर स्वदेशी को व्यवहारिक रूप प्रदान किया।

3. स्वतंत्रता के बाद स्वावलंबन का विकास :

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने योजनाबद्ध आर्थिक विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण का प्रयास किया। प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाओं में भारी उद्योगों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा आधारभूत संरचना के विकास को प्राथमिकता दी गई, जिससे औद्योगिक विकास की मजबूत नींव रखी जा सकी। इसके पश्चात हरित क्रांति ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन लाते हुए भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। वर्ष 1991 की नई आर्थिक नीति के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय उद्योगों को नई तकनीकों, वैश्विक प्रतिस्पर्धा तथा निवेश के अवसर प्रदान किए, जिससे देश की आर्थिक प्रगति को नई गति प्राप्त हुई।

4. आधुनिक भारत में स्वावलंबन : आत्मनिर्भर भारत का स्वरूप :

वर्तमान समय में स्वावलंबन की अवधारणा केवल घरेलू वस्तुओं के उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, नवाचार–आधारित तथा सशक्त अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है। इसी दृष्टि से भारत सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत अभियान', 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्ट–अप इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' तथा 'वोकल फॉर लोकल' जैसी अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं। इन पहलों का उद्देश्य स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन देना, रोजगार के अवसरों का विस्तार करना, तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देना तथा भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है। वर्तमान में मोबाइल फोन निर्माण के क्षेत्र में भारत का विश्व के अग्रणी देशों में शामिल होना 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक है।

5. स्वावलंबन के समक्ष चुनौतियाँ :

यद्यपि भारत ने आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, फिर भी अनेक चुनौतियाँ इसके समक्ष विद्यमान हैं। अनेक उद्योग अभी भी कच्चे माल एवं उन्नत तकनीक के लिए विदेशी स्रोतों पर निर्भर हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) पूंजी की कमी, आधुनिक तकनीक तक सीमित पहुँच तथा विपणन संबंधी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त कौशल–अंतराल (Skill Gap), अनुसंधान एवं नवाचार में अपेक्षित निवेश की कमी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत अवसंरचना का अपर्याप्त विकास भी आत्मनिर्भरता की प्रक्रिया में बाधक हैं। इन चुनौतियों के समाधान के बिना दीर्घकालिक एवं समावेशी स्वावलंबन की परिकल्पना पूर्ण नहीं हो सकती।

6. भविष्य की संभावनाएँ :

भारत में स्वावलंबन की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं। कुटीर एवं ग्रामोद्योगों का आधुनिकीकरण, हरित प्रौद्योगिकी (Green Technology) आधारित उद्योगों का विकास, स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाजारों से जोड़ना तथा निर्यातोन्मुख उत्पादन को प्रोत्साहित करना भविष्य की प्रमुख आवश्यकताएँ हैं। इसके साथ ही अनुसंधान एवं विकास, तकनीकी नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा कौशल विकास में निवेश भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में और अधिक सशक्त बना सकता है। यदि स्थानीय संसाधनों, मानव पूंजी एवं तकनीकी नवाचार का समन्वित उपयोग किया जाए, तो भारत आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने के साथ–साथ विश्व अर्थव्यवस्था में एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में अपनी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ कर सकता है।

निष्कर्ष :

- स्वदेशी से स्वावलंबन की यात्रा भारत की आत्मिक शक्ति और राष्ट्रीय चेतना की पुर्नस्थापना का प्रतीक है।
- स्वदेशी आंदोलन ने उपनिवेशवादी दमन के विरुद्ध आत्मसम्मान जगाया और भारत को आर्थिक स्वतंत्रता की प्रेरणा दी।
- स्वावलंबन ने इस सोच को आगे बढ़ाते हुए आधुनिक, सक्षम और तकनीकी रूप से उन्नत भारत का निर्माण किया।

उदाहरण : आज भारत अंतरिक्ष तकनीक, डिजिटल भुगतान, वैक्सीन निर्माण, रेलवे ढांचा और रक्षा

उपकरणों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर देश के रूप में उभर रहा है।

अतः स्वदेशी केवल इतिहास का अध्याय नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के भारत की विकास–दृष्टि का मार्गदर्शक सिद्धांत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गांधी, मोहनदास करमचंद. 'हिंद स्वराज'.
2. ठाकुर, रवीन्द्रनाथ. 'स्वदेशी समाज'।
3. शर्मा, आर.एस. 'भारतीय सामाजिक–आर्थिक इतिहास'.
4. Government of India- 'Aatmanirbhar Bharat : Policy Documents'.
5. पटेल, दीप्ति. 'भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का विकास'.
6. Bose, A. 'The Indian Freedom Movement and Swadeshi'.
7. Chand, Tara. 'History of Freedom Movement in India'.
8. Kher, V. 'Gandhian Economic Thought'.
9. Ministry of MSME. 'Annual Reports'.

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 115-119

समकालीन हिंदी साहित्य और अखिलेश की सृजन दृष्टि

उपेन्द्र कुमार, शोधार्थी,
प्रो० (डॉ०) स्वर्णलता कदम, प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ।

शोध सार :

समकालीन समय में हिंदी साहित्य में अखिलेश का बहुचर्चित नाम है। कथाकार के रूप में अखिलेश सृजन का गतिक्रम 20वीं सदी के 9वीं दशक से प्रारंभ होकर अभी भी अनवरत् रूप से चलायमान है। अखिलेश ने अपनी लगभग पाँच देशों की साहित्य सृजन की यात्रा में बहुत ही महत्त्वपूर्ण साहित्य रचा है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में भारतीय समाज की प्रत्येक संवेदना को ही अभिव्यक्त नहीं किया है, अपितु समाज के जन–जीवन के यथार्थ को भी रेखांकित किया है। आज के समय में अखिलेश का साहित्यिक चेतस अपने युग की संवेदनाओं से गहन रूप से संबंध रखती है। अखिलेश के कथा–साहित्य मध्यमवर्गीय भारतीय समाज के यथार्थ का चित्रण करता है।

बीज शब्द : अखिलेश, कथा साहित्य, उपन्यास, कहानी, यथार्थ, आदि।

कथाकार अखिलेश अपने समय के प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। आपके उपन्यास एवं कहानी साहित्य अपने युग और समाज के वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है। समकालीन समय की प्रत्येक विडंबना पर कथाकार अखिलेश ने न केवल दृष्टिपात किया है अपितु उनकी गहरी थाह ली है। सामाजिक अन्वेषण की इस प्रक्रिया में आपके उपन्यास एवं कहानी साहित्य का कथ्य, पात्र व परिवेश एक–दूसरे से इतने अधिक अंतर्गुफ्ति हैं कि इनकी बार–बार अनावृत्ति लेखक से नाटकीय भाव को दर्शाने लगती है, कथाकार अखिलेश में साहित्य–सृजन का बीज उस समय अंकुरित हुआ जब वे स्वयं को स्थापित करने में चेष्टारत् थे। इसलिए ही समकालीन समय की विडंबनाओं से उनकी मुठभेड़ होना स्वाभाविक ही था। अपने समय से साक्षात्कार का यही क्रम उनकी रचनाओं में बार–बार आता है, जिसमें वे कई बार स्वयं ही इनके भुक्तभोगी और प्रतिनिधि प्रतीत होते हैं।

अखिलेश की पहली कहानी उनके इंटरमीडिएट के दौरान वर्ष 1977 ई० लखनऊ से प्रकाशित दैनिक समाचार–पत्र नवजीवन में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद से ही उनका परिचय हिंदी साहित्य संसार से हुआ और उन्होंने धीरे–धीरे अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यहाँ से शुरू हुआ कथाकार अखिलेश का यह साहित्यिक कारवाँ लगभग चार दशकों की लंबी साहित्यिक यात्रा तय कर चुका है। अपनी इस लंबी लेखन यात्रा में अखिलेश ने हिंदी साहित्य संसार को एक से बढ़कर एक कृतियाँ दी हैं, जिनमें विशेषतः उनके चार कहानी संग्रह, दो उपन्यास और एक सृजनात्मक गद्य की पुस्तक है। वर्ष 1989 में प्रकाशित आपकी कहानी 'चिट्ठी' बहुचर्चित रही है जिसने अखिलेश की पहचान ही निर्मित नहीं की है अपितु संपूर्ण साहित्य संसार का ध्यान भी उनकी ओर केंद्रित किया है। यूँ तो उनकी अनेक कहानियाँ ऐसी है जिन्होंने समकालीन उपन्यास साहित्य में अपनी सार्थक

उपस्थिति दर्ज की है किंतु उनमें से कुछ प्रमुख कहानियों 'सोने का चाकू', 'हाकिमकथा', 'वजूद', 'अँधेरा', 'मुक्ति', 'ग्रहण', 'बड़ी अम्मा' आदि का जिक्र किए बिना कथाकार अखिलेश का न तो पूर्ण परिचय दिया जा सकता है और न ही उनके साहित्यिक अवदान व कथादृष्टि को मूल्यांकित किया जा सकता है।

अखिलेश का साहित्यिक प्रादुर्भाव आपातकाल के ठीक बाद में हुआ। इसलिए उनके उपन्यास साहित्य में आपातकालीन कुंठाएँ और उससे प्रभावित समाज का चित्रण उसी रूप में होना, प्रत्यक्ष प्रमाणित है। इस संदर्भ में मधुरेश ने स्पष्ट किया है ''अखिलेश उस पीढ़ी के एक उल्लेखनीय और प्रतिनिधि रचनाकार हैं जो देश में आपातकाल के बाद, वस्तुतः उसके परिणामस्वरूप ही जनता सरकार के दौर में अस्तित्व में आई।''[1] अखिलेश ने इस समय में न केवल अपनी साहित्यिक सक्रियता दर्शायी अपितु लेखन के अतिरिक्त भी अन्य क्षेत्रों विशेषकर पत्रकारिता व संपादकीय कार्यों में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

समकालीन हिंदी साहित्य में अखिलेश की पहचान एक सफल बहुमुखी प्रतिभा के धनी अखिलेश का कथाकार, संपादक एवं पत्रकार के रूप में होती है। आपकी कहानियों में मानवीय जीवन में आए परिवर्तनों व आधुनिकता की दौड़ में पीछे छूट रहे रिश्तों का सजीव चित्रण किया गया है। अखिलेश की कथादृष्टि के इसी वैशिष्ट्य को राजीव कुमार ने इस प्रकार रेखांकित किया है ''एक ओर अखिलेश की कहानियों जहाँ निर्मम तटस्थता के साथ बदलते समय, मानवीय घात–प्रतिघात, युवाओं की हताशा एवं मनुष्यता की दुर्दशा का चित्रण खींचती है, तो वहीं वे उम्मीद का दामन नहीं छोड़ती। उम्मीद का एक सोता उनकी रचना प्रक्रिया में सदैव प्रवाहित होता रहता है। अखिलेश का यकीन चीजों को धुँधला या पारभाषक बनाने में नहीं है बल्कि उसे संप्रेष्य बनाने में है। इन दिनों जब संप्रेषण या सहजता के नाम पर हिंदी हिंग्लिश बनती जा रही है, अखिलेश का गद्य एक प्रतिमान है। अपनी भाषा में कथा संरचना की विशिष्टता के कारण अखिलेश हर उम्र, स्थान, भाषिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के लोगों के लिए सुपाठ्य है।''[2]

अखिलेश की कहानियों की यही भावग्रह्मयता उन्हें अपने समकालीन कथाकारों से भिन्न करती है। उन्होंने अपने साहित्य सृजन के ऐसे वर्ण्य–विषय चुने हैं जिन पर उनसे पूर्व तथा उनके समय के साहित्यकारों ने बहुत खुलकर बात नहीं की है। उनकी इसी लेखकीय दृष्टि को राजीव कुमार ने इस प्रकार रेखांकित किया हैं ''जटिलता को सुगमता के साथ पेश करने में अखिलेश का कोई सानी नहीं है। रचना कहानी हो, उपन्यास हो, या संस्मरणात्मक कृति अखिलेश एक अप्रतिम गद्यकार के रूप में सामने आते हैं। एक ऐसा गद्यकार जिसमें कोई रेटोरिक नहीं है. कोई जार्गन नहीं है. दर्शन का आडम्बर नहीं है, जिसे हर शब्द की अनत क्षमता की अचूक पहचान है, जिसके सहारे वह ऐसा वाक्य गढ़ता है जो प्रस्तुत संवेदना, विचार अथवा मंतव्य को उसी शेड्स में प्रस्तुत कर देता है, जोकि अपेक्षित थी। यही कारण है कि अखिलेश को पढ़ते हुए संवेदना समृद्धि एवं वैचारिक सचेतता के साथ साहित्यिक आह्लाद भी पाते हैं।''[3] स्पष्ट है कथाकार ने पूर्व प्रचलित मान्यताओं को ग्रहण करने के बजाए स्वयं का कथालोक निर्मित किया है, जिसमें समाज के ऐसे अनछुए मुद्दो पर दृष्टिपात किया गया है, जो अभी तक सत्ताधारियों, सामाजिक नियामकों तथा साहित्य शिल्पियों के लिए उतने महत्त्वपूर्ण नहीं थे, जितना उन्हें होना चाहिए था।

बेरोजगारी विशेषकर शिक्षित बेरोजगारी जैसे विषय पर खुलकर कलम चलाने वाले अखिलेश को युवाओं के हक का कलमकार कहे, तो कोई हर्ज नहीं होगा। क्योंकि यह अवस्था अधिकांश लोगों के जीवन में आती है

और कुछ समय व संघर्ष के पश्चात् चली भी जाती है किंतु इसी समय की भयावहता इतनी जटिलता होती है कि व्यक्ति लाख कोशिश करके भी इनसे बाहर नहीं निकल पाता। कथाकार अखिलेश ने ऐसे युवाओं की मूक व्यथा को तो कथा जगत् में स्पेश दिया ही है साथ ही शासन तंत्र की निरंकुशता और सामाजिक दृष्टिकोण का भी पूर्ण विवेचन–विश्लेषण किया है। 'चिट्ठी', 'मुक्ति', 'अचानक नहीं' जैसी कहानियों और 'अन्वेषण' उपन्यास में अखिलेश ने इन संदर्भों को पूर्ण ईमानदारी और तटस्थता के साथ चित्रित किया है। इस संदर्भ में मनोज कुमार पाण्डेय का कथन दृष्टव्य है ''बेरोजगारी को लेकर लिखी गई कहानियों में अखिलेश की कहानी 'चिट्ठी' बेहद चर्चित रही। वह बेरोजगारी की कहानी तो है ही पर उसका सही पाठ किया जाए तो वह बेरोजगारी के आगे की कहानी भी है। . . . चिट्ठी के अलावा भी बेरोजगारी को लेकर अखिलेश अनेक महत्त्वपूर्ण कहानियों लिखी हैं। खुद उनका पहला उपन्यास 'अन्वेषण' भी इसी केंद्रीय मुद्दे से दो–चार होता है।''[4] कथाकार अखिलेश की कलम केवल इसी मुद्दे पर नहीं टिकती। वह यहाँ से आगे बढ़ते हैं और शापग्रस्त कहानी लिखकर कामयाब व्यक्ति की अतृप्त मनःस्थितियों कुंठाओं और हीनताओं पर दृष्टिपात करते हैं। वे कहानी के पात्र प्रमोद वर्मा के माध्यम से आम आदमी की जीवन स्थिति में झांकने का प्रयास करते हैं और इसी क्रम में वे सुखी जीवन को तलाशते हैं जो हर एक व्यक्ति अपने लिए सोचता है मगर मिलता बहुत कम को है। अखिलेश ने 'शापग्रस्त', 'ऊसर', 'अचानक नहीं', 'हनीमून', 'बड़ी अम्मा', 'सोने का चाकू' जैसी कहानियों से मध्य और निम्नमध्यवर्गीय समाज की ऐसी ही बहुरंगी छवियों चित्रित की है, जिनमें हर एक व्यक्ति अतृप्त इच्छाओं के कारण संघर्षरत है।

अखिलेश की कथा दृष्टि का एक और पक्ष भी है। वह है उनका अपने समय व समाज से जुड़ा होना। कथाकार अखिलेश ने अपने समय के सच को पूर्ण निर्ममता से उजागर किया है। सामाजिक सरोकारों का यह संघान उनकी अधिकांश रचनाओं में मिलता है, फिर वे चाहे कहानियों हो या उपन्यास। 'वजूद' और 'ग्रहण' जैसी कहानियों से भारतीय समाज में जातीय दृष्टिकोण को चित्रित करते; अखिलेश अँधेरा कहानी में धार्मिक अनाचार का अनावरण करते हैं। ''अखिलेश की कहानियों में विषय की पर्याप्त विविधता है। उन्होंने सांप्रदायिकता, बेरोजगारी, राजनीति, दलित चेतना, विषमतामूलक विकास, मानवीय छल–छद्म आदि तमाम विषयों को अपनी कहानी का विषय बनाया है। विषय चाहे जो भी हो परन्तु इनकी कहानियों के केंद्र में निम्नवर्गीय अथवा निम्न मध्यमवर्गीय जीवन है।''[5] अखिलेश के लेखन का कैनवास अपने समय की इन्हीं वस्तुस्थितियों के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। रचनाशीलता के इसी अनुक्रम में सामाजिक यथार्थ का अन्वेषण अखिलेश की कथा दृष्टि को और अधिक विस्तार देता है। ''अखिलेश की कहानियों में बीती सदी के उत्तर दौर में बन रहे नए जीवन–यथार्थ की बहुरंगी छवियों हैं . . . इसीलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अपने समय और समाज के बदलते यथार्थ की पेचीदगी और जटिलताओं को इन्होंने बखूबी समझा है बिना किसी सैद्धांतिकी और रूढ़ विचारधारा में बंधे।

इसका मतलब यह नहीं है कि इन्होंने विचारधारा से मुक्ति पा ली है, दरअसल इनकी विचारधारा मनुष्य की वास्तविक मुक्ति की आकांक्षा से बनी है और बदलते समय की जो वास्तविकता है उसकी पहचान करना इनका उददेश्य है। इनकी भाषा में जो हल्का व्यंग्य और विनोद है, वह समय, सत्ता और नए जीवन की विद्रूपताओं के रेशे–रेशे को उड़ा देता है।''[6] अखिलेश के लेखन के व्यापक कैनवास को आशीष त्रिपाठी इस रूप में देखते है ''अखिलेश सामाजिक–राजनीतिक चेतना से संपन्न कहानीकार है। स्पष्ट पक्षधरता के साथ उनकी कहानियाँ रची गई हैं। इसीलिए उनके सामाजिक आशय ज्यादा मुखर है परतु वे कलात्मकता की उपेक्षा नहीं

करती। उनमें अदभुत कलात्मक संयम है। जहाँ एक और अपने समय का गतिशील पल–पल बदलता और प्रायः अलक्षित रहा आया यथार्थ एक व्यापकता और जटिल संश्लेषण के साथ उनके यहाँ प्रकट हुआ है, वहीं यह भी स्पष्ट है कि समकालीन जीवन की जटिलता को उसके पूरेपन में पूरी विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के साथ अंकित कर सकने लायक शिल्प सजगता और भाषा कौशल भी उन्होंने अर्जित किया है।''[7] कहानीकार अखिलेश का यही वैशिष्ट्य उनके उपन्यासों में भी समाहित नज़र आता है। अखिलेश ने अपने दोनों उपन्यासों 'अन्वेषण' और 'निर्वासन' में अपनी रचनाधर्मिता के इसी चैतन्य रूप को साकार किया है।

भूमंडलीकृत देश–दुनिया के मुद्दों को अपनी लेखनी के माध्यम से जीवंतता प्रदान करने में अखिलेश का कोई सानी नहीं है। उदारीकरण से जनित परिस्थितियों को जिस रूप और शिल्प के साथ अखिलेश ने अपनी उपन्यास साहित्य में उकेरा है, वह अद्वितीय है। स्पष्ट है अखिलेश ने अपने समय के सामांतर अपने उपन्यास साहित्य के कथ्य को वैविध्य और विस्तार दिया है, जिसके कारण ये दुरह न होकर पाठकों को बाँधने में सक्षम रही है। शीला रोहेकर अखिलेश की इसी विशिष्टता को इसी रूप में देखती हैं ''अखिलेश के पास लेखक की प्रतिभा है। उनके लेखन में गहरे संवेदनात्मक ताने–बाने के साथ यथार्थ का पूरा एहसास रहता है। भाषा में रवानगी है और शिल्प में वैशिष्ट्य। उसके 'यह जो यथार्थ था', 'अँधेरा', 'शापग्रस्त', 'अन्वेषण' या बहुचर्चित उपन्यास 'निर्वासन' को ही पढिए . . .तो आप उसके विषय के चुनाव, उसके विन्यास और दृष्टि की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। उसके लेखन में वास्तविकता को उधेडती, बेबाक प्रश्न पूछती नजर है तो कई बार कसमसाती चुप भी रहती है और नियति को देखते एक चितनपरक और सवेदनशील रचना को जन्म देती है।''[8]

अतः स्पष्ट है कथाकार अखिलेश ने अपनी रचनात्मकता का वितान स्वयं रचा है। उन्होंने केवल एक साहित्यकार ही नहीं अपितु एक संपादक, समीक्षक और पाठक के रूप में भी हिंदी साहित्य संसार को समृद्ध किया है। अखिलेश के साहित्यिक अवदान को राजीव कुमार ने इस प्रकार रेखांकित किया है ''एक पक्ष उनका संपादक व्यक्तित्व है। यह सर्वविदित है वे हमारी भाषा के महत्त्वपूर्ण कथाकार है एवं अप्रतिम गद्यकार होने के साथ ही तद्भव जैसी पत्रिका के संपादक है। तद्भव का हिंदी साहित्य में जो रचनात्मक योगदान है उस पर अलग से यहाँ कुछ कहने की जरूरत नहीं है।''[9] यहाँ यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि कथाकार अखिलेश ने अपने लेखन का जो दायरा निर्मित किया है, उसमें उनका समय व समाज समाया हुआ है। अपने समय के इसी यथार्थ को उद्घाटित करने का साहस और प्रतिरोध उन्हें उनके समकालीन अन्य रचनाकारों से अलग करता है।

निष्कर्षतः कथाकार अखिलेश समकालीन हिंदी साहित्य के महत्त्वपूर्ण साहित्यकार है। आपकी रचनात्मकता का व्यापक दायरा इसकी बखूबी पुष्टि करता है। अतः कहा जा सकता है कि कथाकार अखिलेश का साहित्यिक अवदान अति विशिष्ट है; उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता से हिंदी साहित्य संसार में अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की है। अतः कहा जा सकता है कि कथाकार के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर चुके अखिलेश को उनके दोनों उपन्यासों 'अन्वेषण' और 'निर्वासन' ने उन्हें विशेष कथाकारों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। लंबी कहानियों की प्रेरणा अखिलेश का हिंदी कथा संसार में पर्दापण बहु–प्रतिक्षित था, जिसे इनके दोनों उपन्यासों ने सार्थकता प्रदान की है। अस्तु कथाकार अखिलेश की कथा दृष्टि की व्यापकता कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं पर समानाधिकार रखती है। इसकी पुष्टि उन्होंने इन विधाओं में सृजित अपनी रचनाओं के माध्यम से

बखूबी से किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मधुरेश, अपने समय का रचनात्मक भाष्य, बनास जन, पृ०सं० 110
2. राजीव कुमार, अपनी ओर से, बनास जन, पृ०सं० 05
3. वही, पृ०सं० 05
4. मनोज कुमार पाण्डेय, प्रेम और प्रतिरोध के सौंदर्य की खोज, बनास जन, पृ०सं० 135
5. अमिताभ राय, दम तोड़ती मनुष्यता के पक्ष में, कथाकार अखिलेश सृजन के आयाम, पृ०सं० 89
6. अजय वर्मा, नए समय की विरूपता का आख्यान, कथाकार अखिलेश सृजन के आयाम, पृ०सं० 70
7. आशीष त्रिपाठी, बदलते हुए समाज की सच्ची कहानियों, बनास जन, पृ०सं० 119
8. शीला रोहेबर, स्मृति के आइने में, बनास जन, पृ०सं० 42
9. राजीव कुमार संपादकीय, कथाकार अखिलेश सृजन की परिधि, पृ०सं० 5

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 120-122

Precarious Bodies : A Study of Biopolitics and Gendered Health in *The Farming of Bones*

Devu V.
Research Scholar, Department of English,
N S S Hindu College Chanagancherry.

Abstract :

The Farming of Bones (1998) by Edwidge Danticat, records the complexities of the lives of Haitian migrant labourers during the 1937 Parsley Massacre in Haiti. Their experiences are being analysed using the intersectional lens of biopolitics and precarity. The biopolitics of race harms Haitians through racism, denial, and purification, which is displayed in the novel through the brutalities committed against Haitian laborers, especially women. Existing studies present women's health as a mere biological concern. On the contrary, by analyzing the main character Amabelle Desir, the study reveals that good health not only means being free from illness, but being emotionally strong, fitting into society, and resist oppressive rules. The study is inferred by Michel Foucault's theory of biopolitics and Judith Butler's notion of precariousness to state how, the dominant power controls, disciplines, and devalues the bodies of marginalized individuals, and, Haitian people are made politically insignificant using violent and oppressive practices. The article uses close textual analysis and interpretive approach, to examine the experience of Haitian women as their health, reproductive system, and state of mind is altered due to the trauma, precarity, and disparity following migration. The research thereby states that gendered health is a matter of politics and ethics.

Keywords : Biopolitics, Precarity, Trauma, Gendered health, Resistance

Introduction :

Edwidge Danticat's *The Farming of Bones* deals with the 1937 Parsley Massacre, where the Dominican dictator Rafael Trujillo ordered the massacre of a large number of Haitians and Haitian-Dominicans along the border with the Dominican Republic, as part of a campaign that pictured Haitian presence as a threat to the Dominican population. The story showcases the experiences of such Haitian migrant workers, subjected to racial disparity, political exclusion, and violence. It addresses the relationship between bodily frailty and political authority, while emphasizing displacement, loss, and

survival of the oppressed ones. Danticat also displays, through the characters Amabelle, Odette and Juana, how physical and psychological violence functions on the female body, changing it into a site of pain and trauma.

Methodology :

This research adopts close textual analysis of *The Farming of Bones* (Danticat, 1998), analysed through a critical framework based on Michel Foucault's concept of biopolitics and Judith Butler's theory of precarity. Foucault's (1978) biopolitics explains a modern power that handles and regulates population —health, reproduction, hygiene—in order to "make live." Foucault (1997/2003) further argues that this power requires an internal mechanism to justify killing without altering its own logic: state racism, which separates the population into one group whose life is fostered and one considered as a biological threat whose elimination favours the health of the whole. This system works with Trujillo's Dominicanization campaign and their "parsley test," in which Haitians are made to pronounce "perejil", converting the body into the instrument by which the authority decides who will live and who will die.

"Tell us what this is," one said. "Que diga perejil." Amabelle reflects, "I could have said it. But I didn't get my chance. Yves and I were shoved down onto our knees. Our jaws were pried open and parsley stuffed into our mouths" (Danticat, 1998, p. 193),

Butler's (2004, 2009) precarity is used to justify the unequal social condition it produces for Haitian migrant women. The violence in the novel causes both physical injuries and psychological trauma to the victims. The destruction of family and community structures also places additional burdens on women which is illustrated through Amabelle's practice of midwifery. Along with that, Juana's recollection of her miscarriage, which is a sign of her emotional and psychological stress caused by social conditioning of motherhood, Odette's death while escaping the massacre, and the damaged bodies of the survivors indicate the intersection of the theories of biopolitics and precariousness where the authority exerts power on the bodies through right measures to classify who is needed and who is not.

Results and Discussion :

The study finds that In *The Farming of Bones,* the body serves as a tool through which political power is exerted. It displays how women's experiences of political violence are gendered, so as to fit the societal expectations. Amabelle, as a Haitian housemaid assists Senora Valencia in her delivery, which is a complete societal demanding where she becomes a victim of disparity in terms of race, class, nationality, and gender.

The novel provides memories and physical evidences of the brutality of the massacre. Amabelle remarks "Someone threw a fist-sized rock, which bruised my lip and left cheek. My face hit the

ground… A sharp blow to my side nearly stopped my breath…I screamed, thinking I was going to die…What was the use of fighting?" (Danticat, 1998, p. 194). The Haitian body becomes victims of racial segregation and this affects their safety and health. The consequent damage is therefore politically produced rather than mere occurrence, and the trauma extends beyond the moment of the injury through recollection, fear, and grief.

Conclusion :

Gendered health is visible in the novel through caregiving. Such service often goes unacknowledged, yet functions as a way for their survival and resistance. The importance of women's survival can also be interpreted through Butler's concept of precariousness. If precariousness explains the unequal exposure of lives to injury and loss, survival under such conditions indicates the importance of social relationships and collective support. Danticat's women survive not independently but through relationships, memory, community support and groups.

The article proposes that the susceptibility of Haitian women is maintained through systems that regulate, classify, and unevenly value human lives. At the same time, they are not presented as mere fragile subjects; their caregiving, testimony, memory, and endurance provide important forms of resilience.

References :

- Butler, J. (2004). *Precarious life: The powers of mourning and violence.* Verso.
- Butler, J. (2009). *Frames of war: When is life grievable?* Verso.
- Danticat, E. (1998). *The farming of bones.* Soho Press.
- Foucault, M. (1978). *The history of sexuality, Vol. 1: An introduction* (R. Hurley, Trans.). Pantheon Books.
- Foucault, M. (2003). *Society must be defended: Lectures at the Collège de France, 1975–1976* (D. Macey, Trans.; M. Bertani & A. Fontana, Eds.). Picador.
- Gurung, G. M. (2020). Narrating trauma in *The Farming of Bones*. *Journal of Development Review, 5*(1), 26–29. https://doi.org/10.3126/jdr.v5i1.51130
- Larrier, R. B. (2006). *Autofiction and advocacy in the Francophone Caribbean*. University Press of Florida.
- Munro, M. (Ed.). (2010). *Edwidge Danticat: A reader's guide.* University of Virginia Press.
- Shemak, A. A. (2002). Re-membering Hispaniola: Edwidge Danticat's *The Farming of Bones*. *Modern Fiction Studies, 48*(1), 83–112. https://doi.org/10.1353/mfs.2002.0010

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 123-128

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता : बहुआयामी विश्लेषण

डॉ. यादव सिंह
सहायक–आचार्य (लोक–प्रशासन)
राजकीय महाविद्यालय, रूपवास।

1. सारांश :

इस समय, दुनिया दुविधाओं से घिरी हुई है। आज हम जलवायु परिवर्तन, लोगों के बीच संघर्ष, पर्यावरण को हो रहे नुकसान और वैश्विक नेतृत्व की गलत नीतियों जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। वर्तमान में समस्याओं को समझने और सुलझाने के हमारे सामान्य तरीके कारगर नहीं हो रहे हैं। यहीं पर भारतीय सोच की भूमिका याद आती है। यह नए विचार प्रस्तुत करती है जो सभी को साथ लेकर चलने, पृथ्वी की देखभाल करने और निष्पक्ष व ईमानदार निर्णय लेने पर केंद्रित हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करने का अन्य कारण अतीत की एक गलती को सुधारना भी है। उपनिवेशवादियों ने लंबे समय तक भारत पर शासन किया था। वे कहते रहे कि भारतीय ज्ञान पद्धति अवैज्ञानिक और अप्रासंगिक है। उन्हें लगता है कि भारतीय विचार अच्छे नहीं हैं। लेकिन अब, भारतीय सोच को पुर्नस्थापित करने की आवश्यकता है। यह केवल अतीत को याद करने के बारे में नहीं है बल्कि वर्तमान और भविष्य की समस्याओं के समाधान के नए और बेहतर तरीके खोजने में हमारी मदद करने के लिए है। यह भारतीय ज्ञान के प्रति हमारे नजरिए को बदलने और 21वीं सदी के भविष्य के लिए नए विचारों का निर्माण करने के बारे में है। यह शोध पत्र पुराने भारतीय ज्ञान को आज के नियमों और विज्ञान से जोड़ता है और वर्तमान सन्दर्भ में उसकी उपयोगिता दर्शाता है।

कुंजी शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, प्रासंगिकता, उपनिवेशवादी मानसिकता।

2. शोध पद्धति :

इस शोध पत्र में गुणात्मक शोध पद्धति का प्रयुक्त की गई है। यह पद्धति संख्याओं के बजाय शब्दों, अनुभवों और विचारों के माध्यम से जानकारी इकट्ठा करती है।

3. शोध उद्देश्य :

3.1. औपनिवेशिक आख्यानों को चुनौती देना, जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रतिगामी मानकर भुला दिया।

3.2. पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) और भगवद् गीता के कर्मयोग सिद्धांतों को आधुनिक जीवन में संतुलनकारी और नैतिक समाधान के रूप में प्रस्तुत करना।

3.3. आयुर्वेद, योग और उनके वैज्ञानिक सत्यापन की आवश्यकता का विश्लेषण करना।

3.4. शासन के लिए एक सुदृढ़ नैतिक और प्रशासनिक ढाँचा प्रदान करने के लिए कौटिल्य के विचारों को प्रस्तुत करना।

4. साहित्य समीक्षा :

4.1. दार्शनिक और शास्त्रीय ग्रंथों पर आधारित समीक्षा : पुरुषार्थों की अवधारणा, भगवद् गीता के प्रबंधन सिद्धांत तथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि का अध्ययन किया है।

4.2. संस्थागत और नीतिगत दस्तावेज : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख दस्तावेजों और शिक्षा मंत्रालय के तहत अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के दस्तावेजों का अध्ययन किया है।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा के घटक :

5.1. दार्शनिक और नैतिक आधार :

5.1.1. पुरुषार्थ चतुष्टय : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–भारतीय ज्ञान परंपरा के, मनीषियों का मानना है कि जीवन के चार महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं सही काम करना (धर्म), अपनी जरूरतों को पूरा करना (अर्थ), जीवन के सुखों का आनंद लेना (काम), और सच्ची आजादी या खुशी पाना (मोक्ष)। ये चारों लक्ष्य एक संतुलन की तरह काम करते हैं। अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। मोक्ष तब होता है जब हमारी आत्मा मुक्त होकर ब्रह्म नामक किसी चीज से जुड़ जाती है, जो ब्रह्मांड की सबसे बड़ी और शांत चीज है। यह लक्ष्य हमें शांत और खुश रहने में मदद करता है।

5.2. विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शिक्षा में संस्थागत व नीतिगत एकीकरण :

5.2.1. गणित और खगोल विज्ञान : लगभग 1,500 साल पहले, भारतीय विद्वानों ने शून्य का आविष्कार किया इससे गणित का ज्ञान बेहतर हुआ और लोगों को आकृतियों, कोणों और पैटर्न के बारे में सीखने में मदद मिली। तारों और ग्रहों के बारे में, आर्यभट्ट ने प्रासंगिक विचार दिए। उनका मानना था कि पृथ्वी गोल है, लट्टू की तरह घूमती है और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। उन्होंने "पाई" नामक एक विशेष संख्या का मान भी निकाला, एक वर्ष की अवधि का अनुमान लगाया, और यह भी भविष्यवाणी की कि ग्रहण के दौरान सूर्य और चंद्रमा कब एक–दूसरे को ढकेंगे।

5.2.2. इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी : सिंधु घाटी के लोगों ने लगभग 4500 साल पहले, अपनी फसलों की सिचाईं के लिए पानी का इस्तेमाल शुरू किया था। उन्होंने गंदे पानी और कचरे को बहाकर ले जाने के लिए विशेष व्यवस्था वाले शहर बसाए। पुरातत्ववेत्ताओं को आज से लगभग 2500 साल पहले के, जानवरों द्वारा खींचे जाने वाले पुराने औजार मिले, जिन्हें हल कहा जाता था, जिनका इस्तेमाल लोग जमीन जोतने के लिए करते थे। लगभग 2300 साल पहले की तांबे की तलवारें भी मिलीं, जिनका इस्तेमाल लोग हथियार के रूप में करते थे। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व, पाणिनि नामक एक विद्वान ने भाषा में ध्वनियों के काम करने के तरीके के बारे में महत्वपूर्ण खोज की जिससे शब्दों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली।

5.2.3. भारतीय ज्ञान परंपरा का नीतिगत एकीकरण : 21वीं सदी के आधुनिक शिक्षण और अनुसंधान में भारत के प्राचीन ज्ञान और परंपराओं को शामिल करने के लिए बड़ी योजनाएँ बनाई गई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति स्कूलों और कॉलेजों में स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को एक विषय के रूप में शामिल करने पर जोर देती है। ताकि छात्र अपनी संस्कृति पर गर्व करें और अपनी परंपराओं एवं इतिहास के बारे में सीखें। यह नीति शिक्षा में कंप्यूटर और इंटरनेट जैसी तकनीक के इस्तेमाल को भी प्रोत्साहित करती है।

5.2.4. भारतीय ज्ञान परंपरा का संस्थागत एकीकरण : भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकोष्ठ, अखिल भारतीय

तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित है। इसका मुख्य उद्देश्य इंजीनियरिंग, तकनीक, व्यापार, धन और कला जैसे कई क्षेत्रों में भारत के पारंपरिक ज्ञान का अध्ययन एवं शोध करना है। प्रकोष्ठ इस पुराने ज्ञान को सुरक्षित रखना चाहता है, इसे दूसरों के साथ साझा करना चाहता है और इसे समझने के नए तरीके खोजना चाहता है।

5.3 स्वास्थ्य, कल्याण और वैश्विक आर्थिक शक्ति :

5.3.1. आयुर्वेद का समग्र मॉडल और साक्ष्य-आधारित सत्यापन :

आयुर्वेद हमारे स्वास्थ्य की देखभाल करने का एक बहुत पुराना तरीका है। इसका इस्तेमाल हजारों सालों से होता आ रहा है। यह हमें स्वस्थ आहार लेना, खुश रहना और अच्छा महसूस करने के लिए प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल करना सिखाता है। यह हमारे तन, मन और आसपास के वातावरण को संतुलित और खुश रखने में मदद करता है। पिछले कुछ वर्षों में, पारंपरिक आयुर्वेदिक चिकित्सा को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ने को लेकर भारतीयों में उत्साह बढ़ रहा है। आयुष मंत्रालय के अंतर्गत एक विशेष संगठन, आयुर्वेद को बेहतर बनाने और विज्ञान के माध्यम से इसकी कार्यप्रणाली को समझने के लिए अनुसंधान का नेतृत्व और समर्थन करता है।

5.3.2. वैश्विक बाजार और भारतीय ज्ञान परंपरा की आर्थिक शक्ति :

दुनिया भर के लोग स्वस्थ रहने के पुराने भारतीय तरीकों, जैसे योग और आयुर्वेद, के बारे में जानने को उत्सुक हैं। योग और आयुर्वेद आधारित व्यवसायों से आर्थिक समृधि भी आती है। दुनिया का स्वास्थ्य और कल्याण उद्योग बहुत तेजी से बढ़ रहा है। 2023 के अंत तक इसका मूल्य 6 ट्रिलियन डॉलर से ज़्यादा होगा जो बड़ी दवा कंपनियों द्वारा अर्जित आय से कहीं ज़्यादा है। विशेषज्ञों का मानना है कि 2028 तक इसका मूल्य लगभग 9 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगा। योग और आयुर्वेद जैसी भारतीय परंपराएँ इस वृद्धि का एक बड़ा हिस्सा हैं।

5.4. आर्थिक, प्रशासनिक और शासन प्रणालियों में परंपरागत ज्ञान :

5.4.1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र : आधुनिक प्रशासन और अर्थव्यवस्था का ब्लूप्रिंट :

5.4.1.1. कौटिल्य, द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' : वित्तीय प्रबंधन और देश की उन्नति में सहायक होने वाली एक पुस्तक है। आर्थिक समृधि और सभी को न्यायपूर्ण तथा सुखी बनाने के बारे में उनके विचार आज भी महत्वपूर्ण हैं। देश के सभी लोगों के लिए समृद्ध, सफल और न्यायपूर्ण जीवन देने का मार्ग यह पुस्तक दिखाती है।

5.4.1.2. मिश्रित अर्थव्यवस्था और राज्य का हस्तक्षेप : कौटिल्य का मानना था कि जरूरत पड़ने पर सरकार को अर्थव्यवस्था में मदद करनी चाहिएए वित्त और व्यवसाय की गतिविधियों पर राज्य का सीमित हस्तक्षेप रहे। उनका मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि चीजें व्यवस्थित रहें और लोगों को अधिक वस्तुएँ बनाने/उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। अर्थव्यवस्था के प्रबंधन का यह तरीका आज के भारत के समान है।

5.4.1.3. उत्पादन और राजस्व का सिद्धांत : कौटिल्य का मानना था कि किसी देश की समृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना कृषि उत्पादन करता है। उनका मानना था कि फसलों तक पानी पहुँचाने के लिए बाँध और नहरें बनाकर और बेहतर बीजों का इस्तेमाल करके किसानों की मदद करना बहुत जरूरी है। चूँकि खेती ही देश की कमाई का मुख्य जरिया थी, इसलिए खेतों की देखभाल देश की सफलता के लिए बहुत जरूरी थी।

5.4.1.4. न्यायसंगत राजस्व और कराधान : कौटिल्य चाहते थे कि देश मजबूत व् समृद्ध बने, इसके लिए

ज्यादा वित्त होना जरूरी था। उन्होंने व्यवसायों, जंगलों, खदानों, जमीन और व्यापारियों से कर वसूलने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि महंगी और आकर्षक चीजों पर ज्यादा कर लगाया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि कर देना न्यायसंगत और आसान हो, ताकि सरकार उस धन का इस्तेमाल सेना चलाने, लोगों की मदद करने और जरूरी कामों के लिए कर सके।

5.4.1.5. अभूतपूर्व श्रम कल्याण एवं न्यायसंगत आर्थिक विकास : आमतौर पर, पश्चिमी विचारों में, श्रमिक और पूँजी, चीजों को बनाने के केवल एक भाग होते हैं, लेकिन कौटिल्य का मानना था कि श्रमिकों के साथ निष्पक्ष और न्यायपूर्ण व्यवहार सुनिश्चित करना एक मजबूत और सफल देश के निर्माण का सही तरीका है। कौटिल्य श्रमिकों की देखभाल के बारे में बहुत विचारशील थे। उन्होंने श्रमिकों को अनुचित व्यवहार से बचाने के लिए नियम बनाए और यह सुनिश्चित किया कि उन्हें उचित वेतन मिले। उन्होंने महिला श्रमिकों की मदद के लिए भी विशेष नियम बनाए।

5.5. शिक्षा में पुनर्संरचना : गुरूकुल और समग्र विकास के सिद्धांत :

5.5.1. गुरूकुल शिक्षा प्रणाली : समग्र विकास का मॉडल :

प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इसलिए अलग थी क्योंकि वहाँ सिर्फ तथ्य और संख्याएँ ही नहीं सिखाए जाती बल्कि बच्चों को दयालु, ईमानदार और अच्छे इंसान बनने के संस्कार भी मिलते थे। गुरुकुल में, शिष्य अपने शिक्षक, के साथ परिवार की तरह रहते थे। गुरु न सिर्फ शिक्षाएँ देते थे, बल्कि जीवन की सलाह, ज्ञान और सच बोलने, दयालु होने और सही काम करने जैसे अच्छे मूल्य भी सिखाते थे। गणितज्ञों और वैज्ञानिकों जैसे कई बुद्धिमान लोगों ने इन स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की।

5.6. आलोचनात्मक मूल्यांकन, ज्ञान अनुवाद और भविष्य की राह :

5.6.1. ज्ञानमीमांसात्मक प्रतिरोध और ज्ञान अनुवाद :

आज भारतीय ज्ञान और सीखने के तरीकों को और अधिक मान्यता प्राप्त बनाने के लिए काम हो रहा है। एकीकृत ज्ञान अनुवाद नामक एक विशेष पद्धति का उपयोग भारतीय ज्ञान को बढ़ावा देने और इस विचार को चुनौती देने के लिए किया जाता है कि केवल यूरोपीय ज्ञान के तरीके ही सही हैं।

ज्ञान अनुवाद, ज्ञान साझा करने और समस्याओं को हल करने के लिए मिलकर काम करने का एक तरीका है। ज्ञान अनुवाद का मुख्य लक्ष्य लोगों को उनके ज्ञान का उपयोग करके वास्तविक जीवन में बेहतर काम करने में मदद करना है। एकीकृत ज्ञान अनुवाद सेल तकनीक में पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करता है।

5.6.2. आंतरिक और बाहरी चुनौतियाँ :

भारतीय ज्ञान को जीवित और उपयोगी बनाए रखने के लिए, हमें इसके मुख्य मूल्यों (सबका साथ, सबका विश्वास, सबका विकास) को याद रखना चाहिए। यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है कि भारतीय ज्ञान परंपराएँ विज्ञान की तरह स्पष्ट और विश्वसनीय हों। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद (पारंपरिक भारतीय चिकित्सा) में, हमें विशेष परीक्षणों और डीएनए विश्लेषण जैसी नई विधियों का उपयोग करके यह सुनिश्चित करना होगा कि उपचार अच्छे और सुरक्षित हैं। जानने और सीखने के पुराने भारतीय तरीकों को वापस लाने में कुछ बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा है। परंपरा के भीतर, हमें प्राचीन पुस्तकों और विचारों को सावधानीपूर्वक संरक्षित और साझा करने की आवश्यकता है। पुरानी पांडुलिपियों को सहेजने और डिजिटल लाइब्रेरी जैसे नए उपकरणों का उपयोग करके उनके ज्ञान को साझा करने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।

6. निष्कर्ष :

एक अच्छा जीवन जीने के बारे में भारतीय विचार हमें केवल पैसे के पीछे भागने के बजाय, काम और नैतिकता के बीच संतुलन बनाना सिखाते हैं। यह हमें एक ऐसे तरीके से जीने में मदद करते हैं जो निष्पक्ष, स्वस्थ और मातृभूमि के लिए अच्छा हो। स्वास्थ्य के क्षेत्र में, आयुर्वेद (चिकित्सा का एक पारंपरिक तरीका) और योग (मन और शरीर के लिए व्यायाम और श्वास अभ्यास) जैसी चीजें दुनिया भर में बहुत लोकप्रिय हैं। सरकार सुनिश्चित कर रही है कि यह प्राचीन ज्ञान स्कूलों और कॉलेजों का हिस्सा बने ताकि छात्र इससे सीखें। भारत का ज्ञान केवल विचारों और सोच के बारे में नहीं है, बल्कि हम विज्ञान का उपयोग कैसे करते हैं, अर्थव्यवस्था की मदद कैसे करते हैं और निष्पक्ष नियम कैसे बनाते हैं, के बारे में भी है। उदाहरण के लिए, भारत ने गणित में शून्य का विचार और यह विचार दिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। भारत ने श्रमिकों की मदद करने और सभी की जरूरतों का ध्यान रखने के विचार भी दुनिया को दिए हैं।

7. नीतिगत और शैक्षणिक अनुशंसाएँ :

7.1. अनुप्रयुक्त अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करना : पुराने भारतीय विचारों को सिर्फ इकट्ठा करने या व्याख्या करने के बजाय, हमें उन विचारों का इस्तेमाल करके ऐसी वास्तविक चीजें बनानी चाहिए जो सबके काम आएँ। उदाहरण के लिए, हम ऐसी स्मार्ट और हरित तकनीक पर काम कर सकते हैं जो पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाए, यह सुनिश्चित करें कि रोबोट और कंप्यूटर जिम्मेदारी से काम करें, और हमारी सरकार के काम करने के तरीके में सुधार करें। इस तरह, पुराना ज्ञान वास्तविक समस्याओं को सुलझाने और सभी के जीवन को बेहतर बनाने में मदद करेगा।

7.2. गुणवत्ता आश्वासन और मानकीकरण : वैज्ञानिकों को ऐसे परीक्षण करने चाहिए जिनसे यह साबित हो सके कि आयुर्वेदिक और अन्य पारंपरिक दवाइयाँ दुनिया भर में सुरक्षित और उपयोग के लिए उपयुक्त हैं तथा वे कारगर हैं। इससे लोगों को यह विश्वास करने में मदद मिलती है कि दवाइयाँ सुरक्षित हैं और अच्छी तरह काम करती हैं।

7.3. शिक्षण में नैतिकता का केंद्र : शिक्षा को एक अच्छा इंसान बनाने पर केंद्रित करना होगा। स्कूलों में पुरानी गुरुकुल शिक्षण पद्धति को लागू करना होगा। केवल तथ्य बताने के बजाय बच्चों को दयालु, ईमानदार और संस्कारी बनना सिखाना चाहिए। इस तरह, बच्चे बड़े होकर जिम्मेदार और देखभाल करने वाले वयस्क बनेंगे।

7.4. ज्ञानमीमांसात्मक स्वतंत्रता का समर्थन : भारतीय ज्ञान पद्धतियों का अध्ययन व विश्लेषण करने वाले लोगों को ध्यान से देना होगा कि मुगल व यूरोपीय संस्कृतियों ने, भारतीय ज्ञान के आदान–प्रदान को कैसे प्रभावित या नियंत्रित किया है। आज भारतीय ज्ञान को दयालु और निष्पक्ष तरीके से साझा करना चाहिए, ताकि हर कोई इसे स्पष्ट रूप से समझ सके। इसमें रहस्य या भ्रम न हो। यह दिखाना जरूरी है कि भारतीय ज्ञान अन्य ज्ञान प्रणालियों की तरह ही अपने आप में विशिष्ट है।

8. सन्दर्भ सूची :

१. महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, राय म., शिक्षा – दर्शन की प्रासंगिकता. भारतीय आधुनिक शिक्षा, (2025). 36(04), P. 38–47.

२. भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक गणित की प्रासंगिकता. (2025). Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), 1(4), 19–24.

३. ऋत का दार्शनिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक विवेचन : भारतीय ज्ञान परंपरा में ऋत का स्थान और समकालीन प्रासंगिकता. (2025). International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology, 3(2), 51–60.
४. भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षक की भूमिका. (2025). Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), 1(4), 44–48.
५. Vijay, R. (2024). भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक भारतीय शिक्षा में आयुर्वेद की प्रासंगिकता व महत्व. International Journal of Social Science Research (IJSSR), 1(1), 85–91.
६. Vediconcepts. (2025, October 6). गुरुकुल शिक्षा प्रणाली – Gurukul System of Education.
७. Times of India. (2022, March 24). Ayurveda in the lab : Ancient wisdom meets modern scientific exploration.

ई.मेल आई.डी. : singhyadav004@gmail.com

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 129-134

औपनिवेशिक बंगला नाट्य परंपरा में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक प्रतिरोध का स्वरूप

प्रो. संजय श्रीवास्तव, प्रोफेसर,
भगत नारायण महतो, शोधार्थी
मध्य. एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

सार (Abstract)

औपनिवेशिक भारत में रंगमंच केवल एक सौंदर्यशास्त्रीय विधा या मनोरंजन का माध्यम मात्र नहीं था, बल्कि यह साम्राज्यवाद, सांस्कृतिक आधिपत्य, सामाजिक–आर्थिक उत्पीड़न और उत्तर–औपनिवेशिक राज्य–हिंसा के विरुद्ध जन–आक्रोश को अभिव्यक्त करने वाला एक शक्तिशाली राजनीतिक साधन था। प्रस्तुत शोध पत्र 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 20वीं शताब्दी के अंत तक बंगाल में औपनिवेशिक नाट्य परंपरा के विकास और उसके समानांतर उभरे 'सांस्कृतिक प्रतिरोध' (Cultural Resistance) का एक गहन ऐतिहासिक और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन में इस बात की सूक्ष्म पड़ताल की गई है कि बंगाली समाज ने किस प्रकार यूरोपीय प्रोसीनियम (Proscenium) शैली को अपनाया और तत्पश्चात उसके औपनिवेशिक वैचारिक चरित्र का वि–औपनिवेशीकरण (Decolonization) करते हुए उसे एक 'प्रति–वर्चस्वशाली' (Counter-Hegemonic) चेतना के निर्माण में प्रयुक्त किया। यह आलेख लोक–परंपरा 'जत्रा' के राजनीतिकरण, 1860 के 'नील दर्पण' विवाद, 1876 के दमनकारी 'नाट्य अभिनय अधिनियम' (Dramatic Performances Act), रवींद्रनाथ टैगोर के प्रतीकात्मक प्रतिरोध, नटी बिनोदिनी के माध्यम से उभरे सबाल्टर्न/जेंडर प्रतिरोध, 1940 के दशक में भारतीय जन नाट्य संघ (IPTA) द्वारा प्रवर्तित यथार्थवादी रंगमंच ('नवान्न'), उत्पल दत्त के मार्क्सवादी महाकाव्यात्मक रंगमंच (Epic Theatre) तथा बादल सरकार के 'थर्ड थिएटर' (तीसरा रंगमंच) का कालक्रमानुसार और समाजशास्त्रीय अनुशीलन करता है। बंगाल के रंगमंच ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जन–चेतना को संगठित करने वाले सबसे प्रखर वैचारिक मंच के रूप में कार्य किया।

मुख्य शब्द (Keywords) : औपनिवेशिक नाट्य परंपरा, बंगाल रंगमंच, सांस्कृतिक प्रतिरोध, नाट्य अभिनय अधिनियम 1876, नील दर्पण, इप्टा (IPTA), नटी बिनोदिनी, उत्पल दत्त, तीसरा रंगमंच।

प्रस्तावना (Introduction)

उत्तर–औपनिवेशिक सिद्धांतकार पार्थ चटर्जी (Partha Chatterjee) ने अपनी पुस्तक 'The Nation and its Fragments' में यह मौलिक स्थापना दी है कि औपनिवेशिक समाजों में राष्ट्रवाद ने साम्राज्यवादी सत्ता से अपनी लड़ाई बाहरी या भौतिक क्षेत्र (अर्थव्यवस्था, राज्य–तंत्र, कानून) में लड़ने से पूर्व 'आंतरिक या सांस्कृतिक

क्षेत्र' (भाषा, साहित्य, परिवार, कला) में शुरू की थी। इस आंतरिक क्षेत्र में औपनिवेशिक सत्ता का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं किया गया और यहीं 'राष्ट्रीय संस्कृति' की संप्रभुता का निर्माण हुआ। बंगाल का रंगमंच इसी आंतरिक सांस्कृतिक संप्रभुता का मुख्य केंद्र बना।

18वीं सदी के उत्तरार्ध में कलकत्ता (अब कोलकाता) में ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के साथ यूरोपीय शैली के प्रोसीनियम रंगमंच की नींव पड़ी। 'द कलकत्ता थिएटर' (1775) और 'द चैरंगी थिएटर' (1813) की स्थापना अंग्रेजों और यूरोपीय अधिकारियों के मनोरंजन के लिए की गई थी। किंतु 19वीं सदी के 'बंगाल पुनर्जागरण' (Bengal Renaissance) के दौरान बंगाली मध्यमवर्ग (भद्रलोक) ने इस पश्चिमी माध्यम को आत्मसात कर लिया। शुरुआत में यह माध्यम पश्चिमी नाटकों के अनुवाद और भद्रलोक के मनोरंजन तक सीमित रहा, परंतु शीघ्र ही बंगाली नाटककारों और कलाकारों ने इस यूरोपीय डिब्बेनुमा (Proscenium) मंच का अधिग्रहण (Appropriation) करके इसे औपनिवेशिक नीतियों, जमींदारी उत्पीड़न, सामाजिक कुरीतियों और नस्लीय श्रेष्ठता के दावों पर प्रहार करने वाले सांस्कृतिक हथियार में बदल दिया।

बंगाल में नाट्य परंपरा का विकास एक द्वंद्वात्मक (Dialectical) प्रक्रिया रहा है। एक तरफ जहाँ पश्चिमी प्रोसीनियम (डिब्बा–नुमा मंच) तकनीक का प्रभाव था, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण बंगाल की मौखिक और सहज लोक–परंपरा (जैसे जत्रा, पांचाली, कविगान) की मजबूत जड़ें थीं। इन दोनों धाराओं के संगम से जिस रंगमंच का जन्म हुआ, उसने केवल ब्रिटिश हुकूमत को ही नहीं, बल्कि उत्तर–औपनिवेशिक भारत में राज्य–प्रायोजित उत्पीड़न और पूंजीवादी विषमताओं को भी निरंतर चुनौती दी। औपनिवेशिक सरकार ने प्रेस और राजनीतिक सभाओं पर दमनकारी कानून (1876 का अधिनियम) बनाकर प्रतिबंध लगाए, तो रंगमंच ने एक 'वैकल्पिक/प्रति–सार्वजनिक क्षेत्र' के रूप में कार्य किया। थिएटर हॉल और बाद में बादल सरकार के आंगन मंच ऐसे स्थान बन गए जहाँ दर्शक केवल नाटक देखने नहीं आते थे, बल्कि नाटक समाप्त होने के बाद राजनीतिक बहसों में भाग लेते थे और क्रांतिकारी विचारों का आदान–प्रदान करते थे।

बंगाली नाट्य परंपरा की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उसने पश्चिमी कला रूप का अंधानुकरण नहीं किया। 19वीं सदी में यूरोपीय डिब्बेनुमा (Proscenium) मंच को अपनाते हुए भी उसमें 'जत्रा' के गीतों का समावेश किया गया। 1940 के दशक में इप्टा ने कला को महफिलों से निकालकर खेत–खलिहानों तक पहुँचाया। अंततः, 1970 के दशक में बादल सरकार ने यूरोपीय प्रोसीनियम डिब्बे को ही पूरी तरह खारिज करके 'थर्ड थिएटर' के माध्यम से कला का पूर्ण वि–औपनिवेशीकरण किया।

बंगाल में औपनिवेशिक नाट्य परंपरा में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक प्रतिरोध का स्वरूप :

प्रथम चरण : लोक-नाट्य 'जत्रा' का स्वदेशीकरण एवं राजनीतिकरण :

औपनिवेशिक काल से पूर्व बंगाल के ग्रामीण सामाजिक जीवन में 'जत्रा' (Jatra) का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। मूलतः यह वैष्णव आंदोलन (चैतन्य महाप्रभु) से प्रेरित धार्मिक और पौराणिक प्रदर्शन कला थी, जो खुले मैदानों में बिना किसी मंच–सज्जा के रात भर चलती थी।

20वीं सदी के प्रारंभ में 'बंग–भंग' (1905) और 'स्वदेशी आंदोलन' के दौरान इस लोक–कला का अभूतपूर्व राजनीतिकरण हुआ। मुकुंद दास (मुकुंद लाल दे – 1878–1934) ने 'स्वदेशी जत्रा' की स्थापना करके लोक–कला को सीधे साम्राज्यवाद विरोधी युद्ध में बदल दिया।

मुकुंद दास का योगदान : वे अपने दल के साथ गाँवों में जाते और मातृपूजा, पल्ली–सेवा, तथा

ब्राह्मण–कन्या जैसे नाटकों का मंचन करते थे। इन नाटकों में ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार, मैनचेस्टर के कपड़ों को जलाने, स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने और जमींदारों के शोषण को उजागर किया जाता था।

औपनिवेशिक दमन : मुकुंद दास के ओजस्वी गीतों और संवादों से घबराकर ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया और तीन साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। जत्रा ने यहाँ सिद्ध किया कि लोक–माध्यम अभिजात वर्गीय नियंत्रण से मुक्त रहकर सबसे प्रभावी प्रतिरोध रच सकते हैं।

द्वितीय चरण : 'नील दर्पण' का विस्फोट और 1876 का नाट्य अभिनय अधिनियम :

1860 में ढाका से अनाम (Anonymously) रूप से प्रकाशित दीनाबंधु मित्र के नाटक 'नील दर्पण' (Nil Darpan & The Indigo Planting Mirror) ने बंगाली रंगमंच के इतिहास को सदा के लिए बदल दिया। यह नाटक बंगाल के किसानों पर यूरोपीय नील बागान मालिकों (Indigo Planters) द्वारा किए जा रहे अमानवीय शोषण, शारीरिक प्रताड़ना और महिलाओं पर अत्याचारों का नग्न यथार्थवादी दस्तावेज था।

(क) अनुवाद विवाद और जेम्स लॉन्ग का मुकदमा (1861) :

जब महान बंगाली कवि माइकल मधुसूदन दत्त ने इसका अंग्रेजी अनुवाद किया और रेवरेंड जेम्स लॉन्ग (एक उदारवादी ब्रिटिश पादरी) ने इसे प्रकाशित करवाकर ब्रिटिश संसद तक पहुँचाने का प्रयास किया, तो यूरोपीय बागान मालिकों की संस्था 'इंडिगो प्लांटर्स एसोसिएशन' ने उग्र विरोध किया।

बागान मालिकों ने जेम्स लॉन्ग पर 'मानहानि' और 'सरकार के खिलाफ नफरत फैलाने' का मुकदमा ठोक दिया।

कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट के ब्रिटिश जज ने जेम्स लॉन्ग को दोषी ठहराते हुए 1000 रुपये का जुर्माना और एक महीने की जेल की सजा सुनाई। इस जुर्माने की राशि को बंगाली बुद्धिजीवी कालीप्रसन्न सिंह ने तुरंत अदालत में भरकर अपना प्रतिरोध दर्ज कराया।

(ख) 1872 का मंचन और 1876 का दमनकारी कानून :

7 दिसंबर 1872 को जब गिरिश चंद्र घोष और उनके सहयोगियों ने 'नेशनल थिएटर' की स्थापना की, तो पहला व्यावसायिक नाटक 'नील दर्पण' ही चुना गया। इस नाटक के प्रदर्शनों ने पूरे बंगाल में औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ जन–आक्रोश की लहर पैदा कर दी। 1875 में जब यह नाटक लखनऊ में मंचित हो रहा था, तो नील बागान मालिकों के अत्याचार के दृश्य देखकर दर्शक–दीर्घा में बैठे ब्रिटिश सैन्य अधिकारी इतने उत्तेजित हो गए कि उन्होंने मंच पर हमला कर दिया।

घबराकर, भारत के तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड नॉर्थब्रुक ने नाट्य अभिनय अधिनियम 1876 (Dramatic Performances Act IX of 1876) लागू किया।

कानून के मुख्य दमनकारी प्रावधान :

- **पुलिस को असीमित अधिकार :** पुलिस कमिश्नर या जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार दिया गया कि वह किसी भी ऐसे नाटक के पूर्वाभ्यास, प्रदर्शन या पांडुलिपि पर रोक लगा सकता है जिसे सरकार 'राजद्रोही', 'अश्लील' या 'लोक शांति के लिए खतरनाक' समझे।
- **लाइसेंसिंग प्रणाली :** किसी भी सार्वजनिक थिएटर को शुरू करने से पहले ब्रिटिश प्रशासन से पूर्व–अनुमति और लाइसेंस लेना अनिवार्य कर दिया गया।
- **सेंसरशिप का शिकंजा :** यह कानून भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोंटने वाला पहला

संगठित औपनिवेशिक विधायी ढांचा था।

तृतीय चरण : सेंसरशिप और रूपकात्मक/प्रतीकात्मक प्रतिरोध :

1876 के कानून के लागू होने के बाद, पुलिस की पैनी नजर से बचने के लिए बंगाली नाटककारों ने प्रतिरोध का तरीका बदला। उन्होंने प्रत्यक्ष राजनैतिक नाटकों के स्थान पर पौराणिक, ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक रूपकों (Allegories) का सहारा लिया।

(क) गिरिश चंद्र घोष और ऐतिहासिक रूपक :

गिरिश चंद्र घोष (1844–1912) ने इतिहास के पन्नों का सहारा लेकर राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। उनके नाटक 'सिरोजुद्दौला' (1906), 'मीर कासिम' (1906), और 'छत्रपति शिवाजी' (1907) प्रत्यक्ष रूप से बंगाल के अंतिम नवाब और मराठा साम्राज्य के इतिहास पर आधारित थे, लेकिन उनका असली उद्देश्य 1905 के 'बंग–भंग' विरोधी आंदोलनों को वैचारिक बल प्रदान करना था।

'सिरोजुद्दौला' में पलासी के युद्ध के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी के छल–कपट और भारतीय गद्दारों (मीर जाफर) को नग्न किया गया था।

ब्रिटिश सरकार ने 1910 में 'इम्पीरियल प्रेस एक्ट' के तहत सिरोजुद्दौला और मीर कासिम के मंचन और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया।

(ख) रवींद्रनाथ टैगोर का प्रतीकात्मक रंगमंच :

रवींद्रनाथ टैगोर (1861–1941) ने पारंपरिक और औपनिवेशिक दोनों प्रकार के रंगमंच की सीमाओं को तोड़ते हुए एक मौलिक 'प्रतीकात्मक रंगमंच' (Symbolic Theatre) की रचना की :

- **रक्त करबी (Red Oleanders – 1924) :** यह नाटक यक्षपुरी नामक एक काल्पनिक नगर की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ का राजा सोने की खदानों से धन निकालने के लिए मजदूरों को लोहे के जाल के पीछे कैद रखता है और उनके नाम छीनकर उन्हें नंबर दे देता है। 'नंदिनी' नामक एक युवती मानवीय प्रेम, प्रकृति और स्वतंत्रता का प्रतीक बनकर आती है और राजा के यांत्रिक साम्राज्य की जड़ों को हिला देती है। यह नाटक पश्चिमी औद्योगिकीकरण, साम्राज्यवादी शोषण और पूंजीवादी गुलामी पर टैगोर का सबसे तीखा सांस्कृतिक प्रहार था।
- **मुक्तधारा (1922) :** यह नाटक उत्तरकूट के राजा द्वारा एक विशाल बाँध बनाकर छिपर नदी के पानी को रोकने और पड़ोसी राज्य के लोगों को प्यासा मारकर अधीन करने की कहानी है। यह नाटक राज्य–सत्ता द्वारा प्रकृति के विनाश और साम्राज्यवादी नियंत्रण के खिलाफ जन–प्रतिरोध का प्रतीक है।

चतुर्थ चरण : सबाल्टर्न चेतना और जेंडर प्रतिरोध (नटी बिनोदिनी)

बंगाली रंगमंच का इतिहास केवल औपनिवेशिक विरोधी संघर्ष तक सीमित नहीं है। यह अंदरूनी सामाजिक विषमताओं और पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के खिलाफ प्रतिरोध की गाथा भी है। 19वीं सदी के मध्य में जब व्यावसायिक रंगमंच शुरू हुआ, तो भद्रलोक हिंदू समाज ने अपनी कुलवधू या संभ्रांत महिलाओं को मंच पर अभिनय करने की अनुमति नहीं दी।

परिणामस्वरूप, रंगमंच के संस्थापकों ने कलकत्ता के लाल–बत्ती क्षेत्रों से महिलाओं को लाकर उन्हें मुख्य अभिनेत्रियों के रूप में प्रशिक्षित किया। इनमें बिनोदिनी दासी (नटी बिनोदिनी – 1863–1941) सबसे प्रमुख थीं।

- **नटी बिनोदिनी का योगदान और छलावा :** बिनोदिनी ने चैतन्य लीला, प्रह्लाद चरित्र, और प्रमद कानन

में अद्वितीय अभिनय किया। जब 'नेशनल थिएटर' आर्थिक संकट में फँसा, तो एक अमीर संरक्षक (गुर्माख राय) ने इस शर्त पर धन देने की पेशकश की कि नए थिएटर भवन का नाम बिनोदिनी के नाम पर 'B-Theatre' रखा जाएगा। बिनोदिनी ने कला के लिए अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का बलिदान दिया, किंतु थिएटर बनने के बाद भद्रलोक समाज के पुरुष प्रबंधकों ने एक वेश्या के नाम पर थिएटर का नाम रखने से मना कर दिया और उसका नाम 'स्टार थिएटर' (Star Theatre – 1883) रख दिया।

- **'अमार कथा' (मेरी कहानी – 1912) के माध्यम से प्रतिरोध :** नटी बिनोदिनी ने अपनी आत्मकथा अमार कथा लिखकर भद्रलोक समाज के नैतिक खोखलेपन, पुरुष–प्रधान शोषण और रंगमंच के भीतर के पदानुक्रम का बेबाकी से पर्दाफाश किया। यह पुस्तक सबाल्टर्न (Subaltern) और जेंडर प्रतिरोध की पहली महान कृति मानी जाती है।

पंचम चरण : 1940 का दशक : अकाल, इप्टा (IPTA) और 'नवान्न' का यथार्थवाद :

1940 का दशक बंगाल के इतिहास का सबसे त्रासदीपूर्ण चरण था। द्वितीय विश्व युद्ध, 1943 का 'मैन–मेड' बंगाल अकाल (जिसमें 30 लाख से अधिक लोग भुखमरी से मारे गए), 1946 का 'तेभागा आंदोलन' और सांप्रदायिक दंगों ने पारंपरिक रंगमंच के पूरे सौंदर्यशास्त्र को ध्वस्त कर दिया।

25 मई 1943 को भारतीय जन नाट्य संघ (IPTA - Indian People's Theatre Association) का गठन हुआ। इप्टा का मूल मंत्र था : 'कला केवल कला के लिए नहीं, बल्कि कला जनता की मुक्ति के लिए है।'

'नवान्न' (1944) की यथार्थवादी क्रांति :

बिजन भट्टाचार्य द्वारा लिखित तथा शंभू मित्र एवं बिजन भट्टाचार्य द्वारा संयुक्त रूप से निर्देशित नाटक 'नवान्न' (Nabanna) ने भारतीय नाट्य इतिहास में यथार्थवाद (Realism) के नए युग की शुरुआत की :

- **विषय–वस्तु में बदलाव :** 'नवान्न' ने मंच से राजाओं और कुलीन पात्रों को हटाकर 1943 के अकाल से तबाह हुए ग्रामीण बंगाल के एक बूढ़े किसान 'प्रधान समद्दार' और उसके परिवार की करुण दास्तान को स्थापित किया।
- **भाषा और अभिनय का यथार्थवाद :** नाटक में कलकत्ता की परिष्कृत भाषा के स्थान पर पूर्वी बंगाल की वास्तविक ग्रामीण बोली (Dialect) का प्रयोग किया गया।
- **जन–आंदोलन के रूप में मंचन :** 'नवान्न' का प्रदर्शन केवल प्रेक्षागृहों तक सीमित नहीं रहा। इप्टा की नाट्य मंडलियों ने इसे खुले मैदानों, कारखानों के फाटकों और गाँवों में जाकर ट्रकों पर मंचित किया।

निष्कर्ष (Conclusion)

बंगाल की नाट्य परंपरा का यह गहन ऐतिहासिक और आलोचनात्मक अनुशीलन सिद्ध करता है कि भारतीय महाद्वीप में रंगमंच कभी भी यथार्थवादी जीवन से कटा हुआ केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा। 18वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर 20वीं सदी के अंत तक, बंगाली रंगमंच ने ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने, पुनर्गठित करने और प्रतिरोध के नए–नए रूपों का आविष्कार करने की अद्‌भुत क्षमता दिखाई है। जब ब्रिटिश साम्राज्य ने 1876 के कानून के जरिए सेंसरशिप की बेड़ियाँ डालीं, तो बंगाली रंगमंच ने ऐतिहासिक और पौराणिक रूपकों का सहारा लेकर जन–चेतना को जीवित रखा। जब 1943 के अकाल ने सामाजिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर दिया, तो इप्टा और बिजन भट्टाचार्य के 'नवान्न' ने यथार्थवाद को जन–आंदोलन का हथियार बना दिया। जब उत्तर–औपनिवेशिक काल में प्रोसीनियम मंच बुर्जुआ वर्ग का एकाधिकार बनने लगा,

तो बादल सरकार के 'थर्ड थिएटर' ने रंगमंच को चार दीवारों से मुक्त कर के सड़कों, पार्कों और आम जनता के हाथों में सौंप दिया।

इसके साथ ही, नटी बिनोदिनी जैसे पात्रों के माध्यम से इस रंगमंच ने भद्रलोक पितृसत्ता के दोहरे मानदंडों को चुनौती देकर जेंडर–प्रतिरोध का स्वर्णिम अध्याय लिखा। बंगाल की यह समृद्ध प्रतिरोध–परंपरा आज भी दुनिया भर के रंगकर्मियों, शोधकर्ताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए वैचारिक और कलात्मक प्रेरणा का एक कालजयी स्रोत बनी हुई है।

संदर्भ (References) :

- दत्त, उत्पल. (1980). गिरिशचंद्र घोष और बंगाली रंगमंच. राजकमल प्रकाशन.
- दास, मुकुंद. (1953). स्वदेशी जत्रा और चारण गीत. ग्रंथम.
- भट्टाचार्य, बिजन. (2015). नवान्न (समीक्षित संस्करण). भारतीय ज्ञानपीठ.
- मित्र, दीनाबंधु. (2018). नील दर्पण (संपादन : डॉ. अमिय चक्रवर्ती). वाणी प्रकाशन.
- सहानवीस, सी. (1985). इप्टा और भारतीय जन–संस्कृति आंदोलन. मैकमिलन पब्लिशर्स.
- Bandyopadhyay, S. (2011). Actresses on the Bengali Stage : History, memoir and resistance. Primus Books.
- Bharucha, R. (1983). Rehearsing Armageddon: Theatre in social change in the West Bengal of the 1970s. Seagull Books.
- Bhattacharya, M. (2009). Taking wings: The theatre of Bengal. National Book Trust.
- Chatterjee, P. (1993). The nation and its fragments: Colonial and postcolonial histories. Princeton University Press.
- Dasi, Binodini. (1998). My story and my life as an actress (R. Rimli, Trans. & Ed.). Kali for Women. (Original work published 1912).
- Dasgupta, H. N. (1944). The Indian stage (Vols. 1–4). Metropolitan Printing & Publishing House.
- Dutt, U. (1979). Towards a revolutionary theatre. M.C. Sarkar & Sons.
- Gargi, B. (1962). Folk theater of India. University of Washington Press.
- Gramsci, A. (1971). Selections from the prison notebooks (Q. Hoare & G. N. Smith, Trans.). International Publishers.
- Habermas, J. (1989). The structural transformation of the public sphere: An inquiry into a category of bourgeois society (T. Burger, Trans.). MIT Press.
- Mukherjee, S. K. (1982). The story of the Calcutta theatre: 1753–1980. Sanjoy Prakashan.
- Mukhopadhyay, T. (2014). Colonialism, nationalism and the Bengali stage. Routledge.
- Sircar, B. (1982). The third theatre. Seagull Books.
- Tagore, R. (2002). Red oleanders (Rakta karabi). Rupa & Co. (Original work published 1924).

ईमेल : sanjays2612@gmail.com

ईमेल : narayanbhagat.bhu@gmail.com

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 135-141

डिजिटल युग में लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण

डॉ. प्रवीन शर्मा
सहायक आचार्या,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

परिचय :

लोककथाएँ और मिथक भारतीय संस्कृति और समाज का अनिवार्य अंग रहे हैं। ये कथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक नैतिकता, जीवन मूल्यों, आदर्श व्यवहार, और सांस्कृतिक पहचान के वाहक भी हैं। वे पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक या लिखित रूप में हस्तांतरित होती रही हैं। भारतीय समाज में कथाएँ न केवल बच्चों को नैतिक शिक्षा देती हैं, बल्कि युवाओं और वयस्कों को भी जीवन, धर्म, और समाज के जटिल प्रश्नों से परिचित कराती हैं।

डिजिटल युग का संदर्भ :

वर्तमान में हम जिस डिजिटल युग में प्रवेश कर चुके हैं, उसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने लोककथाओं और मिथकों के पुनर्निर्माण को एक नया आयाम दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, डिजिटल पब्लिकेशन, वीडियो स्ट्रीमिंग, वेब सीरीज और गेमिंग जैसे माध्यम पारंपरिक कथाओं को संरक्षित करने के साथ–साथ उन्हें नए दृष्टिकोण, रूप और शैली देने का कार्य कर रहे हैं।

शोध का उद्देश्य :

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल माध्यमों के माध्यम से लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण किस प्रकार हुआ है। विशेषकर यह अध्ययन :

- **सांस्कृतिक प्रभाव :** पारंपरिक कथाओं का समाज और संस्कृति पर प्रभाव।
- **नवसृजन :** कथाओं में पात्रों, कथानक और दृष्टिकोण का नया रूप।
- **वैश्विक प्रसार :** कथाओं की अंतर्राष्ट्रीय पहुँच और बहुभाषी प्रस्तुति।
- **मनोवैज्ञानिक प्रभाव :** डिजिटल प्रस्तुति से मानव चेतना, स्मरण शक्ति और नैतिक समझ पर पड़ने वाले प्रभाव।

1. भूमिका :

लोककथाएँ और मिथक भारतीय समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्षनिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं। ये केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि पीढ़ियों तक नैतिक मूल्य, जीवन दर्शन और सामाजिक आदर्श संप्रेषित करने का माध्यम भी रही हैं। परंपरागत रूप से, लोककथाएँ मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित होती थीं, जिसमें गांव–शहर, परिवार और समाज के बुजुर्ग अपने अनुभव और नैतिक शिक्षाओं को कथाओं के रूप में युवा पीढ़ी तक पहुँचाते थे। मिथक, इसके विपरीत, धार्मिक या दार्शनिक संदर्भों में विकसित हुए हैं, जो

ब्रह्मांड, जीवन, देवताओं और मानव व्यवहार के रहस्यों का दर्शन प्रस्तुत करते हैं।

डिजिटल युग का संदर्भ :

वर्तमान समय में हम जिस डिजिटल युग में जी रहे हैं, उसने लोककथाओं और मिथकों के स्वरूप और प्रसार को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया है। सोशल मीडिया, यूट्यूब, डिजिटल पब्लिशिंग, ऑनलाइन गेमिंग और वेब सीरीज ने इन कथाओं को केवल संरक्षित करने का कार्य नहीं किया, बल्कि उन्हें नए पात्र, कथानक और दृश्यात्मक प्रस्तुति के माध्यम से पुनर्निर्मित भी किया। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र या रामायण जैसी कथाओं का डिजिटल एनिमेशन, वेब सीरीज और इंटरैक्टिव गेम्स के माध्यम से प्रस्तुत होना, युवाओं को परंपरा से जोड़ने का एक नया मार्ग प्रस्तुत करता है।

शोध का महत्व :

डिजिटल युग में लोककथाओं और मिथकों के पुनर्निर्माण का अध्ययन इसलिए आवश्यक है, क्योंकि :

- **सांस्कृतिक संरक्षण :** पारंपरिक कथाओं का डिजिटल रूप उन्हें नष्ट होने से बचाता है और उन्हें वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाता है।
- **नवसृजन और बहुलता :** डिजिटल माध्यम कथाओं में नए पात्र, दृष्टिकोण और कहानी शैली जोड़कर कथाओं को समकालीन संदर्भ में प्रासंगिक बनाते हैं।
- **शिक्षा और नैतिक मूल्य :** डिजिटल प्रस्तुति युवाओं और बच्चों में नैतिक शिक्षा और सामाजिक चेतना को सशक्त करती है।
- **वैश्विक प्रसार :** भारतीय लोककथाओं और मिथकों का वैश्विक स्तर पर प्रचार–प्रसार और बहुभाषी अनुवाद संभव हुआ है।

2. लोककथाएँ और मिथक : परिभाषा और सामाजिक भूमिका :

लोककथा और मिथक दोनों ही मानव समाज के सांस्कृतिक, नैतिक और दार्शनिक ढाँचे को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि दोनों में कुछ अंतर है, फिर भी दोनों का मुख्य उद्देश्य मानव अनुभव, सामाजिक व्यवहार और जीवन मूल्यों का संप्रेषण है।

लोककथा की परिभाषा और स्वरूप :

लोककथा उन कथाओं को कहते हैं जो समाज के सामान्य जीवन, अनुभव और कल्पना से उत्पन्न होती हैं। ये कथाएँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक या लिखित रूप में हस्तांतरित होती रही हैं। लोककथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि उनमें सामाजिक नैतिकता, आदर्श व्यवहार और जीवन शिक्षा भी निहित होती है।

मुख्य विशेषताएँ :

- **मौखिक परंपरा :** प्रारंभिक रूप में लोककथाएँ समाज के बुजुर्गों द्वारा बच्चों और युवाओं को सुनाई जाती थीं।
- **सामाजिक संदेश :** कथाओं में प्रायः नैतिक शिक्षा, साहस, न्याय, मित्रता, और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश होता है।
- **सरल और सुसंगत भाषा :** लोककथाओं की भाषा सरल, स्पष्ट और समाज के लिए सहज रूप से समझी जाने वाली होती है।
- **सांस्कृतिक संदर्भ :** हर कथा स्थानीय संस्कृति, रीति–रिवाज, सामाजिक संरचना और परंपराओं को

प्रतिबिंबित करती है।

उदाहरण : पंचतंत्र की कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं हैं। वे सामाजिक समझ, नीति, और व्यवहार के सूत्र भी सिखाती हैं। इसी प्रकार "ससूराल की कहानियाँ" या ग्रामीण कथाएँ समाज की आदतों और मूल्य प्रणाली को चित्रित करती हैं।

मिथक की परिभाषा और स्वरूप :

मिथक प्रायः धार्मिक, दार्शनिक या सांस्कृतिक संदर्भ में उत्पन्न कथाएँ होती हैं। इनका उद्देश्य केवल कहानी कहना नहीं है, बल्कि ब्रह्मांड, जीवन, मृत्यु, धर्म और नैतिकता के रहस्यों को समझाना होता है।

मुख्य विशेषताएँ :

- **दार्शनिक और धार्मिक संदर्भ :** मिथक देवताओं, ब्रह्मांडीय शक्तियों और जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझाने का माध्यम होते हैं।
- **अत्यधिक प्रतीकात्मकता :** इसमें प्रतीक, रूपक और रूपांतरण के माध्यम से गहन संदेश होते हैं।
- **सांस्कृतिक स्मृति :** मिथक समाज की सांस्कृतिक स्मृति और मूल्यों को संरक्षित करते हैं।

उदाहरण :

- रामायण और महाभारत केवल कथाएँ नहीं हैं ये धर्म, नीति, और सामाजिक आदर्श का मार्गदर्शन करती हैं।
- देवी–देवताओं और लोककथाओं में व्यक्त साहस, दया, और न्याय जैसे मूल्य समाज में आदर्श रूप से प्रतिध्वनित होते हैं।

सामाजिक भूमिका :

लोककथा और मिथक का समाज में कई प्रकार का प्रभाव होता है। इन्हें केवल मनोरंजन नहीं माना जा सकता। बल्कि ये समाजिक, शैक्षिक और नैतिक ढांचे का निर्माण करते हैं।

1. **सामाजिक समरसता :**

- लोककथाएँ समाज के सभी वर्गों में साझा अनुभव और सामूहिक चेतना का निर्माण करती हैं।
- उदाहरण : गांव में सामूहिक कथाएँ सुनना एक समुदायिक अनुभव होता था, जो सामाजिक जुड़ाव को मजबूत करता था।

2. **नैतिक और शैक्षिक संदेश :**

- कथाएँ बच्चों और युवाओं को नैतिक शिक्षा और व्यवहार की समझ देती हैं।
- पंचतंत्र या जीवनोपयोगी कथाएँ दैनिक जीवन में नैतिक निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाती हैं।

3. **सांस्कृतिक पहचान और धरोहर :**

- लोककथा और मिथक समाज की सांस्कृतिक पहचान का निर्माण करते हैं।
- वे विभिन्न भाषाओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक संरचनाओं को संरक्षित रखते हैं।

4. **मानवीय अनुभव और चेतना का विकास :**

- कथाएँ भावनाओं, साहस, संघर्ष और सफलता जैसे मानवीय अनुभवों को व्यक्त करती हैं।
- युवा पीढ़ी में सहानुभूति, न्याय और साहस जैसे गुण विकसित होते हैं।

लोककथा और मिथक का आधुनिक महत्व :

वर्तमान डिजिटल युग में, जहां सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभाव बढ़ रहा है, लोककथा और मिथक का महत्व और भी बढ़ गया है। ये कथाएँ अब केवल ग्रामीण या पारंपरिक समाज तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर युवा पीढ़ी तक पहुँच रही हैं। डिजिटल माध्यम के माध्यम से :

- परंपरा का संरक्षण किया जा सकता है।
- नए स्वरूप और प्रस्तुति के माध्यम से कथाओं को रोचक बनाया जा सकता है।
- वैश्विक और बहुभाषी पहुँच सुनिश्चित की जा सकती है।

3. डिजिटल युग में लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण :

डिजिटल युग ने भारतीय लोककथाओं और मिथकों को संरक्षण, पुनर्निर्माण और वैश्विक प्रसार के नए आयाम प्रदान किए हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्स, वेब सीरीज और गेमिंग जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म ने पारंपरिक कथाओं को नए स्वरूप, दृष्टिकोण और प्रस्तुति शैली में पेश किया है। इस भाग में हम विस्तार से देखेंगे कि डिजिटल तकनीक किस प्रकार लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण कर रही है।

डिजिटल माध्यम और कथा प्रस्तुति :

1. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म :

सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और यूट्यूब पर लोककथा आधारित सामग्री ने कथाओं को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का कार्य किया है।

- **उदाहरण :** यूट्यूब चैनल पर पंचतंत्र, लोककथाएँ, देवी–देवताओं की कहानियों का एनिमेशन और शॉर्ट वीडियो।
- **प्रभाव :** युवाओं और डिजिटल उपयोगकर्ताओं में पारंपरिक कथाओं के प्रति रुचि बढ़ी है।

2. वेब सीरीज और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म :

नेटफ्लिक्स, डिजनी हॉटस्टार और अन्य डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ने भारतीय मिथकों को नवीन दृष्टिकोण और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है।

- **उदाहरण :** रामायण और महाभारत के पात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण पर आधारित वेब सीरीज।
- **प्रभाव :** दर्शकों को पारंपरिक कथाओं के गहन अर्थ और पात्रों के व्यक्तित्व को समझने का अवसर मिलता है।

3. गेमिंग और इंटरैक्टिव मीडिया :

लोककथा और मिथक आधारित मोबाइल गेम्स और इंटरैक्टिव ऐप्स ने कथाओं को अनुभवात्मक और संवादात्मक रूप दिया है।

- खिलाड़ी पात्रों के निर्णय और कथानक को प्रभावित कर सकते हैं।
- युवा पीढ़ी में कथाओं के प्रति जागरूकता और जुड़ाव बढ़ता है।

डिजिटल पब्लिशिंग और ब्लॉग्स :

लोककथा और मिथक आधारित डिजिटल पब्लिकेशन और ब्लॉग ने कथाओं को सुलभ और बहुभाषी बनाया है।

- **उदाहरण :** हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में लोककथा और मिथक आधारित लेख, ई–बुक्स और पोडकास्ट।
- **प्रभाव :** यह पारंपरिक कथाओं को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने का माध्यम बनता है।

नवसृजन :

डिजिटल मंच केवल कथाओं को प्रस्तुत करने का माध्यम नहीं हैं वे उन्हें नवसृजन का अवसर भी प्रदान करते हैं।

- **नए पात्र और कथानक :** पारंपरिक पात्रों को नए संदर्भ में प्रस्तुत किया जा रहा है।
- **उदाहरण :** रामायण में रावण का दृष्टिकोण, या महाभारत में द्रौपदी की मानसिक अवस्था पर आधारित नई कहानियाँ।
- **दृश्यात्मक नवसृजन :** एनिमेशन, ग्राफिक उपस्थिति और AR/VR तकनीक के माध्यम से कथाओं को दृश्य और अनुभवात्मक रूप दिया जा रहा है।
- **संवाद और व्याख्या :** सोशल मीडिया और ब्लॉग्स पर कथा पर चर्चा, टिप्पणियाँ और आलोचना युवाओं को सक्रिय सहभागी बनाती हैं।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव :

डिजिटल पुनर्निर्माण के कुछ प्रमुख सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव हैं :

1. **सांस्कृतिक बहुलता और समावेशिता :**

- विभिन्न भाषाओं और समुदायों में डिजिटल प्लेटफॉर्म कथाओं के विभिन्न संस्करण और दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं।
- यह सांस्कृतिक बहुलता को बढ़ावा देता है और परंपराओं के प्रति समझ को व्यापक बनाता है।

2. **नैतिक और शैक्षिक प्रभाव :**

- युवा पीढ़ी डिजिटल प्रस्तुति के माध्यम से सामाजिक, नैतिक और दार्शनिक मूल्यों को सीख रही है।
- **उदाहरण :** पंचतंत्र की कहानियाँ बच्चों को निर्णय लेने और सामाजिक व्यवहार की समझ देती हैं।

3. **वैश्विक प्रसार :**

- डिजिटल माध्यम ने भारतीय लोककथाओं और मिथकों को देश और सीमाओं से बाहर पहुँचाया।
- विदेशी दर्शक भारतीय कथाओं, संस्कृति और दर्शन से परिचित हो रहे हैं।

4. **मौलिकता और जोखिम :**

- जबकि डिजिटल प्रस्तुति कथाओं को लोकप्रिय बनाती है, कुछ प्रस्तुतियाँ केवल मनोरंजन या व्यावसायिक दृष्टि से होती हैं।
- इससे कथाओं के मूल संदेश और नैतिक शिक्षा प्रभावित हो सकती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण :

डिजिटल माध्यम में कथाओं का पुनर्निर्माण केवल सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि मानव चेतना और मानसिक विकास पर भी इसका असर पड़ता है :

- **स्मरण और सीखने की क्षमता :** दृश्यात्मक और इंटरैक्टिव प्रस्तुति कथाओं को यादगार और अनुभवात्मक बनाती है।

- **सहानुभूति और नैतिकता :** कथाओं में पात्रों और घटनाओं के अनुभव से युवाओं में सहानुभूति, न्याय और निर्णय क्षमता विकसित होती है।
- **सांस्कृतिक चेतना :** डिजिटल कथा अनुभव बच्चों और युवाओं में सांस्कृतिक पहचान और मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाता है।

4. निष्कर्ष :

डिजिटल युग में लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण केवल परंपराओं का संरक्षण नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक नवसृजन, वैश्विक प्रसार और मानव चेतना के विकास का भी एक प्रभावशाली माध्यम बन गया है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल तकनीक ने पारंपरिक कथाओं और मिथकों को नए स्वरूप, दृष्टिकोण और प्रस्तुति शैली प्रदान की है।

मुख्य निष्कर्ष :

1. संरक्षण और नवसृजन :

- डिजिटल माध्यमों जैसे सोशल मीडिया, वेब सीरीज, गेमिंग और डिजिटल पब्लिशिंग ने कथाओं को संरक्षित रखने के साथ–साथ नवसृजन का अवसर भी प्रदान किया है।
- **उदाहरण :** पंचतंत्र और रामायण जैसी कथाओं को नए पात्रों, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और इंटरैक्टिव शैली में प्रस्तुत किया जा रहा है।

2. सांस्कृतिक बहुलता और वैश्विक प्रसार :

- डिजिटल मंचों ने लोककथाओं और मिथकों को बहुभाषी और वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया है।
- यह न केवल भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर प्रस्तुत करता है, बल्कि सांस्कृतिक बहुलता और संवाद को भी बढ़ावा देता है।

3. शिक्षा और नैतिक मूल्य :

- डिजिटल प्रस्तुति कथाओं को स्मरणीय और अनुभवात्मक बनाती है।
- युवा पीढ़ी में नैतिक शिक्षा, सहानुभूति, न्याय और सामाजिक समझ विकसित होती है।

4. मानव चेतना और मनोवैज्ञानिक प्रभाव :

- इंटरैक्टिव और दृश्यात्मक प्रस्तुति से कथा अनुभव अधिक गहन और यादगार होता है।
- इससे सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक पहचान और नैतिक मूल्य संरक्षित रहते हैं।

5. मौलिकता और चुनौतियाँ :

- डिजिटल प्रस्तुति के माध्यम से कथाएँ मनोरंजन या व्यावसायिक दृष्टि से प्रस्तुत होने लगी हैं।
- यह मूल संदेश और सामाजिक/नैतिक मूल्य को प्रभावित कर सकता है। इसलिए डिजिटल पुनर्निर्माण में सांस्कृतिक संदर्भ और नैतिक संदेश का संरक्षण आवश्यक है।

डिजिटल युग ने लोककथाओं और मिथकों को संचार और प्रस्तुति के नए आयाम प्रदान किए हैं। यह केवल कथाओं का संरक्षण नहीं, बल्कि मानव चेतना, सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक पहचान को विकसित करने का भी माध्यम बन गया है। यदि डिजिटल पुनर्निर्माण में मौलिकता, सांस्कृतिक संदर्भ और नैतिक शिक्षा का ध्यान रखा जाए, तो यह समाज, संस्कृति और युवा पीढ़ी के लिए सशक्त और सकारात्मक साधन बन सकता है।

संदर्भ सूची :

- द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद. कबीर. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- शर्मा, रामविलास. हिंदी साहित्य की भूमिका. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- वर्मा, नामवर सिंह. कहानी : नई कहानी. राजकमल प्रकाशन।
- सिंह, नामवर. इतिहास और आलोचना. राजकमल प्रकाशन।
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. लोकभारती प्रकाशन।
- शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. लोकभारती प्रकाशन।
- शुक्ल, रामचंद्र. चिंतामणि. लोकभारती प्रकाशन।
- पांडेय, हजारीप्रसाद. भारतीय संस्कृति और साहित्य. राजकमल प्रकाशन।
- वाजपेयी, नंददुलारे. हिंदी साहित्य का विकास. वाणी प्रकाशन।

sharmaparveen76@gmail.com

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 142-146

तृतीय लिंगी समुदाय में यौन कुंठा एंव प्रेम संबंध : एक अध्ययन

जयश्री कुमावत, शोधार्थी
डॉ प्रियंका यादव, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक,
मणिपाल युनिवर्सिटी, जयपुर।

सारांश :

किन्नर समुदाय भारतीय समाज का एक ऐसा वर्ग है, जिसे लंबे समय से सामाजिक उपेक्षा, तिरस्कार और बहिष्कार का सामना करना पड़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन में शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक सम्मान तथा प्रेम–संबंधों एवं दैनंदिन जीवन की गहरी संकटपूर्ण परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। यौन केवल जैविक इच्छाओं के दमन का परिणाम नहीं होता, बल्कि पारिवारिक तिरस्कार, विषम सामाजिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक स्वीकृति के अभाव तथा मनोवैज्ञानिक स्थितियों के सम्मिलित प्रभाव से निर्मित एक बहुआयामी मानसिक अवस्था है। किन्नर समुदाय का अधिकांश वर्ग प्रेम, विश्वास और पारिवारिक जीवन की सामान्य संरचना से वंचित रह जाता है। परिणामस्वरूप उनके भीतर असुरक्षा, उपेक्षा, आत्म–संकट एवं अस्तित्वगत संघर्ष जैसी मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ विकसित होती हैं। हिन्दी साहित्य के किन्नर केंद्रित उपन्यास – यमदीप, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, मैं पायल, जिन्दगी 50–50 और अस्तित्व की तलाश में सिमरन में यह पीड़ा केवल बहिष्कार के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम की असफलता और यौन दमन की त्रासदी के रूप में भी व्यक्त हुई है। इस शोध पत्र में इन दोनों आयामों का समन्वित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – किन्नर समुदाय, यौन कुंठा, प्रेम संबंध, लैंगिक अस्मिता, सामाजिक बहिष्कार, मनोवैज्ञानिक संघर्ष।

प्रस्तावना –

मनुष्य जीवन का मूलाधार केवल जैविक अस्तित्व नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक एवं यौनिक संतुलन भी है। प्रत्येक मनुष्य प्रेम करने, प्रेम प्राप्त करने तथा आत्मीय संबंध स्थापित करने की स्वाभाविक आकांक्षा रखता है। किंतु जब समाज किसी वर्ग को उसकी लैंगिक पहचान के कारण प्रेम, विवाह और सामाजिक स्वीकृति से वंचित कर देता है, तब उसके भीतर उत्पन्न मानसिक तनाव क्रमशः यौन कुंठा का रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार प्रेम भी मनुष्य की अंतश्चेतना का सबसे सुखद अनुभव होता है, किंतु किन्नर समुदाय के लिए यही अनुभव प्रायः संघर्ष और पीड़ा का पर्याय बन जाता है। जब किन्नर किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम अनुभव करता है, तब उसके सामने सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक विरोध और भविष्य की अनिश्चितता जैसी अनेक बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं।

उनके जीवन की इसी उपेक्षा और अस्वीकार के कारण उनमें अनेक मानसिक तथा सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यौन भावना किसी भी इंसान की स्वाभाविक आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति प्रेम, अपनापन एवं भावनात्मक संबंध चाहता है। किंतु तृतीय लिंगी समुदाय के लोगों को समाज में न तो सहज स्वीकार्यता ही

मिलती है और न ही सामान्य पारिवारिक और वैवाहिक जीवन जीने का अवसर। सभ्य समाज के लोग उन्हें तिरस्कार या मजाक की दृष्टि से देखते हैं। जिसके कारण वे अपने मन की भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते हैं। यह स्थिति यौन कुंठा की ओर ले जाती है। किन्नरों की यौन कुंठा का मुख्य कारण सामाजिक रूप से अस्वीकरण है। अधिकांश परिवार ऐसे होते हैं जो अपने किन्नर बच्चे को स्वीकार नहीं करते हैं। अस्वीकरण की स्थिति में वे बचपन में ही घर छोड़ने को मजबूर होते हैं।

वे यौन विषयों पर खुलकर चर्चा नहीं कर पाते और समाज व परिवार के लोग उनकी समस्याओं को समझने के बजाय उन्हें नजरअंदाज करते हैं। जिससे उनके अन्दर यौन कुंठा जन्म लेती है। समाज किन्नरों को न तो पूर्ण पुरुष मानता है और न स्त्री। यही अस्वीकार्यता की स्थिति उनमें मानसिक और यौन कुंठा उत्पन्न करती है। हिन्दी के कई उपन्यासों में यह बताया गया है कि तृतीय लिंगी समुदाय के लोग भी प्रेम, अपनापन और शारीरिक संबंधों की इच्छा रखते हैं, लेकिन समाज उन्हें इस अधिकार से परे रखता है। ऐसा ही विवरण हिन्दी उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में भी दिखाई देता है बिन्नी उर्फ विनोद ज्योत्सना नामक लड़की से प्रेम करता है और उससे शादी भी करना चाहता है।

'तब मुझे समझ नहीं थी न बा। ज्योत्सना के काबिल नहीं हूं न मैं। मुझे लगता है बा, मैं कुछ बन जाता तो इससे ब्याह जरूर करता। सब कुछ बता देता उसे कह देता, तू मुझसे फेरे भर ले ले। अपनी इच्छाएं जीने के लिए तू स्वतंत्र है। बच्चा हम गोद ले लेंगे। गोद नहीं लेना चाहेगी तो जिससे मर्जी हो, बच्चा पैदा कर ले। खुशी-खुशी मैं उसे अपना नाम दूंगा। वे सारे सुख दूंगा जो बाप से औलाद उम्मीद करती है।'[1]

किन्नरों के जीवन में केवल सामाजिक उपेक्षा ही नहीं होती बल्कि उनके जीवन की एक बड़ी त्रासदी उनकी अधूरी इच्छाएँ और अपूर्ण दाम्पत्य जीवन है। तथाकथित सभ्य समाज इनको मनुष्य मानने से पहले उनके शरीर को तौलता है, इसलिए वे विवाह, प्रेम और परिवार जैसे सामान्य अधिकारों से भी परे हो जाते हैं। इस उपन्यास में किन्नर पात्र विनोद के भीतर छुपी यौन–कुंठा मार्मिक रूप में उभरकर दिखाई पड़ती है। किन्नर भी पत्नी और संतान का सुख पाना चाहते हैं। परन्तु उनकी लैंगिक अस्मिता उनके रास्ते में दीवार बनकर रहती है। वह ज्योत्सना से कहना चाहता है कि यदि वह संतान उत्पन्न नहीं कर सकता तो गोद लेकर भी पिता बनने का सुख प्राप्त कर सकता है। यह बात इस ओर संकेत करता है उसके भीतर दबे हुए पुरुषत्व–बोध है जो समाज में स्वीकृति नहीं मिलने के कारण लगातार टूटता रहता है। प्रेम संबंध पाने की स्वाभाविक आकांक्षा उनके भीतर घुटती रहती है। किन्नर भी सामान्य मनुष्यों की तरह स्नेह, अपनापन और भावनात्मक सहारा चाहते हैं। लेकिन यह समाज उनके प्रेम को स्वीकार नहीं करता। विनोद का प्रेम भी ज्योत्सना के प्रति निष्कलुष और समर्पित दिखाई देता है। वह उसे हर सुख देने की बात करता है तथा उनके जीवन को अधूरा नहीं रहने देना चाहता है। विनोद का प्रेम वासना से अधिक आत्मीयता और त्याग पर आधारित है। सभ्य समाज की संकीर्ण मानसिकता उनके प्रेम संबंधों और रिश्तों को मान्यता नहीं देती, इसलिए उनका प्रेम अक्सर अधूरा रह जाता है। वे अपने प्रियजन को खोने के डर में जीते हैं और इस कारण उनका प्रेम भीतर ही भीतर पीड़ा और कुंठा में बदलने लगता है।

इसी प्रकार 'यमदीप' उपन्यास में भी यही बताया है कि किन्नर जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी केवल सामाजिक उपेक्षा ही नहीं है बल्कि दबी हुई यौन–कुंठा भी है। समाज द्वारा तिरस्कृत किये किन्नर अपनी शारीरिक आकांक्षाओं और प्रेम–इच्छाओं को खुलकर जी नहीं पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनके अन्दर ऐसी

पीड़ा जन्म लेती है, जो मानसिक घुटन का रूप धारण कर लेती है।

'नाज की आँखों में एक चमक जाग उठी। होमगार्ड रामसरन का सांवला कुटिल चेहरा उसकी आंखों के सामने नाच उठा था, जिसकी पत्नी को मरे तीन वर्ष हो चुके थे और जिसने कई बार नाज से अपनी कोती बन जाने का लोलुप आग्रह किया था।'[2]

इस अंश में गुरु द्वारा जब नाज को गिरिया रखने की परंपरा को स्वीकृति देना इसी दबी हुई कामना का संकेत है। यह केवल शारीरिक संबंध का प्रश्न नहीं, बल्कि अपनत्व और प्रेम पाने की आकांक्षा भी दिखाई देती है। नाज की आँखों में चमक आना यह दिखाता है कि नाज के मन में होमगार्ड रामसरन के प्रति आकर्षण है। तृतीय लिंगी लोग भी सामान्य मनुष्यों की तरह प्रेम और सहारे की चाह रखते हैं। रामसरन का सांवला और कुटिल चेहरा नाज की स्मृतियों में इसलिए जीवित है क्योंकि उसके अकेलेपन को भरने की संभावना उसमें दिखाई देती है। इनके प्रेम एवं यौन इच्छाओं का दुखद पक्ष यह है कि यह समाज उनके प्रेम को वैध नहीं मानता, वे न तो पारंपरिक तरीके से विवाह कर पाते हैं और न ही सामाजिक स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए इनके प्रेम संबंध अक्सर छिपे हुए और उपेक्षित रह जाते हैं। उपन्यास में यौन–कुंठा को केवल दैहिक भूख के रूप में नहीं बल्कि प्रेम, अपनत्व की अधूरी चाह के रूप में दिखाया है। यह स्थिति समाज की संवेदनहीनता पर एक गहरा प्रश्नचिन्ह लगाती है।

किन्नरों के जीवन में सामाजिक बहिष्कार के साथ–साथ भावनात्मक और यौनिक संघर्ष भी निरंतर चलता रहता है। "मैं पायल" उपन्यास में पायल को सजने व संवरने का शौक होता है पर उसे लड़के के कपड़े पहनने को मजबूर किया जाता है। पायल भी लड़कियों की भाँति सजना–सँवरना, श्रृंगार करना एवं रोमांटिक कल्पनाओं में खोना चाहती है। पुरुष के स्पर्श और प्रेम को अनुभव करना चाहती है।

'लड़की के कपड़े पहनने का शौक मुझे बचपन से था पर इधर वर्षों से लड़कियों के कपड़े पहनना तो दूर, सजने सँवरने की किसी भी चीज से लाख मन करने के बावजूद दूरी बना कर रखी थी। मेरा शरीर पूरी तरह से न तो लड़कियों जैसा था और न ही लड़कों जैसा पर उस दिन प्रमोद की छुअन, उसकी ज्यादती बाद के दिनों में रोमांच व ढेर सारी उत्तेजना करती रहती थी।'[3]

पायल की यह इच्छा केवल बाहरी प्रदर्शन नहीं बल्कि उसके आन्तरिक यौनिक इच्छा और भावनात्मक आवश्यकताओं की झलक थी। उसके मन में प्रेम पाने, किसी के निकट जाने की तीव्र लालसा विद्यमान थी। किन्नरों में केवल दैहिक संबंधों की इच्छा ही नहीं रहती बल्कि वे अपने अस्तित्व की स्वीकृति एवं प्रेमपूर्ण संबंधों की आकांक्षा भी करते हैं। पायल जब प्रमोद के छूने से रोमांच का अनुभव करती है, तब यह केवल शारीरिक उत्तेजना नहीं, बल्कि प्रेम और अपनत्व की अनुभूति भी है, जो पायल के यौनिक व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है। पायल के मन में फिल्मों के रोमांटिक दृश्य, स्पर्श की स्मृतियाँ गहन भावोत्तेजना उत्पन्न करती हैं। वह स्वयं को उन परिस्थितियों में अनुभव करती है। जहाँ पर उसे प्रेम और आत्मीयता मिल सके। किन्नरों में भी सौंदर्यबोध, और प्रेम संवेदनाएं जीवित रहती हैं। वे अपने प्रिय साथी के साथ सामान्य जीवन जीने, प्रेम पाने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार एक अंश है –

'ये मर्द ऐसे होते ही हैं, जो औरत के मादा चिन्हों को देखते ही उत्तेजित हो उसे दबोच लेने की फिराक में उतर आते हैं। यह सेक्स का भाव है, जो उन्हें ऐसा करने देता है या पुरूषवादी दम्भ भरी मानसिकता ईश्वर जाने, पर स्वयं पर, स्वयं के शरीर पर आधिपत्य का यह रूप मैंने पहली बार जाना, जिस पर मेरा स्वतः

समर्पण सहमति व अंदरूनी खुशी समाहित थी। प्यार का यह मीठा सुख हम दोनों ने कई-कई बार लिया।'[4]

प्रस्तुत अंश में पायल के अनुभवों में आत्मसमर्पण और प्रेम की अनुभूति भी दिखाई देती है। पायल संबंधों में केवल शारीरिक संतुष्टि ही नहीं, बल्कि भावनात्मक अपनापन खोजती है। किन्तु समाज द्वारा उनके संबंधों को गम्भीरता से नहीं लिया जाता इसलिए किन्नर प्रेम और यौनिकता के बीच अंतर्द्वंद्व से गुजरते हैं। उनके मन में हमेशा एक तरफ प्रेम की कोमल आकांक्षा होती है तो दूसरी तरफ सामाजिक अपमान और अस्वीकृति का डर। इस अंश में पुरुषवादी मानसिकता का चित्रण हुआ है। पायल बताती है कि पुरुष प्रायः स्त्री–शरीर को भोग की वस्तु मानते हैं। यह स्थिति किन्नरों के लिए पीड़ादायक बन जाती है क्योंकि किन्नर प्रेम और आत्मीय संबंधों की अपेक्षा रखते हैं लेकिन समाज उन्हें मनोरंजन का और शारीरिक आकर्षण का माध्यम मानता है। उनके साथ वासना और उपहास का व्यवहार किया जाता है, इसलिए किन्नरों की इच्छाएँ कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाती हैं जिससे उनमें कुंठा जन्म लेती है।

जिन्दगी 50–50 उपन्यास में यौनिक इच्छा को किसी अश्लील या भोगवादी दृष्टि से नहीं बल्कि मनुष्य की स्वाभाविकता के रूप में प्रस्तुत किया है। किन्नर पात्र जब अपने सहपाठी अमन के शरीर, उसकी चाल, मांसल टाँगों और नितंबों की ओर आकर्षित होता है तो वह अपनी दबी हुई इच्छाओं को पहचानने लगता है।

'इतने करीब से मैंने उसे पहली बार देखा। उसका गोरा, चिकना चेहरा। उसका चौड़ा सीना और लम्बी कद-काठी ने पहली बार में ही मुझे आकर्षित किया था। ... एक दिन वह हाफ पैंट और टी-शर्ट पहनकर दौड़ता हुआ मेरे घर के सामने से भी तो निकला था। उसकी खुली चिकनी मांसल टाँगों ने मुझे आहें भरने पर मजबूर कर दिया था। जब वह दौड़ता हुआ जा रहा था तो पीछे से उसके हिलते हुए सुडौल नितम्ब दिनोंदिन मेरे दिमाग में घूमते रहे।'[5]

इस अंश में पात्र स्वयं को जैविक रूप से लड़का मानने के बाद भी मानसिक स्तर पर स्त्रीत्व के अधिक निकट अनुभव करता है। वह अपने सहपाठी के प्रति आकर्षित होता है, उसमें पहली बार यौनिक इच्छा का अंकुरण होता है। किन्नरों के यौनिक इच्छाओं को समाज स्वीकार नहीं करता है। समाज उनकी इच्छाओं को उपहास का विषय बना देता है। क्योंकि समाज ने उनके लिए निश्चित लैंगिक भूमिका तय कर दी है। जिससे उनकी स्वाभाविक इच्छाएँ दमन का शिकार होती हैं। यही दमन की स्थिति कुंठा को जन्म देती है। लेखक ने किन्नर समुदाय की उस पीड़ा को स्वर दिया है जिसको समाज ने लंबे काल से अनदेखा किया हुआ है। इस अंश से यह समझ में आता है कि किन्नरों की यौनिकता कोई विकृति नहीं, बल्कि उनकी इच्छाएँ, भावनाएँ, प्रेम संबंध, आकर्षण उतने ही वास्तविक हैं जितने किसी अन्य मनुष्य के।

'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में किन्नर पात्र सिमरन फैक्ट्री में काम करती है वहाँ उसका मित्र बॉबी उससे बातें करता है उसे तंग करता है। लेकिन सिमरन उससे दूरी बनाने का प्रयास करती है, यह दूरी बनाना केवल व्यक्तिगत असहजता नहीं बल्कि सामाजिक दबाव का परिणाम है। सिमरन यह जानती है कि यदि बॉबी के निकट रहेगी, तो समाज उसके चरित्र और पहचान दोनों पर प्रश्न उठाएगा। इसलिए वह दूर होने की कोशिश करती है। लेकिन वह धीरे–धीरे उससे भावनात्मक लगाव महसूस करने लगती है। इस प्रकार –

'मैंने बॉबी को अपने से दूर करना चाहा और तंग आकर बात करना बंद कर दिया। वह दूर जाता ही नहीं था बल्कि और पास आकर तंग करता। मैं ना भी बात करूँ तो वह स्वयं ही बात करता रहता। धीरे-धीरे मुझे भी उसकी आदत होने लगी। कभी-कभी मैं उसको दोपहर के खाने के लिए घर लेकर आ जाती। हम दोनों

साथ-साथ रहने लगे, वह अलग-अलग लोगों का मजाक करके मुझे दिखाता। मैं खिलखिलाकर हँसती।'[6]

इस उपन्यास में बताया है कि समाज किन्नरों के संबंधों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता। बॉबी के बारे में लोगों की धारणा नकारात्मक है। उसके मर्दों के साथ सोने और गंदी हरकतें करने की चर्चा समाज में फैली हुई है। यह दृष्टिकोण समाज की उस मानसिकता को प्रकट करता है जो किन्नरों की यौनिकता को केवल वासना या अनैतिकता से जोड़कर देखती है। जिसके कारण सिमरन भी लोगों के तानों का शिकार बनने लगती है। यहाँ यह बात समझ आती है कि किन्नरों के प्रेम संबंध सामाजिक स्वीकृति के अभाव में कुंठा और भय से घिर जाते हैं। किन्नरों के प्रेम संबंध केवल शारीरिक नहीं होते बल्कि उनमें गहरी भावनात्मक संवेदनाएँ निहित रहती हैं। बॉबी का सिमरन के प्रति लगाव और सिमरन की अकेलेपन और अपनत्व की खोज बॉबी में करती है। बॉबी लगातार उसके पास आने, बात करने और उसे हँसाने का प्रयास करता है। यह व्यवहार केवल आकर्षण नहीं बल्कि प्रेम और आत्मीयता की अभिव्यक्ति है। किन्नर समुदाय को संवेदनहीन माना जाता है। वास्तव में भावनात्मक स्तर पर कोमल और प्रेमशील होता है। किन्नर भी प्रेम और सम्मान चाहते हैं। वे भी किसी के निकट रहकर सुरक्षा और आत्मीयता का अनुभव करना चाहते हैं। लेकिन समाज उनकी भावनाओं को अस्वाभाविक कहकर नकार देता है। इसी अस्वीकृति के कारण उनके अन्दर अकेलापन और हीनता बोध गहराने लगता है।

निष्कर्ष :

किन्नर समुदाय का संकट केवल सामाजिक या आर्थिक बहिष्कार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक अत्यंत संवेदनशील मनोवैज्ञानिक और आंतरिक पहलू भी है। हिन्दी उपन्यासों –'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा', 'यमदीप', 'मैं पायल' और 'जिन्दगी 50–50' के माध्यम से किन्नर समाज की उस दबी हुई चित्कार को स्वर मिला है, जिसे मुख्यधारा का समाज अक्सर अनदेखा कर देता है। प्रेम, आत्मीयता, अपनत्व और शारीरिक यौनिक इच्छाएँ किसी भी मनुष्य की तरह किन्नर समुदाय की भी उतनी ही स्वाभाविक आवश्यकताएँ हैं। किंतु, समाज ने उनके लिए एक संकीर्ण और लिंगिक भूमिका तय कर दी है, जहाँ उनकी इन मानवीय भावनाओं को अस्वाभाविक कहकर खारिज कर दिया जाता है।

यह स्थिति समाज की संवेदनहीनता पर एक गहरा प्रश्नचिह्न लगाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि किन्नर समुदाय को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए केवल कानूनी अधिकार या आर्थिक सहायता पर्याप्त नहीं है। जब तक समाज उन्हें एक जैविक इकाई से ऊपर उठकर एक भावनात्मक और संवेदनशील मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं करेगा, तब तक उनके भीतर का यह मानसिक तनाव और भावनात्मक अकेलापन समाप्त नहीं हो सकता। उनके प्रेम संबंधों को सम्मान और उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं को सहज स्वीकृति देना ही इस त्रासदी का वास्तविक समाधान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ सं० 30
2. यमदीप, नीरजा माधव, पृष्ठ सं – 29
3. मैं पायल, महेन्द्र भीष्म, पृष्ठ सं – 89
4. मैं पायल, महेन्द्र भीष्म, पृष्ठ सं 116
5. जिन्दगी 50–50, भगवंत अनमोल, पृष्ठ सं 119
6. अस्तित्व की तलाश में सिमरन, डॉ० मोनिका देवी, पृष्ठ सं० 34

Email- pspriyankayadav298@gmail.com, Contact- 9571272818

शोध परिधि SHODH PARIDHI ISSN : 2349-9575
An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Impact Factor : 5.634
January-June 2026
Vol. 13, Issue-2
Page No. : 147-160

गीतांजलि श्री की कृतियाँ और सम्मान

दीपिका श्रीमाली
शोधार्थी

कृतित्व परिचय :

गीतांजलि श्री के अब तक पाँच उपन्यास और पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

उपन्यास :

(1) माई (1993 ई)
(2) हमारा शहर उभ बरस (1998 ई)
(3) तिरोहित (2001 ई.)
(5) खाली जगह (2006)
(5) रेत समाधि (2018)

कहानी संग्रह :

(1) अनुगूंज (1991 ई)
(2) वैराग्य (1999)
(3) मार्च माँ और साकुरा (2008)
(4) प्रतिनिधि कहानियाँ (2010)
(5) यहाँ हाथी रहते थे (2012)

(1) माई (1993) – गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' (1993) समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्तित्व, पारिवारिक ढाँचे और सामाजिक व्यवस्था के भीतर स्त्री की स्थिति का अत्यन्त संवेदनशील और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास पारंपरिक 'माँ' की छवि को नए सिरे से समझने की कोशिश है– एक ऐसी स्त्री, जो केवल त्याग और करुणा का प्रतीक नहीं, बल्कि एक व्यक्ति भी है जिसकी इच्छाएँ, तकलीफें और मौन विद्रोह अक्सर अनदेखा कर दिए जाते हैं। भाई की कथा एक परिवार के भीतर माँ (माई), पिता, दादीय भाई और बेटी के इर्द–गिर्द घूमती है।

उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि माई का चरित्र अपनी शांत, दबे हुए लेकिन दृढ़ उपस्थिति के माध्यम से जीवन का यथार्थ उजागर करता है। कहानी का मुख्य पात्र 'माई' है जिसका वास्तविक नाम राज्जो है, किंतु पूरे परिवार और समाज में वह केवल 'माई' के रूप में जानते हैं। 'माई' की अपनी व्यक्तिगत पहचान लगभग समाप्त हो चुकी है। कथा मुख्य रूप से उसकी बेटी सुनीना के दृष्टिकोण से प्रस्तुत होती है। सुनीना अपनी माँ के जीवन को समझने का प्रयास करती है और यह जानना चाहती है कि आखिर उसकी माँ इतनी चुप, सहनशील और आत्मत्यागी क्यों हैं। माई अपने पति, सास–ससुर, बच्चों और पूरे परिवार की सेवा में निरंतर

लगी रहती है। वह कभी अपने अधिकारों की मांग नही करती, न ही अपनी इच्छाओं को व्यक्त करती है। परिवार के अन्य सदस्य उसके त्याग को स्वाभाविक मान लेते हैं। बेटी सुनीना और बेटा सुबोध आधुनिक शिक्षा और नए विचारों से प्रभावित हैं, वे चाहते हैं कि उनकी माँ अपनी स्वंय की स्वतंत्र पहचान बनाए और परम्परागत बंधनो से बाहर निकले। किंतु धीरे–धीरे उन्हें एहसास होता है कि माई का संकार उतना सरल नहीं है जितना वे समझते थे। यह उपन्यास स्त्री के जीवन को केवल शोषण की दृष्टि से नही देखता, बल्कि उसके भीतर की जटिलताओं को भी उजागर करता है। भाई का मौन केवल उसकी कमजोरी नहीं है, कई बार वह महिलाएं भी अनजाने में उसका हिस्सा बन जाती है। लेखिका ने यह प्रश्न उठाया है कि समाज स्त्री से हमेशा त्याग और समर्पण की उपेक्षा क्यों करता है। माई अपने परिवार के लिए सब कुछ करती है, लेकिन उसकी अपनी इच्छाए और आकांक्षाएँ कभी महत्त्व नहीं पातीं। यही उपन्यास का सबसे बड़ा नारीवादी प्रश्न है। उपन्यास में परिवार एक ऐसी संस्था के रूप में प्रस्तुत होता है जहाँ सत्ता का केंद्र पुरुष और बुजुर्ग सदस्य है। स्त्री को आज्ञाकारी, त्यागमयी और सहनशील बने रहने की अपेक्षा की जाती है। माई इस व्यवस्था के भीतर रहती है और उसका पालन करती हैं। किंतु उसकी बेटी और बेटा इस व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। लेखिका ने यह दिखाया है कि परिवार केवल प्रेम और सुरक्षा का स्थान नहीं होता, बल्कि वह नियंत्रण और दमन का माध्यम भी बन सकता है। परिवार के भीतर स्त्री की स्वतंत्रता सीमित कर दी जाती है और उसे केवल सेवा करने वाली भूमिका में बाँध दिया जाता है। सुनीना अपनी माँ को समझाना चाहती है, लेकिन वह बार–बार असफल होती है उसे लगता है कि उसकी माँ बहुत कमजोर है और उसे विद्रोह करना चाहिए। बाद में वह समझती है कि माई की दुनिया, उसके अनुभव और उसकी सोच उससे अलग है। यह संबंध केवल भावनात्मक नहीं बल्कि वैचारिक भी है। एक ओर पुरानी पीढी की स्त्री है जो परंपराओ के भीतर जीती है, दूसरी और नई पीढी की स्त्री है जो स्वतंत्रता और समानता की आकांक्षा रखती है। माई हिंदी साहित्य की एक कालजयी और बहुचर्चित कृति मानी जाती है।

(2) हमारा शहर उस बरस (1997) – गीतांजलि श्री समकालीन हिन्दी साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट रचनाकार है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और निबंधों के माध्यम से भारतीय समाज, राजनीति, संस्कृति, स्मृति, इतिहास और मनुष्य की जटिल मानसिक अवस्थाओं को गहरी संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। 'हमारा शहर उस बरस' हिन्दी साहित्य में सांप्रदायिकता, सामाजिक विघटन और मानवीय संबंधों के संकट को समझने वाली एक महत्वपूर्ण कृति माना जाता है। यह उपन्यास केवल किसी एक शहर या एक विशेष समय की कथा नहीं है, बल्कि आधुनिक भारतीय समाज के उस यथार्थ को सामने लाता है जिसमें धर्म, राजनीति और पहचान की राजनीति के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच दूरियां बढ़ती जाती है। यह उपन्यास उस दौर की कहानी कहता है जब समाज में सांप्रदायिक तनाव तेजी से बढ़ रहा था और लोगों का विश्वास एक–दूसरे से टूटता जा रहा था। लेखक ने किसी राजनीतिक भाषण या वैचारिक घोषणा के माध्यम से नहीं, बल्कि साधारण मनुष्यों के जीवन, उनकी आशंकाओं, भय, स्मृतियों और संबंधों के जरिए इस त्रासदी को चित्रित किया है। यही कारण है कि यह उपन्यास केवल एक सामाजिक दस्तावेज नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना की गहरी पड़ताल भी है। कथा का केन्द्र किसी एक नायक पर नहीं है। इसमें अनेक पात्र है और सभी अपने–अपने अनुभवों के माध्यम से उस समय की सामाजिक स्थिति को व्यक्त करते हैं। यहीं बहुस्तरीय संरचना उपन्यास को अधिक प्रभावशाली बनाती है। पाठक केवल घटनाओं को नहीं देखता, बल्कि उन घटनाओं के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभावों को भी महसूस करता है। जब शहर में सांप्रदायिक तनाव बढ़ता है तो केवल सड़के और मोहल्ले प्रभावित नहीं

होते, बल्कि पूरे सामाजिक जीवन पर उसका प्रभाव पड़ता है। शहर की पहचान बदल जाती है। जो स्थान पहले मेल मिलाप और सह–अस्तित्व के प्रतीक थे, वे विभाजन और संघर्ष के स्थल बन जाते हैं। लेखिका ने शहर के बदलते वातावरण का अत्यन्त सूक्ष्म चित्रण किया है। बाजार, गलियां, घर, सार्वजनिक स्थल सब कुछ मानो किसी अदृश्य भय से ग्रस्त दिखाई देता है। इस प्रकार शहर स्वयं एक जीवन चरित्र की तरह सामने आता है। स्त्रियाँ समाज में होने वाले परिवर्तनों को अपने विशेष अनुभवों के माध्यम से देखती हैं। वे हिंसा, भय और असुरक्षा के प्रभावों को गहराई से महसूस करती है। साथ ही वे संबंधों को बचाने और संवाद बनाए रखने का प्रयास भी करती है। उपन्यास में स्त्री अनुभव केवल निजी नहीं है, वह सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ से जुड़ा हुआ है। स्त्रियों की संवेदनशीलता के माध्यम से लेखिका यह दिखाती है कि सांप्रदायिक तनाव का प्रभाव 'जीवन के हर क्षेत्र पर पड़ता है। इस दृष्टि से यह उपन्यास स्त्री–विमर्श और सामाजिक विमर्श दोनों को एक साथ प्रस्तुत करता है।

लेखिका किसी आदर्शवादी समाधान की प्रस्तुति नहीं करती, लेकिन वे पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि यदि मानवीय संवेदना और आपसी विश्वास समाप्त हो जाए तो समाज का भविष्य कैसा होगा। इस प्रकार उपन्यास एक गंभीर सामाजिक चेतावनी भी बन जाता है। लेखिका ने शहर, पात्रों और उनके अनुभवों के माध्यम से उस वातावरण को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। जिसमें विश्वास टूटता है, संबंध बिखरते हैं और मनुष्य अपनी पहचान तथा मानवीयता के बीच संघर्ष करता है। उनकी भाषा, शिल्प और संवेदन शील दृष्टि इस उपन्यास को हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय कृतियों में स्थान दिलाती है ।

अंततः 'हमारा शहर उस बरस' हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता, सहिष्णुता और मानवीय संबंधों में निहित होती है। जब थे मूल्य कमजोर पड़ते है, तब केवल एक शहर नहीं, बल्कि पूरा समाज संकट में पड़ जाता है। इसी गहन मानवीय और सामाजिक दृष्टि के कारण यह उपन्यास हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण और स्थायी स्थान रखता है।

(3) तिरोहित (2001) – 'तिरोहित' शब्द का अर्थ है– ओझल हो जाना, लुप्त हो जाना, या दृश्य से अदृश्य हो जाना। उपन्यास का शीर्षक ही इसके केन्द्रिय भाव को व्यक्त करता है। यह केवल किसी व्यक्ति के गायब होने की कथा नहीं है, बल्कि अस्तित्व, स्मृति, पहचान और संबंधों के तिरोहित होने की प्रक्रिया का कलात्मक चित्रण है। इस उपन्यास में जीवन की उन परतों को उघाड़ा गया है जो सामान्यतः दिखाई नहीं देतीं, लेकिन मनुष्य के अनुभव संसार की गहराई कसे प्रभावित करती है।

इसमें बाहरी जीवन से अधिक अपने भीतर के संसार पर ध्यान दिया गया है। पात्र अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच झूलते हुए दिखाई देते हैं। वे अपने जीवन के अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं, किंतु बार–बार अनुभव करते हैं कि जीवन की कई चीजें धीरे–धीरे तिरोहित होती रहती हैं–पिछली स्मृतियाँ इच्छाएं और यहां तक कि स्वयं की पहचान भी। उपन्यास का संसार बहुत सामान्य प्रतीत होता है लेकिन उसके भीतर गहरी दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताएं छिपी हुई है। यहाँ व्यक्ति केवल सामाजिक प्राणी नहीं है, बल्कि एक ऐसा अस्तित्व है जो निरंतर स्वयं को खोज रहा है। उपन्यास की स्त्रियाँ परम्परागत भूमिकाओं में बंधी हुई दिखाई देती है, लेकिन वे भीतर से प्रश्न भी करती है। वे अपनी इच्छाओं, सपने और अस्तित्व को पहचानना चाहती हैं। समाज द्वारा निर्धारित सीमाएं उन्हें बाँधती है, किंतु उनका अंतर्मन स्वतंत्रता की आकांक्षा रखता है। यह उपन्यास स्त्री की उस स्थिति को उजागर करता है जिसमें वह परिवार और समाज के बीच अपनी पहचान खोजने का प्रयास करती है। कई बार उसकी इच्छाएं और उसकी वास्तविक पहचान सामाजिक अपेक्षाओं के दबाव में

तिरोहित हो जाती है। गीतांजलि श्री स्त्री–मुक्ति की कोई सीधी घोषणा नहीं करती, बल्कि स्त्री के अनुभवों और संवेदनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं कि पाठक स्वयं उसकी स्थिति को समझ सके। यह उपन्यास मूल रूप से हिन्दी में प्रकाशित हुआ था और बाद में इसका अंग्रेजी में अनुवाद "The Roof Beneath Their feet" के नाम से राहुल सोनी ने किया। यह केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि मनुष्य के अस्तित्व, स्मृति और पहचान की गहन खोज है। गीतांजलि श्री ने इस कृति में आधुनिक जीवन की जटिलताओं, स्त्री–अनुभवों, अकेलेपन, समय और स्मृति के बहुआयामी स्वरूप को अत्यंत कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास का शीर्षक इसकी केन्द्रिय संवेदना को व्यक्त करता है। जीवन में बहुत कुछ धीरे–धीरे तिरोहित होता रहता है, किन्तु उसी प्रक्रिया में मनुष्य स्वयं को समझने का प्रयास भी करता है। इसकी भाषा, शिल्प, प्रतीकात्मकता और वैचारिक गहराई इसे समकालीन हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में स्थान दिलाती है। इस प्रकार तिरोहित एक ऐसी रचना है जो पाठक को केवल कहानी नहीं सुनाती, बल्कि उसे जीवन, स्मृति और अस्तित्व के गहरे प्रश्नों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। यही इसकी सबसे बड़ी साहित्यिक उपलब्धि है।

(4) खाली जगह (2006) – 'खाली जगह' का केंन्द्रिय विचार उस शून्यता रिक्तता के इर्द–गिर्द घूमता है जो किसी दुर्घटना, हिंसा या प्रियजन की मृत्यु के बाद मनुष्य के जीवन में उत्पन्न होती है। यह रिक्तता केवल भौतिक नहीं होती, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर भी अनुभव की जाती है। उपन्यास इसी खाली जगह को समझने और उसके अर्थ तलाशने का प्रयास करता है। उपन्यास की कथा एक विस्फोट और उससे जुड़ी त्रासदी के इर्द–गिर्द विकसित होती है। एक आतंकवादी घटना में अनेक लोगों की मृत्यु हो जाती है। इस घटना से प्रभावित परिवारों और व्यक्तियों के जीवन में जो खालीपन उत्पन्न होता है, वहीं उपन्यास का मूल कथ्य बन जाता है। यहाँ घटना से अधिक महत्वपूर्ण उसके बाद की स्थितियाँ है– लोग किस प्रकार अपने दुःख को जीते हैं, स्मृतियों को संभालते है और जीवन को पुनः अर्थ देने की कोशिश करते हैं। लेखिका घटना का वर्णन सनसनीखेज तरीके से नहीं करतीं। उनका ध्यान उस मानसिक और भावनात्मक संसार पर केंद्रित है जो किसी आकस्मिक मृत्यु के बाद पीछे छूट जाता है। मृत व्यक्ति की अनुपस्थिति परिवार के हर सदस्य के जीवन में एक ऐसी जगह बना देती है जिसे कोई भर नहीं सकता। यह जगह समय के साथ बदलती तो है, पर समाप्त नहीं होती। उपन्यास में विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति दुःख को अलग–अलग प्रकार से अनुभव करता है। किसी के लिए स्मृति सहारा बनती है किसी के लिए बोझ। कोई अतीत में लौटना चाहता है तो कोई उससे बचने का प्रयास करता है। इस प्रकार कथा व्यक्तिगत अनुभवों से निकलकर मानवीय अस्तित्व की व्यापक पड़ताल बन जाती है।

उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष स्मृति है। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके लिए स्मृतियाँ ही उनके अस्तित्व का आधार बन जाती है। स्मृति व्यक्ति को अतीत से जोड़ती है, लेकिन साथ ही उसे वर्तमान के दुःख से भी मुक्त नही होने देती। लेखिका दिखाती हैं कि स्मृतियाँ स्थिर नहीं होती। समय के साथ वे बदलती रहती है। कोई घटना बार–बार याद किए जाने पर जाए अर्थ ग्रहण कर लेती है। इसी कारण उपन्यास में स्मृति केवल अतीत का पुन रू स्मरण नहीं, बल्कि वर्तमान में उसके पुर्ननिर्माण की प्रक्रिया भी है। उपन्यास में आतंकवाद और हिंसा का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लेखिका किसी राजनीतिक बहस में उलझने के बजाय हिंसा के मानवीय परिणामों पर ध्यान केन्द्रित करती है। आतंकवादी घटनाओं के समाचार अक्सर आंकड़ों में बदल जाते हैं। लोग केवल यह सुनते हैं कि कितने व्यक्ति मारे गए। लेकिन हर संख्या के पीछे एक पूरा जीवन, एक

परिवार और अनेक सपने होते हैं। 'खाली जगह' इन्हीं अनदेखी मानवीय कहानियों को सामने लाता है। लेखिका यह प्रश्न भी उठाती है कि हिंसा केवल मृतकों को ही प्रभावित नहीं करती, उससे बच जाने वाले लोग भी उसके घाव जीवन भर ढोते हैं। उनके भीतर भय, असुरक्षा और शोक की जो भावनाएं जन्म लेती है वे लंबे समय तक बनी रहती है। इस प्रकार उपन्यास हिंसा के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को गहराई समझने का प्रयास करता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद परिवार के भीत्तर संबंधों की प्रकृति बदल जाती है। लोग एक–दूसरे के अधिक निकट भी आ सकते है और दूर भी हो सकते हैं। दुःख की स्थिति में व्यक्ति अपने भीतर सिमट जाता है। कई बार वह अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाता। इससे संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। दूसरी ओर, साझा दुःख लोगों को जोड़ने का काम भी करता है। लेखिका संबंधों की इसी जटिलता को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है। उनके पात्र पूर्णतः अच्छे या बुरे नहीं है। वे अपनी कमजोरियों, असुरक्षाओं और इच्छाओं के साथ जीवंत मनुष्य है। यही कारण है कि पाठक उनके अनुभवों से गहरा जुड़ाव महसूस करता है। यह उपन्यास समकालीन हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक कृति है। इसमें जीवन की उन रिक्तताओं को समझने का प्रयास किया गया है जो हिंसा, मृत्यु और बिछोह के कारण उत्पन्न होती है। उपन्यास स्मृति, दुःख, प्रेम, संबंध और अस्तित्व जैसे गहरे मानवीय प्रश्नों को संवेदनशीलता तथा कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है।

गीतांजलि श्री ने इस कृति के माध्यम से यह दिखाया है कि किसी भी त्रासदी का सबसे गहरा प्रभाव मनुष्य के भीतर बन जाने वाली 'खाली जगह' में दिखाई देता है। यह जगह दर्द का प्रतीक है। पर साथ ही जीवन को नए अर्थों में समझने का अवसर भी प्रदान करती है। इसी कारण 'खाली जगह' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना, स्मृति और अस्तित्व पर गंभीर चिंतन की रचना बन जाता है। हिन्दी साहित्य में इसका स्थान एक महत्वपूर्ण और स्थायी कृति के रूप में स्थापित है।

(5) रेत समाधि (2018) – यह उपन्यास हिन्दी साहित्य की एक हैं। इसका अंग्रेजी अनुवाद "Tomb of Sand" है। इसे 2022 में ऐतिहासिक कृति मानी जाती है। यह सबकी चर्चित उपन्यास इंटरनेशनल बुकर प्राइज मिला है। इस उपलब्धि ने न केवल लेखिका को वैश्विक पहचान दिलाई, बल्कि हिन्दी साहित्य को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्रदान की। यह उपन्यास पारंपरिक कथा शैली से अलग हटकर जीवन, मृत्यु, स्मृति, स्त्री–अस्मिता, विभाजन और सीमाओं जैसे जटिल विषयों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। यह केवल एक वृद्ध महिला की कहानी नहीं हैं, बल्कि यह मनुष्य की आंतरिक यात्रा, पहचान की खोज और सामाजिक बंधनों से मुक्ति का आख्यान है। उपन्यास में लेखिका ने भाषा और संरचना के स्तर पर भी अनेक प्रयोग किए हैं, जिसके कारण यह हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह उपन्यास 80 वर्ष की वृद्ध महिला की कहानी है। जिसे माँ कहा गया है। पति की मृत्यु के बाद गहरे अवसाद में चली जाती है। वह संसार से लगभग कट जाती है और अपना अधिकांश समय बिस्तर पर पीठ फेरकर लेटे हुए बिताती है। ऐसा लगता है कि उसने जीवन कसे संबंध तोड़ लिया है। परिवार के सदस्य उसकी इस स्थिति से चिंतित हैं, परंतु वह किसी से संवाद नहीं करती। धीरे–धीरे कहानी एक नया मोड़ लेती है। अचानक से माँ के भीतर जीवन के प्रति नई ऊर्जा जाग्रत होती है। वह अपने पुराने जीवन की सीमाओं को तोड़ने लगती है। वह अपनी बेटी के साथ रहने चली जाती है और वहाँ स्वतंत्रता का एक नया अनुभव प्राप्त करती है। इस परिवर्तन के साथ उसकी पहचान, इच्छाएं और स्मृतियाँ पुनः उभरने लगती है। कथानक का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग तब सामने आता है जब माँ अपने अतीत की ओर लौटती है। पाठक को पता चलता है कि भारत–पाकिस्तान विभाजन से पहले उसका जीवन वर्तमान पहचान से भिन्न

था। विभाजन ने उसके जीवन, प्रेम और अस्तित्व पर गहरा प्रभाव डाला। और वह अपने अतीत में छूट गए प्रेम और स्मृतियों की खोज के लिए पाकिस्तान जाने का निर्णय लेती है। यह केवल भौगोलिक यात्रा नहीं हैं, यह स्मृति, इतिहास और आत्म–खोज की यात्रा भी है। पाकिस्तान पहुंचकर वह अपने अतीत के उन हिस्सों से मिलती है जिन्हें समय और सीमाओं ने अलग कर दिया है। अंग्रेजी अनुवाद Tomb of sand" की अंतरराष्ट्रीय सफलता ने सिद्ध किया कि हिन्दी साहित्य की रचनाएं वैश्विक पाठकों को भी गहराई से प्रभावित कर सकती है। रेत समाधि अपनी प्रयोगधर्मी भाषा, गहन संवेदनशीलता और व्यापक मानवीय दृष्टि के कारण समकालीन हिन्दी साहित्य की एक मील का पत्थर मानी जाती हैं। यह कृति पाठक को केवल कहानी नहीं सुनाती, बल्कि उसे जीवन और समाज के बारे में नए ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

कहानी संग्रह –

(1) **अनुगूंज** (1991) – हिन्दी कथा–साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है। यह संग्रह उनके आरंभिक लेखन का प्रतिनिधित्व करता है और इसमें उनकी रचनात्मक दृष्टि, संवेदनशीलता तथा शिष्य की विशिष्टता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। 'अनुगूँज शीर्षक स्वंय संकेत देता है – ऐसी आवाजें, अनुभव और स्मृतियाँ जो समय के पार भी गूंजती रहती है।

अनुगूँज का शाब्दिक अर्थ है– प्रतिध्वनि या गूंज की पुनरावृति। यह शीर्षक केवल ध्वनि की प्रतिष्ध्वनि का संकेत नहीं करता बल्कि स्मृतियों, अनुभवों, रिश्तों और भावनाओं की उन परतों की और भी इशारा करता है जो समय बीत जाने के बाद भी मनुष्य के भीतर बनी रहती हैं। संग्रह की कहानियों में अतीत बार–बार वर्तमान में लौटता हैं और पात्रों के जीवन को प्रभावित करता है। इस कहानी संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विषय–विविधता और मनोवैज्ञानिक–गहराई है। इसमें शामिल कहानियां किसी एक विषय तक सीमित नहीं है, बल्कि मनुष्य के जीवन के विभिन्न आयामों को छूति है – रिश्ते, अकेलापन, स्मृति और आंतरिक द्वंदं। गीताजंलि श्री के इन विषयों को सीधे–सरल ढंग से नहीं, बल्कि प्रतीकों, बिंबों और सूक्ष्म संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। इस संग्रह में स्त्री–चेतना विशेष रूप से उभरकर सामने आती है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ केवल पारंपरिक भूमिकाओं में बंधी हुई नहीं है, बल्कि वे सोचती है, सवाल करती है और अपने अस्तित्व को पहचानने का प्रयास करती है। वे अपने भीतर के संघर्षों, इच्छाओं और असंतोष को व्यक्त करती है। यह दृष्टिकोण हिन्दी कहानी में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है, जहाँ स्त्री केवल विषय नहीं, बल्कि स्वयं कथाकार की दृष्टि का केंद्र बन जाती है। 'अनुगूंज' की कहानियों में अकेलेपन और आंतरिक संवाद का चित्रण भी अत्यंत प्रभावशाली है। कई पात्र बाहरी रूप से सामान्य जीवन जीते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन उनके भीतर बाहरी बेचौनी और प्रश्न चल रहे होते हैं यह मनोवैज्ञानिक परतें पाठक को पात्रों के और करीब ले जाती है और उन्हें उनके अनुभवों से जोड़ती है। इस तरह की आंतरिकता गीतांजलि श्री के लेखन की पहचान बन जाती है। भाषा और शैली की दृष्टि से यह संग्रह अत्यंत विशिष्ट है। लेखिका की भाषा काव्यात्मक, लयात्मक और संवेदनशील है। वे साधारण घटनाओं को भी ऐसे प्रस्तुत करती हैं कि वे गहरे अर्थ ग्रहण कर लेती हैं। कई बार उनकी कहानियों रैखिक (linear) ढंग से आगे नहीं बढ़तीं, बल्कि स्मृतियों, कल्पनाओं और वर्तमान के बीच आवागमन करती रहती हैं। इस शैली से कथा में एक तरह की गूंज पैदा होती है जो पाठक के मन में देर तक बनी रहती है। इस संग्रह की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है प्रतीकात्मकता। कई कहानियों में वस्तुएँ, स्थान या घटनाएं केवल अपने प्रत्यक्ष अर्थ तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे किसी गहरे भाव या विचार का प्रतीक बन जाती है।

उदाहरण के लिए, खाली जगह, पुराने घर, या कोई साधारण दृश्य – ये सभी पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके जीवन के खालीपन को दर्शा सकते हैं। इस प्रकार गीतांजलि श्री पाठक को सीधा संदेश देने के बजाय उसे सोचने और अर्थ निकालने के लिए प्रेरित करती है। अनुगूंज में समकालीन समाज की झलक भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बदलते हुए सामाजिक संबंध, शहरी जीवन का प्रभाव पारिवारिक संरचना में बदलाव और व्यक्ति की बढ़ती हुई एकाकी स्थिति – ये सभी तत्त्व कहानियों में उपस्थित है। हालांकि ये कहानियां किसी सामाजिक मुद्दे पर सीधे भाषण नहीं देती, बल्कि पात्रों के अनुभवों के माध्यम से इन परिवर्तनों को सामने लाती है। अनुगूंज केवल कहानियों का एक साधारण संग्रह नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन की जटिलताओं, भावनाओं और अनुभवों की एक गहरी पड़ताल है। यह पाठक को न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि उसे सोचने, महसूस करने और आत्ममंथन करने के लिए भी प्रेरित करता है। गीतांजलि श्री की यह कृति हिन्दी साहित्य में उनकी मजबूत और विशिष्ट पहचान स्थापित करने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित हुई है। गीतांजलि श्री की कहानियों पढ़ते समय पाठक को लगता है कि वह किसी व्यक्ति के मन के भीतर प्रवेश कर रहा है।

(2) वैराग्य (1999) – "वैराग्य" एक महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है, जिसमें मनुष्य के आंतरिक जीवन, अकेलेपन और मानसिक संघर्ष को गहराई से चित्रित किया गया है। इस संग्रह की कहानियाँ इसी भावना के इर्द–गिर्द घूमती है। हिन्दी कथा साहित्य में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक कृति मानी जाती है। यह संग्रह उनके रचनात्मक विकास के परिपक्व चरण का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें उनकी विशिष्ट शैली, गहरी संवेदनशीलता और मनोवैज्ञानिक दृष्टि और अधिक प्रखर रूप में सामने आती है। 'वैराग्य' केवल एक शीर्षक नहीं, बल्कि पूरे संग्रह की केंद्रीय भावना है, जो जीवन, संबंधों और अस्तित्व के प्रति एक जटिल मानसिक स्थिति को व्यक्त करता है।

'वैराग्य' शब्द सामान्यतः संसार को विरक्ति या त्याग की भावना को दर्शाता है, लेकिन गीतांजलि भी इस संग्रह में इसे एक व्यापक और बहुआयामी अर्थ देती है। यहाँ वैराग्य का अर्थ केवल दुनिया से दूरी बनाना नहीं, बल्कि अपने अनुभवों, स्मृतियों और रिश्तों को एक नए दृष्टिकोण से देखना भी है। यह एक ऐसी अवस्था है, जहां व्यक्ति जीवन के प्रति संवेदनशील भी है और उससे कुछ दूरी बनाकर उसे समझने की कोशिश भी करता है। कहानी का मुख्य पात्र जीवन के अनेक अनुभवों से गुजर चुका है। समय के साथ वह महसूस करता है कि जिन चीजों को वह अत्यंत महत्वपूर्ण समझता था, वे धीरे–धीरे अपना आकर्षण खोती जा रही है। कहानी में एक ऐसे व्यक्ति की मानसिक स्थिति को चित्रित किया गया है जो जीवन के अनेक अनुभवों से गुजर चुका है। समय के साथ उसके संबंध, इच्छाएं और अपेक्षाएँ बदलती रहती है। वह अपने अतीत को याद करता है और सोचता है कि जिन चीजों को कभी उसने बहुत वैराग्य का अर्थ – मोह–माया से दूरी या विरक्ति। महत्वपूर्ण माना था, वे अब उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह गई है। इसी अनुभव से उसके भीतर वैराग्य की भावना जन्म लेती है। इस संग्रह में स्त्री चेतना भी एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उपस्थित है। गीतांजलि श्री की कहानियों में स्त्रियाँ केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे अपने अस्तित्व, स्वतंत्रता और पहचान की तलाश करती हैं। वे समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं को समझती है और कई बार उनका विरोध भी करती है। इन कहानियों में स्त्री के अनुभवों को बहुत ही सूक्ष्म और संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत किया गया हैं, जो पाठक को उनके भीतर के संसार से जोड़ता है। कहानी में संबंधों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। मनुष्य अपने परिवार, मित्रों और समाज से जुड़ा रहता है। इन संबंधों में प्रेम, अपेक्षाएँ, संघर्ष और दूरी सभी मौजूद होते हैं। पात्र महसूस करता है कि

संबंध जीवन को अर्थ देते हैं लेकिन अत्यधिक आसक्ति कभी–कभी दुख का कारण भी बन जाती है। इसलिए वह संबंधों को समझने और उनसे संतुलित रूप से जुड़ने की कोशिश करता है। 'वैराग्य' का अर्थ यहाँ संसार से भाग जाना नहीं है। कहानी यह संकेत देती है कि सच्चा वैराग्य जीवन की वास्तविकता को स्वीकार करने में है। जब मनुष्य समझ जाता है कि परिवर्तन जीवन का स्वाभाविक नियम है, तब वह छोटी–छोटी बातों से विचलित नहीं होता। वह जीवन को अधिक शांत और संतुलित दृष्टि से देखने लगता है।

लेखिका ने भाषा और शैली के माध्यम से पात्र की मनःस्थिति को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। कहानी में घटनाओं की अपेक्षा विचारों और भावनाओं का महत्व अधिक हैं। पाठक पात्र के साथ उसकी मानसिक यात्रा में शामिल हो जाता है और उसके अनुभवों को महसूस करता है। कहानी यह भी बताती है कि वैराग्य का संबंध केवल वृद्धावस्था से नहीं हैं। जीवन के किसी भी चरण में व्यक्ति ऐसे अनुभवों से गुजर सकता है जो उसे आत्मचिंतन की ओर ले जाए। जब मनुष्य अपने जीवन, इच्छाओं और उपलब्धियों का मूल्यांकन करता है, तब उसके भीतर नए प्रकार की समझ विकसित होती है। वैराग्य की कहानियों में रिश्तों की जटिलता का भी गहरा चित्रण मिलता है। परिवार, प्रेम, विवाह और सामाजिक संबंध– ये सभी इस संग्रह के केन्द्र में हैं, लेकिन इन्हें पारंपरिक ढांचे में नहीं दिखाया गया है। यहाँ रिश्ते स्थिर और सरल नहीं, बल्कि बदलते हुए और कई बार टूटते हुए दिखाई देते हैं। पात्रों के बीच संवाद की कमी, भावनात्मक दूरी और अकेलापन इन कहानियों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस संग्रह में अकेलेपन और आंतरिक संवाद का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली है। पात्र अक्सर अपने भीतर की दुनिया में खोए रहते हैं। और अपने आप से संवाद करते हैं। यह अकेलापन केवल भौतिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी है। गीतांजलि श्री इस अकेलेपन को नकारात्मक रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी स्थिति के रूप में प्रस्तुत करती है, जहां व्यक्ति अपने आप को बेहतर ढंग से समझ सकता है। भाषा और शैली की दृष्टि से 'वैराग्य' अत्यंत विशिष्ट है। गीतांजलि श्री की भाषा काव्यात्मक, लयात्मक और अत्यंत संवेदनशील हैं। वे साधारण शब्दों और वाक्यों के माध्यम से गहरे अर्थ व्यक्त करती हैं। उनकी कहानियाँ हमेशा रेखिक (linear) ढंग से नहीं चलती, बल्कि उनमें स्मृति, वर्तमान और कल्पना का मिश्रण होता है। यह शैली पाठक को कहानी के भीतर खींच लेती है और उसे सक्रिय रूप से अर्थ निकालने के लिए प्रेरित करती है इस संग्रह की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है प्रतीकात्मकता कहानियों में कई ऐसे प्रतीक मिलते हैं, जो सीधे तौर पर स्पष्ट नहीं होते, लेकिन गहरे अर्थों को व्यक्त करते है। स्थान, वस्तुएँ और घटनाएँ केवल अपने बाहरी रूप में नहीं, बल्कि एक गहरे भाव था विचार का प्रतिनिधित्व करती है। यह प्रतीकात्मकता कहानियों को बहुस्तरीय बनाती है और पाठक को बार–बार पढ़ने और नए अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है।

'वैराग्य' में समकालीन समाज की झलक भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। शहरी जीवन, बदलती हुई पारिवारिक संरचना और आधुनिकता का प्रभाव – ये सभी तत्व कहानियों में उपस्थित है। लेकिन गीतांजलि श्री इन सामाजिक परिवर्तनों को सीधे नहीं बताती, बल्कि पात्रों के अनुभवों और उनकी मानसिक स्थितियों के माध्यम से सामने लाती है। इस तरह पाठक स्वय इन परिवर्तनों को महसूस करता है। इस संग्रह का साहित्यिक महत्व इस बात में भी है कि यह हिन्दी कहानी को एक नई दिशा देता है। गीतांजलि श्री पारंपरिक कहानी–शैली से हटकर एक नई प्रयोगधर्मी शैली अपनाती है, जिसमें कथा का केन्द्र बाहरी घटनाओं की बजाय आंतरिक अनुभव बन जाता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक हिन्दी कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। अंततः वैराग्य (1999) एक ऐसा कहानी संग्रह है, जो जीवन के गहरे और जटिल अनुभवों को अत्यंत संवेदनशील और

कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। यह संग्रह केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि महसूस करने और सोचने के लिए है। इसमें वैराग्य एक नकारात्मक भावना नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, समझ और आत्मबोध की एक अवस्था के रूप में सामने आता है। यही कारण है कि यह कृति हिन्दी साहित्य में एक विशेष स्थान रखती है और आज भी उतनी है) प्रासंगिक है जितनी अपने प्रकाशन के समय थी। अंततः कहानी इस निष्कर्ष की ओर संकेत करती है कि जीवन का सार केवल प्राप्ति में नहीं, बल्कि समझ में है। वैराग्य का अर्थ जीवन से दूर होना नहीं, बल्कि जीवन को उसके वास्तविक रूप में स्वीकार करना है। जो व्यक्ति इस सत्य को समझ लेता है वह बाहरी परिस्थितियों से कम प्रभावित होता है और भीतर से अधिक शांत हो जाता है।

(3) मार्च माँ और साकुरा (2008) – मार्च, माँ और साकुरा समकालीन हिन्दी साहित्य की चर्चित कथाकार गीतांजलि श्री की एक महत्वपूर्ण कहानी है। यह कहानी संग्रह संवेदनशील और भावनात्मक कहानियों का संकलन है। इसमें भारतीय और विदेशी संदेशों का मिश्रण मिलता है। जैसे– साकुरा – जापान का प्रतीक। लेखक ने जीवन के सूक्ष्म अनुभवों को बहुत बारीकी से प्रस्तुत किया है। साकुरा का अर्थ– 'साकुरा' जापान का चेरी ब्लॉसम (फूल) होता है। यह सुंदरता, क्षण भंगुरता और जीवन की नश्वरता का प्रतीक है। मार्च माँ और साकुरा और गीतांजलि श्री का कहानी संग्रह हिन्दी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। गीतांजलि श्री समकालीन हिन्दी लेखन की ऐसी लेखिका है जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली, संवेदनशील दृष्टि और भाषा के प्रयोग से कहानी को एक नया आयाम दिया है। उनका लेखन केवल कथानक तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह मनुष्य के भीतर के सूक्ष्म अनुभवों, स्मृतियों संबंधों और समय की जटिलताओं को भी उभरता है। मार्च माँ और साकुरा (2008) विशेष रूप से उनकी रचनात्मकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

इस कहानी संग्रह में विभिन्न कहानियाँ शामिल हैं जो जीवन के अलग–अलग पहलुओं को छूति हैं। शीर्षक कहानी मार्च माँ और साकुरा में तीन अलग–अलग प्रतीकों का संयोजन है–समय (मार्च), संबंध (माँ) और प्रकृति/विदेशी अनुभव (साकुरा, यानी जापान के चेरी ब्लॉसम)। इन तीनों के माध्यम से लेखिका स्मृति, दूरी और पहचान के प्रश्नों को बुनती हैं। कहानी का केन्द्र एक माँ और उसकी बेटी है। बेटी अपनी वृद्ध होती माँ को देखती है और उसके व्यवहार, स्मृतियों तथा जीवन दृष्टि को समझने का प्रयास करती है। माँ अब जीवन के उस पड़ाव पर पहुंच चुकी है। जहाँ वर्तमान से अधिक अतीत उसके साथ रहता है। वह कभी पुरानी बातों में खो जाती है, कभी वर्तमान को नए ढंग से देखती हैं और कभी जीवन की छोटी–छोटी चीजों में आनंद खोज लेती हैं। कहानी का समय मार्च का महीना है। मार्च सर्दी और गर्मी के बीच का संक्रमण काल है। यह मौसम परिवर्तन का संकेत देता है। इसी प्रकार माँ भी जीवन के एक संक्रमण काल में हैं– यौवन से वृद्धावस्था की ओर, सक्रियता से निर्भयता की ओर और जीवन से मृत्यु की संभावित निकटता की ओर लेकिन कहानी में यह परिवर्तन दुख या निराशा का कारण नहीं बनता, बल्कि जीवन को नए ढंग से समझने का अवसर प्रदान करता है।

कहानी में साकुरा का उल्लेख विशेष महत्व रखता है। जापान में साकुरा के फूल बहुत कम समय के लिए खिलते हैं, लेकिन जब खिलते हैं तो पूरी प्रकृति को सौंदर्य से भर देते हैं। माँ साकुरा के फूलों के बारे में सोचती है और उनके माध्यम से जीवन के अर्थ को समझती है। जैसे साकुरा का फूल थोड़े समय के लिए खिलकर सर जाता है, वैसे ही मनुष्य का जीवन भी क्षणभंगुर है। किंतु उसकी सुंदरता और महत्ता इसी क्षण भंगुरता में निहित है। इस कहानी में एक खास बात यह है कि यह केवल एक सीधी कहानी नहीं है, बल्कि अनुभवों की परतों में खुलती है। 'माँ' यहाँ केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि जड़ों, परंपराओं और भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक बन जाती

है। वहीं 'साकुरा' विदेशी संस्कृति, क्षण भंगुर सौन्दर्य और जीवन की अस्थिरता को दर्शाता है। मार्च का महीना बदलाव का संकेत देता है – न सर्दी पूरी तरह जाती है, न गर्मी पूरी तरह आती है–ठीक वैसे ही जैसे पात्रों के भीतर भावनाएं स्थिर नहीं रहतीं।

गीतांजलि श्री की भाषा इस संग्रह में अत्यंत काव्यात्मक और प्रयोग धर्मी है। वे पारंपरिक कहानी कहने के ढांचे को तोड़ती है और विचारों, स्मृतियों तथा भावनाओं के प्रवाह को प्राथमिकता देती है। कई बार उनकी कहानियाँ रैखिक (linear) न होकर विखंडित (Fragmented) रूप में सामने आती है जो पाठक को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती हैं।

इस संग्रह की कहानियों में स्त्री–अनुभव एक महत्त्वपूर्ण विषयं है। स्त्री केवल एक पात्र नहीं, बल्कि एक दृष्टि बनकर उभरती है। वह अपने संबंधी, समाज और स्वयं के भीतर के संघर्षों से जुड़ती हैं। लेखिका स्त्री की आंतरिक दुनिया को बहुत बारीकी से चित्रित करती है– उसकी इच्छाएं, उसकी चुप्पियों और उसकी अस्मिता की खोज। इसके साथ ही इस कहानी संग्रह में शहर और बदलती जीवनशैली का प्रभाव दिखता है। आधुनिकता, अकेलापन और बदलते पारिवारिक ढाँचे जैसे विषय कहानियों में बार–बार उभरते हैं। पात्र अवसर भीड़ में भी अकेले हैं, और वे अपने भीतर किसी खोई हुई चीज को खोजते रहते हैं। मार्च माँ और साकुरा जैसे संग्रह में एक और महत्वपूर्ण बात है– संस्कृतियों का संवाद। साकुरा का प्रतीक यह दिखाता है कि भारतीय अनुभव केवल स्थानीय नहीं रहा, बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी देखा जा सकता है। यह आधुनिक समय की एक सच्चाई है, जहाँ व्यक्ति कई संस्कृतियों के बीच जीता हैं और अपनी पहचान को नए सिरे से गढ़ता है। गीतांजलि श्री की कहानियाँ पाठक से धैर्य और संवेदनशीलता की मांग करती है। वे तुरंत समझ में आने वाली या मनोरंजन के लिए लिखी गई कहानियाँ नहीं है, बल्कि वे पाठक को सोचने, महसूस करने और अपने भीतर झांकने के लिए प्रेरित करती है। अंततः, मार्च माँ और साकुरा और उनका समग्र कहानी संग्रह हिन्दी साहित्य में एक नई दिशा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह लेखन हमें यह सिखाता है कि कहानी केवल घटनाओं का क्रम नहीं होती, बल्कि वह अनुभवों, भावनाओं और विचारों का जटिल ताना–बाना होती है।

इस प्रकार मार्च माँ और साकुरा न केवल एक कहानी संग्रह है, बल्कि यह आधुनिक जीवन, स्त्री–अनुभव, स्मृति और सांस्कृतिक संवाद का एक संवेदनशील दस्तावेज है, जो पाठक को गहराई से प्रभावित करता है और लंबे समय तक उसके मन में बना रहता है। यह कहानी पाठकों को यह समझने में मदद करती है कि जीवन का हर चरण महत्वपूर्ण है। जैसे साकूरा के फूल थोड़े समय के लिए खिलते हैं फिर भी उनकी सुंदरता अमर हो जाती है, वैसे ही मनुष्य का जीवन भले ही सीमित हो, लेकिन उसके अनुभव, स्मृतियों और प्रेम उसे अर्थपूर्ण बनाते हैं। यही इस कहानी का सबसे बड़ा संदेश है।

(4) प्रतिनिधि कहानियाँ (2010) – गीतांजलि श्री का कहानी संग्रह 'प्रतिनिधि कहानियाँ (2010) उनके रचनात्मक संसार का एक महत्वपूर्ण संकलन है। इस संग्रह में उनकी चुनिंदा कहानियाँ शामिल हैं जो स्त्री जीवन, समाज, स्मृति, पहचान और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को गहराई से उजागर करती है। प्रतिनिधि कहानियां 2010 में प्रकाशित वह संग्रह है जिसमें गीतांजलि श्री की पूर्व प्रकाशित कहानियों में से प्रमुख कहानियों को चुना गया है। यह संग्रह न केवल उनके लेखन की विविधता को दर्शाता है, बल्कि समकालीन हिन्दी कथा–साहित्य में उनके योगदान को भी रेखांकित करता है। उनकी भाषा, शैली और दृष्टिकोण पारंपरिक कथानक से हटकर एक नए प्रयोगधर्मी आयाम को प्रस्तुत करते हैं। गीतांजलि श्री की कहानियों में स्त्री–जीवन की जटिलताओं का

गहरा चित्रण मिलता है वे स्त्री को केवल पीड़ित रूप में नहीं दिखाती बल्कि उसे एक सोचने–समझने वाली, आत्मनिर्भर और प्रश्न करने वाली इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ यह बताती है कि समाज में स्त्री की स्थिति केवल बाहरी बंधनों से नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक संरचनाओं से भी प्रभावित होती है। उनकी कई कहानियाँ स्मृति और समय के इर्द–गिर्द घूमती हैं। अतीत और वर्तमान के बीच संवाद उनकी रचनाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे दिखाती है कि कैसे पुरानी यादें वर्तमान जीवन को प्रभावित करती है और व्यक्ति की पहचान को आकार देती है। गीतांजलि श्री की कहानियाँ केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नहीं है। उनमें व्यापक सामाजिक सरोकार मौजूद है। वे समाज में व्याप्त असमानताओं, लैंगिक भेदभाव, रुढियों और सत्ता–संबंधों की आलोचनात्मक पड़ताल करती है।

गीतांजलि श्री का स्त्री विमर्श अन्य लेखिकाओं से कुछ भिन्न हैं। वे केवल पुरुष विरोध या संघर्ष को केन्द्र में नहीं रखतीं। उनकी रुचि स्त्री के आंतरिक संसार को समझने में अधिक है। वे स्त्री के अनुभवों, भावनाओं और मानसिक प्रक्रियाओं को सूक्ष्मता से चित्रित करती है। उनकी कहानियों में स्त्री अपने जीवन की परिस्थितियों का विश्लेषण करती है और आत्मनिर्णय की दिशा में आगे बढ़ती है। यह दृष्टि स्त्री को एक सक्रिय और विचारशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है। गीतांजलि श्री समाज में मौजूद वर्ग–भेद और असमानताओं को भी अपनी कहानियों में उजागर करती है। उनके पात्र आम लोग होते हैं– मध्यम वर्गीय परिवार, महिलाएं, बुजुर्ग, बच्चे जिनके माध्यम से वे समाज की वास्तविकताओं को सामने लाती है। आधुनिक जीवन में बढ़ते हुए अकेलेपन और व्यक्ति की आंतरिक संघर्ष की स्थिति को भी उन्होंने बखूबी चित्रित किया है। उनके पात्र अक्सर अपने अस्तित्व, रिश्तों और जीवन के अर्थ की खोज में लगे रहते हैं। गीतांजलि श्री की भाषा उनकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है। वे साधारण हिन्दी के साथ–साथ प्रतीकों, बिबों और रूपकों का प्रभावी उपयोग करती है। उनकी शैली कभी–कभी जटिल और प्रयोग धर्मी लग सकती है, लेकिन यही उनकी रचनाओं को विशिष्ट बनाती है। वे रैखिक (linear) कथा से हटकर खंडित (fragmented) और बहुस्तरीय कथानक का प्रयोग करती है। संवाद और आंतरिक एकालाप (inner monologue) के माध्यम से पात्रों की मनो रू स्थिति को गहराई से व्यक्त करती है।

उनकी कहानियों में कई बार स्पष्ट निष्कर्ष नहीं होता, जिससे पाठक को सोचने का अवसर मिलता है। प्रमुख कहानियों की झलक–हालांकि इस संग्रह में कई कहानियाँ शामिल हैं, पर कुछ कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। (सामान्य रूप में)– ऐसी कहानियाँ जो परिवार के भीतर छिपे तनाव और रिश्तों की उलझनों को सामने लाती है। कुछ कहानियाँ शहर और गाँव के बदलते परिदृश्य को दिखाती है। कुछ में स्त्री के आत्म–संघर्ष और स्वतंत्रता की चाह को प्रमुखता दी गई है। हर कहानी अपने आप में एक अलग संसार रचती है, लेकिन सभी में एक समान संवेदनशीलता और गहराई दिखाई देती है। उनकी कहानियां केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करती, बल्कि पात्रों के मनोविज्ञान को खोलती है। वे कथा–रचना में नए प्रयोग करती है– संरचना, भाषा और दृष्टिकोण सभी में। सामान्य जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं में भी वे गहरी संवेदना खोज लेती है। खुले अंत – उनकी कई कहानियाँ ऐसे समाप्त होती है कि पाठक स्वयं निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित होता है। प्रतिनिधि कहानियाँ – हिन्दी साहित्य में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समकालीन समाज का यथार्थ परक और संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करता है। स्त्री–विमर्श को नए दृष्टिकोण से सामने लाता है। यह कहानी कहने की पारंपरिक ढांचे को चुनौती देता है और नए प्रयोगों को प्रोत्साहित करता है। गीतांजलि श्री का यह संग्रह पाठकों को केवल मनोरंजन नहीं देता, बल्कि उन्हें सोचने, समझने और समाज को नए नजरिए से देखने के लिए प्रेरित

करता है। यह संग्रह उन पाठकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण में नए प्रयोग गहरी संवेदना और सामाजिक यथार्थ की खोज करना चाहते हैं। गीतांजलि श्री ने अपनी कहानियों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि साहित्य केवल समाज का दर्पण नहीं, बल्कि उसे समझने और बदलने का माध्यम भी हो सकता है। यही कारण है कि उनकी प्रतिनिधि कहानियाँ आज भी पाठकों और शोधार्थियों के लिए समान रूप से प्रासंगिक और प्रेरणादायक बनी हुई है।

(5) यहाँ हाथी रहते थे (2012) – गीतांजलि श्री का कहानी संग्रह यहाँ हाथी रहते थे। शाम कालीन हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट संकलन है। इस संग्रह में शामिल कहानियाँ अपनी भाषा, शिल्प और विषयवस्तु के कारण अलग पहचान रखती हैं। यह केवल साधारण कथाएँ नहीं है, बल्कि मनुष्य के भीतर और समाज के बाहर घट रही जटिलताओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इस संग्रह की कहानियों का प्रमुख गुण उनका प्रयोग धर्मी होना है। गीतांजलि श्री पारंपरिक कथा–शैली से हटकर लिखती है। उनकी भाषा कभी–कभी खंडित, लयात्मक और बहुस्तरीय होती हैं, जो पाठक को सीधे अर्थ नहीं देती बल्कि सोचने के लिए प्रेरित करती है। 'यहाँ हाथी रहते थे' शीर्षक अपने आप में एक प्रतीक है– कुछ ऐसा जो कभी था, अब नहीं है, लेकिन उसकी स्मृति और प्रभाव अब भी मौजूद है। यह शीर्षक पूरे संग्रह की थीम को दर्शाता है, जहां अनुपस्थिति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी उपस्थिति। कहानी का केन्द्र एक ऐसा स्थान है जहां कभी हाथियों का निवास हुआ करता था। समय के साथ परिस्थितियां बदल गई हैं। अब वहाँ हाथी नहीं है, लेकिन उनके होने की स्मृतियाँ लोगो के मन और स्थान की पहचान में अब भी मौजूद है। कहानी का कथावाचक उस स्थान, उसके अतीत और वर्तमान के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। विकास, शहरीकरण और आधुनिक जीवन की तेज गति ने उस स्थान की पुरानी पहचान को लगभग समाप्त कर दिया है। नई पीढ़ी के लिए हाथियों का अस्तित्व केवल एक कहानी या किंवदंती जैसा रह गया है। जो लोग उस समय के साक्षी रहे हैं, वे अतीत को याद करते हैं और वर्तमान की स्थिति से उसकी तुलना करते हैं।

इस संग्रह में शहर और गाँव, अतीत और वर्तमान, स्मृति और वास्तविकता के बीच लगातार संवाद चलता है। गीतांजलि श्री की कहानियाँ अक्सर ऐसे पात्रों को सामने लाती हैं जो समाज के किनारों पर खड़े हैं – स्त्रियाँ, बूढे लोग, अकेले व्यक्ति, या वे जो अपनी पहचान की तलाश में हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखिका यह दिखाती है कि आधुनिक जीवन में व्यक्ति किस तरह अलगाव, असुरक्षा और भ्रम का अनुभव करता है। संग्रह की कई कहानियाँ में स्त्री अनुभव एक केंद्रीय तत्व है। लेकिन यह स्त्री–विमर्श किसी सीधे या घोषणात्मक रूप में नहीं आता, बल्कि सूक्ष्म और गहरे स्तर पर उभरता है। स्त्रियाँ यहाँ केवल पीड़ित नहीं है, बल्कि वे सोचती है, सवाल करती है, और अपने अस्तित्व को समझने की कोशिश करती है। उनके भीतर की आवाज, उनकी चुप्पी और उनके छोटे–छोटे प्रतिरोध ये सब कहानियों में गहराई जोड़ते है। भाषा के स्तर पर यह संग्रह बहुत समृद्ध है।

गीतांजलि श्री शब्दों के साथ खेलती है, वाक्यों को तोड़ती–मरोड़ती है और एक ऐसी शैली रचती हैं जो कविता के करीब लगती है। कई बार उनकी भाषा अमूर्त हो जाती हैं, लेकिन यही अमूर्तता पाठक को नए अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है। उनकी कहानियाँ केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि अनुभव कर के लिए है। 'यहाँ हाथी रहते थे' में स्मृति का बहुत बड़ा महत्व है। अतीत बार–बार वर्तमान में लौटता है और पात्रों के जीवन को प्रभावित करता है। यह अतीत कभी सुखद नहीं होता, बल्कि अक्सर उलझन भरा और पीड़ादायक होता है। लेकिन फिर भी उससे छुटकारा पाना संभव नहीं हैं। इस तरह कहानियाँ यह दिखती है कि समय रेखीय

(Linear) नहीं है, बल्कि परतों में बटा हुआ है। इस संग्रह में सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ भी मौजूद हैं, लेकिन वे सीधे तौर पर नहीं आते। लेखिका संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से समाज की विडंबनाओं को उजागर करती है। शहरों का बदलता स्वरूप, रिश्तों का टूटना और मनुष्य का अकेलापन – ये सब विषय कहानियों में बार–बार सामने आते हैं। शीर्षक कहानी 'यहाँ हाथी रहते थे' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें 'हाथी' एक रूपक के रूप में इस्तेमाल हुआ है – कुछ विशाल, प्रभावशाली और यादगार, जो अब गायब हो चुका है। यह कहानी बदलाव, विस्थापन और स्मृति के विषयों को बहुत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। पाठक को यह सोचने पर मजबूर करती है कि विकास और प्रगति के नाम पर हम क्या–क्या खोते जा रहे है। कुल मिलाकर, यह कहानी – संग्रह पाठकों को आसान उत्तर नहीं देता, बल्कि सवालों के साथ छोड़ता है। यह उसकी सबसे बड़ी ताकत है । गीतांजलि श्री की कहानियाँ हमें हमारे समय, समाज और अपने भीतर झाँकने के लिए मजबूर करती है। उनकी लेखन शैली हर पाठक के लिए आसान नहीं हो सकती, लेकिन जो पाठक धैर्य और संवेदनशीलता के साथ इन कहानियों को पढ़ते हैं, उन्हें एक गहरा और समृद्ध अनुभव मिलता है। इस प्रकार 'यहाँ हाथी रहते थे' केवल एक कहानी–संग्रह नहीं, बल्कि एक साहित्यिक यात्रा है– जहाँ भाषा, विचार और संवेदना मिलकर एक नया संसार रचते हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार :

गीतांजलि श्री समकालीन हिन्दी साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित लेखिका है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और साहित्यिक प्रयोगों के माध्यम से हिन्दी साहित्य को नई दिशा दी है। उनकी रचनाएं स्त्री–अनुभव, सामाजिक परिवर्तन, स्मृति, इतिहास, विभाजन और मानवीय संबंधों जैसे विषयों को गहराई से प्रस्तुत करती है। विशेष रूप से उनका उपन्यास रेत समाधि अंग्रेजी अनुवाद Tomb of Sand अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हुआ और उन्हें विश्व साहित्य में विशिष्ट पहचान दिलाई।

(1) **अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार** (International Booker Prize 2022) गीतांजलि श्री को प्राप्त सबसे प्रतिष्ठित सम्मान है। 'उनके उपन्यास "Tomb of sand" को अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार विश्व के सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मानों में गिना जाता है। इस पुरस्कार की विशेषता यह है कि यह अंग्रेजी में अनूदित श्रेष्ठ साहित्यिक कृति को दिया जाता है। उपन्यास, का अंग्रेजी अनुवाद Daisy Rockwell ने किया था। पहली बार किसी हिन्दी उपन्यास को यह सम्मान मिला, पहली बार किसी भारतीय भाषा की पुस्तक ने यह पुरस्कार जीता, हिन्दी साहित्य को वैश्विक मंच पर नई पहचान मिली। भारतीय भाषाओं के साहित्य की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ।

(2) **साहित्य अकादमी पुरस्कार** – रेत समाधि हेतु। साहित्य अकादमी द्वारा भी उनकी रचनात्मक उपलब्धियों को विशेष मान्यता प्राप्त हुई। यह सम्मान किसी लेखक की साहित्यिक प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण प्रमाण माना जाता है।

(3) **हिन्दी अकादमी सम्मान** – हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा भी गीतांजलि श्री को विभिन्न अवसरों पर सम्मानित किया गया। हिन्दी साहित्य में नवीन प्रयोग, स्त्री विमर्श को नई दिशा, भाषा और शिल्प में मौलिकता, सामाजिक यथार्थ की प्रभावशाली प्रस्तुति आदि के कारण सम्मान किया। हिन्दी अकादमी के मंचों पर उन्हें समकालीन हिन्दी साहित्य की अग्रणी लेखिका के रूप में मान्यता मिली।

(4) **वाग्देवी सम्मान** – यह सम्मान हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान देने वाले लेखकों को प्रदान किया

जाता है। गीतांजलि श्री को उनकी साहित्यिक, उपलब्धियों और रचनात्मक उत्कृष्टता के लिए इस सम्मान से अलंकृत किया गया। इस सम्मान ने उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को और अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

(5) इंदु शर्मा कथा सम्मान – यह सम्मान हिन्दी कथा साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है। गीतांजलि श्री की कहानियों और उपन्यासों में स्त्री चेतना और सामाजिक संरचनाओं का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इसी कारण उन्हें कथा साहित्य के क्षेत्र में विशेष पहचान प्राप्त हुई।

(6) विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मान – गीतांजलि श्री को केवल एक–दो पुरस्कारों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। उन्हें अनेक साहित्यिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा समय पर सम्मानित किया गया है।

(7) अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक मंचों पर सम्मान – अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिलने के बाद गीतांजलि श्री को अनेक देशों में आयोजित साहित्यिक सम्मेलनों, पुस्तक मेलों और विश्वविद्यालयी कार्यक्रमों में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उनकी साहित्यिक यात्रा यह दर्शाती है कि सृजनात्मकता, मौलिकता और गहन मानवीय संवेदना किसी भी लेखक को राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठाकर वैश्विक पहचान दिला सकती है।

गीतांजलि श्री के पुरस्कार और सम्मान केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि हिन्दी भाषा और भारतीय साहित्य की सामूहिक उपलब्धि भी है। उनके योगदान ने हिन्दी साहित्य को विश्व साहित्य के मानचित्र पर एक नया और सम्मान जनक स्थान दिलाया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. माई, लेखक गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2004
2. अनुगूंज, लेखक गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2006

पता :
दीपिका श्रीमाली पुत्री श्री कुंदन लाल श्रीमाली
14, बाबेल स्ट्रीट, रावजी की हाटा, उदयपुर (राजस्थान) 313001
मो. न.–9680784760
ईमेल–Shrimalideepika4489@gmail.com

Shodh Paridhi
(ISSN 2349-9575)

नियम एवं शर्तें :

संपादकीय निर्णय : शोध पत्र की स्वीकृति या अस्वीकृति के संदर्भ में संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। शोध पत्र स्वीकृत होने पर ईमेल द्वारा ही सूचित किया जाएगा।

शब्द एवं पृष्ठ सीमा : शोध आलेख की मानक सीमा अधिकतम 6 पेज होनी चाहिए। 6 पेज से अधिक होने पर रू. 80/- प्रति अतिरिक्त पेज का शुल्क देय होगा।

प्रेषण एवं मौलिकता : अपना शोध आलेख केवल आधिकारिक ईमेल (**Paridhi.shodh@gmail.com**) पर ही भेजें। आलेख पूर्णतः प्रूफ रीडिंग के साथ होना चाहिए। अशुद्धियों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। एक ही आलेख बार-बार भेजने पर वह अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

शोध पत्र लेखन हेतु मुख्य नियम :

1. **पेज सेट-अप एवं मार्जिन :**
   - i. पेज साइज : **A4** साइज।
   - ii. मार्जिन : पेज के चारों तरफ (ऊपर, नीचे, बाएँ, दाएँ) 1 इंच (2.54 सेमी) का स्थान छोड़ें।
   - iii. इंडेन्ट (**Indentation**) : प्रत्येक पैराग्राफ की पहली पंक्ति को 0.5 इंच (Tab) आगे से शुरू करें।
2. **फॉन्ट एवं स्पेसिंग :**
   - i. अंग्रेजी फॉन्ट : **Times New Roman** (**12 pt.**) या **Arial** (**11 pt.**)।
   - ii. हिंदी/संस्कृत फॉन्ट : मंगल/**Unicode** (**12 pt.**) अथवा कृतिदेव 010 (**14 pt.**)।
   - iii. लाइन स्पेसिंग : पूरे आलेख में डबल स्पेसिंग (2.0) का प्रयोग करें।
3. **आलेख की संरचना (Paper Structure) :**
   - i. शीर्षक पृष्ठ (**Title Page**) : सबसे ऊपर शोध का शीर्षक (**Bold**), उसके नीचे लेखक का नाम, पद, संस्थान/विश्वविद्यालय का नाम और ईमेल।
   - ii. सारांश (**Abstract**) : शीर्षक के बाद 150 से 250 शब्दों में शोध का संक्षिप्त सारांश और उसके ठीक नीचे 3 से 5 मुख्य शब्द (**Keywords**) लिखें।
   - iii. मुख्य भाग (**Main Body**) : भूमिका (**Introduction**), शोध विधि (**Methodology**), निष्कर्ष (**Results & Discussion**) में विभाजित करें।
4. **पाठ-अंतर्गत संदर्भ (In-Text Citation) :**
   - i. पाठ के भीतर संदर्भ देते समय (लेखक का उपनाम, वर्ष) प्रारूप अपनाएँ।
     उदाहरण : 'शर्मा (2023) के अनुसार...' अथवा **"(Sharma, 2023)"**
   - ii. यदि उद्धरण (**Direct Quote**) ज्यों-का-त्यों लिया गया है, तो पृष्ठ संख्या भी जोड़ें।
     उदाहरण : **"(Sharma, 2023,). 45)**
5. **संदर्भ सूची (References List) :**
   - i. आलेख के अंत में प्रयुक्त सभी संदर्भों को **'References'** (या संदर्भ सूची) शीर्षक के अंतर्गत लिखें।
   - ii. सभी संदर्भों को लेखक के उपनाम के वर्णमाला क्रम (**Alphabetical Order : A to Z**) में व्यवस्थित करें।
   - iii. संदर्भ सूची में हेंगिंग इंडेंट (**Hanging Indent**) लागू करें (यानी संदर्भ की पहली पंक्ति सामान्य रहेगी और दूसरी/तीसरी पंक्ति 0.5 इंच अंदर खिसकी रहेगी)।
   - iv. उदाहरण (पुस्तक) : शर्मा, व. (2022). शोध कार्य एवं नैतिकता. गुप्ता पब्लिशर्स.
   - v. उदाहरण (जर्नल) : कुमार, आर.(2024). बहुभाषीय पत्रिकाओं का महत्व शोध परिधि, 11(1), 45-52

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/1 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Archana Dubey
Chief Librarian,
St. Aloysius College Jabalpur, MP.

for the paper titled

Nepal–India Religious Relations and the Ramayana : A Bridge of Cultural and Spiritual Unity

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 09-14

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/2 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. आरती सरोज
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उ0प्र0।

for the paper titled

मेघदूतम् में वर्णित नगर वैशिष्ट्य

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 15-18

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/3 **Dated :** 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

प्रोफेसर चन्द्रशेखर सिंह

समाज कार्य विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

for the paper titled

हिमालयी क्षेत्रों में विदेशी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव : एक अध्ययन

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 19-24

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/4 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. बी. मल्लिका
अतिथि शिक्षिका
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधीग्राम (तमिलनाडु)

for the paper titled

साठोत्तर हिंदी कहानियों में चित्रित एकल माताओं की समस्याएं

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 25-28

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/5 **Dated :** 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप

प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शासकीय टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर (छ.ग.)

for the paper titled

नीली अर्थव्यवस्था

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 29-33

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/6 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Dilip Kumar Parsendiya
Assistant Professor Commerce,
Govt. Adarsh P.G. College, Jhabua (M.P.)

for the paper titled

कृषि ऋण योजनाओं के क्षेत्र में किसान क्रेडिट कार्ड योजना की उपयोगिता

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 34-39

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/7 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता तथा हिन्दी,
त्रि.वि. पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू।

for the paper titled

'मैं दासी मैं सराय' उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 40-49

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/8 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. दीप्ति लोदवाल

ग्रंथपाल,
शासकीय विधि महाविद्यालय, उज्जैन।

for the paper titled

विकसित भारत 2047 के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण–अनुकूल ग्रंथालयों की भूमिका

Research Paper on "The Role of Environment & Friendly Libraries in the Context of Viksit Bharat 2047"

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 50-54

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/9 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Prof.(Dr.) Farhat Khan
Prof. & Dean
G H Raisoni University, Saikheda, M.P.

for the paper titled

Role of Forensic Science in Modern Criminal Investigation and Trial

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 55-58

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/10 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

हेमलता पारस

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र,
प्रधानमन्त्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय नेहरू स्नात.
महाविद्यालय, आगर मालवा।

for the paper titled

जैव विविधता संरक्षण एवं सूचना प्रौद्योगिकी : एक अध्ययन
(A Research Study on Biodiversity Conservation and Information Technology)

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 59-63

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/11 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

जयश्री कुमावत, शोधार्थी,
डॉ. प्रियंका यादव, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक
मणिपाल युनिवर्सिटी जयपुर।

for the paper titled

तृतीय लिंगी समुदाय में यौन कुंठा एंव प्रेम संबंध : एक अध्ययन

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 64-69

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/12 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

श्री लक्ष्मी. एस. आर

शोध छात्रा,
महात्मा गांधी कालेज, तिरुवनंतपुरम, केरल।

for the paper titled

उपन्यास 'वह' : किन्नर समाज की असली जिंदगी

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 70-72

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/13 **Dated :** 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Naresh Kumar, Assistant Professor
State Council of Educational Research and Training,
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024

for the paper titled

A Comprehensive Study of the National Education Policy 2020 in Relation to Development of the Spirit of Nationalism

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 73-79

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/14 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

निर्मला, शोधार्थी,

प्रो० (डॉ०) स्वर्णलता कदम, प्रोफेसर,

हिंदी विभाग, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ।

for the paper titled

हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों का मनोविश्लेषण : पचपन खंभे लाल दीवारें एवं कठगुलाब के विशेष संदर्भ में

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 80-85

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/15 **Dated :** 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

लेफ्टिनेंट डॉ. प्रमिला कबीर कुरेठिया

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान एवं एनसीसी अधिकारी,
माता जीजाबाई शासकीय स्वशासी स्नाकोत्तर कन्या महाविद्यालय,
मोतीतबेला, इंदौर, म. प्र.

for the paper titled

समावेशी उच्च शिक्षा हेतु ई–कंटेंट का नवाचार : एक विश्लेषण

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 86-89

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/16 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Raushan Kumar
Research Scholar, Department of Political Science,
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi- 221002

for the paper titled

भारतीय लोकतंत्र और Gen-Z : मतदाता व्यवहार और चुनावी प्रभाव का मूल्यांकन

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 90-94

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/17 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. रीजा. आर. एस

सहायक प्राध्यापक, क्रिस्त्यन कॉलेज काट्टाकडा, तिरुवनन्तपुरम,
केरल, केरल विश्वविद्यालय।

for the paper titled

वैश्वीकरण के युग में स्वामी विवेकानन्द की प्रासंगिकता

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 95-100

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/18 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

सिंगराय मुण्डा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

for the paper titled

मुण्डारी में शिक्षा : वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 101-106

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/19 **Dated :** 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Sk Jahangir Hossain
Assistant Professor, Department of history,
Sitananda College Nandigram, Purba Medinipur, Under
Vidyasagar University, West Bengal, India,

for the paper titled

Contribution of Nepali Freedom Fighters in India's Independence Struggle : A Historical Review

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 107-110

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/20 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सुमन माखीजा

असिस्टेंट प्रोफेसर,
इंडेक्स इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट आर्टस एंड साइंसेज, इंदौर।

for the paper titled

स्वदेशी से स्वावलंबी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 111-114

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/21 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

उपेन्द्र कुमार, शोधार्थी,

प्रो० (डॉ०) स्वर्णलता कदम, प्रोफेसर,

हिंदी विभाग, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ।

for the paper titled

समकालीन हिंदी साहित्य और अखिलेश की सृजन दृष्टि

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 115-119

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed & Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/22 **Dated :** 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

Devu V.
Research Scholar, Department of English,
N S S Hindu College Chanagancherry.

for the paper titled

Precarious Bodies : A Study of Biopolitics and Gendered Health in *The Farming of Bones*

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 120-122

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/23 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. यादव सिंह

सहायक–आचार्य (लोक–प्रशासन)
राजकीय महाविद्यालय, रूपवास।

for the paper titled

**भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता :
बहुआयामी विश्लेषण**

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 123-128

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/24 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

प्रो. संजय श्रीवास्तव, प्रोफेसर,
भगत नारायण महतो, शोधार्थी
मध्य. एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

for the paper titled

औपनिवेशिक बंगला नाट्य परंपरा में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक प्रतिरोध का स्वरूप

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 129-134

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/25 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. प्रवीन शर्मा

सहायक आचार्या,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

for the paper titled

डिजिटल युग में लोककथाओं और मिथकों का पुनर्निर्माण

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 135-141

ISSN 2349-9575

Editor :
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/26 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

जयश्री कुमावत, शोधार्थी
डॉ प्रियंका यादव, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक,
मणिपाल युनिवर्सिटी, जयपुर।

for the paper titled

तृतीय लिंगी समुदाय में यौन कुंठा एंव प्रेम संबंध : एक अध्ययन

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 142-146

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500

Impact Factor : 5.634

प्रेरणा साहित्य समिति, हापुड़ (उ.प्र.) एवं
विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति, अजायब, रोहतक (हरियाणा)
द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

An International Multidisciplinary, Multilingual, Refereed &
Peer-Reviewed Bi-Annual Research Journal

Ref. No. SP/2026/27 Dated : 30-06-2026

Certificate of Publication

is awarded to

दीपिका श्रीमाली

शोधार्थी

for the paper titled

गीतांजलि श्री की कृतियाँ और सम्मान

Published in Shodh Paridhi ISSN : 2349-9575
January-June 2026, Vol. 13, Issue -2, Page 147-160

ISSN 2349-9575

Editor :
Sulaxna
(Dr. Sulaxna Ahlawat)

Email : paridhi.shodh@gmail.com | Mob. No. : 9996571500